

जेन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१



निर्गण्य पावयणं

DAS-N

मूल सुत्ताणि

दसवेआलियं DUSVEHALIYAM TEI

तह

UTTARJHAYANANI

उत्तरज्जयणाणि

श्री बसुगील साहू भवेत्,
जन्म ई ०२ ले २

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

With Best Compliments of

SHRI JAIN SANGH BOMBAY

C/o R M JHAVERI

157, Sheikh Memon St; BOMBAY-2.

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी मरूपसभा

(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्तुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

6240

प्रकाशक-व्यवस्थापक :

श्रीधर रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०

संयोजक,

भागम-साहित्य प्रकाशन समिति

धारक :

आदर्श साहित्य संघ

चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक :

सरावगी चेरिटेबल फण्ड

७, लोअर राकइन स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रकाशन-तिथि :

मर्यादा-महोत्सव

माघ सुदी सप्तमी, नं० २०२३

प्रति-संख्या .

१,१००

फण्ड-संख्या :

१२

मूल्य :

₹७.०० रु०

मुद्रक :

न्यू रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स

३१११ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-१

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

अन्तस्तोष

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

भूमिका

हिन्दी

अंग्रेजी

विषयानुक्रम

वस्तुवेआलिखं : विषय-सूची

उत्तराध्ययनं : विषय-सूची

दशवैकालिक

१-८४

उत्तराध्ययन

८५-३४९

परिशिष्ट :

१-३४०

(१) शब्दानुक्रम : दशवैकालिक : पृ० १

(२) शब्दानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ९१

(३) नामानुक्रम : उत्तराध्ययन : पृ० ३३१

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ (मूलपाठ)

३४१

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ (पाठान्तर)

३४४

शुद्धि और आपूरक पत्र-३ (उत्तराध्ययन शब्द-सूची)

३४९

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ मे मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
काकुगणी को विमल भाव से ॥

•

विनयावन्त
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का जोष-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और बैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह सविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक	:	मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
सहयोगी	:	मुनि दुलहराज
पाठ-संगोष्ण	:	मुनि सुदर्शन
	:	मुनि मधुकर
	:	मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	:	मुनि श्रीचन्द्र
	:	मुनि हनुमानमल (सरदारगहर)
विषयानुक्रम	:	मुनि रूपचन्द्र

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। “आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला” इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला में आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के संशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणों में पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट में उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप में दी गई है।

उत्तराध्ययन में प्रमंगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, मिक्का, आवाग, शम्भ, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त में तीन शुद्धि और आपूरक पत्र हैं, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक सुट्टण की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई मास्यी प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप में दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं। -

इस आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के संशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों में है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार समिति की ओर से मरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्दजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी बड़ी

श्रद्धा और प्रेम के साथ उन्होंने इस कार्य-भार को ग्रहण किया, पर आकस्मिक निधन ने उस सम्पत्ति को हमसे छीन लिया। गोठीजी आगम-कार्य की योजना के एक महान् स्तम्भ रहे।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि :

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आदर्श साहित्य संघ, चुरू (राजस्थान) से प्राप्त हुई है, जिसके लिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस आगम का सुव्रण-खर्च श्री रामकुमारजी सरावगी की प्रेरणा से श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता, जिसके सर्व श्री प्यारेलालजी सरावगी, गोविन्दलालजी सरावगी, सज्जनकुमारजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी ट्रस्टी हैं, ने वहन किया है।

श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड का यह आर्थिक अनुदान स्वर्गीय स्वनामधन्य श्रावक महादेवलालजी सरावगी एवं उनके सुयोग्य दिवंगत पुत्र पन्नालालजी सरावगी (सदस्य, भारतीय लोकसभा) की स्मृति में प्राप्त हुआ है। स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी तेरापन्थ-सम्प्रदाय के एक अग्रगण्य श्रावक थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध अधिष्ठान महादेव रामकुमार से सम्बन्धित थे। स्व० पन्नालालजी सरावगी, महासभा एवं साहित्य प्रकाशन समिति के बड़े उत्साही एवं प्राणवान् सदस्य रहे। आगम-प्रकाशन-योजना में उनकी आरम्भ से अत्यन्त अभिरुचि रही।

उक्त योगदान के प्रति हम उक्त फण्ड के ट्रस्टीगण के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वान् अथवा प्रकाशन-संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति के सदस्य सर्व श्री मोहनलालजी बाँडिया 'चंचल', गोविन्दलालजी सरावगी एवं खेमचन्दजी सेठिया को भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग मुझे हर समय प्राप्त होता रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों में उनके अमृत्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और संस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमृत्य मेवाएँ हमारी कृतज्ञता को महज स्फुरित करती है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१

दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया

सयोजक

सम्पादकीय

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से बहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरब्ध होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह बड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सब परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है, जहाँ परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है, जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है—भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रन्थों और अशोक के शिलालेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम-साहित्य के सैकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं। इस स्थिति में हर चिन्तनशील

व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है।

मनुष्य अपनी शक्ति में विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नहीं छोड़ देता कि वह दुरूह है। यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नहीं हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है, वह अतीत के किसी भी क्षण में विलुप्त हो जाता। आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी। उन्होंने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :

१. सत् सम्प्रदाय (अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु-परम्परा) प्राप्त नहीं है।
२. सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नहीं है।
३. अनेक वाचनाएँ (आगमिक अध्यापन की पद्धतियाँ) हैं।
४. पुस्तके अशुद्ध हैं।
५. कृतियाँ सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गंभीर हैं।
६. अर्थ-विषयक मतभेद भी हैं।^१

इन सारी कठिनाइयों के उपरान्त भी उन्होंने अपना प्रयत्न नहीं छोड़ा और वे कुछ कर गए।

कठिनाइयाँ आज भी कम नहीं हैं। किन्तु उनके होते हुए भी आचार्य श्री तुलसी ने आगम-सम्पादन के कार्य को अपने हाथों में ले लिया। उनके शक्ति-शाली हाथों का स्पर्श पा कर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वयं प्राणवान् है, उसमें प्राण-संचार करना क्या बड़ी बात

१-स्थानाग वृत्ति, प्रशस्ति १.२

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सद्गुहस्य वियोगतः।

सर्वस्वपरशास्त्राणा- महष्टेरस्मृतेश्च मे॥ १॥

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः।

सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित्॥ २॥

है ? बड़ी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमे प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है । सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है । आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है । उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओं का पार पाने मे समर्थ हुए हैं ।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनों प्रकार के लोग हैं—विद्वद्-जन और साधारण-जन । दोनों को दृष्टि मे रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओं मे ग्रथित किया है । उसका आकार यह है :—

- १ आगम-सुक्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होंगे ।
- २ आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होंगे ।
- ३ आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के टिप्पण होंगे ।
- ४ आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के समीक्षात्मक अध्ययन होंगे ।
- ५ आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो से सम्बन्धित कथाओं का सकलन होगा ।
- ६ वर्गीकृत आगम ग्रन्थ-माला — इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के वर्गीकृत और संक्षिप्त संस्करण होंगे ।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है ।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठ	उक्कट्ठं	क, ग, घ, अचू
२।२	आवियइ	आवियती	अचू, जिचू
३।१	मुत्ता	मुक्का	अचू
३।२	साहुणो	साहवो	अचू
४।३	अहागडेसु	अहागडेहि	अचू
४।३	रीयति	रीयते	घ, जिचू
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहि	अचू, जिचू
४।४	भमरा	भमरो	र
५।१	महु °	मधु °	अचू, जिचू

अध्ययन-२

२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अवू
४।१	पेहाए	पेहाइ	क, ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अचू, जिचू
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क, ख, ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अचू, जिचू
५।१	सोउमल्ल	सोगमल्ल, सोगुमल्ल	क, ख, ग, जिचू, घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिचू, अचू
६।३	वन्तयं	वंतग	अचू
६।३	भोत्तुं	भुत्तु	ग
८।१	रायस्स	राइस्स	ग
९।२	दच्छसि	दिच्छसि, दिच्छिसि	क, र, ग
१०।२	संजयाए	सजयाड	ख, ग, घ

१११	करन्ति	करति, करिति	ख, ग, क, घ
११३	भोगेसु	भोगेहि	अचू

अध्ययन-३

१११	सुद्विअप्पाणं	सुद्वितप्पाणं	अचू
२।३	राइभत्ते	रायभत्ते	ग, जिचू
४।१	नालीय	नालीए, णालीया	ख, अचू
४।३	पाणहा	पाहणा	ख, अचू, जिचू
५।३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६।३	तत्तानिब्बुड-भोइत्तं	तत्तअनिब्बुड-भोतीत	ख, अचू
६।१	धूवणेत्ति	धूवणित्ति	ख
६।२	वत्थीकम्म	वत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
६।४	गायामंग	गायन्मंग	जिचू
१२।१	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२।३	० संलीणा	० सल्लीणा	जिचू
१३।१	० रिऊ	० रिवू	अचू
१३।२	घुय ०	धूअ ०	ख, ग
१३।२	जिईदिया	जियंदिया	ग
१४।२	दुस्सहाइ	दूसहाइ	जिचू
१४।३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ६	अभिककतं	पडिक्कतं अभिकत पडिक्कतं	ख
„ १०	दंड	डड	अचू, जिचू
„ १०	समारभेज्जा	समारभेज्जा	अचू, जिचू
„ १०	करतं	करेतं	अचू
„ ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
„ १६	राइ	रायं	क

छह

दसवेआलिपं-उत्तरज्झयण

सू० १८	किलिचेण	कलिचेण	ख,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ख,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्ध	क, अचू, ख
,, २१	विहुयणेण	विहुवणेण	अचू, जिचू
,, २३	पिपीलियं	पिपीलिय	जिचू
,, २३	हत्थेसि वा	हत्थेसि वा	अचू, पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ, नाही	ख, ग, घ
१२।१	याणाइ	याणेइ, याणइ	ग, अचू
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क, ख, घ, ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ, वियाणाइ	ग, अचू
१६।३	निब्बिदए	निब्बिदिय, निब्बिदइ	क, ग, अचू
२५।४	हवइ	भवइ	क, घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ख
२६।२	० साइस्स	० सायस्स	ख
२६।४, २७।४	सुगइ	सुगइ, सोगइ	घ, अचू, जिचू
२७।३	जिण	जिणि	क, घ

अध्ययन-५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेतो	क, ग, अचू, जिचू
४।१	ओवायं	उवायं	ख
४।२	विज्जलं	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडंतीए	पडतिए	अचू
१०।१	अणायणे	अणाययणे	अचू
१३।३	इंदियाणि	इंदियाइ, इंदियायं	क, ग
१६।२	रहस्सा	रहसा	क, ख, ग, हाटी
२३।४	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।३	वच्चस्स	वुच्चस्स	

सम्पादकीय

सात

२६।१	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७।२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८।१	आहरंती	आहरेती	अचू
२८।३	देतिय	दितियं, दंतिय	क,ग,घ,ग
३३।१	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४।२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०।४	पुण्डुए	पुण्डुए	घ, अचू
४२।१	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५।१	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६।१	उब्भिंदिया	उब्भिदियं	क,ख,ग,घ
५७।३	उम्मीसं	उम्मिसं	क,अचू,जिचू
६७।३	मंच	मच	क,ख,ग,घ,अचू
७१।३	सक्कुलि	संकुलि	ख
७३।२	अणिमिस	अणमिसं	ख,ग
७३।३	अत्थिय	अच्छिय	अचू, जिचू
७३।४	सिंवल्लि	सवल्लि, संवल्लि	घ,ख
७४।२	घम्मिए	घम्मए	घ
७७।३	भवेज्जा	हव्विज्जा	ख
७७।४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८।४	तण्हं	तण्ह	ख
८१।२	अच्चित्तं	अच्चित्तं	क, अचू
८५।१	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
९०।२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
९६।२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
९७।३	एय	एयं	अचू
९८।३	उल्ल	अल्लं	घ
१००।४	सोग्गइ	सोगइ, सुग्गइ	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

१।३	दुगंध	दुगंध	अचू
२।३	अयावयट्टा	आयावयट्टा	क,ख,ग
३।३	० उत्तेण	० वुत्तेण	अचू
५।२	पडिलेहिसि	पडिलेहिसि	ख
५।४	गरिहिसि	गिरिहिसि, गिरिहिसि, गरहिसि	ग,ख,अचू
७।३	त-उज्जुयं	त-ओजुय	ख,घ
१०।२	किविण	क्विणं	ग
१३।२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३।४	व	वा	अचू
१४।३	सच्चित्त	सच्चित्त	घ,अचू,जिचू
२१।३	नीम	नियम	ख
२२।३	० पिन्नाग	० पन्नाग	ख
२४।३	विहेलग	विभेलग, विहेलग	अचू,ख
२५।४	उत्सढ	उत्सढ	अचू
२६।१	इत्थियं	इत्थि	अचू
३२।१	अत्तट्ठ	अत्तट्ठा	क,ख,ग,घ
३७।१	पिया	पियेए	हाटी, जिचू
४६।१	वय	वई	अचू
४७।२	मूययं	मूयग	ख,ग,घ
५०।३	० हिदिए	० हिइदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३।३	मेत्त	मित्तं	क,ख,ग,घ
१८।१	लोभस्सेसो,अणुफासो	लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेसणफासो, लोभस्सेसणुफासो	क,घ,ग,ख

नौ

सम्पादकीय

२०।२	नाय °	नाइ °	क,ग
२०।४	इइ	इय	क,ख,ग,घ
२४।३	दिया	दिवा	अचू
३७।३	विइउ °	वीउ °, विनु °	ग,अचू
५१।२	° घोयण	° घावण	क,ख,अचू
५१।३	छन्नंति	छिन्नति, छिप्पति	क,ख,ग,हाटी
५२।१	पच्छा °	पच्छे °	अचू
५७।४	पटिकोहो	पणिकाहो, पणिकोहो	अचू
६०।३	बोसननो	बुसस्ता, वक्कनो	क,ग,ख
६१।२	भिल्लगामु	भिल्लगामु	क,ख,घ
६१।४	° प्पिलावए	° पल्लावा, ° प्पल्लावा	ख,ग,घ,हाटी
६३।३	° व्वट्ट °	° वट्ट °	क,ग
६४।१	नगिणम्म	निगणम्म, नगणम्म, नगणिम्म, निगणिम्म	क,घ,ग अचू
६७।४	नवाइ पावाऽ	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उउप्पसण्णे	अचू

अध्ययन-७

२।३	उणाऽन्ता	अणाऽण्णा	अचू
५।४	पुण	पुणो, पुण	अचू, ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पढगे त्ति	पडग त्ति पडगु त्ति	क,ग,घ
१२।३	गेगि त्ति	गेग त्ति	ग
१२।४	चारे त्ति	चोण त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्माए दुहए	दुम्माए, दुहए	ख

दस

दसवेआलियं-उत्तरज्जमयणं

१५।२	माउस्सिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५।४	नत्तुणिण	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१६।१	अन्नेत्ति	अन्नत्ति	ग
१८।३	भाइणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१८।४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१९।१	हले त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२१।१	मणुस्सं	मणुस, मणस	क,ग,घ,ख
२२।२	सरीसव	सरीसव	ख,ग
२३।१	परिवुड्ढे	परिवुड्ढ,परिवूढ	क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटो
२४।३	° जोग त्ति	° जोगि त्ति	ख,ग,
२५।२	घेणु	घेणू	ख
२७।२	तोरणाण गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
३१।४	दरिसणि	दरिसण	ग,घ,ख
३२।१	फलाइ	फलाणि	अचू
३३।२	निवट्ठिमा	निव्वड्ढिमा, निव्वत्तिमा,	जिचू,अचू,ख
		निवट्ठिमा	
३३।४	रूव त्ति	रूवि त्ति	क,ख,ग
३६।४	सुत्तिथ	सुत्तिथे,सुत्तिथि	ग,घ,ख
३९।१	° बाह्ढा	° पाह्ढा	अचू
४१।२	मडे	मते	अचू
४२।१	पयत्त	पयत्ति	क,घ
४२।१	पक्के त्ति	पक्क त्ति	क,ग,घ
४५।१	सुक्कीय	सुक्किय	ख
४७।१	तहेवासजय	तहेवज्जजत	अचू
४८।२	साहुणो	साधवो	अचू
५१।१	वाओ °	वाउ °	ख
५१।१	° वुट्ठ	° वुट्ठि	क,ख,ग

ग्यारह

सम्पादकीय

५३।१ अतलिक्खे
५६।३ धुन्न

अध्ययन-८

२।४ इय
५।१ निसिए
६।२ विहुयणेण
६।३ वीएज्ज
६।४ पोग्गल
१४।१ कयराडं
१६।३ अप्पमत्तो
१८।३ पडिलेहिक्का
१९।२ पाणट्ठा
२०।४ मरिहइ
२३।२ अयपिरो
२५।१ सतुट्ठे
२५।२ सुहरे
२६।१ अतित्तिणे
३५।१ पीलेइ
३६।१ अणिग्गहीया
४०।१ राइणिए
४०।१ पउजे
४०।३ कुम्मो
४१।३ मिहो
४२।४ अट्ठं
४६।३ पिट्ठि
४८।३ अयपिर

अतलिक्ख, अतलिक्ख घ, हाटी, जीचू, ख
घुत्त

इय ख
निसिए घ
विहुयणेण जिचू
वीए अचू
पुग्गल क, ख, ग, घ
कतमाणि अचू
अप्पमत्ते अचू
पडिलेहिक्का अचू
पाणत्था अचू
मरुहति अचू
अयपुरो अचू
सतुट्ठो ख, घ
सुभरे क, ग
अतित्तणे ख, ग, जिचू, हाटी
पीडेइ अचू
अणिग्गहिया ख, ग, हाटी
रायणिए अचू
पयुजे क, ख, ग, घ, अचू
कुम्मु, कुम्मे अचू
मिधु अचू
अत्थ अचू
पिट्ठी अचू
अयपुर अचू

वारह

दसवेआलियं-उत्तरज्मयणं

४९।३	वइ	वाय, वय	जिचू, ख
५३।२	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
५५।१	पडिच्छिन्नं	पलिच्छिन्नं	घ, अचू, जिचू
५८।१	मणुन्नेसु	मणुन्नेसुं	क, ख, ग, घ
५९।३	तण्हो	तिण्हो	क
५९।४	सीई	सीत	अचू
६०।३	जसि	जसे	अचू
६३।४	चदिमा	चदिमि	क, ख, जिचू

अध्ययन-९(१)

२।२	अप्पसुए	अप्पसुय	ख, ग
६।१	पावगं	पावक	अचू
१२।१	जस्सतिए	जस्सतिय	अचू
१२।२	तस्सतिए	तस्सतिय	अचू
१४।३	बुद्धिए	बुद्धीए	ख
१५।१	जुत्तो	जुत्ते	क, ग
१७।१	मेहावी	मेहावि	ख

अध्ययन-९(२)

२।३	सिग्घ	सग्घ	अचू
१५।३	सक्कारेति	सक्कारति	अचू
२०।२	हेउहि	हेऊहि	ख, ग
२३।१	वत्ति	चित्ति	क, ख, घ
२३।३	ओह °	ओघ °	क, ख, हाटी

अध्ययन-९(३)

३।१	राइ °	राय °	ख, ग
३।३	निय °	नीय °	घ, जिचू

सम्पादकीय

८१२ दुम्मणिय
१०१२ अपिमुणे

अश्रयन-६(४)

२१४ ० यट्ठिए

७ आरुतेहि

अश्रयन-१०

४१२ निस्सियाण

६१२ इवेज्ज

७१४ वय

८१२ होही

१२११ मसाणे

१२१२ भाया

१८११ वाज्जसि

१८१२ जेणन्नो

चूलिका-१

मू०१स्यान२ इत्तरया

" " ६ पडियाडयण

" " ६ वहाय

" " १८ वेयइत्ता

" " १८ अवेडयत्ता

२११ जया

५१४ मेट्ठि ०

६१३ गल

६१३ गिलित्ता

१०१४ ० निग्य

१०१४ सारिसो

दुम्मणय
अपिस्सुणे

० यत्थोए

आरुहतिहि

निसियाण

भवेज्ज

वड

होहिड

मुसाणे

भाग

वाज्जहि

जेणन्न, जेणन्न

उत्तरिया

पडियायण, पडियायण

वहाए

वेडत्ता

अवेडत्ता

जहा

मिट्ठि ०

गलि

गलित्ता

० नग्य

सारिसो

तेरह

ग

क,ख,ग

अचू

अचू

क,ख,ग

अचू

क,अचू

अचू

अचू

अचू

ख

क,घ,ख,ग

ख,अचू

जिचू,ख,ग,घ

अचू

क,ख,ग,घ

क,ख,ग,घ

क

क,ख,ग,घ, हाटी

ख,घ

ख,ग

क,घ,हाटी

घ,ग

चौव्ह

इसवेआलियं-उत्तरलम्बगं

१११४	परियाय	परियाड	म्
१११४	मुलमा	मुल्ला	क,ख,ग,घ
१११२	दुहोवणी	दुहोविणी	क,ख,ग
१११२	० वनिगो	० वित्तिगो	क,अवृ
१११२	पयलेनि	पयलनि	क,ख,ग,घ
चूलिका-२			
११२	पड ०	पड ०	ख,ग,घ
११३	ओमन्त	उमन्त	अवृ
११३	एको	एको, एगो	अवृ,क,ख,ग,घ
११२	वीर्य	विजियं	अवृ
१३१	पानइ	पन्मड	अवृ
१३३	पासमाणो	पन्समाणो	अवृ
१११	पासे	पन्मे	अवृ
११४	आडन्तओ	आडण्णो	अवृ

अवैकालिक के अवान्तर और ह्यान्तरों की तालिका ऊपर दे, दी गई है ।

उत्तराव्ययन के अवान्तर और ह्यान्तरों की तालिका इस प्रकार है :

अव्ययन-१

२१४	विगीए	विगीइ	उ,वृ
११२	मूयरे	मूयगे	अ
१३३	पकरेन्ति	पकरिन्ति	उ
		पकरन्ति	वृ
११३	कुव्वेज्जा	कुविज्जा	उ
१११४	परन्ध	परत्त	क्वचित्
१३३	रह्से	रह्से	उ,वृ
१२४	पडिन्मुणे	पडिमुणे	उ

सम्पादकीय

२५।२	निरट्ठं
२६।३	एगित्थिए
३६।१	सुकडे त्ति
३६।३	मुल्लट्ठे त्ति
४०।४	तोत्त
४१।४	पुणोत्ति
४२।४	गरह
४४।३	मुक्कय
अध्ययन-२	
सू० ३	दिगिच्छा
८।१	उमिणप्पगियावेण
२४।२	पत्तिमज्जे
अध्ययन-३	
३।४	आहारुम्मोहि
२०।४	सासए
अध्ययन-४	
३।२	क्किच्चइ
५।२	पग्गया
६।२	वीसमे
६।४	भारुण्ड
१३।३	दुग्गहमाणो
अध्ययन-५	
३।२	असड
८।४	भूयगाम
१६।४	वुत्ते व
२२।४	कम्मई

निरत्य

एगित्थिए
मुक्कडि त्ति
मुल्लट्ठि त्ति
तुत्त
पुप्पित्ति
पुणान्ति
गरिह
मुक्कड

दिगल्ला

उमिणप्पगियावेण
पडमज्जे

अहाक्म्मोहि

सासवे

क्कच्चई

परत्य

विस्ससे

भारड

दुग्गहमाणो

असय

भूयगाम

वुत्ते वा

कम्मई

पन्त्रह

क्वचित्

उ

क

उ

चू, ऋ

उ

ऋ

उ, ऋ

अ

अ, उ

उ, ऋ

उ, ऋ

अ, स, मु

उ

उ, क

चू

चू

उ, ऋ, वृ

ऋ

उ

उ, ऋ, वृ

अ, उ, ऋ

अ

सोलह

दसवेमालिय-उत्तरज्मयण

अध्ययन-७

१८।१	सइ	सड	अ
		सय	उ
१८।३	उम्मज्जा	उम्मग्गा	अ, उ, ऋ

अध्ययन-८

६।१	दुपरिच्चया	दुपरिच्चइया	अ, ऋ
१६।४	इइ	इय	अ, ऋ
२०।१	इइ	इय	अ, ऋ

अध्ययन-९

२४।२	वड्ढमाण	वड्ढमाण	चू
५८।२	पेच्चा	पेच्छा	अ,
		पिच्चा	उ, ऋ
		पेच्च	स

अध्ययन-१०

१।१	पण्डुयए	पडुरए	अ
६।१	आउक्काय	आयक्काय	ऋ
८।१	वाउक्काय	वायक्काय	ऋ
१४।३	इक्किक्क	एगेग	बृ
		एकेक्क	अचू
१६।२	आरिअत्त	आयरिअत्त	अ, ऋ
१६।२	पुणरावि	पुणरवि	अ
१७।१	आरियत्तणं	आयरियत्तणं	अ, ऋ
२७।१	विसूइया	विसूचिया	ऋ
३२।३	विसोहिया	विसोहिउ	अचू
३५।२	अकलेवर	अकडेवर	चू, वृ

अध्ययन-११

१०।१	पन्नरसहिं	पन्नरसेहिं	अ, ऋ
१०।३	नीयावत्ती	नीयावित्ती	अ

अध्ययन-१२

१०।३	जाणाहि	जाणाह	अ
१४।३	विहूणा	विहीणा	ऋ
१५।१	तुब्मे	तुम्हे	अ
२१।४	जेगम्हि	जेणाम्हि	अ, उ, ऋ
२६।४	पगरेह	पकरेह	अ, उ, ऋ
४४।३	कम्म	कम्मे	अ, ऋ
४७।४	पत्त	पत्ति	अ, उ, ऋ

अध्ययन-१३

८।२	तुमे	तुम्मे	अ
२६।३	पचालराया	पचालरायं	उ
३१।१	तूरति	तर्गति	उ, ऋ

अध्ययन-१४

३।३	तहोमुयारो	तहेमुयारो	अ
१५।२	किच्च इमं	किच्चमिम	अ, ऋ
२०।३	ओरुज्जमाणा	उ(अव)रुज्जमाणा	उ
२०।४	नेव	नेय	अ
२४।४	अफला	अहला	ऋ
२५।४	सफला	अहला	ऋ
२७।३	जाणे	जाणऽ	उ, ऋ
२८।१	पडिवज्जयामो	पडिवज्जेयामो	उ
२९।२	भिकखायगियाड	भिकखायगियाए	अ
		भिकखायगियाय	ऋ
३०।१	विहूणो	विहीणो	ऋ
३२।२	पय्हामि	पय्हामि	अ
४३।४	रागदोम	रागदोम	अ उ, ऋ, ष

अठासह

दसवेआलियं-उत्तरजभयणं

अभ्ययन-१५

५।२	कुओ	कओ -	उ, ऋ
६।१	जेण पुण	जेणं पुणो	अ
१२।४	वय-काय	वइ-काय	उ

अभ्ययन-१६

सू० ३-	वितिगिच्छा	विचिकिच्छा	ऋ
१।२	थी	इत्थी	अ
३।१	संथव थी.हे	संथवित्थीहि	अ
१२।१	कुइयं रुइय	कुवियं रुदित	अ
१७।१	निअए	निइए	अ, आ, इ
१७।४	तहापरे	तहावरे	ऋ

अभ्ययन-१७

३।१	छुभित्ता	छुभिम्ता	उ
१३।३	राय	राय	स
१३।४	पेच्चत्थं	पिच्चत्थं	अ, उ, ऋ
२०।४	मणो	मणं	स
२७।२	मिच्छादिट्ठी	मिच्छदिट्ठी	वृ
३६।२	महिद्धिओ	महिद्धिओ	स
४२।२	निसूरणो	निसूदणो	उ
		निसूअणो	ऋ
५३।४	हवइ	भवइ	अ
५३।४	नीरए	नीरइ	अ

अभ्ययन-१९

६।२	अणिमिसाए	अणिमिसाइ	ऋ
१८।२	अपाहेओ	अपाहेज्जो	अ
		अपाहिओ	ऋ
		अपाहिज्जो	स

सम्पादकीय

उन्नीस

१८१४	तण्हाए	तिण्हाड	उ
२०१२	सपाहेओ	मपाहेजो	अ
		सपाहिजो	ग
२०१४	नण्हा	निण्हा	उ
२२१४	अवउज्झड	अवयज्झड	अ
२३१४	तुव्भेहि	तुहेहि	अ
२६१३	परिच्चाओ	पगिन्नाओ	उ
३५१२	महाभरो	मट्टभरो	उ, ऋ
३५१३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८११	अही	अहे	अ
५२१२	सिम्बलि	मावलि	अ
५४१३	फालिओ	फाडिओ	अ, उ
७७११	एगभूओ	एगवभूओ	आ
८५१३	अम्म	अम्भ	उ

अध्ययन २०

३५११	ततो हं	तोह	ऋ
३७१२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४१२	पसवई	पसूयई	अ
१५१८	गग्ग	गग्गि	उ

अध्ययन-२२

१३१२	उत्तिमाए	उत्तमाड	ऋ
४४१२	दिच्छमि	दच्छमि	क्वचित्
४८१२	मजयाए	मंजटाए	अ

सम्पादकीय

इक्कीस

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ, ऋ
६।२	एगेऽत्थ	एगित्थ	उ
-		एगत्थ	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ, ऋ
३४।४	एवमब्भतरो	एमेवब्भतरो	अ
		एवमब्भितरो	उ, ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोडत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ, स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहुइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमग्गे	सिद्धिमग्ग	अ, उ, ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादसण	मिच्छादरिसण	अ
सू० ८	अपुरक्कार	अपुक्कार	अ
सू० १५	थयथुइ	थयथुइ	अ, उ, ऋ
सू० ३३	विणियट्ठणयाए ण	विणिवट्ठणयाए ण	अ, उ
सू० ७३	आणापाणू	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्जं	वेयणिय	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छासु व	रत्थासु य	अ
२०।१	पोरुसीणं	पोरिसीण	अ

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्ख	अ
-----	---------	---------	---

वाईस -

दसवेआलियं-उत्तरज्जमयण

अध्ययन-३२

१३।१	विराला	विडाला	वृ
१५।३	जोगं	जोगं	अ
		जुगं	उ
२५।२	तंसि कखणे	तस्सि खणे	अ
		तर्णिग खणे	उ
२६।१	परिगहे	परिगहंमि	उ, ऋ
२६।४	आययई	आइयई	अ
३१।४	समाययन्तो	समाइयन्तो	अ
३७।२	अकालियं	आकालियं	अ
३८।२	तंसि कखणे	तम्हि खणे	अ
३८।४	अवरज्जम्ह	अवरज्जम्ह	स
३९।१	रुडरंसि	रुइयंसि	अ
५१।२	तंसि कखणे	तंसी खणे	अ
६५।२	अतालसे	आयालिसे	अ
७६।४	गाहगिहीए	गाहगिहीए	अ, ऋ
१०३।४	हिरिमे	हरिमे	उ, ऋ
१०८।३	दंसण	दरिसण	उ, ऋ

अध्ययन-३३

६।२	दंसणे	दरिसणे	उ, ऋ
११।४	अतोमुहुत्तं	अत मुहुत्त	म

अध्ययन-३४

७।१	हिगुलुय	हिगुल्ला	अ, ऋ
१६।२	सिरीसकुसुमाणं	सरीसकुसमाणं	ऊ, ऋ
३१।४	गुत्तिहि	गुत्तिमु	उ, ऋ
३३।४	हुत्ति	ह्वत्ति	उ, ऋ

साम्नादकीय

तेईस

३४।२ तेत्तीम

तित्तीसा

न

६०।१ अंत

अतो

उ,न

अ ययन-३५

४।१ चितहर

चितधर

उ,न

४।३ पडुमल्लोय

पडमल्लोय

अ

८।१ कुज्जा

कुन्विज्जा

उ,न

२१।१ निम्ममो निरहकारो

निम्ममे निरहकारे

अ,आ,इ,ग

अध्ययन-३६

११।१ पुहुत्तेग

पुहुत्तेण

म

३६।१ गुरु

गरु

म

५५।३ योन्दि

योदि

अ

वुदि

उ

वुदि

श्रु

६१।१ पण्डुरा

पण्डरा

अ

६६।३ मुमुण्डो

मुसण्डो

अ

१४६।४ द्विकुणे कुकुणे

द्विकुणे कुकणे

उ,न

१४७।१ सिगिरीटी

सिगिर्दि

अ

१४७।२ नदावत्ते

नदापत्ते

अ

१४७।२ विच्छिण

विच्छिण

उ

१४७।४ विरली

विरिलो

न

२०६।३ दिमा

दिमि

न

२२८।४ चडहन

चोडम

अ

२२७।४ पण्वीम

पण्वीम

उ,न

२४०।१ अउणत्तीम

अउणत्तीम

म

प्रस्तुत पाठ

दशवैकालिक का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका मुख्य आधार 'ख' प्रति है। किन्तु पूर्णतः मुख्यता किसी की भी नहीं है। आदि से अन्त तक कोई भी प्रति शुद्ध नहीं मिलती। ५।२।१८ में 'कुमुदुप्पल नालिय' यह पाठ अगस्त्यचूर्णि में है। हमने वही स्वीकृत किया है। चूर्णि की भाषा में 'त' और 'ध' की बहुलता है। जैसे—इत्थितो (इत्थिओ २।२), सतणाणि (सयणाणि २।२), जति (जइ २।६)। 'त' का लोप प्रायः नहीं किया गया है।^१ ये प्रयोग प्राचीन अवश्य है पर हम लोग प्राकृत व्याकरण की सीमा में घिरे हुए हैं, इसलिए वे हमारे लिए अपरिचित से हो गए हैं। 'ध' को 'ह' भी प्रायः नहीं किया गया है।^२ जैसे—मधुकार (महुकार १।५), साधीणे (साहीणे २।३)। सप्तमी विभक्ति के स्थान में तृतीया का प्रयोग हुआ है। जैसे—अहागडेहिं (अहागडेसु १।४)।

उत्तराध्ययन का पाठ भी आदि से अन्त तक किसी एक प्रति के आधार पर स्वीकृत नहीं किया गया है। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त सभी आदर्शों में ३६।६५ का एक शब्द 'पुहत्तेण' है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ 'पुहुत्तेण' होना चाहिए। बृहद्बृत्ति (पत्र ६८६) में इसके तीन अर्थ किए गये हैं—महत्त्व, बहुत्व और सामस्त्य। ये तीनों 'पृथु' शब्द के अर्थ हो सकते हैं, 'पृथक्' शब्द के नहीं। अभिधान चिन्तामणि कोष (६।६५) में पृथु शब्द के पर्यायवाची नामों में 'महत्' और 'बहु'—दोनों शब्द हैं। बृहद्बृत्ति (पत्र ६८६) में 'पृथक्त्वेन' मुद्रित हुआ है, वह सम्भवतः लिपि-दोष के कारण हुआ है। उसका मुद्रित मूल पाठ 'पुहत्तेण' है। उक्त अर्थ के पर्यालोचन और उपलब्ध मुद्रित-पाठ के आधार पर हमने 'पुहत्तेण' पाठ स्वीकृत किया है।

इस प्रकार और भी अनेक पाठ चूर्णि और बृहद्बृत्ति के अर्थालोचनपूर्वक स्वीकृत किए गए हैं।

१—हेमशब्दानुशासन, ८।१।१७७।

२—वही, ८।१।१८७।

चौतीसवें अध्ययन में 'पद्मलेख्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते हैं—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नहीं बनता। गोम्मटसार के लेख्या मार्गणाधिकार में पद्मलेख्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनों शब्द प्रयुक्त हुए हैं।^१ हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योंकि पाठ-संशोधन में प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श में 'पम्म' या 'पउम' शब्द नहीं मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों सूत्र बहुचर्चित रहे हैं। अनेक आचार्यों ने अपनी-अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर इन्हें उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होते हैं। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछ उदाहरण ये हैं :—

मूल पाठ—

बितहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।

तम्हा सो पुटो पावेणं कि पुण जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

बितहं पि तहामुत्ति, जो तहा भासए नरो ।

सो बि ता पुटो पावेणं, कि पुणं जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसिज्जा जस्स कप्पई ।

जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५६)

बृहत्कल भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पई ।

जराए अभिभूयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो ॥

一五三

सविज्ञानं वा वि बुद्ध्या परिहृतमनुवृत्तिर्युक्तं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[Faint, illegible handwriting]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

— 三三 —

[illegible]

四 五 六 七 八 九

三 求 証 據

Handwritten signature

[illegible]

आचार्यजी के प्रश्नोत्तरों का संग्रह

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

21 22 23 24 25

पाठान्तर की लम्बी पंक्तियाँ

—श्री श्री गणेशाय नमः

- (१) कलशार्पणं
(२) विनियोगः
(३) भूतपूजा, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, नारायणः
(४) महादेव, नारायण, विष्णु, ब्रह्मा

- (३) परामर्श—

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हें संकलित कर लिया गया। वे आगमों की व्याख्याओं में अब भी सुरक्षित हैं।^१

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल में भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलों में मतान्तरों का उल्लेख हुआ है।^२ जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनसे बहुत भिन्न पढ़ जाते हैं। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ़ जाते हैं। जिन श्लोकों की व्याख्या टीका में नहीं है, उन्हें दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते हैं।

चूर्णिकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका में जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नहीं जान पड़ता। वह लिपिकर्त्ता से सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्रायः मुनि रहे हैं। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल में जो प्रासंगिक श्लोक और गाथाएँ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे ही लम्बे काल में मूल में घुस जाती। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयल्लक्कं कायल्लक्कं, अकप्पो गिहिभायणं ।

पलियं कनिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ (हाटी, पत्र १६६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४१२ के पञ्चात् एक गाथा मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

संकप्पो सरंभो, परितावकरो भवे समारभो ।

आरंभो उद्धवओ, सुद्धनयाणं तु सन्वेसि ॥

ऐसे पाठान्तरों में स्मृतिभ्रंश का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शों में स्मृति-दोष के कारण अक्षरों व

१—जिनदास चूर्णि, पृष्ठ २०४ :

नागज्जुणिया तु एवं पढंति—‘एवं तु अगुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए’ ।

२—देखो—दशवैकालिक, भाग २ में ३११३ ; ५११७ ; ६१५४ के टिप्पण ।

कही-कहीं श्लोको का विपर्यय हो जाता । उसके उत्तरवर्ती लेखक भी उसी का अनुसरण करते और पाठ-भेद स्थिर हो जाता ।

(२) लिपि-दोष

पाठ-भेद का सबसे प्रमुख कारण लिपि-दोष रहा है । कालक्रम से लिपि में परिवर्तन होता रहा है । पूर्ववर्ती लिपि उत्तरवर्ती लोगो से ठीक-ठीक नहीं पढ़ी जाती और प्रतिलिपि करने वाले सभी विद्वान् नहीं होते । फलस्वरूप अक्षरो का विपर्यय हो जाता है । ऐसा बहुधा हुआ है ।

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

जब आगमो को कण्ठस्थ रखने की परम्परा थी, तब उनकी व्याख्याएँ भी कण्ठस्थ रहती थी । कुछ सूत्र-स्पर्शी व्याख्याएँ पाठ के साथ-साथ चलती थी । वे कालक्रम से मूल के साथ जुड़ गईं । यह निष्कर्ष अगस्त्य चूर्णि से सहजतया निकल आता है । उसके अनुसार दशवैकालिक चतुर्थ अध्ययन के त्रस-प्रकरण (सूत्रां ९) में 'जे य कीडपयगा, जा य कुन्धुपिवीलिया, सव्वे देवा'—ऐसा पाठ है । चूर्णिकार ने लिखा है कि यहाँ 'कीड' द्वीन्द्रिय जाति का प्रतीक है, इसलिए उसके द्वारा द्वीन्द्रिय जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए । इसी प्रकार पतग और कुन्धु भी अपनी-अपनी जाति के प्रतिनिधि हैं । उनके द्वारा उनकी जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए ।^१ 'सव्वे बेइदिया, सव्वे तेइदिया, सव्वे चउरिदिया, सव्वे पंचिदिया'—ये व्याख्या के शब्द आगे चल कर मूल पाठ बन गए । इसलिये टीकाकार ने उन्हें मूल मानकर उनकी व्याख्या की है ।^२

१-अगस्त्य चूर्णि :

कीडपयणेण तज्जातीय ग्रहणमिति सव्वे बेइदिया घेप्पन्ति । पयंग ग्रहणेण चउरिदिया । कुन्धु पिवीलियाभिहाणेण तिदिया ।

२-हारिसम्वीय टीका, पत्र १४२ :

ये च कीटपतङ्गा इत्यत्र कीटाः—कृमयः, 'एकग्रहणे तज्जातीयग्रहण'मिति द्वीन्द्रियाः शङ्खादयोऽपि गृह्यन्ते पतङ्गाः—शलमा, अत्रापि पूर्ववच्चतुरिन्द्रियाः सर्व एव गृह्यन्ते, अत एवाह—सर्वे द्वीन्द्रिया—कृम्यादयः सर्वे त्रीन्द्रियाः—कुन्धादयः, सर्वे चतुरिन्द्रियाः—पतङ्गादयः । सर्वे पञ्चेन्द्रियाः सामान्यतः ।

इसी प्रकार महाव्रतो के सूत्र-पाठ में भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है ।^१

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ में 'पंचमुट्टीहि' ऐसा पाठ आया है। वास्तव में यह पाठ 'पंचट्टा' था। 'अट्टा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पंच अट्टा अर्थात् पंचमुष्टि। पंचट्टा शब्द अपरिचित था। बृहद्बुक्ति (पत्र ४६२) में पंचट्टा का अर्थ पंचमुष्टि है। कालान्तर में यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमों में भी ऐसे अनेक उदाहरण हमें प्राप्त हुए हैं।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'सचीय संग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १२-१३ व प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ५३ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥१० दशवैकालिक समाप्तमिति ॥वा॥ सवत् १५०३ वर्षे आपाद मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ॥ दशवैलिखितं ॥ सुन्दरसवेगगणि योग्यं ॥

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सचीय संग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३८ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १३ व प्रत्येक पंक्ति में ४४ से ४६ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों

१-आगत्य चूर्ण :

केति सुत्तमिथं पढन्ति, केति वृत्तिगतं विसेसिति, जहा से तं पाणातिवाते
चउच्चिहे तं जहा दग्धतो, खेततो, कालतो, भावतो ।

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

सं० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषितं ॥ चिर नंदतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ८६ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५६१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि संताने श्री खरतर गच्छेण नमोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरामणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्रसूरि तत्पट्टप्रतिष्ठित श्री जिनभद्रसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य संगो सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभोगैः वा० आणद नदन गणाय प्रसादी कृतेयं प्रति ।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोडिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी में लिखी गई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्वधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥

निर्युक्तिक्कार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया परिस्त संसारियाय जे भव्वा । ते किर पढति एए छत्तीसं उत्तरज्जाए तम्हा जिण पन्नत्ते । अणंतगम पज्जवेहिं संजुत्ते । अब्भाए जह जोग । गुरुप्पसाया अहिज्जिजा ॥२॥ जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्तं अच्छ व ॥ भासेइय भवियजणो

सो पालइ निज्जरा विज्जला ॥ ३ ॥ जस्साढत्ती एए कह विसमप्यति विग्घर-
हियस्स । सोलक्खिज्जड भव्वो ॥ पुव्वरिसी एव भासति ॥ ४ ॥ छ ॥ गुभं
भवतु ॥ श्रीः ॥

उ : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारगहर की है। अनुमानतः
सं० १५०० में लिखी हुई है। इसके पत्र ५९ व पृष्ठ ११८ हैं। पत्र १० इंच
लम्बे और ४। इंच चौड़े हैं। पत्र के दोनों तरफ। इंच का मार्जिन है। पाठ
और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए हैं। श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ
लाल स्याही में हैं। दोनों तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और
चारों तरफ अवचूरी है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ८ और अधिकतम १५
पंक्तियाँ हैं। प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥ छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ ॥ ए प्रति
भ० श्री विद्यासागर सूरि पूसरीया शिष्य गुणवाय कर्मसागरे प्रति लिखी
कलकवल रहित सह ।

ग : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारगहर की है। विक्रमाब्द
१५३५ में लिखी गई है। इसके पत्र ७९ व पृष्ठ १५८ हैं। प्रत्येक पत्र १०।
इंच लम्बा और ४। इंच चौड़ा है। यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित
है। इसके श्लोकांक तथा दोनों तरफ का मार्जिन लाल स्याही में हैं। प्रत्येक
पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं। अवचूरी मार्जिन
तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग में लिखी हुई है। अवचूरी के अक्षर से
पाठ के अक्षर लगभग ड्योढ़े बड़े हैं। प्रति के अंत में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ गुभं भवतु ॥ १॥

सं० १५३५ वर्ष आसोज सुदि ५ भोमे अद्येह श्री ।

स : उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलालजी दुधोड़िया के संग्रहालय की है।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ है किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ गताब्दी में लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही खिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर में ही लिखा हुआ है।

सु : सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

वृ : बृहद्वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार-ग्रन्थांक ३३।

चू : चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठ देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार, ग्रंथांक ३३।

मोहमयीपत्तने वी० सम्बत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ, अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का

अनुसन्धान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है ।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पा और अधिक भारी बनूँ ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है ।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है ।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्ता से लगे रहे हैं । मुनि हनुमानमलजी (सरदारगढ़) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है ।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है ।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्द्रजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के संयोजक श्री श्रीवन्दजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दपतरी का भी अविरल योग रहा है । आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है । वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है ।

बीदासर (राजस्थान)

—मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

-

11

11

भूमिका

भूमिका का विषयानुक्रम

१. आगम सूत्रों का वर्गीकरण	पृष्ठ १
२. मूल-सूत्र	२
३. मूल-आचार और मूल-सूत्र	३
४. मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष	४
५. अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र	६
६. मूल-सूत्रों की संख्या	६
७. मूल-सूत्रों का विभाजन-काल	८
८. दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान	९
९. दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु	९
१०. दशवैकालिक : निर्यूहण-कृति	११
११. दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्ग	१२
१२. दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से	१३
१३. दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ	१४
१४. उत्तराध्ययन	१६
१५. उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व	२१
१६. क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर को अंतिम वाणी है ?	२६
१७. महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र	३१
१८. उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु	३३
१९. उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण	३७
२०. उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्ग	३७
२१. उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से	३८
२२. उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ	४३
२३. उपसंहार	४६

भूमिका

१ : आगम-सूत्रों का वर्गीकरण

जैन आगमों का प्राचीनतम वर्गीकरण पूर्व और अंग के रूप में प्राप्त होता है। पूर्व सख्या में चौदह थे^१ और अंग बारह^२।

दूसरा वर्गीकरण आगम-संकलन-कालीन है। उसमें आगमों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य।^३

तीसरा वर्गीकरण इन दोनों का मध्यवर्ती है। उसमें आगम-साहित्य के चार वर्ग किए गए हैं—(१) चरण-करणानुयोग, (२) धर्मकथानुयोग, (३) गणितानुयोग और (४) द्रव्यानुयोग।

एक वर्गीकरण सबसे उत्तरवर्ती है। उसके अनुसार आगम चार वर्गों में विभक्त होते हैं—(१) अंग, (२) उपांग, (३) मूल और (४) छेद।

नंदी के वर्गीकरण में मूल और छेद का विभाग नहीं है। उपांग शब्द भी अर्वाचीन है। नंदी के वर्गीकरण में इस अर्थ का वाचक अनंग-प्रविष्ट या अंग-बाह्य शब्द है।

आगमों का एक वर्गीकरण अध्ययन-काल की दृष्टि से भी किया गया है। दिन और रात के प्रथम एवं अन्तिम प्रहर में पढ़े जाने वाले आगम 'कालिक' तथा दिन और रात के चारों प्रहरों में पढ़े जाने वाले आगम 'उत्कालिक' कहलाते हैं।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों 'मूल-सूत्र' कहे जाते हैं।

१—समवायाङ्ग, समवाय १४.

चउवस पुव्वा ५० तं०—

उपायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं ।

अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च ॥

सत्तप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च ।

कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खणं भवे नवमं ॥

विज्जाअणुप्पवायं अवंग्गपाणाउ वारसं पुव्वं ।

तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह विदुसारं च ॥

२—वही, समवाय १३६ :

दुवालसंगे गणपिडगे ५० तं०—आयारे सुयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती
णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ
पह्वावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए ।

३—नंदी, सूत्र ४३ :

अह्वा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं तंजहा—अङ्गयविट्ठं अङ्गवाहिरं च ।

२ : मूल-सूत्र

दशवेकालिक और उत्तराध्यायन गणवर-कृत नहीं हैं, इसलिए अंग-बाह्य है। इन्हें 'मूल' क्यों माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अनेक विद्वानों ने 'मूल' शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की हैं। 'दशवेकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन' में इनका उल्लेख हम कर चुके हैं।

प्रो० विन्टरनिट्ज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ में स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ हैं। इनमें 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हें 'मूल-सूत्र' कहा गया।^१ यह प्रामाणिक नहीं है। प्रो० विन्टरनिट्ज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' में सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नहीं हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग में नहीं आ सकती।

डॉ० सरपेन्डियर^२, डॉ० ग्यारीनो^३ और प्रो० पटवर्धन^४ ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'महावीर महावीर के मूल शब्दों का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१ :

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear. Generally the word mūla is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary. Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "Mūla-texts".

२—दी उत्तराध्यायन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२.

In the Buddhist work Mahāvīyutpatti 245. 1265 mūlagrantha seems to mean 'original text'. i.e. the words of Buddha himself. Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mūla in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself.

३—ए रिलीजियस द'जैन, पृ० ७९.

The word Mūla-Sūtra is translated as "trattés originaux".

४—दी दशवेकालिक सूत्र : ए स्टडी, पृ० १६ :

We find however the word Mūla often used in the sense of "original text", and it is but reasonable to hold that the

भगवान् महावीर के मूल शब्दों के कारण ही किसी आगम को 'मूल' संज्ञा दी जाय तो वह आचारंग के प्रथम श्रुतसंक्षेप को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दों का संकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक बनते हैं तथा आगमों का अध्ययन इन्हीं के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० सुब्रह्म का अभिमत भी यही है।^१

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणों—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।^२ उसमें भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक संगृहीत हैं।^३

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense. Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text, i.e., 'the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)'" And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra

१—इसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३ :

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjha-yana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjuti it forms a small group of texts called Mūlasutta. This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'अमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विग्रह की सातवीं शताब्दी के आस-पास माना है।

३—मूलाचार, ४१६९

मिलाइए—उत्तराध्ययन, ३६१२५७

" ४१७०

" " ३६१२५८

" ४१७२

" " ३६१२६०

" ४१७३

" " ३६१२६१

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओषधनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रों' की विषय-वस्तु से जो अधिकार तुलनीय है, वे ये हैं—

(१) मूल-गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओषधनिर्युक्ति
(६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) षडावश्यकधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नंदी-चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में बारह अंग होते हैं—दो पैर, दो जूँघाएँ, दो ऊरु, दो गात्रार्ध (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, ग्रीवा और शिर। आगम-साहित्य में जो बारह अंग हैं, वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अंग हैं।^१ अंग-बाह्य श्रुत-पुरुष के उपांग स्थानीय हैं। यह परिकल्पना अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नहीं है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वीं शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वीं शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य—ये दो ही परिपार्श्व रहे हैं। इन दोनों आचार्यों ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमें कोई नई बात नहीं जोड़ी है।^२ आचार्य मलयगिरि ने तो अंग-प्रविष्ट तथा आचारांग आदि को भी 'मूल-भूत' कहा है।^३ श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियों में अंग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१-नंदी चूर्णि, पृ० ४७ :

इच्छेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगमागच्छितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ ।

२-नंदी, हरिभद्राय वृत्ति, पृ० ९० ।

३-नंदी, मलयगिरिया वृत्ति, पत्र २०३ :

यद् गणधरदेवकृतं तदंगप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थः, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिकं श्रुतमुपरचयन्ति ।

१—दायाँ पैर	=	आचारांग
२—बायाँ पैर	=	सूत्रकृतांग
३—दाईं जंघा	=	स्थानांग
४—बाईं जंघा	=	समवायांग
५—दायाँ ऊर	=	भगवती
६—बायाँ ऊर	=	ज्ञाताधर्मकथा
७—उदर	=	उपासकदशा
८—पीठ	=	अन्तकृद्दशा
९—दाईं भुजा	=	अनुत्तरोपपातिकदशा
१०—बाईं भुजा	=	प्रश्नव्याकरण
११—ग्रीवा	=	विपाक
१२—शिर	=	दृष्टिवाद

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचारांग और सूत्रकृतांग है ।^१

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियों में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है । उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र हैं—आवश्यक, दशवैकालिक पिण्डनिर्मुक्ति और उत्तराध्ययन । नवी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थो (या चूलिका-सूत्रो) के रूप में 'मूल' में भी नीचे प्रदर्शित किया है ।^२

पैंतालीस आगमों को प्रदर्शित करने वाली श्रुत-पुरुष की रेखाकृति बहुत अर्वाचीन है । यदि इनकी कोई प्राचीन रेखाकृति प्राप्त हो तो प्रस्तुत विषय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती है । जिस समय पैंतालीस आगमों की मान्यता स्थिर हुई, उसके आस-पास या उसी समय, संभव है श्रुत-पुरुष की स्थापना में भी परिवर्तन हुआ । चूर्णि-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' (चरण-स्थान) में आचारांग और सूत्रकृतांग थे । उत्तर-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आ गए । इन्हें 'मूल-मूल' मानने का यह सर्वाधिक संभावित हेतु है ।

१—श्री आगम पुरुषर्तुं रहस्य, पृष्ठ ५० के सामने (श्री उदयपुर, मेवाड़ के हस्त-लिखित भण्डार से प्राप्त प्राचीन) श्री आगम पुरुष का चित्र ।

२—यही, पृष्ठ १४ तथा ४९ के सामने वाला चित्र ।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचारांग के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढ़ा जाने लगा।^१

प्राचीन काल में आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शास्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'पञ्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।^२

प्राचीन काल में आचारांग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डवैपणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।^३

ये तीनों तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि एक समय आचारांग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचारांग मूल-भूत-धा, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। संभव है आदि में पढ़े जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियों के उद्बोधक होने के कारण इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की संख्या

१—उपाध्याय समयमुन्दर ने 'मामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १६७२ में हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) दशवैकालिक, (२) ओषनिर्युक्ति, (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१—अथवहार भाज्ज, उद्देशक ३, गाथा १७६ :

आयारस्स उ उवरि, उत्तरज्जम्भयणा उ आसि पुब्बं तु ।

दसवेआलिय उवरि, इयाणि कि ते न होती उ ॥

२—वही, उद्देशक ३, गाथा १७४ .

पुब्बं सत्यपरिणा, अधीय पढियाइ होउ उवट्ठवणा ।

इण्हिं छज्जीवणया, कि सा उ न होउ उवट्ठवणा ॥

३—वही, उद्देशक ३, गाथा १७५ .

वितितंमि वंसचरे, पंचमउद्देश आमगंधम्मि ।

सुत्तंमि पिडकल्पी, इइ पुण पिडेसणाएओ ॥

२—भावप्रसूति (१८ वीं शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओषनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक ।^१ ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामों से भिन्न हैं । इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है ।

३—स्थानकवासी^२ और तेरापन्थ^३ सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रों को 'मूल' माना गया है ।

४—आधुनिक विद्वानों ने 'मूल सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० वूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते हैं ।

(ख) डॉ० सरपेन्डियर, डॉ० विन्टरनिट्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते हैं ।

(ग) डॉ० सुक्षिग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते हैं ।^४

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओषनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते हैं ।^५

उक्त सब अभिमताओं को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओषनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नंदी ।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है । अनंग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए हैं । उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है । दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अंतर्गत हैं, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है । इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नहीं है ।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओषनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि ।

२—श्री रत्नमुनि स्मृति गन्य, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७ ।

३—श्रीमज्जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४ ।

४—ए हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटेरेचर ऑफ दी जैस, पृष्ठ ४४-४५ ।

५—वही, पृ० ४८ ।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनों आगम नहीं है, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ है। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अव्ययन—पिण्डवैकालिक—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ-समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंश है। विस्तृत कलत्र होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।^१ इसलिए इन्हें 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार करना अधिक संगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नंदी—ये दोनों चूलिका-सूत्र हैं। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नहीं है। सम्भव है बत्तीस सूत्रों की मान्यता के साथ (वि० १६ वीं शताब्दी में) इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नंदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई भीमासा नहीं की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति में मूल-सूत्रों की कोई चर्चा नहीं है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति में भी उनकी कोई चर्चा नहीं है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना नहीं हुई थी।

घनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवीं शताब्दी है। उन्होंने 'श्रावक-विधि' में पैंतालीस आगमों का उल्लेख किया है।^२ इससे यह अनुमान होता है कि घनपाल से पहले ही आगमों की संख्या पैंतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वीं शताब्दी) कृत विचारसार-प्रकरण में भी आगमों की संख्या पैंतालीस है, किन्तु इनमें 'मूल-सूत्र' विभाग नहीं है। उसमें ग्यारह अग और चौतिस ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।^३

१-आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१ :

साम्प्रतमोघनिर्युक्तिर्वक्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता ।

२-समयसुन्दर गणी विरचित श्री गाथासहस्री मे घनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उद्धरण है। उसमें पाठ आता है—पण्यालीसं आगम (श्लोक २९७, पृ० १८) ।

३-विचारलेख, गाथा ३४४-३५१ ।

प्रभावक-चरित में अंग, उपाग, मूल और छेद—आगमो के ये चार विभाग प्राप्त हैं।^१ यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हो चुकी थी। फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।^२

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमो में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनों परम्पराओं के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है। दिगम्बर-साहित्य में अंग-वाह्य के चौदह प्रकार बतलाए गए हैं। उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है।^३

श्वेताम्बर-साहित्य में अंग-वाह्य श्रुत के दो मुख्य विभाग हैं—(१) कालिक और (२) उत्कालिक। कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान दशवैकालिक का है।^४

९ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अव्ययन हैं और चूँकि वह विकाल में रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया। इसके कर्त्ता श्रुतकेवली शय्यम्भव हैं। अपने पुत्र—गिण्य मनक के लिए उन्होंने इसकी रचना की। वीर संवत् ७२ के आस-पास 'जम्पा' में इसकी रचना हुई।

१—प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध :

ततश्चतुर्विधः कार्योऽनुयोगोऽस्तः परं मया ।

ततोऽङ्गोपाङ्गमूलाख्यग्रन्थच्छेदकृतागमः ॥२४१॥

२—सामाचारी शतक, पत्र ७६ ।

३—(क) कषायपाहुड (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५ :

दसवेयालियं उत्तरज्ज्मयणं ।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७ :

दसवेयालं च उत्तरज्ज्मयणं ।

४—नंदी, सूत्र ४३ :

से किं तं कालियं? कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्ज्मयणाइं . ।

से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अगेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं . ।

इसकी दो चूलिकाएँ हैं। अध्ययनो के नाम, श्लोक, सूत्रा और विषय इस प्रकार है —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुमपुष्पिका ^१	५		धर्म-प्रशंसा और माधुकरी वृत्ति ।
२. धामप्यपूर्वक	११		सयम में वृत्ति और उसकी साधना ।
३. क्षुल्लकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवेक ।
४ धर्म-प्रज्ञप्ति			
या षड्जीवनिका	२८	२३	जीव-सयम तथा आत्म-संयम का विचार ।
५. पिण्डवैपणा	१५०		गवैपणा, ग्रहणैपणा और भोगैपणा की शुद्धि ।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण ।
७. वाक्यशुद्धि	५७		भाषा-विवेक ।
८ आचार-प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान ।
९. विनय-समाधि	६२	७	विनय का निरूपण ।
१०. सभिक्षु	२१		भिक्षु के स्वरूप का वर्णन ।
चूलिका			
१ रतिवाक्या	१८	१	सयममे अस्थिर होने पर पुन स्तिथी-करण का उपदेश ।
२. विविक्तचर्या	१६		विविक्तचर्या का उपदेश ।

निर्युक्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है । इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है । वह दो प्रकार का होता है—
(१) चरण—त्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विशुद्धि आदि ।^२

धवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है ।^३ अंगवर्णन के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, में इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ०

११ पा० टि० २ ।

२-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४ :

अपुह्वतपुह्वताङ्गं, निद्रिसिञ्जं एत्थ होइ अहिगारो ।

चरणकरणाणुओगेण, तस्स दारा इमे हुंति ॥

३-षड्खंडागमः, सत्प्ररूपणा (११११), पृ० ९७ :

दसवेआलियं आयाय-गोयर-विहि वण्णेह ।

है ।^१ तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय मे इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यनियो के आचार का कथक कहा है ।^२

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूलरूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाना है, किन्तु आचार्य शन्यभ ने आचार-गोचरकी प्रह्मणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो का निरूपण किया है । जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान हैं ।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतंत्र और निर्यूहण । दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतंत्र नहीं । आचार्य शन्यभ श्रुतकेवली थे । उन्होंने विभिन्न पूर्वो से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है ।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए हैं ।^३

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशांगी से किया गया है ।^४ किस अध्ययन का किस अंग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है । किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृतांग १।६ से प्राप्त होता है । चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृतांग १।११।७,८ तथा आचारांग १।१।१ का क्वचित् संक्षेप और क्वचित् विस्तार है । पाँचवें अध्ययन का विषय आचारांग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१-अंगपण्णत्ति, ३।२४ :

जदि गोचरस्स विहि, पिडविसुद्धि च जं पल्लवेहि ।

दसवेअल्लिय सुत्तं, वह काला जत्थ संबुत्ता ॥

२-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७ :

वृक्षकुसुमादीनां दशानां भेदकथकं यतीनामाचारकथकंच दशवैकालिकम् ।

३-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६, १७ :

आयप्पवायपुत्त्वा, निज्जूढा होइ धम्मपन्नन्ती ।

कम्मप्पवायपुत्त्वा, पिडस्स उ एसणा तिविहा ॥

सच्चप्पवायपुत्त्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ ।

अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्त्यूओ ॥

४-वही, गाथा १८ .

वीओऽवि अ आएसो, गणिपिडमाओ दुवालसंगाओ ।

एअं किर णिज्जूढं, मणगम्स अणुगहट्ठाए ॥

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के “वयल्लक्कं कायल्लक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियं निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं ॥” श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ में मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५।६८, ६०१, ६१५ से मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।^१

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कंध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमशः इसके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत में वह दशवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय में भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक उल्हापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवातिक (राजवातिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कहीं भी विवरण प्राप्त नहीं होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्युद्धं—इतना मात्र संकेत देते हैं। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्राचीन आगम अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। उन्हें व्याकरण की कसौटी पर कसने का हमारा प्रयत्न भी सम्मान्य नहीं है। जिन व्याकरण परम्पराओं और नियमों के संदर्भ में आगम लिखे गए, वे परम्पराएँ और नियम अर्वाचीन काल में परिवर्तित हो गए। इसलिए उनमें परस्पर पूर्ण-सामंजस्य प्राप्त नहीं होता। व्याकरण-विमर्श की हमारी दृष्टि इतनी ही हो सकती है कि हम प्राचीन रचनाओं में अर्वाचीन व्याकरणों से जो अतिरिक्तता पाते हैं, वह सुलभ हो जाए।

१—(क) दशवैकालिक, ४। सूत्र ९ : मिलाइये—आचारांग, १।१।६।४९।

(ख) दशवैकालिक, ५।२।२८ : मिलाइये—आचारांग, १।१।२।४।

(ग) दशवैकालिक, ६।५३ : मिलाइये—सूत्रकृतांग, १।२।२।१८।

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते हैं—
वत्यश्वमलंकारं (२१२), आहारमार्डणि (६१४६), निक्खम्ममाणए (१०११) ।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते हैं—पीढए (७१२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है । बुद्धवयणे (१०१६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है ।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाड ति वुच्चड (२१२)—यहाँ 'भुजन्ति' बहुवचन है और 'से चाड' एकवचन है ।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं । विस्तार के लिए देखें—
"दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन", अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श ।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के संवलित प्रयोग हैं । 'हृत्यंसि वा', 'पार्यंसि वा' (४१ सूत्र २३) में अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप बनते हैं—'हृत्ये, हृत्यम्मि' ।^१ 'हृत्यंसि' यह अर्धमागधी में बनता है । 'जे' (२१३), 'करेमि' (४१ सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है ।^२

मणसा (८१३) जोगसा (८१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग हैं । प्राकृत में ये नहीं मिलते ।

बह्वे (७१४८)—बहु शब्द का प्रथमा का बहुवचन, जसोकामी (२१७), दोच्चे (४१ सूत्र १२), तच्चे (४१ सूत्र १३), सोच्चा (४१११), लद्धूण (५१२१४७), ऊसंढं (५१२१२५), संवुड (५११८३), परिवुड (११११५), कड (४१ २०), कट्टु (चूलिका १११४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागधी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आप्रप्रयोग कहा है । हियद्वयाए (४१ सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ में 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नहीं है । तेइंदिया में 'ति' का 'ते' हुआ है । यह अर्धमागधी का प्रयोग है ।^३ कही शौरसेनी के लक्षण भी मिलते हैं जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८१४८) । यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी में होता है ।^४

१-हेमशब्दानुशासन, ८१३१११ : डे म्मि डेः ।

२-वही, ८१४१२८७ :

अत एतसौ पुंसि मागध्याम् ।

३-प्राकृत भाषाओं का व्याकरण :

पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१ ।

४-हेमशब्दानुशासन, ८१४१२६४ : मो वा ।

देशी या अपभ्रंश शब्दों के प्रयोग भी प्रचुर है। गावी (५।१।१२) को पतञ्जलि 'गो' शब्द का अपभ्रंश बतलाते हैं।^१ आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत-भाषा-विशेष के शब्दों को 'देशी' माना है।^२

१३ : दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ

दशवैकालिक की प्राचीनतम व्याख्या निर्युक्ति है। उसमें इसकी रचना के प्रयोजन, नामकरण, उद्धरण-स्थल, अध्ययनों के नाम, उनके विषय आदि का संक्षेप में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों का आधार रहा है। यह पद्यात्मक है। इसकी गथाओं का परिमाण टीकाकार के अनुसार ३७१ है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु माने जाते हैं। इनका काल-मान विक्रम की पाँचवी-छठी शताब्दी है।

इसकी दूसरी पद्यात्मक व्याख्या भाष्य है। चूर्णिकार ने भाष्य का उल्लेख नहीं किया। टीकाकार भाष्य और भाष्यकार का अनेक स्थलों में उल्लेख करते हैं।^३ टीकाकार के अनुसार भाष्य की ६३ गथाएँ हैं। इसके कर्ता की जानकारी हमें नहीं है। टीकाकार ने भी भाष्यकार के नाम का उल्लेख नहीं किया है।^४ वे निर्युक्तिकार के बाद और चूर्णिकार से पहले हुए हैं।

हरिमित्र सूरि ने जिन गथाओं को भाष्यगत माना है, वे चूर्ण में हैं। इससे जान पड़ता है कि भाष्यकार चूर्णिकार के पूर्ववर्ती हैं। इसके बाद चूर्णियाँ लिखी गई हैं। अभी दो चूर्णियाँ प्राप्त हैं। एक के कर्ता अगस्त्यसिंह स्थविर हैं और दूसरी के कर्ता जिनदास महत्तर (वि० की ७ वीं शताब्दी)।

१-पातञ्जल महाभाष्य, पस्पशाह्निक :

एकस्यैव गोशब्दस्य गावी-गोणी-गोता-गोपोतलिकेत्यादयोऽनेकेऽपशब्दाः ।

२-देशीनाममाला, १।४ :

देसविसेसपसिद्धीङ्, भणमाणा भणन्तया हुंति ।

तम्हा अणाइपाइयपयट्टभासाविसेसओ देसी ॥

३-(क) दशवैकालिक हारिमित्रीय टीका, पत्र ६४ . भाष्यकृता पुनरुपन्यस्त इति ।

(ख) वही, पत्र १२० : आह च भाष्यकारः ।

(ग) वही, पत्र १२८ : व्यासार्थस्तु भाष्यादवसेयः ।

(घ) वही, पत्र १२३, १२५, १२६, १२९, १३३, १३४, १४०, १६१, १६२, २७८ ।

४-दशवैकालिक हारिमित्रीय टीका, पत्र १३२ :

तामेव निर्युक्तिगाथां लेशतो व्याचिख्यासुराह भाष्यकारः । एतदपि

नित्यत्वादिप्रसाधकमिति निर्युक्तिगाथायामनुपन्यस्तमप्युक्तं सूक्ष्मधिया

भाष्यकारेणेति गान्धार्यः ।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्ण के अन्त में कोई प्रगति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्ण पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—“पद्योगि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्वयाभिहितं, शेषं दशवैकालिकचूर्णो अभिहितम्।” इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती हैं। दशवैकालिक चूर्ण (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्ण (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कही अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्ण में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्ण में पृ० २१ से ३३ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। मही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोध्ययन (अ० ३०) की चूर्ण में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्ण की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में आए ‘तप’ शब्द का विगद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्ण में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्ण में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्ण का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।^१

अगस्त्यसिंह स्थविर ने अपनी चूर्ण में तत्त्वार्थसूत्र, आवग्यकनिर्युक्ति, ओवनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य हैं। उनके रचना-काल के आवार पर अगस्त्यसिंह का समय पुनः अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनों विधियों की चर्चा की है। इस चर्चा का आरम्भ जब देवद्विगणी ने आगम पुस्तकाखंड किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवद्विगणी के उत्तरवर्ती और जिनदान के पूर्ववर्ती हो तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुल पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्ण :

उच्चारणं संजमो—पोत्यणसु घेष्यतेसु असंजमो महाघणमोल्लेसु वा द्रुतेसु वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणद्वं अव्योछित्तिनिमित्तं गेहंतस्स संजमो भवति।

इन चूर्णियों के अतिरिक्त कोई प्राकृत व्याख्या और रही है पर वह अब उपलब्ध नहीं है। उसके अवशेष हरिभद्र सूरि की टीका में मिलते हैं।^१

प्राकृत युग समाप्त हुआ और संस्कृत युग आया। आगम की व्याख्याएँ संस्कृत भाषा में लिखी जाने लगी। इस पर हरिभद्र सूरि ने संस्कृत में टीका लिखी। इनका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी है।

यापनीय संव के अपराजित सूरि (या विजयाचार्य—विक्रम की आठवीं शताब्दी) ने इस पर विजयोदया नाम की टीका लिखी। इसका उल्लेख उन्होंने स्वरचित मूलाराधना की टीका में किया है।^२ परन्तु वह अभी उपलब्ध नहीं है। हरिभद्र सूरि की टीका को आधार मान कर तिलकाचार्य (१३-१४वीं शताब्दी) ने टीका, माणिक्यशेखर (१५वीं शताब्दी) ने निर्युक्ति-दीपिका, समयसुन्दर (विक्रम सं० १६११) ने दीपिका, विनयहंस (विक्रम सं० १५७३) ने वृत्ति, रामचन्द्र सूरि (विक्रम सं० १६७८) ने वार्तिक

१-दशवैकालिक हरिभद्राय टीका, पत्र १६५.

तथा च वृद्धव्याख्या—वेसादिगयभावस्त मेहुणं पीडिज्जइ, अणुवओगेण एसणाकरणे हिंसा, पडुप्पायणे अन्नपुच्छणअवलवणासच्चवयणं, अणणुण्णायवेसाइदंसणे अदत्तादाणं, ममत्तकरणे परिग्गहो, एवं सव्ववयपीडा, दव्वसामन्ने पुण संसयो उण्णिक्खमणेण त्ति।

दशवैकालिक चूर्णि (पृ० १७१) में इस आशय की जो पंक्तियाँ हैं, वे इन पंक्तियों से भिन्न हैं

जइ उण्णिक्खमइ तो सव्ववया पीडिया भवन्ति, अहवि ण उण्णिक्खमइ तोवि तग्गयमाणसस्त भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तग्गयमाणसोय एसणं न रक्खइ, तत्थ पाणाइवायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ—कि जोएसि ? ताहे अवलवइ, ताहे मुसावायपीडा भवति, ताओ य तित्थगरेहि णाणुण्णायउत्तिकाउं अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममतं करेत्तस्स परिग्गहपीडा भवति।

अगस्त्य चूर्णि की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

तस्स पीडा वयाण तासु गयाचतो रियं न सोहेतित्ति पाणातिवातो पुच्छितो कि जोएसित्ति ? अवलवति मुसावातो, अदत्तादाणमणणुण्णातो तित्थकरेहि मिहुणे वि गयभावो मुच्छाए परिग्गहो वि।

२-मूलाराधना, गा० ११९७ की वृत्ति :

दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमादिदोषा इति नेह प्रतन्यते।

और पायचः सूरि तथा चर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वीं शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्बा लिखा । किन्तु इनमें कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्रष्टीकरण नहीं है । ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए हैं । अतः इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही हैं—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिभद्रिय वृत्ति ।

अगस्त्यसिंह स्थविर का चूर्णि इन सबमें प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-दर्शी है । जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्थविर के आस-पास भी चलते हैं और कही-कही इनसे दूर भी चले जाते हैं । टीकाकार तो कही-कही बहुत दूर चले जाते हैं ।^१

लगाता है चूर्णि के रचना-काल में भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नहीं रही थी । अगस्त्यसिंह स्थविर ने अनेक स्थलों पर अर्थ के कई विकल्प किए हैं । उन्हें देखकर सहज ही जान पड़ता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नहीं हैं ।

आर्य सुहृस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया । ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक झुके, त्यो-त्यो अपवादों की बाढ़-सी आ गई । वीर-निर्वाण की नवीं शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ । इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई । देवद्विगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढ़ा और वह जैन परम्परा पर छा गया । अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है—“देवद्विगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूँ । इसके बाद शिथिलाचारियों ने अनेक द्रव्य-परम्पराओं का प्रवर्तन कर दिया ।”^२ आचार-शैथिल्य की परम्परा में जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमें ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम में प्राप्त नहीं हैं । प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण से मुक्त नहीं हैं । इन्हें पढ़ते समय इस तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए ।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते हैं । पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है । जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्हीं के किए अपवाद मान्य हो सकते हैं । वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नहीं हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नहीं रखा जा सकता ।

१—उदाहरण के लिए देखें दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७ ।

२—आगम अद्भुतरी, गाथा १४ :

देवद्विगणमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि ।

सिद्धिलायारे ठविया, दब्बेण परंपरा बहुहा ॥

दोनो चूर्णियो में पाठ और अर्थ का भेद है। टीकाकार का मार्ग तो उनसे बहुत ही भिन्न है।

चैत्यवासी और संविम्न-पक्ष के आपसी खिंचाव के कारण संभव है उन्हें (टीकाकार को) अगस्त्य चूर्ण उपलब्ध न हुई हो। उसके उपलब्ध होने पर भी यदि इतने बड़े पाठ और अर्थ के भेदों का उल्लेख न किया हो तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है। पर लगता यही है कि टीका-काल में टीकाकार के सामने अगस्त्य चूर्ण नहीं रही। यदि वह उनके सम्मुख होती तो टीका और चूर्ण में इतना अर्थ-भेद नहीं होता। टीकाकार ने 'अन्ये तु', 'तथा च वृद्धसम्प्रदाय', 'तथा च वृद्धव्याख्या'—आदि के द्वारा जिनदास महत्तर का उल्लेख किया है।^१ पर उनके नाम और चूर्ण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया।

हरिभद्र संविम्न-पक्षिक थे। इनका समय चैत्यवास के उत्कर्ष का समय है। पुस्तको का संग्रह अधिकांशतया चैत्यवासियों के पास था। संविम्न-पक्ष एक प्रकार से नया था। चैत्यवासी इसे मिटा देना चाहते थे। इस परिस्थिति में टीकाकार को पुस्तक-प्राप्ति की दुर्लभता रही हो, यह भी आश्चर्य की बात नहीं है।

आगमो की माथुरी और बल्लभी—ये दो वाचनाएँ हुईं। देवद्विगणी ने आगमो को पुस्तकाख्द करते हुए उन दोनों का समन्वय किया। माथुरी में उससे भिन्न पाठ थे। उन्हें पाठ-भेद मान शेष अंश को बल्लभी में समन्वित कर दिया। यह पाठ-भेद की

१—(क) दशवैकालिक, हारिमद्रीय टीका पत्र ७ :

अन्यस्त्वनादिष्टो दशकालिकाख्य आदिष्टस्तु तदध्ययनविशेषो
द्रुमशुष्पिकादिरिति व्याचष्टे।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ ४ :

तस्य अणाविट्ठं जहा दसगालियं आदिट्ठं द्रुमशुष्पिकं सामण्णयुल्लवयं एवमादि।

(ख) वही, हारिमद्रीय टीका, पत्र १७२ .

अत्रायं वृद्धसम्प्रदायः—गच्छवासी जइ थणजीवी ... मज्जारदि वा
अवहरेज्ज त्ति।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ-१८०-१८१ :

तस्य गच्छवासी जति थणजीवी ... मज्जारदि वा अवधरेज्जा।

(ग) वही, हारिमद्रीय टीका, पत्र १४२-४२ :

तथा च वृद्धव्याख्या—एसो खलु छट्ठो ... आगासत्थिकाओ
अवगाहलक्खणो।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्ण, पृष्ठ १४१-४२ :

... छट्ठो जीविकायो ... आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो।

परम्परा मिटी नहीं। कुछ आगमों के पाठ-भेद केवल आगमों की व्याख्याओं में उपलब्ध है। व्याख्याकार—‘नागार्जुनीयास्तु एवं पठन्ति’ लिखकर उसका निर्देश करते रहे हैं और कुछ आगमों के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवतः इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे प्राचीन व्याख्या अगम्य चूर्णि है। उसमें अनेक स्थलों पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।^१ इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे हैं और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियों की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्णि एवं टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहली सुलभ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्श आदि विषयों की विस्तृत चर्चा हम ‘दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन’ में कर चुके हैं। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे में कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम ‘उत्तराध्ययन’ है। इसमें दो शब्द हैं—‘उत्तर’ और ‘अध्ययन’। समवायों के—‘छत्तीस उत्तरज्झयणा’^२—इस वाक्य में उत्तराध्ययन के ‘छत्तीस अध्ययन’ प्रतिपादित नहीं हुए हैं, किन्तु ‘छत्तीस उत्तर अध्ययन’ प्रतिपादित हुए हैं। नंदी में भी ‘उत्तरज्झयणाणि’ यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^३ उत्तराध्ययन के अन्तिम श्लोक में भी—‘छत्तीस उत्तरज्झाए’—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।^४ निर्युक्तिकार ने ‘उत्तराध्ययन’ का बहुवचन में प्रयोग किया है।^५ चूर्णिकार ने छत्तीस

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायों, समवाय ३६।

३—नंदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४।

देखिये पृ० २१, पा० टि० ४।

उत्तराध्ययनो का एक श्रुतस्कन्ध (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है । फिर भी उन्होंने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है ।^१

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनो का गण मात्र है, एक-कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं ।

‘उत्तर’ शब्द ‘पूर्व’ सापेक्ष है । चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनो को तीन प्रकार ने योजना की है—

(१) स-उत्तर	—पहला अध्ययन
(२) निस्तर	—छत्तीसवाँ अध्ययन
(३) स-उत्तर-निस्तर	—बीच के सारे अध्ययन

किन्तु ‘उत्तर’ शब्द की यह अर्थ-योजना चूर्णिकार की दृष्टि में अधिकृत नहीं है । उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है । निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल में पड़े जाते थे, इसलिए इन्हें ‘उत्तर अध्ययन’ कहा गया ।^३ श्रुतकेवली शब्दभवन (वीर-निर्वाण सं० ६८) के पश्चात् ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पड़े जाने लगे ।^४ इसलिए ये ‘उत्तर अध्ययन’ ही बने रहे । यह ‘उत्तर’ शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है ।

दिगम्बर-आचार्यों ने भी ‘उत्तर’ शब्द की अनेक दृष्टिकोणों से व्याख्या की है ।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ८ :

ऐतेसि चैव छत्तीसाए उत्तरज्जयणाणं समुदयसमितिसमागमेणं उत्तरज्जयणाव-
सुतक्खंघेति लब्भइ, ताणि पुण छत्तीसं उत्तरज्जयणाणि इमेहि नामेहि
अणुगंतत्वाणि ।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

विणयसुयंसउत्तरं जीवाजीवाभिगमो णिस्सरो, सर्वोत्तर इत्यर्थः, तेसज्जयणाणि
सउत्तराणि णिस्सराणि य, कहं ? परीसहा विणयसुयस्स उत्तरा दउरंरिज्जःस
तु पुत्वा इतिकारं णिस्सरा ।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ३ :

कमउत्तरेण पणयं आयारस्तेव उवरिमाइं तु ।
तम्हा उ उत्तरा खलु अज्जयणा हुंति णायव्वा ॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

विशेषश्चायं यथा—शब्दभवनं यावदेष क्रमः, तदाऽऽस्तु दशवैकालिकोत्तरकालं
पठ्यन्त इति ।

धवलाकार (वि० ६ वीं गताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदों का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान-सूचक है।^१

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वीं गताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते हैं—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढ़े जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नों का उत्तर देने वाले अध्ययन।^२

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययन' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर एकाग्र डालते हैं।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन हैं—६, १६, २३, २५ और २६। आंशिक रूप में कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनों में भी हैं। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णतः व्याप्त नहीं है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ संगत होने के साथ-साथ पूर्णतः व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नहीं होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्ता कौन है? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दों में उठाया है।^३ निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नहीं है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते हैं—

- (१) अंगप्रभव
- (२) जिन-भाषित
- (३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित
- (४) संवाद-समुत्थित^४

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित) :

उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५, २६ :

उत्तराणि अहिज्जन्ति, उत्तरज्झयणं पदं जिणिदेहिं ।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :

एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४—उत्तराध्ययन निर्युत्ति, गाथा ४ :

अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया ।

वंधे मुखे य कया छत्तीनं उत्तरज्झयणा ॥

दूसरा अध्ययन अंगप्रभव माना गया है। निर्युक्तिकार के अनुसार वह कर्मप्रवाद पूर्व के सत्तरहवें प्राभृत से उद्धृत है।^१ दसवाँ अध्ययन जिन-भाषित है।^२ आठवाँ अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-भाषित है।^३ नवाँ और तेईसवाँ अध्ययन संवाद-समुत्थित है।^४ ये चूर्णि और बृहद्वृत्तिकार द्वारा उदाहृत हैं।

उत्तराध्ययन की मूल रचना पर ध्यान देने से उसके कर्तृत्व पर कुछ प्रकाश पड़ता है। प्रस्तुत सूत्र में गद्यात्मक अध्ययन तीन है—दूसरा, सोलहवाँ और उनतीसवाँ।

दूसरे अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु वावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया।”

सोलहवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्तत्ता।”

उनतीसवें अध्ययन का प्रारम्भिक वाक्य है—“सुयं मे, आउसं। तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइए।”

इन प्रारम्भिक वाक्यों से फलित होता है कि दूसरा और उनतीसवाँ अध्ययन महावीर द्वारा निरूपित हैं अर्थात् जिन-भाषित हैं और सोलहवाँ अध्ययन स्थविर-विचरित है।

१-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाया ६९ :

कम्मप्पवायगुब्बे सत्तरसे पाहुडंसि जं सुत्तं।

सणयं सोदाहरणं तं चेव इहंमि णायव्वं ॥

२-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

जिणभासिया जहा दुमपत्तगादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

जिनभाषितानि यथा द्वसमुत्पिकाऽध्ययनम्।

३-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

पत्तेयबुद्धभासियाणि जहा काविलिज्जादि।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

प्रत्येकबुद्धा—कपिलादयः तेस्य उत्पन्नानि यथा कापिलीयाध्ययनम्।

४-(क) उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ७ :

संवादो जहा णमिपव्वज्जा केसिगोयमेज्जं व।

(ख) उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५ :

संवाद—सङ्गतप्रश्नोत्तरवचनरूपस्तत् उत्पन्नानि, यथा—केसिगौतमीयम्।

निर्युक्ति में दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है ।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पड़ता है । दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है । किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नहीं हैं—यह उस अध्ययन के अंतिम वाक्य—‘बुद्धस्स निसम्म भासियं’—से स्पष्ट है । इसी प्रकार दूसरे और अनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यों से भी यही तथ्य प्रकट होता है । छठे अध्ययन के अंतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उवाहु अगुत्तरत्ताणी अगुत्तरदंसी अगुत्तरनाणदंसणधरे ।

अरहा नायपुत्ते भगवं वेतालिए वियाहिए ॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नहीं है । आठवें अध्ययन के अंतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपत्तेणं ।

तरिहन्ति जे उ काहन्ति भेहि आराहिया बुवे लोणे ॥ (८।२०)

संवाद-समुत्थित अध्ययन, नवों और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नहीं है । इसका समर्थन भी उनके अंतिम श्लोको से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा ।

विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिति ॥ (९।६२)

तोसिया परिसा सत्त्वा सम्ममां समुवट्ठिया ।

संयुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे ॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्युक्तिकार के चार वर्गों से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशों, उपदेश-भाषाओं या संवादों को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए हैं । वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नहीं है । चूर्णि और बृहद्वृत्ति में भी नहीं है । अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है । इसके रचना-काल की भीमासा से हम इतना जान सकते हैं कि ये अध्ययन विभिन्न युगों में हुए अनेक ऋषियों द्वारा उद्गीत हैं ।

साख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वीं शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे । भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदों का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था । आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, संसार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व संन्यास की चर्चा इस युग में विशेष विकसित हुई थी ।

उत्तराध्ययन में हम ई० पू० ६०० से ई० सन् ४०० तक की धार्मिक व दार्शनिक धारा का प्रतिनिधित्व या विकास पाते हैं। हो सकता है कि इनका कुछ अंग महावीर से पहले का भी हो। चूर्णि में ऐसा संकेत भी मिलता है कि उत्तराध्ययन का छठा अध्ययन भगवान् पार्श्व द्वारा उपदिष्ट है।^१

‘दशवैकालिक’ वीर निर्वाण की पहली शताब्दी की रचना है।^२ उत्तराध्ययन एक ग्रन्थ के रूप में उससे पूर्व संकलित हो चुका था। उस समय उसके अध्ययन कितने थे, यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी (६८०-६६३) में देवद्विगणी ने आगमों का संकलन किया था। उन्होंने उत्तराध्ययन के आकार-प्रकार व विषय-वस्तु में कोई अभिवृद्धि की या नहीं की, इसका प्रत्यक्ष उल्लेख प्राप्त नहीं है, किन्तु नहीं की, ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। अतः उत्तराध्ययन को हम एक सहस्राब्दी की, विचारधारा का प्रतिनिधि सूत्र कह सकते हैं। इसमें जहाँ वेद और ब्राह्मण-साहित्य-कालीन यज्ञ और जातिवाद की चर्चा है, वहाँ द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। उन परिभाषाओं को दर्शनकालीन (ई०पू० ५ वीं से ई०पू० पहली शताब्दी) माना जाए तो यह निष्पन्न होता है कि उत्तराध्ययन के अध्ययन विभिन्न कालों में निर्मित हुए और अंतिम वाचना के समय देवद्विगणी ने उनका छत्तीस अध्ययनात्मक एक ग्रन्थ के रूप में संकलन किया। इसीलिए समवायांग में छत्तीस उत्तर-अध्ययनों के नाम उल्लिखित हुए। अन्यथा अंग-साहित्य में इनका उल्लेख सम्भव नहीं होता। वर्तमान संकलन को सामने रखकर हम चिन्तन करें तो उत्तराध्ययन के संकलयिता देवद्विगणी है। इसके प्रारम्भिक संकलन और देवद्विगणी कालीन संकलन में अध्ययनों की संख्या और विषय-वस्तु में पर्याप्त अन्तर आया है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से उत्तराध्ययन के अध्ययन चार भागों में विभक्त होते हैं—

- (१) धर्मकथात्मक—७, ८, ९, १२, १३, १४, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २५ और २७।
- (२) उपदेशात्मक—१, ३, ४, ५, ६ और १०।
- (३) आचारात्मक—२, ११, १५, १६, १७, २४, २६, ३२ और ३५।
- (४) सैद्धान्तिक—२८, २९, ३०, ३१, ३३, ३४ और ३६।

१-उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १५७ :

केचिदन्यथा पठन्ति—एवं से उदाहु, अरहा पासे पुरिसादाणीए।

भगवंते वेसालीए, बुद्धे परिणिव्वुडे॥

२-दशवैकालिक भाग २, भूमिका पृष्ठ १५।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमो के चार वर्ग किए—

- | | |
|-------------------|------------------|
| (१) चरण-करणानुयोग | (३) गणितानुयोग |
| (२) धर्मकथानुयोग | (४) द्रव्यानुयोग |

इस वर्गीकरण में उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।^१ पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग में तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग में समाते हैं। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगों का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवद्विगणी के संकलन-काल में हुआ, यह बहुत संभव है।

कुछ विद्वानों का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन हैं और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होंने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नहीं किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हों, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हैं, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नहीं है। इकतीसवें अध्ययन में आचारांग, सूत्रकृतांग आदि प्राचीन आगमों के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निवीथ जैसे अर्वाचीन आगमों के नाम भी उपलब्ध होते हैं।^२ ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी गती) द्वारा निर्युद्ध या कृत है।^३ इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रबाहु के बाद की रचना है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :

अत्र धम्मपुयोगेनाधिकारः ।

२—उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ :

तेवीसइ सुयगडे, खुवाहिएसु सुरेसु अ ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

पणवीसभावणाहि, उहेसेसु दसाइणं ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

अणगारगुणेहिं च, पक्कप्पम्मि तहेव य ।

जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

३-(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १ :

वंदासि भद्दबाहुं, पाईणं चरिमसयलसुयणापि ।

सुत्तस्स कारणमिसि, दसासु कप्पे य ववहारे ॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :

तेण भगवता आयासकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुज्वनीसंदमूता
निज्जूढा ।

अठाइसवें अध्ययन में अंग और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागों के अतिरिक्त ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।^१ प्राचीन आगमों के चौदह पूर्वों, ग्यारह अंगों या बारह अंगों के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अंग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होती है।

इस अध्ययन में द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। इनकी तुलना क्रमशः वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन^२

वैशेषिक दर्शन^३

(१) द्रव्य—

(१) द्रव्य—

गुणाणमासओ दब्बं

क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।

(२) गुण—

(२) गुण—

एगइव्वस्सिया गुणा

द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।

(३) पर्याय—

(३) कर्म—

लक्खणं पज्जवाणं तु
उभओ अस्सिया भवे।

एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति
कर्म-लक्षणम्।

आगम साहित्य में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन में प्राप्त होती है। आगमों में विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते हैं, संक्षिप्त परिभाषाएँ प्रायः नहीं मिलती। इसकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थों से होती है। उत्तराध्ययन में ये परिभाषाएँ विशेष अर्थ-सूचक हैं। प्रस्तुत अध्ययन के कर्त्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओं से परिचित रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में संकलित हुआ—ऐसा अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित थे और अर्वाचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। किन्तु स्थूल रूप में इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन संस्करण का मुख्य भाग कथा-भाग था और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है।

१—(क) उत्तराध्ययन २८।२१ :

अंगेण वाहिरेण व' ।

(ख) वही, २८।२३ :

एकारस अंगाइं पइण्णं दिट्ठिवाओ य ॥

२—वही, २८।६ ।

३—वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम आत्मिक, सूत्र १५-१७ ।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख ज्येताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मिलता है ।

‘जैन सिद्धान्त भवन’, आरा (विहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—“उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एषणा से सम्बन्धित दोषों के प्रायश्चित्तों का विधान है ।”^१

अंगपण्णत्ति में लिखा है—“वाईस परीपहो और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है ।”^२

धवला में यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदों का वर्णन करता है ।^३

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है ।^४

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नहीं होती । अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंगिक रूप से संगत होता है । जैसे—

(१) वाईस परीपहो के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन ।

(२) प्रश्नों के उत्तर, देखिए—उत्तीसवाँ अध्ययन ।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं । संभव है इन लेखकों के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है ।

दिगम्बर-साहित्य ने एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१—उत्तरज्जयणं उगममुप्यायणेत्तणदोसगययायच्छित्तविहाणं कालादि विसेसिदं वण्णेदि ।

२—अंगपण्णत्ति, ३।२५, २६ ।

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्जयणं मदं जिणिदेहि ।

वावीसपरीसहाणं, उवसग्गाणं च सहणविहि ॥

वण्णेदि तप्फलमवि, एवं पण्हे च उत्तरं एवं ।

कहदि गुत्तीसयाण, पडण्णिय अट्ठमं तं खु ॥

३—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति) :

उत्तरज्जयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ ।

४—हरिवंश पुराण, १०।१३४ :

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमनं तथा ।

अंग-बाह्य प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरो के उत्तर-कालीन आचार्यों) की रचना है।^१

श्वेताम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।^२

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचारांग के बाद पड़ा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोड़े समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के संदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की संकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की प्राचीनता असंदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन हैं—

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

भाषा-प्रयोग तीसरे अध्ययन (श्लोक १४) में 'जक्ख' (सं० यक्ष) शब्द का 'अर्चनीय देव' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। यह प्रयोग इसकी प्राचीनता का सूचक है। यज्ञ के उत्कर्ष काल में ही 'यक्ष' शब्द उत्कर्षवाची था। दोनों की निष्पत्ति एक ही धातु (यज्) से है। यज्ञ के अपकर्ष के साथ-साथ 'यक्ष' शब्द के अर्थ का भी अपकर्ष हो गया। उत्तरकालीन साहित्य में वह देवों की एक हीन जाति का वाचक मात्र रह गया।

इसी प्रकार 'पाढव' (३।१३), 'वुसीमओ' (५।१८), 'मिलेक्खुया' (१०।१६), 'अज्झत्थ' (६।६), 'समिय' (६।४) आदि अनेक शब्द हैं, जो आचारांग और सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन आगमों में ही मिलते हैं।

सिद्धान्त : जातिवाद (अध्ययन १२ और १३), यज्ञ एवं तीर्थस्थान (अध्ययन १२), ब्राह्मणों के लक्षणों का प्रतिपादन (अध्ययन २५)—ये इन अध्ययनों की प्राचीनता के सूचक हैं। ये सम्बन्धित चर्चाओं के उत्कर्ष काल में लिखे गए हैं, अन्यथा शान्त चर्चा का

१-तत्त्वार्थवार्तिक, १।२०, पृष्ठ ७८ :

यद् गणधरशिष्यप्रशिष्यैरारातीयैरधिगतश्रुतार्थतत्त्वैः कालदोषादल्पमेधाशुर्बलानां प्राणिनामनुग्रहार्थमुपनिबद्धं संक्षिप्ताङ्गार्थवचनविन्यासं तदङ्गबाह्यम्।

तद्भेदा उत्तराध्ययनादयोऽनेकविधाः।

२-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, १८-२६।

इतनी सप्रणता के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्श्व-कालीन है। संभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हो।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२, ३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १६), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४, ३५, २३।२६) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२, १३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष हैं जो उत्तरवर्ती साहित्य में नवीन परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रस्न-चित्त बने हुए हैं।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग में भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही संकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनो, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनो तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणों का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।^१

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुतः उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही हैं। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।

छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंभए ॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनो का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।^२

१—कल्पसूत्र, सूत्र १४६ :

पच्चूसकालसमयंसि संपत्तियंकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपट्ठवागरणाइं वागरित्ता पघाणं नाम अज्झयणं विभावमाणे २ कालगए वित्तिकत्ते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे भुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सब्बदुक्खप्पहीणे।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादुः प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्धः—अवगतार्थः ज्ञातकः—ज्ञातकुलसमुद्भवः वर्द्धमानस्वामी, ततः परिनिर्वाणं गतः, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनानि।

शान्त्याचार्य ने चूर्णिकार का अनुमरण करने हुए भी हममें अपनी ओर से दो बातें और जोड़ी हैं । पहली यह है कि भगवान् महावीर ने उत्तराख्ययन के कुछ अध्ययनों का अर्थ-रूप में और कुछ अध्ययनों का सूत्र-रूप में प्रज्ञान किया । दूसरी यह कि उन्होंने 'परिनिर्वृत' का वैकल्पिक अर्थ 'अस्थीभूत' किया है ।^२

निर्युक्तिकार ने इन अध्ययनों को जिन-प्रज्ञत बनलाया है ।^३ शान्त्याचार्य ने 'जिन' शब्द का अर्थ 'शून-जिन' अर्थात् श्रुतकेवली किया है ।^४

निर्युक्तिकार के अभिमनानुसार वे छत्तीस अध्ययन श्रुतकेवली आदि मयिरीयों द्वारा प्रदत्त हैं । उन्होंने हमका भी कोई चर्चा नहीं की कि भगवान् ने अन्तिम प्रज्ञान में इन छत्तीस अध्ययनों का प्रदत्त किया । बृहद्वृत्तिकार शान्त्याचार्य भी परिनिर्वाण के विषय में अर्धद्विध नहीं है । केवल चूर्णिकार ने अपना अर्धद्विध मत प्रगट किया है ।

उत्तराख्ययन के अध्ययनों की संख्या ३६ होने के कारण महज ही उस ओर ध्यान जाना है कि कल्पसूत्र में उल्लिखित ३६ अप्रुष्ट-व्याकरण ये ही होने चाहिए । यहाँ यह स्मरणीय है कि समवायांग में छत्तीस अप्रुष्ट-व्याकरणों का उल्लेख नहीं है । वहाँ केवल इनका ही बतलाया गया है कि भगवान् महावीर ने अन्तिम रात्रि के समय ५५ कल्याण-

१-उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१२ :

इति ज्यनन्तरमुपवर्णितान् 'पाउकरे'ति सूत्रत्वान् 'प्रादुज्जृत्य' कांश्चिदर्थतः कांश्चन सूत्रतोऽपि प्रकाशय, कोऽर्थः ? प्रज्ञाप्य, किमित्याह—'परिनिर्वृत.' निर्वाणं गत इति सम्भवनीयम्, कीदृशः मन् क इत्याह—'बुद्ध.' केवलज्ञानादवगतमकलवस्तुतत्त्व. 'ज्ञातको' 'ज्ञातजो' वा—ज्ञातकुलसमुद्भवः, न चेह भगवान् वर्तमानम्बामी 'षट्त्रिणद' इति षट्त्रिंशत्संख्या उत्तराः—प्रयाना अधीयन्त इत्यध्याया—अध्ययनानि तत उत्तराश्च तेऽध्यायादचोत्तराध्यायास्तान्—विनयश्रुतादीन्... .. ।

२-वही, पत्र ७१२ :

अथवा 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्पात् प्रकाशितवान्, जेयं पूर्ववन नवरं 'परिनिर्वृतः' ओघादिदहनोपशमतः समन्तात्स्वस्थीभूतः ।

३-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ५५९ :

तम्हा जिणपन्नत्ते, अणंतगमपज्जेहि संजुत्ते ।

अज्जाए जहाजोगं, गुह्यसाया अहिज्झिज्जा ॥

४-उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१३ :

तस्साज्जिनैः - श्रुतजिनादिभिः प्ररूपिताः ।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनो का व्याकरण कर परिनिर्वृत हुए ।^१ समवायाग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस धम्मो अन्हाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं' जैसे उल्लेखों से यह प्रमाणित नहीं होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित हैं । निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के हैं—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे ।	नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसंपन्ने	छत्तीसं उत्तराज्जाए
सच्चे सच्चपरक्कमे ॥	भवसिद्धीयसंमए ॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए । वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिर्वृत (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है ।^२ इस अर्थ के संदर्भ में जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढ़ते हैं, तब उससे यह फलित नहीं होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनो का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है । इसी पारंपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के संकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उसमें भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से संगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है ।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नहीं हैं और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नहीं थे । उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१-समवायांग, समवाय ५५ ।

२-उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४४४ ।

इत्येवंह्यं 'पाउकरे'ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्धः' अवगततत्त्वः सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावात्ममहावीर एव, 'परिनिर्वृतः' कषायात्तलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूतः ।

किन्तु भगवान् महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में उनकी जो अभिव्यक्ति दी, वह उनका नवीन रूप है। भगवान् महावीर के समय की सामाजिक परिस्थिति में अहिंसा और अपरिग्रह के मुख्य बाधक-तत्त्व ये थे—

- | | |
|---------------|-----------------------------|
| (१) दास-प्रथा | (४) अमित संग्रह |
| (२) जातिवाद | (५) दण्ड का उच्छृंखल प्रयोग |
| (३) पशुबलि | (६) अनियंत्रित भोग |

इन बाधक-तत्त्वों के निरसन के लिए भगवान् महावीर ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसका हृदयभाही संकलन उत्तराध्ययन में हुआ है।

पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और सामायिक चारित्र था। भगवान् महावीर ने महाव्रत पाँच किए और छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था की। छेदोप-स्थापनीय का अर्थ है—विभाग-युक्त चारित्र।

पूज्यपाद (वि० ५-६ शताब्दी) ने लिखा है “भगवान् महावीर ने चारित्र-धर्म के तेरह विभाग किए—पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ। ये विभाग पार्श्वनाथ के समय में नहीं थे।”^१

उत्तराध्ययन में इनका सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ है। षड्जीवनिकायवाद महावीर के तत्त्ववाद का प्रधान अंग है। जीव विषयक इतना व्यवस्थित और विस्तृत प्रतिपादन अन्य किसी धर्म-परम्परा में नहीं था। आचार्य सिद्धसेन ने इसे भगवान् महावीर की सर्वज्ञता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया है।^२

उत्तराध्ययन में जीव-विभक्ति का भी एक सुन्दर प्रकरण है। अजीव-विभक्ति, कर्मवाद, षड्द्रव्य, नव तत्त्व आदि-आदि भी समुचित रूपेण प्रतिपादित हुए हैं।

यद्यपि उत्तराध्ययन को धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत रखा गया है, किन्तु अपने वर्तमान आकार में वह चारों अनुयोगों का संगम है। इस दृष्टि से इसे महावीर-वाणी (आगमो) का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१-चारित्र भक्ति, ७ :

तिल्ल. सत्तमगुह्यस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः

पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ।

चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दिष्टं परै-

राचारं परमेष्ठिनो जिनमतेवीरान् नमामो वयम् ॥

२-प्रथम द्वात्रिंशिका, श्लोक १३ :

य एव षड्जीवनिकायविस्तर परैरजालीदपथस्त्वयोदितः ।

अनेन सर्वज्ञपरीक्षणक्षमा—स्त्वयि प्रसादोदयसोत्सवाः स्थिताः ॥

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन हैं। यह संकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक संकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन संस्करण देवद्विगुणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायांग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायांग ^१	उत्तराध्ययन निर्युक्ति ^२
१ विणयसुयं	विणयसुयं
२. परीसह	परीसह
३. चाउरंगिज्जं	चउरंगिज्जं
४. असंखयं	असंखयं
५. अकाममरणिज्जं	अकाममरणं
६. पुरिसविज्जा	नियंठ (खुड्ढागनियंठ ^३)
७. उरविमज्जं	ओरढमं
८. काविलिज्जं	काविलिज्जं
९. नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०. दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११. बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्जं
१२. हरिएसिज्जं	हरिएस
१३. चित्तसंभूयं	चित्तसंभूइ
१४. उसुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३ :

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्ढागनियंठमुत्तस्स ।

१५. सभिव्वुणं	सभिव्वु
१६. समाहिठाणाई	समाहिठाणं
१७. पावसमणिज्जं	पावसमणिज्जं
१८. संजइज्जं	संजइज्जं
१९. मियचारिता	मियचारिया
२०. अणाहपव्वज्जा	नियंठिज्जं (महानियंठ ^१)
२१. समुद्धपालिज्जं	समुद्धपालिज्जं
२२. रहनेमिज्जं	रहनेमीयं
२३. गोयमकेसिज्जं	केसिगोयमिज्जं
२४. समितीओ	समिइओ
२५. जन्मतिज्जं	जन्मइज्जं
२६. सामायारी	सामायारी
२७. खलुकिज्जं	खलुकिज्जं
२८. मुक्खमगाई	मुक्खगई
२९. अप्पमाओ	अप्पमाओ
३०. तवोमगो	तव
३१. चरणविही	चरण
३२. पमायठाणाई	पमायठाणं
३३. कम्मपगडी	कम्मप्पयडी
३४. लेसज्जयणं	लेसा
३५. अणगारमग्गे	अणगारमग्गे
३६. जीवाजीवविभत्ती	जीवाजीवविभत्ती

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४२२ :

एसा खलु निज्जुत्ती महानियंठस्स सुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अव्ययनों का विषय-वर्णन इस प्रकार है -

अव्ययन	श्लोक	मूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	प्रात-कष्ट-सहन का विधान ।
३	२०		चार दुर्लभ अंगों का प्रतिपादन ।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन ।
५	३२		मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण ।
६	१७		त्रिधा और आचरण ।

१-उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७ :

पढमे विणओ बीए परिसहा दुछहंगया तइय ।
अहिगारो य चउत्ये होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविमत्ती पुण पंचमम्मि विज्जा चरणं च छट्ठअज्जयणे ।
रसगेहिपरिच्चाओ सत्तमे अट्ठमि अलाने ॥
निक्कंपया य नवमे दसमे अणुसासणोवमानणिया ।
इक्कारसमे पुया तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे अ नियाणं अनियाणं चेव होइ चउदसमे ।
मिक्खुगुणा पन्नरसे सोलसमे वंसगुत्तीओ ॥
पावाण चज्जणा खलु तत्तरसे भोगिद्धिबिज्हणद्वारे ।
एगुणि अप्परिकम्मे अणाहुया चेव वीसइमे ॥
वरिया य विचित्ता इक्खीसि वावीसिमे थिरं चरणं ।
तेवीसइमे धम्मो चउवीसइमे य समिइओ ॥
वंसगुण पन्नवीसे सामायारी य होइ छव्वीसे ।
सत्तावीसे असट्ठया अट्ठावीसे य मुक्खगई ॥
एगुणतीस आवस्सगप्पमाओ तवो अ होइ तीसइमे ।
चरणं च इक्खीसे वत्तीसि पमायणाणइं ॥
तेत्तीसइमे कम्मं चउत्तीसइमे य हुंति लेसाओ ।
मिक्खुगुणा पणत्तीसे जीवाजीवा य छरीसे ॥
उत्तरज्जयणाणेतो पिडित्यो वण्णिओ समासेयं ।
इत्तो इक्किक्कं पुण अज्जयगं कित्तइस्सामि ॥

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
७	३०		रस-गृद्धि का परित्याग ।
८	२०		लाभ और लोभ के योग का प्रतिपादन ।
९	६२		संयम में निष्प्रकम्प भाव ।
१०	३७		अनुशासन ।
११	३२		बहुश्रुत की पूजा ।
१२	४७		तप का ऐश्वर्य ।
१३	३५		निदान—भोग-संकल्प ।
१४	५३		अनिदान—भोग-असंकल्प ।
१५	१६		भिक्षु के गुण ।
१६	१७	१२	ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ ।
१७	२१		पाप-वर्जन ।
१८	५३		भोग और गृद्धि का त्याग ।
१९	६८		अपरिकर्म—देहाध्यास का परित्याग ।
२०	६०		अनाथता ।
२१	२४		विचित्र चर्या ।
२२	४९		चरण का स्थिरीकरण ।
२३	८९		धर्म—चातुर्यार्थ और पंचयाम ।
२४	२७		समितियाँ-गुप्तियाँ ।
२५	४३		ब्राह्मण के गुण ।
२६	५२		सामाचारी ।
२७	१७		अशठता ।
२८	३६		भोक्ष-गति ।
२९		७४	आवश्यक में अप्रमाद ।
३०	३७		तप ।
३१	२१		चारित्र ।
३२	१११		प्रमाद-स्थान ।
३३	२५		कर्म ।
३४	६१		लेख्या ।
३५	२१		भिक्षु के गुण ।
३६	२६८		जीव और अजीव का प्रतिपादन ।

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त सकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक स्थूल-सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओं का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादों का संवादात्मक जैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आध्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-सिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१ हरिकेश बल (अ० १२)	×	मार्तग (सं० ४६७)
२ चित्त-संभूत (अ० १३)	×	चित्तसंभूत (सं० ४६८)
३ इषुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (सं० ५०६)
४ नमि-प्रव्रज्या (अ० ६)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजन (सं० ५३६)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनों का स्रोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमों में कुछ विनिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग हैं। अनेक स्थलों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त है।

विभक्ति-विहीन शब्द-प्रयोग :

बुद्धपुत्त (१।७)

भाय (१।३६)

कल्लाण (१।३६)

भिक्षु (२।२२)

तेल्ल (१।४।१८)

जीविय (३।२।२०)

ह्रस्व का दीर्घीकरण :

समाययन्ती (४।२)

परत्था (४।५)

दुक्खपजराए (८।१)

जाईमय (१२।५)

अन्नमन्नमणूरत्ता (१३।५)

अगमाहिंसी (१६।१)

दीर्घ का ह्रस्वीकरण :

पक्खणि (१।४।४१)

जिया (२।२।१६)

पमाणि (२६।२७)

संस्कृत-तुल्य संधि-प्रयोग :

सुइरादवि ७।१८

प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग :

उवसग्गे + अभिघारए = उवसग्गाभिघारए (२।२१)

बुद्धेहि + आयरियं = बुद्धेहायरियं (१।४२)

विप्परियासं + उवेइ = विप्परियासुवेइ (२०।४६)

विभक्ति-व्यत्यय :

आणपुर्व्व (१।१)—यहाँ तृतीया के अर्थ में द्वितीया विभक्ति है।

अदीणमणसो (२।३)—यहाँ प्रथमा के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।

सव्वदुक्खाणं (८।८)—यहाँ तृतीया के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।

चोद्दसहिं ठाणेहिं (१।१६)—यहाँ सप्तमी के अर्थ में तृतीया विभक्ति है।

मुहाजीवी (२५।२७)—यहाँ द्वितीया के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।

चरमाण (३०।२०)—यहाँ षष्ठी के अर्थ में प्रथमा-विभक्ति है।

वचन-व्यत्यय :

विहन्त (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है ।

तं (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

परित्तसंसारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईहि = फरसुमाईहि ११।६६

मुट्टि+आईहि = मुट्टिमाईहि ११।६७

असजत् = संजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्पायके (३।१८)—यहाँ 'अप्प' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नहीं होता ।

यहाँ यह शब्द निषेधार्थ में प्रयुक्त है ।

सुदिट्ठं (१२।३८) , सुजट्ठं (१२।४०)—इन दोनों में समान प्रयोग चाहिए ।

संभव है 'सुदिट्ठं' के स्थान में लिपि-दोष से 'सुजट्ठं' हो गया हो ।

भवताम् = भवयाणं (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है । भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में सात प्राकृतों का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या ।^१

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८ :

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी ।

वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिताः ॥

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पेशाची, चूलिका-पेशाचिक और अपभ्रंश—इन छह प्राकृतों का उल्लेख किया है ।

‘षड्भाषा चन्द्रिका’ में भी प्राकृत के ये ही छह विभाग मिलते हैं । वहाँ महाराष्ट्र की भाषा को प्राकृत, शूरसेन (मथुरा के आसपास के प्रदेश) की भाषा को शौरसेनी, मगध की भाषा को मागधी, पिशाच (पाण्ड्य, केकय आदि देशों) की भाषा को पेशाची और चूलिका पेशाची तथा आभीर आदि देशों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया है^१ ।

भगवान् महावीर अर्द्धमागधी भाषा में बोलते थे । आगमों में स्थान-स्थान पर यही उल्लेख मिलता है^२ । प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी और मागधी रही है ।

१-षड्भाषाचन्द्रिका, उपोद्घात :

षड्विधा सा प्राकृती च शौरसेनी च मागधी ।
 पेशाची चूलिकापेशाच्यपभ्रंश इति क्रमात् ॥
 तत्र तु प्राकृतं नाम महाराष्ट्रोद्भवं विदुः ।
 शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते ॥
 मगधोत्पन्नभाषां तां मागधी संप्रचक्षते ।
 पिशाचदेशनियतं पेशाचीद्वितयं भवेत् ॥
 पाण्ड्यकेकयवाल्हीक सिंह नेपाल कुन्तलाः ।
 सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजकास्तथा ॥
 एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ।
 पिशाचजातमथवा पेशाचीद्वयमुच्यते ॥
 अपभ्रंशस्तु भाषा स्यादाभीरादिगिरां चय ।
 ॥

२-(क) औपपातिक, सूत्र ३४ :

तए णं समणं भगवं महावीरे कूणिअस्स भंभासारयुत्तस्स.....
 अद्धमागहाए भासाए भासति..... ॥

(ख) समवायांग, समवाय ३४ :

भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ (२२) ।

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आवे मगध में अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी में प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कहीं-कहीं मिलती है और तीसरी प्रायः नहीं मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत में विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी में लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपों में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—“महाराष्ट्राश्रयां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः”^१।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमों की मूल भाषा की विस्मृति नहीं हुई। वे समय के विविध परिवर्तों में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे हैं कि आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।^२ स्थानाग^३ और अनुयोगद्वार^४ में संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोड़ा है।^५ कुछ आचार्य पूर्वो की भाषा भी संस्कृत मानते हैं।^६ इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नहीं कर सकते कि प्राचीन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७ : भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेति।

३—स्थानाग ७।३।५५३, गाथा २८ :

सकता पागता चैव, बुहा भणितीओ आहिया।

सरमंडलंमि गिज्जते, पसत्या इसिभासिता ॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सकया पायया चैव, भणिईओ होति दोणि वा।

सरमंडलम्मि गिज्जते, पसत्या इसिभासिता ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८० :

शिष्टाः-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादयःतेषां भाषा संस्कृताऽर्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, बृद्धवाक्सूरि चरित, श्लोक ११३ :

चतुर्दशाणि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री का अन्तर निम्न प्रकार है

अर्द्धमागधी
 असंयुक्त 'क' को 'ग' या 'त' होता है—
 कुमारगा (१४।११)
 लोगो (१४।२२)
 असंयुक्त 'ग' का लुक् नहीं होता—
 कामभोगेसु (१४।६)
 सगरौ (१८।३५)
 असंयुक्त 'च' और 'ज' के तकार बहुल प्रयोग मिलते हैं—
 तैगिच्छं (२।३३)
 बितिगिच्छा (१६। सू० ४)
 असंयुक्त 'त' का प्रायः लुक् नहीं होता—
 अतरं (८।६)
 असंयुक्त 'द' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—
 उदंग (७।२३)
 असंयुक्त 'प' को प्रायः 'ब' हो जाता है—
 महादीवो (२३।६६)
 असंयुक्त 'य' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—
 उवाया (३२।९)
 असंयुक्त 'व' का प्रायः लुक् नहीं होता और कहीं-कहीं उसको 'त' हो जाता है—
 पवरे (११।१६)
 दिवायरे (११।२४)
 प्रथमा के एकवचन में 'एकार' होता है—
 कयरे (१२।६)
 धीरे (१५।३)

महाराष्ट्री
 'क' का प्रायः लुक् होता है—
 अज्झावयाणं (१२।१६)
 'ग' का प्रायः लुक् होता है—
 भोए (१४।३७)
 'च' और 'ज' का प्रायः लुक् होता है—
 समुवाय (१४।३७)
 वीयाई (१२।१२)
 'त' का प्रायः लुक् होता है—
 पुरोहियं (१४।३७)
 'द' का प्रायः लुक् होता है—
 विइयाणि (१२।१३)
 'प' का प्रायः लुक् होता है—
 तउय (३६।७३)
 'य' का प्रायः लुक् होता है—
 काए (३६।८२)
 भाउ (७।१०)
 'व' का प्रायः लुक् होता है—
 चेय (२४।१६)
 प्रथमा के एकवचन में 'ओकार' होता है—
 मणमुत्तो (१२।३)

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
कम्मुणा	कम्मेण
वेयसां (२५।१६)	वेयाण
विसालिसेहिं (३।१४)	विसरिसेहिं
दुवाल्लसंगं (२४।३)	वारसंग (२३।७)
गेही (६।४)	गिद्धी
सोही (३।१२)	सुद्धी
तेगिच्छं (२।३३)	चीइच्छं
मिलेक्खुया (१०।१६)	मिलिच्छा, मिच्छा
माहणा (१२।१३)	वम्हणो (२५।१६)
पडुप्पल (२६।सू०१३)	पच्चुप्पल (७।६)

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस संवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अव्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ है। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नहीं हैं।

१-निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्राप्त व्याख्या-ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। इसलिये यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठी शताब्दी) हैं।

२-चूर्ण :

यह प्राकृत-संस्कृत में लिखी गई उत्तराध्ययन की महत्त्वपूर्ण व्याख्या है। इसमें अन्तिम अठारह अध्ययनों का व्याख्यान बहुत ही संक्षिप्त है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में ग्रन्थकार

ने अपना परिचय 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में दिया है।^१ इनका अस्तित्व-काल विक्रम की सातवीं शताब्दी है।

३—गिष्यहिता (बृहद्वृत्ति या पाइय-टीका) :

उत्तराध्ययन की संस्कृत-व्याख्याओं में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसमें अवतरणात्मक कथाएँ प्राकृत में गृहीत हैं। बृहद्वृत्तिकार ने अनेक बार 'बृहत्सम्प्रदाया-दवसेय'^२ या 'सम्प्रदायादवसेय'^३ लिख कर उनका अवतरण किया है।

बृहद्वृत्तिकार के सामने चूर्ण के अतिरिक्त और भी कोई प्राचीन व्याख्या रही है, ऐसा प्रतीत होता है। नौवें अध्ययन के अट्टाईसवें श्लोक की व्याख्या में—'तथा च बृद्धा-लोमहारा प्राणहारा इति'^४ ऐसा उल्लेख मिलता है। यह वाक्य चूर्ण का नहीं है। उसमें 'लोमहारा' का अर्थ—'लोमहारा णाम पेह्लणमोसगा'^५—इन शब्दों में है।

इससे यह प्रमाणित होता है कि बृहद्वृत्ति में उद्धृत वाक्य चूर्ण से अतिरिक्त किसी दूसरी प्राचीन व्याख्या का है।

बृहद्वृत्तिकार ने 'बृद्ध' शब्द के द्वारा चूर्णिकार का भी उल्लेख किया है—'बृद्धास्तु व्याचक्षते—लोलुपमाणं ति लालप्यमानं—भरणपोषणकुलसंताणेसु य तुक्मे भविस्सह'ति'^६।

मिलाइए—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ २२३ 'लोलुपमाणं लोलुप्यमानं भरणपोषण-कुलसंताणेसु य तुक्मे भविस्सह'ति'।

ये बृहद्वृत्तिकार हैं बादी-वेताल शान्ति सूरि। इनका अस्तित्व-काल विक्रम की ११वीं शताब्दी है।

१—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ २८३ :

वाणिजकुलसंभूओ, कोडियगणिओ उ वयरसाहीतो ।

गोवालियमहत्तरओ, विक्खाओ आसि लोसंमि ॥१॥

ससमयपरसमयविऊ, ओयस्सी दित्तिमं सुगंभीरो ।

सीसगणसंपरिवुडो, वक्खाणरतिप्पिओ आसी ॥२॥

तेसि सीसेण इमं, उत्तरज्जयणाण चुण्णिखंडं तु ।

रइयं अणुगहत्थं, सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥३॥

२—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र १४५ ।

३—वही, पत्र १२५ ।

४—वही, पत्र ३१२ ।

५—उत्तराध्ययन चूर्ण, पृष्ठ १८३ ।

६—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४०० ।

४-सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्ता नेमिचन्द्र सूरि हैं। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२९ है।

५-सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय हैं। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७९ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्रायः इन्हीं मुख्य व्याख्या-ग्रन्थों के उपजीवी हैं। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं^१

६-अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० सं० १६४१
७-वृत्ति	कमल संयम	,, १५५४
८-दीपिका	उदयसागर	,, १५४६
९-लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	,, १५५०
१०-वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	,, १५५२
११-वृत्ति	विनयहंस	,, १५६७-८१
१२-टीका	अजितदेव सूरि	,, १६२८
१३-दीपिका	हर्षकुल	१६ वी शताब्दी
१४-अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५-टीका-दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६-दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वी शताब्दी
१७-वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८-वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९-टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०-अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१-अवचूरि		वि० सं० १४९१
२२-बालावबोध	समरचन्द्र	
२३-बालावबोध	कमललाम	१६ वी शताब्दी
२४-बालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१-जैनभारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) में प्रकाशित श्री अग्रचन्द्रजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

इनके अनिरिक्त कुछ वृत्ति-टीकाएँ, दीपिकाएँ तथा अवचूरियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कई में कर्ता का नाम नहीं है तो कई में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। वे ये हैं—

व्याख्या-ग्रन्थ	कर्ता	रचना-काल
मकरन्द टीका		वि० नं० १७५०
दीपिका		,, १८३७
वृत्ति-दीपिका		
दीपिका		,, १८४३
वृत्ति		
अक्षरार्थ लवलेश		
टब्बा	आदिचन्द्र या रायचन्द्र	
टब्बा	पार्ष्वचन्द्र, धर्मसिंह	१८ वीं शताब्दी
वृत्ति	मतिकीर्ति के शिष्य	
भाषा पद्यसार	ब्रह्म ऋषि	वि० सं० १५६६

तेरापन्थ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य (वि० नं० १८६०-१९३८) ने इस मूल के उनकी अव्ययनो पर राजस्थानी भाषा में पद्य-बद्ध 'बोड़' की रचना की। यत्र-तत्र उन्होंने विषय को स्पष्ट करने के लिए वार्तिक भी लिखे हैं।

२३ : उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में दशकैकालिक और उत्तराव्ययन का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। उनके छन्द आदि अनेक विषयों पर यहाँ कोई विमर्श नहीं किया गया है। इनका पर्यालोचन 'दशकैकालिक : एक समीक्षात्मक अव्ययन' तथा 'उत्तराव्ययन : एक समीक्षात्मक अव्ययन' में किया जा चुका है। इसलिए उनके अवलोचन की सूचना के साथ-साथ मैं इस विषय को सम्पन्न कर रहा हूँ।

वाँठिया-सवन
बीदासर
१ अगस्त, १९६६

आचार्य तुलसी

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

- १ अनुयोगद्वार (वि० सं० २०१६) ले० आर्यरक्षित सूरि
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)
- २ आगम अट्ठत्तरी ले० अभयदेव सूरि
३. आगम पुरुषनु रहस्य, श्री (वि०सं० २०१०) ले० मुनि अभयसागर
(प्र० श्री गोडजी मित्र मंडल, बम्बई)
४. आगमाधिकार ले० श्रीमज्जयाचार्य
(अप्रकाशित)
- ५ आचाराग सूत्रम् (वि० सं० २००७) अनु० मुनि सौभाग्यमलजी
(प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)
- ६ आवश्यक निर्युक्ति (वि० सं० १९८४) ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
- ७ आवश्यकवृत्ति (वि० सं० १९८८) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)
- ८ उत्तराध्ययन चूर्णि (वि० सं० १९८९) ले० जिनदासगणि महत्तर
(प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी
श्री श्वे० संस्था, इन्दौर)
- ९ उत्तराध्ययन निर्युक्ति भा० १-३ (वि०सं० १९७२) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)
- १० उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति (वि०सं० १९७२) ले० वेदालवादी शान्ति सूरि
(भा० १-३)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)
- ११ उत्तराध्ययन सूत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(अप्रकाशित)
- १२ उत्तराध्ययन सूत्र, दी (२ भाग) (सन् १९२२) स० जार्ज शार्पेन्टियर
(प्र० उषसला विश्वविद्यालय)

१३. औपपातिक सूत्रम् (सवृत्ति) (वि०सं० १९९४) सं० मुनि हेमसागर
(प्र० पं० भूरालाल कालीदास)
१४. ओघनिर्युक्तिः श्रीमती (वृत्ति सहित) (वि०सं० १९७५) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति)
१५. अगपण्णात्ति
(प्र० भाणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाल)
१६. कल्पसूत्र (वि० सं० २००८) ले० आर्य भद्रबाहु स्वामी
(प्र० साराभाई मणिकलाल नवाव, अहमदाबाद) सं० मुनि पुण्यविजयजी
१७. कषायपाङ्कज (भाग-१-६) (वि०सं० २००० से २०२२) ले० भगवद् गुणधराचार्य
(प्र० भारतीय दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा)
१८. काव्यादर्श (सन् १९२४) ले० दंडी
(प्र० ओरियन्टल बुक्स सप्लाइ ऐजेन्सी, पूना)
१९. केनीनिकल लिटरेचर ऑफ टी जैन्स ले० हीरालाल रसिकदास
(प्र० ही०रा० संकडीसेरी, गोपीपुरा, सूरत)
२०. गाथा सहस्री ले० समयसुन्दर गणी
२१. गोम्मटसार (जीवकांड) (सन् १९२७) ले० नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(प्र० सेन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, अनु० सं० जे० एल० जैनी
लखनऊ) एम० ए०
२२. चारित्रमर्त्ति (क्रियाकलाप में मुद्रित) ले० पूजपाद स्वामी
२३. जयधवला (६ भाग) (वि०सं० २००० से २०२२) ले० वीरसेनाचार्य
(प्र० भारत दिगम्बर जैन संघ, चौरासी, मथुरा) सं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री,
सं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री
२४. जातक (६ खंड) (प्रथम संस्करण) अनु० भदन्त आनन्द कोस्त्यायन
(प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)
२५. जैनधर्मवरस्तोत्र (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) (वि० सं० १९८९) ले० भावप्रभ सूरि
(प्र० जगद्गुरु जीवनचन्द्र साकरचन्द्र)
२६. जैन भारती (मासिक) (वर्ष ७ अंक ३३)
(प्र० जैन स्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता-१)

२७. तत्त्वार्थवार्त्तिक (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकालकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)
२८. तत्त्वार्थवृत्ति (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) सं० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन
२९. तत्त्वार्थवृत्ति (हारिमद्रीय) (वि०सं०१९९२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) सं० आनन्दसागर सूरि
३०. दशवैकालिक्य (भाग २) (वि०सं०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता)
३१. दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्थ)
३२. दशवैकालिक चूर्णि (अगम्य) ले० स्थविर अगस्त्यसिंह
(अप्रकाशित)
३३. दशवैकालिक चूर्णि (जिनदास) (वि०सं०१९८९) ले० जिनदास महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
३४. दशवैकालिक ढोपिका (वि०सं०१९७५) ले० समयमुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश सूरिजी ग्रन्थमाला समिति, खंभात)
३५. दशवैकालिक निर्युक्ति (वि०सं०१९७४) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३६. दशवैकालिक वृत्ति (हारिमद्रीय) (वि०सं०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार संस्था)
३७. दसवेयालिय सूत्र (सन् १९३२) ले० डॉ० वाल्मिर गुन्निग
(प्र० सेठ आनन्दजी कल्याणजी, अहमदाबाद)
३८. दशवैकालिक सूत्र, ए स्टडी, टी (सन् १९३३) ले० प्रो० पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विर्लिगटन कॉलेज, संगली)
३९. दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति (वि०सं०२०११) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० पन्यास मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) सं० विजय कुमुदसूरीस्वरजी
४०. देशीनाममाला (द्वितीय संस्करण) (सन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० बम्बई संस्कृत सीरीज)

४१. धवला (षट्खण्डागम) (भा०१-६) (वि०सं०१९९६ से २००६)
(प्र० जैन साहित्योद्धार कार्यालय, अमरावती) ले० बीरसेनाचार्य
सं० हीरालाल जैन
४२. नन्दी चूर्णि
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
४३. नन्दी वृत्ति (वि०सं०१९८०) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति)
४४. नन्दी वृत्ति (वि०सं०१९८४) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)
४५. नन्दी सूच (सन् १९५८) सं० सुबोध मुनि
(प्र० सन्मति ज्ञानपीठ, लोहामंडी, आगरा)
४६. नन्दी सूत्रम् श्रीमद् (चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति सहित) सं० विजयदास सूरि
(वि०सं०१९८८)
(प्र० श्रीमद् रूपचन्द्रजी नवलमलजी, इन्दौर)
४७. नाट्यशास्त्र (सन् १९३६) ले० भरत मुनि
(प्र० गायकवाड ओरियंटल सीरीज)
४८. प्रथम द्वात्रिंशिका ले० सिद्धसेन
४९. प्रभावकचरित (१९९७) ले० श्री प्रभावचन्द्र आचार्य
(प्र० सिंघी जैन ग्रन्थमाला, अहमदाबाद) सं० मुनि जिनविजय
५०. प्रज्ञापना (वि०सं०१९७४) ले० श्यामाचार्य
(प्र० आगमोदय समिति, मेसाणा)
५१. पञ्चकल्प भाष्य (बृहद्) ले० संघदास क्षमाश्रमण
५२. पञ्चकल्प चूर्णि
५३. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण (वि०सं०२०१५) ले० आर० पिशाल
(प्र० विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना) अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी
५४. पातजल महाभाष्य (सन् १९५१) ले० पतजलि
(प्र० निर्णयसागर, बम्बई) सं० भार्गव शास्त्री
५५. पिण्ड निर्युक्ति (वि०सं०२०१८) ले० भद्रबाहु स्वामी
(प्र० शासन कण्टकोद्धारक ज्ञानमंदिर,
भावनगर (सौराष्ट्र) अनु० श्री हंससागरजी महाराज

५६. बृहत्कल्प सूत्रम् (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) सं० पुण्यविजयजी
५७. महाभारत (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)
५८. मार्कण्डेय पुराण (वि०सं० २०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुरुमंडल ग्रन्थमाला, मनमुखराय मोर, कलकत्ता)
५९. मूलाचार (वि०सं० २४८४) ले० बट्टकेर आचार्य
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री
फलटन, जि० उत्तरसतारा)
६०. मूलाचार (वि०सं० १९७७) ले० बट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) सं० पं० पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
सं० पं० गजाधरलाल
६१. मूलाराधना (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि
६२. रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ (वि०सं० २००१) सं० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामंडी, आगरा)
६३. रिक्लीजियन ट जैन, ल अनु० डॉ० ग्यारीनो
६४. व्यवहारभाष्य (वि०सं० १९९४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)
६५. विचारलेख (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि
६६. वैज्ञानिक दर्शन (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)
६७. स्थानाग (द्वितीय संस्करण, सं० १९५४) ले० माणिकचन्द चुडीलाल, अहमदाबाद
(प्र० आगमोदय समिति)
६८. समवायाग सूत्रम् (वि०सं० १९७४)
६९. सामाचारिज्ञातक (वि०सं० १९९६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० जवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)
७०. सिद्धान्तस्तवज्ञोत ले० जिनप्रभ सूरि

७१. सूत्रकृताग (सं० १९७३)
(५० आगमोदय समिति)
७२. षड्भाषाचन्द्रिका
७३. हरिवंश पुराण (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) सं० पं० दरवारीलाल
७४. हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरी विन्टरनित्ज, पी-एच०डी०
७५. हिस्ट्री ऑफ दी केनोमिकल लिटरेचर
ऑफ दी जैन्स, २ (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सुरत)
७६. हेमशब्दानुशासन (सं १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमंड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)
७७. श्रमण भगवान् महावीर (वि०सं० १९६८) ले० पं० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति, जालोर)
७८. श्रावक विधि ले० धनपाल

दसवेआलियं : विषय-सूची

१. हुमपुष्पिका	पृ० १
ब्रम्ह-पदं	१	भमर-चरिया-पदं			२-५
२. सान्मणपुव्वयं	२
काम-पदं	१	राईमई-पदं			६-१०
चाई-पदं	२-३	निकखेव-पदं			११
मणो-निगह-पदं	४-५				
३. खुड्डियायारकहा	४
उकखेव-पदं	१	उउचरिया-पदं			१२
अणायार-पदं	२-१०	निकखेव पदं			१३-१५
निगंथ-पदं	११				
४. छज्जीवणिया	६
उकखेव-पदं	सू०१-३	वणस्सड-पदं			सू०२२
जीव-पदं	सू०४-१०	तस-पदं			सू०२३
महव्वय-पदं	सू०११-१७	संजम-पदं			१-६
पुढवी-पदं	सू०१८	नाण-पदं			१०-१३
भाउ-पदं	सू०१९	आरोह-पदं			१४-२५
तेउ-पदं	सू०२०	निकखेव-पदं			२६-२९
वाउ-पद	सू०२१				
५. पिंडेसणा (उ० १)	१८
उकखेव-पदं	१	अणायतनं			६-११
गवेसणा-पदं—		गमणं			१२-२२
गमणं	२-८	दिट्ठि-संजमो			२३

मित-भूमि	२४-२६	गहणेसणा-पदं—	
गहणेसणा-पदं		सत्त-दोसा	५५-५६
छड्डियं	२७-२८	उम्मीसं	५७-५८
दायगो	२९	निकिखत्तं	५९-६४
सहडं	३०-३१	सकमो	६५-६६
पुराकम्मं	३२-३४	मालोहडं	६७-६९
पच्छाकम्म	३५-३६	सचित्त	७०-७२
अणिसट्ठ	३७-३८	बहु-उज्झिय	७३-७५
गुज्झिणी	३९	अपरिणंत	७६
दायगा	४०-४३	अच्चंविहं	७७-८१
संकिय	४४	परिभोगेसणा-पदं—	
उज्झिन्न	४५-४६	बहि-भोयणं	८२-८६
दाणट्ठ	४७-४८	ठाण-भोयणं	८७
पुण्णट्ठं	४९-५०	पडिक्कमण	८८-८९
वणिमट्ठ	५१-५२	आलोयण	९०-९१
समणट्ठं	५३-५४	विउसग्गो	९२-९४
		भोयण	९५-९९
		निकखेव-पदं	१००
पिंडेसणा (७० २) ...			२९
उक्खेव-पदं	१	अकप्प-पदं	१४-२४
पुणो-गमण-पदं	२-३	समुयाण-पदं	२५
समय-पदं	४-६	अदीण-पदं	२६-२८
पाण-पदं	७	सथव-पदं	२९-३०
कहा-पदं	८	माया-पदं	३१-३५
अवलंबण-पदं	९	सुरा-पदं	३६-४५
बणीमग-पदं	१०-१३	तेण-पदं	४६-४९
		निकखेव-पदं	५०

६. सहायारकहा	३८५
उक्खेव-पदं	१-३		तेउ-पदं		३३-३६
आयार-गोयर-पद	४-८		वाउ-पदं		३७-४०
अहिंसा-पदं	६-११		वणस्सइ-पदं		४१-४३
सच्च-पद	१२-१३		तस-पदं		४४-४६
अतेणग-पद	१४-१५		अकप्प-पदं		४७-५०
वमचेर-पदं	१६-१७		गिहि-भायण-पदं		५१-५३
अपरिगह-पद	१८-२२		आसन्दी-पद		५४-५६
एगभत्त-पद	२३		निमेज्जा-पदं		५७-६०
भोयण-पद	२४-२६		सिणाण-पदं		६१-६४
पुढवी-पद	२७-२९		विभूसा-पद		६५-६७
आउ-पदं	३०-३२		निकखेव-पदं		६८-६९
७ वक्कसुद्धि	४३
भासा-पदं	१-५		सावज्ज-अणवज्ज-पदं		४०-४६
सकिय-पद	६-१०		आएस-पदं		४७
फस्स-भासा-पद	११-१४		जहत्थ-पदं		४८-४९
ममत्त-भासा-पद	१५-१८		आसंसा-पदं		५०
नाम-गोत्त-पदं	१९-२०		जहत्थ-पदं		५१-५३
जाइ-पदं	२१-३९		निकखेव-पदं		५४-५७
८. आयारपणिही	८५०
उक्खेव-पदं	१-२		पइण्ण-चरिया-पदं		४०-४५
अहिंसा-पद	३-१२		भासा-पद		४६-५०
सुहुम-पद	१३-१६		लयण-पदं		५१-५२
पहिलेहण-पदं	१७		इत्थी-पद		५३-५७
परिट्ठावणा-पदं	१८		विसय-पदं		५८-५९
पइण्ण-चरिया-पदं	१९-३५		सद्धा-पदं		६०
कसाय-पदं	३६-३९		निकखेव-पदं		६१-६३

६. विणयसन्माही (उ० १)	८५७
उक्खेव-पदं १	आयरिय-पदं ११-१६
आसायण-पदं २-१०	निकखेव-पदं १७
विणयसन्माही (उ० २)	६१
दुम-पदं १-२	विणीयाविणीय-पद ५-११
कट्ट-पद ३	सिक्खा-पदं १२-२१
कोव-पदं ४	निकखेव-पदं २२
विणयसन्माही (उ० ३)	६८
स-पुज्ज-पद १-३	अवत्तव्व-पदं ६
जवणट्टया-पद ४	गुण-पद १०-१२
अप्पिच्छा-पद ५	माणरिह-पदं १३-१४
कटय-पदं ६-८	निकखेव-पद १५
विणयसन्माही (उ० ४)	६८
उक्खेव-पदं सू०१-३	तव-पदं सू०६
विणय-पद सू०४	आयार-पद सू०७
सुय-पद सू०५	निकखेव-पद ६-७
१० स-भिनकखु	७१
उक्खेव-पद १	बोसट्ट-वत्त-देह-पदं १३
अहिंसा-पदं २-४	परीसह-जय-पद १४
सवर-पदं ५	सजय-पदं १५
धुव-जोगी-पदं ६	असग-पदं १६
सम्महिट्ठी-पद ७	ठिअप्पा-पदं १७
असन्निहि-पदं ८	समता-पद १८
छदणा-पदं ९	मत्त-पदं १९
कहा-पदं १०	अज्जपय-पदं २०
भय-भेरव-पदं ११	निकखेव-पदं २१
पडिमा-पदं १२	

रइवक्क (पढमा चूलिया) ... पृ० ७६

गयकुस-पदं	१	घम्म-भट्ट-पदं	१२-१४
पञ्छा-परिताव-पद	१-६	थिरीकरण-पद	१५-१७
रतारत-पद	१०-११	निकखेव-पदं	१८

विविक्तचरिया (विहया चूलिया) ... ८१

उक्खेव-पद	१	पडिसंहरण-पद	१४
पडिसोय-पद	२-३	पडिदुद्ध-पदं	१५
चरिया-पद	४-११	अप्परक्खा-पदं	१६
सपेक्खा-पद	१२-१३		

उत्तराखण्ड : विषय-सूची

१. विषयसूची	पृष्ठ = ३
कलकत्ता-पत्र	१	कलकत्ता-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	२१-४	विप्लव-पत्र	१३-१६	
कलकत्ता	१३-१६			
२. विषयसूची	३३
कलकत्ता-पत्र	१३-१६	कलकत्ता-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	२३	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१३-१६	विप्लव-पत्र	१३-१६	
३. विषयसूची	१००
कलकत्ता-पत्र	१३	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१	विप्लव-पत्र	१३-१६	
विप्लव-पत्र	१	विप्लव-पत्र	१३	

४. असखयं	१०३
सम्ब-पद	२-६	अप्यमाय-पदं	८-१३
अणसण-पद	७		
५. अकाममरणिज्ज	१०६
- उक्खेव-पदं	१-३	सकाम-मरण-पदं	१७-३२
अकाम-मरण-पदं	४-१६		
६. खुड्डागनियण्ठिज्जं	११०
सच्च-पद	२-७	अप्यमाय-पद	१२-१७
नाण-वाय-पदं	८-११		
७. उरब्धिज्जं	११३
उरब्धिज्ज-पद	१-१०	कुसग्ग-जल-पद	२३-२७
काणिणि अम्भग-पद	११-१३	निक्खेव-पद	२८-३०
वणिय-पद	१४-२२		
८. काविलीयं	११७
दुक्ख-मुत्ति-पदं	१-३	अभियोग-भावणा-पद	१३-१५
असग-पद	४-६	लोभ-पद	१६-१७
अहिंसा-पद	७-१०	इत्थी-पदं	१८-१९
आहारा-पदं	११-१२	निक्खेव-पद	२०
९. नमिपव्वज्जा	१२२
उक्खेव-पदं	१-६	दाण-पद	३७-४०
मिहिला-पदं	७-१६	घोरासम-पदं	४१-४४
पागार-पदं	१७-२२	कोस-पदं	४५-४६
पासाय-पदं	२३-२६	काम-पद	५०-५३
दण्ड-पद	२७-३०	कसाय-पद	५४
जुज्झ-पदं	३१-३६	निक्खेव-पदं	५५-६२

१०. हुमपत्तयं	१२९
भव-पदं	१-४	हाण-पदं	२१-२७
संसार-पदं	५-१५	उवदेस-पदं	२८-३६
दुल्लह-पदं	१६-२०	निकखेव-पदं	३७
११. बहुस्सुयपुज्जं	१३६
उक्खेव-पदं	१	अविणीय-पदं	६-६
अबहुस्सुय-पदं	२	भुविणीय-पदं	१०-१४
असिक्खा-पदं	३	बहुस्सुय-पदं	१५-३०
सिक्खा-सील-पदं	४-५	निकखेव-पदं	३१
१२. हरिएसिज्जं	१४०
उक्खेव-पदं	१-२	अहोदाण-पद	३५-३६
जन्नवाड-पदं	३-११	जाड-पदं	३७
खेत-पद	१२-१५	सोहि-पद	३८-३९
तालण-पदं	१६-३०	जन्न-पदं	४०-४४
पासा-पदं	३१-३४	तित्थ-पदं	४५-४७
१३. चित्तसम्भूज्जं	१४९
उक्खेव-पदं	१-१२	संबोहि-पद	१७-३३
निमंतण-पदं	१३-१६	निकखेव-पदं	३४-३५
१४. उसुयारिज्जं	१५५
निकखेव-पदं	१-६	कमलावर्ड-पदं	३७-५०
भिगु-पुत्त-पदं	७-२८	निकखेव-पदं	५१-५३
भिगु-जसा-पदं	२९-३६
१५. सभक्खुयं	१६४
पडण्णा-पदं	१	आय-गवेसय-पदं	५
असंग-पदं	२	निग्गह-पदं	६
अहियास-पदं	३-४	आणायार-पदं	७

उत्तररज्जुभयणं : विषय-सूची

- ५

संयव-पद	१०	उवसत्त-पदं	१५
पिण्ड-पदं	११	निकखेव-पद	१६
भय-भेरव-पद	१४		

१६. बम्भचेरसमाहिठाणं ... १६८

उक्खेव-पद	सू० १-३	पणीय-पद	सू० ६
इत्थी-कह-पद	सू० ४	अडमत्त-पद	सू० १०
सन्निसेज्जा-पद	सू० ५	विभूसा-पद	सू० ११
चक्खु-संजम-पद	सू० ६	कामगुण-पद	सू० १२
सोय-सजम-पद	सू० ७	बम्भचेर-गुत्ति-पदं	सू० १७
सइ-सजम-पद	सू० ८		

१७. पावसमणिज्जं ... १७५

उक्खेव-पद	१-२	विवाद-पदं	१२
निद्दासील-पदं	३	निसीदण-पद	१३
अविणय-पद	४-५	सेज्जा-पद	१४
संजय-भन्नया-पद	६	विगड-पद	१५
अप्पमज्जण-पद	७	अत्थन्त-आहार-पद	१६
दवदव-पद	८	गाणगणिय-पदं	१७
पडिलेहा-पद	९	पर-गेह-पद	१८
परिभावय-पद	१०	सन्नाइ-पिड-पद	१९
असविभागी-पद	११	निकखेव-पदं	२०-२१

१८. सज्जज्जं ... १७८

उक्खेव-पद	१-११	रायरिसह-पदं	१८-५०
सवोहि-पदं	१२-१७	निकखेव-पद	५१-५३

१९. मियापुतिज्जं	१८५
उक्खेव-पद	१-१४	भव-दुक्ख-पद	४५-४६
दुक्ख-पद	१५-१७	नरय-दुक्ख-पद	४७-७४
धम्म-पद	१८-२१	मिग-चारिया-पदं	७५-८५
सार-भण्ड-पद	२२-२३	पव्वज्जा-पद	८६-८७
महव्वय-पद	२४-३०	समता-पद	८८-९५
दुक्कर-पद	३१-४४	निकखेव-पद	९६-९८
२०. महानियण्ठिज्जं	१९७
उक्खेव-पद	१-७	धम्म-लोव-पद	३८-५०
अणाह-पद	८-३५	निकखेव-पद	५१-६०
अत्त-पद	३६-३७		
२१. समुद्दपालीयं		..	२०६
उक्खेव-पद	१-११	चरिया-पद	१३-२३
महव्वय-पदं	१२	निकखेव-पद	२४
२२. रहनेमिज्ज	२११
उक्खेव-पदं	१-५	आसीवाय-पद	२५-२७
निज्जाण-पदं	६-१४	राईमई-पद	२८-४८
सवेग-पदं	१५-२०	निकखेव-पद	४९
अमिनिक्खमण-पदं	२१-२४		
२३. केसिगीयमिज्जं	२१८
उक्खेव-पद	१-२२	पास-पद	४१-४४
चाउज्जाम-पद	२३-२८	ल्या-पदं	४५-४९
अवेला-पद	२९-३४	अग्गी-पद	५०-५४
विजय-पदं	३५-४०	दुट्ठस्स-पदं	५५-५९

उत्तरज्जयण : विषय-सूची

कुप्यह-पदं	६०-६४	उज्जोय-पद	७५-७६
दीव-पद	६५-६६	ठाण-पदं	८०-८७
नावा-पद	७०-७४	निकखेव-पद	८८-८९
२४. पवयण-माया	२२८
उक्खेव-पद	१-३	वइ-गुत्ति-पदं	२२-२५
समिइ-पद	४-१६	काय-गुत्ति-पदं	२४-२५
गुत्ति-पद	२०-२१	निकखेव-पदं	२६-२७
२५. जन्तइज्जं	२३१
उक्खेव-पद	१-१०	थुइ-पदं	३४-३७
मुख-पदं	११-१८	संबोहि-पद	३८-४१
माहण-पद	१९-३३	निकखेव-पद	४२-४३
२६. सामायारी	२३७
सामायारी-पद	१-७	अणाहाग-पद	३३-३४
चरिया-पद	८-१०	विहार-पद	३५
दिवस-चरिया-पद	११-१६	सज्जाय-पद	३६
रत्ति-चरिया-पद	१७-१९	संक्का-पद	३७-३८
पडिलेहण-पद	२०-२२	पडिक्कमण-पदं	३९-५१
पडिलेहण-विहि-पदं	२३-३०	निकखेव-पदं	५२
आहार-पद	३१-३२		
२७. खलुंकिज्जं	२४४
२८. मोक्खमग्गई	२४७
मग्ग-पद	२-३	सम्मत्त-रुइ-पदं	१५-३१
नाण-पदं	४-५	चरित्त-पदं	३२-३३
दब्ब-पदं	६-१३	तव-पदं	३४
नव-तहिय-पदं	१४	निकखेव-पदं	३५-३६

२९. सम्मतपरवकमे

उक्तेव-पदं	सू० १
सवेग-पदं	सू० १
निव्वेय-पदं	सू० २
धम्म-सद्धा-पदं	सू० ३
सुसूसणा-पदं	सू० ४
आलोयणा-पदं	सू० ५
निदण-पद	सू० ६
गरहण-पदं	सू० ७
सामादय-पदं	सू० ८
चउव्वीसत्थव-पद	सू० ९
वंदण-पद	सू० १०
पडिक्कमण-पद	सू० ११
काउस्सग-पदं	सू० १२
पच्चक्खाण-पदं	सू० १३
थवथुइ-पद	सू० १४
काल-पडिल्लेहण-पदं	सू० १५
पायच्छित्त-पद	सू० १६
खेमावण-पद	सू० १७
सज्जेय-पद	सू० १८-२३
सुय-पदं	सू० २४
एयग-मण-पदं	सू० २५
सजम-पद	सू० २६
तव-पद	सू० २७

...	...	२५३
बोदाण-पदं	सू० २८	
सुहसाय-पदं	सू० २९	
अप्पडिबद्ध-पदं	सू० ३०	
विवित्त-पदं	सू० ३१	
विनियट्टण-पदं	सू० ३२	
पच्चक्खाय-पद	सू० ३३-४१	
पडिळ्ळ-पद	सू० ४२	
वेयावच्च-पदं	सू० ४३	
सव्व-गुण सम्पन्न-पदं	सू० ४४	
वीयरग-पदं	सू० ४५	
खंति-पद	सू० ४६	
मुत्ति-पद	सू० ४७	
अज्ज-पद	सू० ४८	
मद्व-पद	सू० ४९	
सच्च-पद	सू० ५०-५२	
गुत्ति-पद	सू० ५३	
समाहारण-पदं	सू० ५६-५८	
सपन्नया-पद	सू० ५९-६१	
इदिय-निगह-पद	सू० ६२-६६	
कसाय-विजय-पद	सू० ६७-७०	
खवणा-पद	७१-७२	
निक्खेव-पद	सू० ७३	

३०. तवमगा	२७१
उक्खेव-पद	१-६	अभिन्तर-तव-पदं	३०-३६	
तव-पदं	७	निकखेव-पदं	३७	
वाहिरग-तव-पदं	८-२६			
३१. चरणविही	२७६
उक्खेव-पद	१	वज्जण-पद	६	
नियत्ति-पवत्ति-पदं	२	जयणा-पदं	७-२०	
निरोध-पदं	३-५	निकखेव-पदं	२१	
३२. पमायट्ठाणं	२७९
उक्खेव-पदं	१	गन्व-पदं	४८-६०	
तण्हा-पदं	६-८	रस-पदं	६१-७३	
उवाय-पदं	९-१८	फास-पदं	७४-८६	
दुक्खं-पदं	१९-२२	भाव-पदं	८७-९९	
रुद्ध-पदं	२३-३४	निकखेव-पदं	१००	
सद-पदं	३५-४७			
३३. कम्मपयडी	३०१
उक्खेव-पदं	१	ठिड-पदं	१९-२३	
कम्म-पद	२-३	अणुभाग-पद	२४	
पयडि-पदं	४-१६	निकखेव-पदं	२५	
पाएस-पद	१७-१८			
३४. लेसजम्भयणं	३०५
उक्खेव-पदं	१-२	रत्त-पदं	१०-१५	
लेसा-पद	३	गन्व-पदं	१६-१७	
वण्ण-पदं	४-६	फास-पदं	१८-१९	

परिणाम-पदं	२०-३२	...	घम्म-नेमा-पदं	५७
शान्त-पद	३३		उयवात-पदं	५८-६०
टिड-पद	३४-५५		निकसेव-पदं	६१
अहम्म-नेमा-पदं	५६			
३५. अणगारमगगई	३१७
उक्केव-पदं	१		वय-विस्सय-पदं	१८-१५
अमंग-पदं	२		पिण्डवाय-पद	१६
उवम्सय-पदं	४-७		ममता-पदं	१८
गिह-समाग्भ-पदं	८-६		वोत्तद्द-काय-पदं	१९
पायण-पदं	१०-११		सल्लेहणा-पदं	२०
जोड-पदं	१२		निक्खेव-पदं	२१
मम-लेद्धं-कंचण-पदं	१३			
३६. जीवाजीवविभत्ती	३२०
उक्केव-पदं	१		वेडंदिय-पदं	१२७-१२५
लो।ताल्लोक-पद	२-४		तेडंदिय-पदं	१३६-१४४
अरु-वि-अजीव-पदं	५-६		चउरिदिय-पदं	१४५-१५४
रु-वि-अजीव-पदं	१०-४७		पंचिदिय-पदं	१५५
जीव-पद	४८		नेग्गय-पदं	१५६-१६६
सिद्ध-जीव-पदं	४९-६७		तिरिक्क-जोणिय-पदं	१७०-१९४
गंमाण्य-जीव-पदं	६८-६९		मणुय-पदं	१९५-२०३
पुट्ठवी-पदं	७०-८३		देव-पदं	२०४-२४६
आड-पदं	८४-९१		मल्लेहणा-पदं	२५०-२५४
यणस्मउ-पदं	९२-१०७		भावणा-पदं	२५६-२६७
तेउ-पदं	१०८-११६		निसिक्खेव-पदं	२६८
वाड-पदं	११७-१२६			

दसवेआलियं

पदम अज्झयणं

दुमपुप्फिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥
वयं च वित्ति लब्भामो न य कोड उवहम्मई ।
अहागडेसु रोयंति पुप्फेसु भमरा जहन् ॥ ४ ॥
महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥
—त्ति वेमि ॥

*

वीर्यं अज्मयणं

सामण्णपुव्वयं

'कहं नु कुज्जा'³ सामंणं जो कामे न निवारए ।
 पए पए वित्तीयंतो संकप्पत्त वसं गओ ॥ १ ॥
 वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य ।
 अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥
 जे य³ कत्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिक्खई³ ।
 साहीणे चयइ भोए³ से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥
 समाए³ पेहाए परिव्वयंतो
 सिया मणो नित्सरई बहिद्धा ।
 न सा महं नोवि अहं पि तीसे
 इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥
 आयावयाही चय सोउमल्लं
 कामे कमाही कमियं खु दुक्खं ।
 'छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं'³
 एवं सुहो होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—अहं नु कुज्जा (अ. उ. ह.) : अहं नु कुज्जा (अ. उ. ह.) :

कहं नु कुज्जा (ला) : कहं नु कुज्जा (अ.) : कहं नु कुज्जा (जा) ।

२—उ (उ) ।

३—विपिट्ठि° (उ) : विपिट्ठि° (ल) : विपिट्ठि° (ग) ।

४—भेणी (अ) ।

५—सद (अ) ।

६—छिन्दाहि दोसं विणएज्ज दोसं (उ) ।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
 नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तु^१ कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥
 धिरत्थु^२ ते जसोकामी^३ जो तं जीवियकारणा ।
 वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥
 अहं च भोयरायस्स^४ तं चऽसि अन्धगवहिणो ।
 मा 'कुले गंधणा'^५ होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥
 जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
 वायाइद्धो व्व हडो^६ अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
 तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
 अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥
 एवं करेन्ति संबुद्धा^७ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो^८ ॥ ११ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—भुत्त (झ) ।

२—ते ऽजसो ° (आ, जा) ।

३—भोग ° (क, ख, ग, घ, ङ, ह) ।

४—कुल गन्धियो (जा) ।

५—हयो (अ, क, ज) ।

६—संपन्ना (अ, ज) ।

७—पुरिसोत्तिमे (अ), पुरिसुत्तम (ल, ग, घ), पुरिसुत्तमो (ज) ।

तइयं अज्मयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुट्टिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
 तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाणं महेसिणं ॥ १ ॥
 उद्देसियं कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
 राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
 संबाहणा दंतपहोयणा य संपुच्छणा^१ देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्ठावए^२ य^३ नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
 तेसिच्छं पाणहा पाए समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥
 सेज्जायरपिंडं च 'आसंदीपलियंकए'^४ ।
 गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडियं 'जायआजीववित्तिया'^५ ।
 तत्तानिब्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि^६ य ॥ ६ ॥
 मूलए सिंगबेरे य उच्छुखंडे अनिब्वुडे ।
 कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

१—संपुच्छो (अ) ।

२—x (ग) ।

३—आसण्ण परिवज्जए (आ, जा) ।

४—^० वत्तिया (ख, ग) ।५—जाइ याजीव^० (ग), जाय आजीवि^० (अ) ।६—आउरेस्सर^० (अ) ; आउरसर^० (हा, जा) ।

सोवच्चले सिधवे लोणे रोमालोणे^१ य आमए ।
 सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 ध्रुवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
 अंजणे दंतवणे य गायामंगविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्वमेयमणाइण्णं निगंथाण महेसिणं ।
 'संजमम्मि य' जुत्ताणं^३ लहुभूयविहारिणं^४ ॥ १० ॥
 पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
 पंचनिग्गहणा धीरा^५ निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
 परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमंति महेसिणो'^६ ॥ १३ ॥
 'दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइ सहेत्तु य ।
 केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
 खवित्ता पुव्वक्कम्माइं संजमेण तवेण य ।
 सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा^७ ॥ १५ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—रुमा^० (अ, घ, ज) ।

२—उ (अ) ।

३—सजय अणुपालता (ज) ।

४—^० विहारिणो (ज) ।

५—वीरा (अ) ।

६—ते वदति सिव गतिं (अ) ; परक्कपति महेसिणो (ज) ।

७—अगस्त्यचूर्णों में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं ।

८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा) ; परिनिव्वुडे (ल) ; परिनिव्वुए (ह) ।

चउत्थं अज्झयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउसं! तेणं'^१ भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ? सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता । सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती तं जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी^१ चित्तमंतमक्खाया^२ अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

१—आवसत्तेणं, आमुसत्तेण (हाटी पा०) ।

२—चित्तमत्ता अक्खाया (जिच्चू) ; चित्तपत्ता अक्खाया (जिच्चू पा०) ; चित्तमत्त मक्खाया (अच्चू पा० ; हाटी पा०) ।

वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं, तं जहा—अग्गबीया मूलबीया पोर्बीया खंध-
बीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणल्या वणस्सइकाइया सबीया
चित्तमंतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे बह्वे तसा पाणा तं जहा—अंडया
पीयया जराउया रसया संसेइमा^१ सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।
जेसिं केसिंचि^२ पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं
रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयंगा जा
य कुंथुपिवीलिया 'सव्वे बेइंदिया सव्वे तेइदिया सव्वे चउरिंदिया
सव्वे पचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया
सव्वे देवा सव्वे पाणा'^३ परमाहम्मिया^४ एसो^५ खलु छट्ठो जीव-
निकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चैसिं^६ छण्हं जीवनिकायाणं नेवसयं दंड समारभेज्जा नेवन्नेहिं
दंडं समारभावेज्जा दंडं समारभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा^७

१—ससेयणा (जिचू) ।

२—केसिं च (ख) ।

३—सव्वे नेरइया, सव्वे पचिंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा,
सव्वे पाणा (जिचू) ।

४—सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पचिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे
मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू) ।

५—परधम्मिता (जिचू पा० , जिचू पा०) ।

६—× (अचू) ।

७—इच्चैतेहिं (जिचू , अचू) ।

८—समणुजाणामि (क, ख, ग, अचू , सू १० से २२ तक) ।

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं 'मणेणं वायाए काएणं' न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भंते ! महव्वए^१ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! पाणाइवायं पच्चक्खामि—से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा 'थावरं वा'^२ नेव सयं पाणे अइवाएज्जा^३ नेवन्नेहि पाणे अइवायावेज्जा^४ पाणे अइवायंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि^५ सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मुसावायं पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा^६ नेवन्नेहि मुसं वायावेज्जा^७ मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न

१—पणसा वयसा कायसा (अचू) ।

२—महव्वए उवट्ठिओमि (अचू सू० ११ से १५ तक) ।

३—थावरं वा से त पाणातिवाते चतुर्विहे, त दव्वतो सेत्ततो कलतो भावतो (अचू पा०) ।

४—अइवाएज्जा (अचू) एव षोडश सूत्र पर्यन्त प्रथमपुरुषस्य स्थाने उत्तमपुरुषस्य प्रयोगः ।

५—अइवायावेमि (अचू) ।

६—x (अचू) सू ११ से १५ तक ।

७—वयामि (अचू) ।

८—वायावेमि (अचू) ।

समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

दोच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भंते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे^१ वा अप्पं वा बह्वं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! मेहुणं पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवावेज्जा मेहुणं सेवते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

चउत्थे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ सू० १४ ॥

१—अरण्णे (अचू) ।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते ! परिग्गहं पच्चक्खामि—से 'गामे वा'¹, त्तगरे वा रण्णे² वा अप्पं वा बहू वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा परिग्गहं परिगेण्हंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पंचमे भंते । महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं सव्वं भंते ! राईभोयणं पच्चक्खामि—से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सय राइं भुंजेज्जा नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

छट्ठे भंते ! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ सू० १६ ॥

इच्चवेयाइं³ पच महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्त-
हियट्ठयाए⁴ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ सू० १७ ॥

१—× (क, ख, ग, घ, हाटी०) ।

२—अरण्णे (अचू) ।

३—इच्चवेइयाइं (ख, ग, घ) ।

४—° हियट्ठाए (घ, ज) ।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिह्यपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'^१—से पुढविं वा भित्ति वा
सिलं वा लेलुं^२ वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण
वा पाएण वा 'कट्ठेण वा किलिच्चेण वा अंगुलियाए वा सलागाए
वा'^३ सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा
न भिदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा
न भिदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिदंतं
वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिह्यपच्चक्खाय-
पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा
जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिंसं वा महियं वा करगं वा
हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं
ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न
संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न
पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न
संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जां
न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसंतं वा
संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरमाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज) । एव सूत्र १९ से २३ में ।

२—लेलं (ख) ।

३—अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिच्चेण वा (अ) ।

आयावंतं वा पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहिं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से अगणि वा इंगालं वा मुम्मुरं वा
अच्चि वा 'जालं वा अलायं वा'^१ सुद्धागणि वा उक्क वा, न उंजेज्जा
'न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा'^२ न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा
'न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा'^३ न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा
'घट्टंतं वा उज्जालंतं वा'^४ निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए
तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं
पि अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २० ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण
वा तालियंटेण वा 'पत्तेण वा'^५ साहाए वा साहाभगेण वा पिहुणेण
वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकणेण वा हत्थेण वा मुहेण वा
अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पुग्गल, न फुमेज्जा न वीएज्जा
अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न

१—अलाय वा जाल वा (अ) ।

२—न घट्टेज्जा न मिदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

३—न घट्टावेज्जा न मिदावेज्जा न उज्जावेज्जा न पज्जालावेज्जा (क, ख, ग, घ) ।

४—घट्टन्त वा मिदत्त वा उज्जालत्त वा पज्जालत्त वा (क, ख, ग, घ) ।

५—पत्तेण वा पत्तमगेण वा (क, ख, ग, घ) ।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए
काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि ।
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—सेबीएसु वा बीयपइट्ठिएसु^१
वा रुढेसु वा रुढपइट्ठिएसु वा जाएसु वा जायपइट्ठिएसु वा हरिएसु
वा हरियपइट्ठिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्ठिएसु वा'
सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु, वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
निसीएज्जा न तुयट्ठेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न
निसीयावेज्जा न तुयट्ठावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा
निसीयंतं वा तुयट्ठंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं
तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि
अन्नं न समणुजाणामि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि
गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-
पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं वा
कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा "बाहुंसि वा ऊरुंसि
वा 'उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा 'पडिग्गहंसि वा'^३
रयहरणंसि वा'^४ गोच्छांसि वा उडगंसि वा दंडगंसि वा

१—बीयपइट्ठिएसु (क, ख, ग, घ) ।

२—छिन्नपइट्ठिएसु वा सच्चित्तेसु वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

३—पडिग्गहंसि वा कबलांसि वा पाय-पुंछणंसि वा (क, ख, ग) ।

४—उदरंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा (ह) ।

पीढगंसि वा”^१ फलगंसि वा सेज्जंसि वा संधारगंसि वा अन्नयरंसि
वा तेहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय
पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संधायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३ ॥

अजय चरमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई^३ ।

बंधई^४ पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥

अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥

अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥

अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥

अजयं भुजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥

अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।

बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥

कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सए?

कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई? ॥ ७ ॥

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।

जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥

सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ ।

पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥ ९ ॥

१—वाहंसि वा उदसीससि वा उरुंसि वा उदरसि वा पात्तसि वा रयहरणसि वा
गोच्छगंसि वा इण्डगंसि वा कवलसि वा उण्डुयसि वा पीढगंसि वा (अ) ।

२—य (ख, ग) । गाथा १ से ६ तक ।

३—हिंसओ (अ, ज) । गाथा १ से ६ में ।

४—वज्झइ (अ) । गाथा १ से ६ व ९ में ।

पढमं नाणं तओ दया एव चिट्ठइ सव्वसंजए ।
 अन्नाणी कि काही ? किवानाहिइ छेय पावणं ? ॥१०॥
 सोच्चा जाणइ कल्लणं सोच्चा जाणइ पावणं ? ।
 उभयं पि जाणई सोच्चा जं छेय तं समायरे ॥११॥
 जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
 जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहिइ संजमं ? ॥१२॥
 जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई ।
 जीवाजीवे वियाणंतो सो हु 'नाहिइ संजमं' ॥१३॥
 जया 'जीवे अजीवे' य दो वि एए वियाणई ।
 तया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥
 जया गइं बहुविहं सव्वजीवाण जाणई ।
 तया पुण्णं च पावं च वंधं मोक्खं च जाणई ॥१५॥
 जया पुण्णं च पावं च वंधं मोक्खं च जाणई ।
 तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
 जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तया चयइ^१ संजोगं सव्विभंतरवाहिरं ॥१७॥
 जया चयइ^२ संजोगं सव्विभंतरवाहिरं ।
 तया मुं डे भवित्ताण पव्वइए^३ अणगारियं ॥१८॥
 जया मुं डे भवित्ताण पव्वइए^३ अणगारियं ।
 तया सवरमुक्किट्ठ धम्मं फासे^{*} अणुत्तरं ॥१९॥
 जया संवरमुक्किट्ठ धम्मं फासे^{*} अणुत्तरं ।
 तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क, ख, ग, घ) ।

२—जहइ (अ, ज) ।

३—पव्वए (ग), पव्वाति (अ) ।

४—फासेइ (अ, ज) ; फासइ (घ) ।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुस कडं ।
 तथा सव्वत्तगं^१ नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥
 जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।
 तथा लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
 जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
 तथा जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ॥२३॥
 जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसि पडिवज्जई ।
 तथा कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
 जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
 तथा लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
 सुहसायगस्स^२ समणस्स

सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।

उच्छोलणापहोइस्स

दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स

उज्जुमइ खंतिसजमरयस्स ।

परीसहे जिणंतस्स

सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥

[पच्छा वि ते पयाया

खिप्यं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।

जेसिं पिओ तवो संजमो य

खन्ती य बम्भचेरं च ॥]^३

१—सव्वत्था (ज) ।

२—सुहसीलगस्स (अ) , सुहसायगस्स (आ) ।

३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णोद्भय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इच्चयेयं

छज्जीवणियं

सम्मदिट्ठी सया जए ।

दुलहं^१

लभित्तु

सामण्णं

कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥

—त्ति बेमि ॥

१—दुलह (ज), दुल्लम (आ) ।

पंचमं अज्जयण

पिंडेसणा (पढमोदेसो)

संपत्ते भिक्खुकालम्मि^१ असंभंतो अमुच्छिओ ।
 इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥
 से गामे वा नगरे वा गोयरग्गओ मुणी ।
 चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण^२ चेयसा ॥ २ ॥
 पुरओ^३ जुगमायाए^४ पेहमाणो महि चरे ।
 वज्जंतो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्ठियं ॥ ३ ॥
 ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
 संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
 पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
 हिंसेज्ज पाणभूयाइं^५ तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥
 तम्हा तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए ।
 सइ अन्तेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥

१—भिक्खु-० (क, ग) ।

२—अवक्खित्तेण (अ) ; अव्विक्खित्तेण (ग) ।

३—सव्वतो (आ, जा) ।

४—० मायाय (जा) ; ० मादाय (आ) ।

५—० भूतेय (अ, ज) ।

६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूणि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) उल्लेख है (अय केसिचि सिलोगो उवरिं मग्गेणहिंति)—

चल कट्ट सिलं वावि इट्ठालं वावि संकमो ।

न तेण भिक्खु गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असजमो ।

इंगाल छारियं रासिं तुसरसिं च गोमयं ।
 'ससरक्खेहि पाएहि'^१ संजओ तं 'न अक्खमे'^२ ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व^३ पडंतीए ।
 महावांए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
 न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए^४ ।
 बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
 अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं ।
 होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥ १० ॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साणं सूइयं^५ गाविं दित्तं गोणं हयं गयं ।
 संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥ १२ ॥
 अणुत्तए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले ।
 इंदियाणि जहाभागं^६ दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य^७ गोयरे ।
 हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥ १४ ॥
 आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दग्गभवणाणि य ।
 चरंतो न विणिज्झाए संकट्टाणं विवज्जए ॥ १५ ॥
 रत्तो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'^८ य ।
 संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥ १६ ॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ) ।

२—नइक्खमे (क, ख, ग, घ) ।

३—× (अ) ।

४—वमचारी^० (आ) ; ^० वसाणए (ह) ।

५—सूय (क, ख, ग, घ, ह) ; सू वेय (ज) ।

६—जहाभाव (ज) ।

७—व (ह) ।

८—रहस्सारक्खियाणि (ख) ।

- पडिच्छुच्छुलं न पविसे मानसं परिवज्जए ।
 अत्रियत्तकुलं न पविसे त्रियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
 साणीपात्रागपिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
 कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओगहंसि अजाइया ॥१८॥
 गोयन्तपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न वागए ।
 ओगामं कामुयं नच्चा अणुत्तविय वंसिरे ॥१९॥
 नायदुवारं नमयं कोट्ठां पण्वज्जए ।
 अचक्खुविमओ जन्थ पाणा दुप्पडिल्लेह्या ॥२०॥
 जन्थ पुप्फाड गोयाइं विप्पडिण्णाइं कोट्ठए ।
 अट्ठणोवत्तिनं उल्लं दट्ठणं परिवज्जए ॥२१॥
 गल्लं दारणं माणं वच्छं वावि कोट्ठए ।
 उल्लंविद्या न पविसे विज्झित्ताण व संजए ॥२२॥
 असंसत्तं पल्लोगज्जा नाइदूरावल्लोयए ।
 उक्कुलं न विणिज्जए नियट्ठेज्ज अयंपिरो ॥२३॥
 अड्ढमि न गच्छेज्जा गोयरगगओ मुणी ।
 कुलस्स भूमि जाणित्ता मियं भूमि परक्कमे ॥२४॥
 नत्थेव पडिल्लेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
 मिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
 'इगमद्वियआयाणं'^१ वीयाणि हरियाणि य^२ ।
 परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सत्त्विदियसमाहिणं ॥२६॥
 नत्थ न चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
 अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥

१—^१ आयाणे (क, च, ग, घ) ।

२—आ (क) ।

३—निहेज्जा (क, घ, ह) ।

आहरन्ती-सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥
 सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
 असंजमकरि नच्चा तारिसं^१ परिवज्जे ॥२९॥
 साहट्ठु निक्खित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाणं^२ य ।
 तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥
 आगाहइत्ता^३ चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥
 पुरेकस्सेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥
 [एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
 हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
 गेरुय वणिणय सेडिय सोरट्टिय पिट्ट कुक्कुसकाए य ।
 उक्कट्टमसंसट्ठे संसट्ठे चेव वोधव्वे ॥३४॥]^४

१—तारिसि (ह) ।

२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।

३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।

४—अगस्त्य चूर्णि में गाथा ३३-३४ के स्थान में सतरह श्लोक हैं :

१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।

देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥

२—ससिणिद्धेण हत्थेण

३—ससरक्खेण ”

४—मट्टियागतेण ” ..

५—ऊसगतेण ”

६—हारसालगतेण ”

७—हिंगोलएगतेण ”

८—पणोसिलागतेण ”

९—अजणगतेण ” .. .

१०—लोणगतेण हत्थेण ” ..

११—गेरुयगतेण ”

१२—वणिणयगतेण ”

१३—सेडियगतेण ”

१४—सोरट्टियगतेण ”

१५—पिट्टगतेण ”

१६—कुक्कुसगतेण ”

१७—उक्कट्टगतेण ”

असंसद्वेण हत्थेण दब्बीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥
 संसद्वेण हत्थेण दब्बीए भायणेण वा ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
 दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए ।
 दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
 गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं ।
 भुज्जमाणं विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
 सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ।
 उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ता वा पुणुट्ठाए ॥४०॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।'
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
 'थणगं पिज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं ।'
 तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
 जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
 दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा ।
 लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुंजमाण. (क, ख, ग, घ, ज) ।

२—अगस्त्य चूर्णी में श्लोक ४१-४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व भणितं सुत्तं सिलोगद्धं वित्तीए अणुस्सरिज्जति “देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं” अहवा दिवद्ध सिलोगो (अ) ।

तं च उब्भिदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥
 असण पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगड इमं ॥४९॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥
 असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगड इमं ॥५१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥
 असणं पाणग वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥
 उद्देशियं कीयगडं पूर्वकमं च आहडं ।
 अज्मोयर पामिच्चं मीसजायं 'च वज्जए' ॥५५॥
 उगमं से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं ? ।
 सोच्चा निस्संक्रियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

१—तारिस (अ, क, ह) ।

२—विवज्जए (अ, ज) ।

असणं पाणं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 पुण्हेमु होज्ज उम्मोसं वीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५८॥
 असणं पाणं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिगपणमेमु वा ॥५९॥
 'तं भवे' भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥
 असणं पाणं वा वि खाइमं साइमं तहा ।
 'तेउम्मि' होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥६१॥
 तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥

[एवं उस्सच्चिया ओसच्चिया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया ।
 उस्सिच्चिया निस्सिच्चिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥]^१

१—तारिसं (उ. क. ह) ।

२—उगगिन्नि (उ) ।

३—अगस्त्यवृष्टि में गद्य ६३ के स्थान पर निम्न उद्धृत श्लोक हैं—

१—उत्तगं पाणं वा वि खाइमं साइमं तहा ।

ते उम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सच्चिया दए ॥

२—तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।

देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥

३—..... तं च ओसच्चिया दए ॥

५—..... तं च उज्जालिया .. ॥

७—..... तं च निव्वाविया .. ॥

९—..... तं च उस्सिच्चिया .. ॥

११—..... तं च उक्कट्टिया .. ॥

१३—..... तं च निस्सिच्चिया .. ॥

१५—..... तं च ओवत्तिया .. ॥

१७—..... तं च ओयारिया .. ॥

श्लोक ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं ।

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥
 'होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्ठालं वा वि एगया ।
 ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥'^१
 'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'^२
 गंभीरं झुसिरं चेव सव्विदियसमाहिण ॥६६॥
 निस्सेणि फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
 मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
 दुरुहमाणी^३ पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
 पुढविजीवे^४ विहिसेज्जा जे य^५ तन्निस्सियाजगा ॥६८॥
 'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'^६
 तम्हा^७ मालोहडं भिक्खं न 'पडिगेहंति संजया'^८ ॥६९॥
 कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
 तुबागं सिगवेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥
 तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
 सक्कुलि फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥
 विक्कायमाणं पसढं राण परिफासियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है । किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है ।

२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

३—दुरुहमाणे (अ) ।

४—पुढविक्काय (अ, ज,)

५—वा (अ) ।

६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं ।

७—हदि (हा) ।

८—पडिगाहेज्ज सजए (अ) ।

बहु-अद्वियं पुगलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
 अत्थियं तिदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व^१ सिंबल्लिं ॥७३॥
 अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
 तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
 संसेइमं चाउलोदगं अहुणाघोयं विवज्जए ॥७५॥
 ज जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
 पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
 अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
 अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
 थोवमासायणट्टाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
 मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणिज्जए ॥७८॥
 तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणिज्जए ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
 तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
 तं 'अप्पणा न पिबे'^२ नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्टवेज्जा परिट्टप्प^३ पडिक्खे ॥८१॥
 सिया य गोयरुग्गओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
 कोट्टगं भित्तिमूलं वा पडिलेहिताण फासुयं ॥८२॥
 अणुन्नेत्तु मेहावी पडिच्छन्नाम्मि संवुडे ।
 हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ) ।

२—अप्पणा वि न पिबे अ) ।

३—पडिट्टप्प (ह) ।

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
 तण-कट्ट-सक्करं वा वि अन्नं 'वा वि' तहाविहं ॥८४॥
 तं उक्खित्तु न निक्खवे आसएण न छेहुए ।
 हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥८५॥
 एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
 जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प^१ पडिक्कमे ॥८६॥
 सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
 सर्पिडपायमागम्म उंडुय^२ पडिलेहिया ॥८७॥
 विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
 इरियावहियमायाय^३ आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
 आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं^४ जहक्कमं ।
 गमणागमणे चेव भत्तपाणे व^५ संजए ॥८९॥
 उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चयंसा ।
 आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
 न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्वि पच्छा व जं कडं ।
 पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चितए इमं ॥९१॥
 अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
 मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
 नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
 सज्झायं पट्ठवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।

२—पडिडुप्प (ह) ।

३—उण्णय (अ) ।

४—^० मायाए (स) ।

५—अइयारं च (क, ग, घ, ह) ।

६—य (क, ख, ग, घ, ह) ।

वीसमंतो इमं चिते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
 जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥१४॥
 साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
 जइ तत्थ केइ^१ इच्छेज्जा तेहिं सद्धि तु भुंजए ॥१५॥
 अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एकओ ।
 आलोए^२ भायणे साहू जय 'अपरिसाडयं'^३ ॥१६॥
 तित्तगं व कडुयं व कसायं

अंबिलं व^४ महरुं लवणं वा ।

एय लद्धमन्नद्व-पउत्तं

महु-घयं व भुजेज्ज संजए ॥१७॥

अरसं विरसं वा वि सूइयं^५ वा असूइयं ।

उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥१८॥

उप्पणं नाइहीलेज्जा अप्पं पि^६ बहु फासुयं ।

मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥१९॥

दुल्लहा उ^७ सुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।

मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छति सोग्गइं ॥१००॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—कोइ (अ) ।

२—आलोय (अ, ज) ।

३—अपरिसाडिय (क, ख, ग, घ, ज) ।

४—× (ग, घ) ।

५—सूविय (अ) ।

६—या (क, ख, ग, घ, ह) ।

७—हु (अ) ।

पंचमं अज्मयणं

पिडेसणा (वीओ उदेसो)

पडिगहं संलिहत्ताणं लेव-मायाए^१ संजए ।
 दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डुए^२ ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व^३ गोयरे ।
 अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए ।
 विहिणा पुव्व-उत्तेण डंमण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
 कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य'^४ पडिक्खमे ।
 अकाल च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
 अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि ।
 अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
 सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं ।
 अलाभोत्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासाए ॥ ६ ॥
 तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
 त-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्खमे ॥ ७ ॥
 गोयरग्ग-पविट्ठो उ^५ न निसीएज्ज कत्थई ।
 कहं च न पवंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
 अगलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए ।
 अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

१—^० मायाय (ग) ; मादाय (अ) ; मायाइ (त्त) ।

२—उज्झए (ह) ।

३—य (क, स, ग) ।

४—कालेण व (अ) ।

५—य (ग) ।

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं ।
 'उवसंकमंतं' भत्तद्धा पाणद्धाए व संजए'^१ ॥१०॥
 तं अइक्कमित्तु^२ न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-भोयरे'^३ ।
 'एगंतमवक्कमित्ता' तत्थ चिट्ठेज्ज संजए'^१ ॥११॥
 वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
 अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं^४ पवयणस्स वा ॥१२॥
 पडिसेहिए व दिन्ने^५ वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
 उवसंकमेज्ज भत्तद्धा पाणद्धाए व संजए ॥१३॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥१४॥
 'तं भवे'^६ भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
 उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं ।
 अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्विया दए ॥१६॥
 'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं'^७ ।
 देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
 सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं^८ ।
 मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं वा ॥१८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो-दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

२—अइक्कम्म (अ) ।

३—चक्खु-फासओ (अ) ।

४—लहुयत्त (घ) ।

५—दिन्ने (अ) ।

६—तारिसं (ह) ; एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चद्वध पदेति (अ) ।

७—अगस्त्य चूर्णि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।

८—कुमुयं उप्पल (क, ख, ग, घ) ।

तरुणां वा पवालं स्वस्वस्त तणगस्त वा ।
 अन्नस्त वा विहरियस्त आमगं परिवज्जए ॥१९॥
 तरुणियं व छिवाडि आमियं भज्जियं सइं ।
 देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥
 तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
 तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥
 तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
 तिलपिट्ठं पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥
 कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं 'मूलगत्तियं'^१ ।
 आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥
 तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
 बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥
 समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
 नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥
 अदीणो वित्तिमेसेज्जा, न विसीएज्ज पंडिए ।
 अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ते एसणारए ॥२६॥
 बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ।
 न तत्थि पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥
 सयणासणं वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
 अदेतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥
 इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लं ।
 वंदमाणो^२ न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तिय (घ, ह) ।

२—वदमाणं (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) ; वदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वदे न से कुप्पे वंदिओ न समुक्ते ।
 एवमन्नेसमाणस्तत्तामण्णमणुविट्ठई ॥३०॥
 सिया एगइओ लद्धुं लोभेण विणिगूहई ।
 मा मेयं दाइयं संतं दड्डुणं सयमायए ॥३१॥
 अत्तट्टगुएओ लुद्धो बहु पावं पकुब्बई ।
 दुत्तोसओ य ते होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥
 सिया एगइओ लद्धुं विविहं पाणभोयणं ।
 भद्दं भद्दं भोच्चा विवज्जं विरत्तमाहरे ॥३३॥
 जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठो अयं सुणी ।
 संतुट्ठो तेवई पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
 पूयणट्ठो जसोकामी माणसम्माणकामए ।
 बहुं पसवई पावं मायासल्लं च कुब्बई ॥३५॥
 सुरं वा मेरुं वा वि अन्नं वा मज्जगं रत्तं ।
 सत्तक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥
 पिया एगइओ तेणो न मे कोइ विद्याणई ।
 तत्त पत्तह दोसाइं नियडिं च सुणेहे मे ॥३७॥
 वड्ढई सौंडिया तत्त मायमोसं च भिक्खुणो ।
 अयसो य अनिव्वाणं सययं च अत्ताहुया ॥३८॥
 निच्चुव्विण्णोजहातेणो अत्तक्कम्मेहि दुम्मई ।
 तारित्तो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥३९॥
 आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारित्तो ।
 निहत्था वि णंगरहंति जेण जाणंति तारित्तं ॥४०॥

१—लद्धं (ल) ।

२—पूयण्डा (क. ल. ग. घ. ह) ।

३—पकुब्बई (र) ; वि कुब्बई (ल) ;

४—अनिव्वाणी (ल) ।

‘एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ^१ ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥’^२

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं^३ ।
विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं ‘तु गुणप्पेही’^३ अगुणाणं ‘च विवज्जओ’^४ ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्तं उववन्तो देवकिब्बिसे ।
तत्था वि से न याणाइ किमेकिच्चा ईमं फलं ? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं लब्धिही एलमूययं ।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लाहा ॥४८॥

एयं च दोस दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
अणुमाय पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है ।

२—अणेग० (ज) ।

३—स गुणप्पेही (ह) ; अगुणप्पेही (जा) ।

४—विवज्जए (अ, क, जा) ।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहि
 संजयाण बुद्धाण सगासे ।
 तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिदिए
 तिब्बलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
 —त्ति बेमि ॥

सुरा न पेयं न वा मज्जमा
 ससक्खं न पिबे सारक्खमुप्पण
 पिया एगइ कोइ विय
 तस्स पस्सह त्थाडि न
 वड्ढई सोडिया तस्स म
 अयसो य अनिव्वाणं ४
 निच्चुव्विग्गोजहातेणो
 तारिसो मरणंते
 आयरिए
 गिहत्था वि

१—लद्ध (ख) ।

२—पूयण्डा (क, ख)

३—पकुव्वइ (ख)

४—अनिव्वाणी (२)

छट्मज्जयणं
महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
 गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥
 रायाणो रायमच्चा य माहणा अटुव त्वत्तिया ।
 पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥ २ ॥
 तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयमुहावहो ।
 सिक्खाए सुसमाउत्तो आइवखड विक्कवणो ॥ ३ ॥
 हंदि धम्मत्यकामाणं निगंथाणं मुणेह मे ।
 आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥
 नन्नत्य एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
 विउलट्ठाणभाइस्स' न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥
 सखुहुगवियन्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
 अस्संडफुडिया' कायव्वा तं मुणेह जहा तथा ॥ ६ ॥
 दस अट्ट य ठाणाड जाडं वालोऽवरज्जई ।
 तत्य अन्नयरे ठाणे निगंयत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥
 | वयछत्तकं कायछत्तकं अकप्पो गिहिभायणं ।
 पलियंकं निनेज्जा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥ ८ ॥

१—० भावत्स (५) ।

२—० पुत्ता (७) : ० पुत्ता (५) ।

३—यह इनेक (क, त, ग, घ) प्रतियो में है किन्तु बुद्धिदय व टीका में ध्यात्वात्
नहि है ।

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
 अहिंसा निउणं^१ दिट्ठा सव्वभूएसु^२ संजमो ॥ ८ ॥
 जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
 ते जाणमजाणं वा न हणे णोवि^३ घायए ॥ ९ ॥
 सव्वे^४ जीवाविइच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवहं^५ घोरं निगंथा वज्जयंति णं ॥ १० ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
 हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥ ११ ॥
 मुसावाओ य लोगग्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
 अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥ १२ ॥
 चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
 दंतसोहणमेत्त पि ओग्गहंसि अजाइया ॥ १३ ॥
 तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
 अन्नं वा गेण्हमाणं पि 'नाणुजाणंति सजया'^६ ॥ १४ ॥
 अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
 नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥ १५ ॥
 मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
 तम्हा मेहुणसंसग्गि निगंथा वज्जयंति णं ॥ १६ ॥

१—निउणा (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।

२—^० जीवेसु (आ, ज) ।

३—व (क, ख, ग) ।

४—सव्व (अ, ख) ।

५—पाणिवहं (क, ग, घ) ।

६—नाणुजाणेज्ज सजए (अ) ।

बिडमुग्धेइमं^१ लोणं तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
 न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥१७॥
 लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
 जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥१८॥
 जं पि वत्थं व पायं वा कंबल पायपुंछणं ।
 तं पि संजमलज्जट्टा धारंति परिहरंति य ॥१९॥
 न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
 मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥२०॥
 सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
 अविअप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥२१॥
 अहो निच्च तवोकम्मं सव्वबुद्धेहि वणियं ।
 जाय^२ लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥२२॥
 संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
 जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥२३॥
 उदउल्ल वीयसंसत्तं पाणा निवडिया महिं ।
 दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥२४॥
 एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
 सव्वाहारं न भुंजंति निगंथा राइभोयणं ॥२५॥
 पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२६॥
 पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥

१—पिडमुग्धे^० (अ) ।

२—व (अ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥
 आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥
 आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥
 जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
 तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥
 पाईणं पड्डिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
 अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
 तं पईवपयावट्ठा संजया किंचि नारभे ॥३४॥
 तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 तेउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥
 अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥३६॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वां ।
 न ते वीइउमिच्छन्ति वीयावेऊण वा परं ॥३७॥
 जंपि वत्थं व पायं वा कंबलं पायंपुच्छं ।
 न ते वायमुईरंति जयं परिहरंति य ॥३८॥

१—० वियावट्ठा (अ) ।

२—अणिकाय ० (क, घ) ।

३—ना वि वीयावए पर (क) ।

४—वाउ ० (ख, घ) ।

- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 १० वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥
- वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 ११ तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥
- वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 १२ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥
- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 १३ वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥
- तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
 १४ तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥
- तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
 १५ तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥
- तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
 १६ तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥
- जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि ।
 १७ ताइं तु विवज्जंतो संजमं अणुपालए ॥४६॥
- पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
 १८ अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥
- जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
 १९ वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥
- २० तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
 २१ वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

कसेसु - - कंसपाएसु 'कुंडमोएसु'^१ वा पुणो ।
 भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५०॥
 सीओदगसमारंभे मत्तघोयणछ्छुणे १
 जाइं छिन्नंति^२ भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥
 पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई ।
 एयमट्ठं न भुंजंति निगंथा गिहिभायणे ॥५२॥
 आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा ।
 अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥
 'नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
 निगंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'^३
 गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
 आसंदीपलियंका^४ य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥
 गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥
 विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे^५ वहो ।
 वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥
 अगुत्तो बंभचेरस्स इत्थीओ यावि^६ संकणं ।
 कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुंडकोसेसु (आ. जा) ।

२—छिन्नति (क, ख, ग) : छिप्पति (ह) ।

३—'णसंदीपलियंकेसु' एस सिलोगो केसिचि णेव अत्थि (अ) ; जिनदास चूणि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है ।

४—^० पलियंको (क, ग) ; ^० पलियके (ख) ।

५—च वहै (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—वावि (अ, क, ख, ग, ज) ।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
 जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥
 वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
 वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥
 संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
 जे उ' भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥
 तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
 जावज्जीवं वयं घोरे असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥
 सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
 गायस्सुव्वट्ठण्ढाए नायरंति कयाइ वि ॥६३॥
 नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
 मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं? ॥६४॥
 विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं वंधइ चिक्कणं ।
 संसारसायरे घोरे जेणं पडइ' दुरुत्तरे ॥६५॥
 विभूसावत्तियं चेयं बुद्धा मन्नति तारिसं ।
 सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥६६॥
 खवेति अप्पाणममोहदंसिणो
 तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
 धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
 नवाइ पावाइं न ते करेंति ॥६७॥

१—य (ख) ।

२—भप्पइ (अ) ।

सत्तमज्जमयणं

वक्खसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पत्तवं ।
 दोण्हं तु विणयं^१ सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
 जा य^२ सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
 जा य बुद्धेहिंणाइन्ता न तं भासेज्ज पत्तवं ॥ २ ॥
 असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमककसं ।
 समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पत्तवं ॥ ३ ॥
 एयं च अट्टमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं ।
 स भासं सच्चमोसं पि^३ तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
 वित्तहं पि तहामुत्ति जं गिरं भासए नरो ।
 तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किंपुण जो मुसंवए ? ॥ ५ ॥
 तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वाणे भविस्सई ।
 अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥
 एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
 संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
 'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
 अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
 जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विजय (अ) ; विनय (आ) ।

२—जा (अ) ।

३—च (ख) ।

अइयम्मि य कालम्मी पञ्चुप्पन्तमणागए ।
 निस्संकिर्यं भवे जं तु 'एवमेयं' ति निहिसे ॥१०॥
 तहेव फल्सा भासा गुरुभूओवघाङ्गी ।
 सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥
 तहेव काणं काणे ति पंडगं पंडगे ति वा ।
 बाहियं वा वि रोगि ति तेणं चोरे ति नो वए ॥१२॥
 एएणन्नेण वट्ठेण^३ परो जेणुवहम्मई ।
 आयारभावदोसन्नु^४ न तं भासेज्ज पन्तवं ॥१३॥
 तहेव होले गोले ति साणे वा वमुले ति य ।
 दमए दुहए वा^५ वि नेवं^६ भासेज्ज पन्तवं ॥१४॥
 अज्जिए पज्जिएवा वि अम्मो माउस्सिय ति य ।
 पिउस्सिए भाङ्गेज्जति धूए नत्तुणिए ति य ॥१५॥
 हले हले ति अन्ने ति भट्ठे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोले वमुले ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—धोव धोवं तु निहिसे (हा) ।

२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर त्रुिद्वय में निम्न श्लोक हैं :—

तहेवुणागत्तं अट्ठं जं वण्ण मणु(ण) व धारियं ।

संकिरं पडुपणं वा 'एवमेयं' ति नो वदे ॥ ८ ।

तहेवुणागत्तं अट्ठं जं वण्ण मु(न) व धारियं ।

नीसंकिरं पडुपणं धाव धावए निहिसे ॥ ९ ॥ (अ) ।

तं तहेव अइयंनि कालं निउणवधारियं ।

लं जणं संकिर्यं वावि 'एवमेयं' ति नो वए ॥ ८ ॥

तहेवागलयं अट्ठं जं हेइ उवधारियं ।

निस्संकिर्यं पडुप्पन्ने 'एवमेयं' ति निहिसे ॥ ९ ॥ (ज) ।

३—उट्ठेण (क. रु. ग, घ) ।

४—^० दोसेन (अ) ।

५—वा (ह) ।

६—नेयं (रु) ।

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥
 अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
 माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥
 हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
 होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥
 नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
 जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥
 पंचिदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
 जाव णं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥
 तहेव मणुस्सं पसुं पक्खिवा विसरीसिवं ।
 थूले पमेइले वज्जे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥
 परिवुड्ढे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य ।
 संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥
 तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
 वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥
 जुव गवे त्ति णं बूया वेणुं रसदय त्ति य ।
 रहस्से महल्लए वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥
 अलं पासायखंभाणं तोरणानं गिहाण य ।
 फलिहगलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥

पीढए चंगबेरे य नंगले मइयं^१ सिया ।
 जंतलट्टी व नामो वा गंडिया^२ व अलं सिया ॥२८॥
 आसणं सयणं जाणं होज्जा वा 'किंचुवस्सए'^३ ।
 भूओवघाइणि भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥
 तहेव गंतुमुज्जाणं पन्वयाणि वणाणि य ।
 रुक्खा महल्ल पेहाए एव भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥
 जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा^४ महालया ।
 पयायसाला विडिमा^५ वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥
 तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए ।
 वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥
 असंथडा इमे अंबा बहुनिवट्टिमा फला ।
 वएज्ज बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥
 तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय ।
 लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥
 रुढा^६ बहुसंभूया थिरा उस्सडा^७ वि य ।
 गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ^८ त्ति आलवे ॥३५॥
 तहेव संखडिं नच्चा 'किच्चवंकज्जं'^९ त्ति नो वए ।
 तेणगं वा वि वज्जे त्ति सुत्तिथ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दडिया (क, ख, ग) ।

२—किं चुवस्सए (ख) ।

३—पडिपा (ख) ।

४—विरुद्धा (ज) ।

५—उस्सडा (अ), उस्सिया (ज) ।

६—ससाराओ (ह) ।

७—करणजति (घ) ।

संखडिं संखडिं बूया 'पणियट्ठ त्ति' तेणं ।
 बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥
 तहा - नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज त्ति' नो वए ।
 नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥
 बहुवाहडा - अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा ।
 बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्तवं ॥३९॥^३
 तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं ।
 कीरमाणं त्ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
 सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
 सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥
 पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे ।
 पयत्तच्छिन्न त्ति व छिन्नमालवे ।
 पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउयं,
 'पहारगाढ' त्ति व गाढमालवे ॥४२॥
 सव्वुक्कसं पररघं वा अउलं नत्थि एरिसं ।
 अवक्कियमवत्तव्व^४ अच्चियत्तं चेव नो वए ॥४३॥
 सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं त्ति नो वए ।
 अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एव भासेज्ज पन्तव ॥४४॥
 सुक्कीयं वा सुविक्कीय अकेज्जं केज्जमेव वा ।
 इमं गेण्ह इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ठ त्ति (स, ग, घ) ।

२—काय-पेज्जति (अ), काय-तैज्जति (आ), काय-पेज्जति (जा) ।

३—अगस्य चूर्णि में श्लोक ३६, ३७ के स्थान में ३८, ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६, ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है ।

४—गाढप्पहार (अ, ज, ह) ।

५—अचक्किय^५ (स, ग) ; अवक्किय^० (अ) ।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।

पणियट्ठे समुपन्ने अणवज्जं वियांगरे ॥४६॥

तहेवासंजयं धीरो आस एहिं करेहि वा ।

सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नव ॥४७॥

बहवे इमे असाहु लोए वुच्चंति साहुणो ।

न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥४८॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।

एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥

देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे ।

अमुयाणं जओ होउ मावा होउ त्ति नोवए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायंसिवं त्ति वा ।

कया णु होज्ज एयाणि मावा होउ त्ति नोवए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं

न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।

समुच्छिए उन्नए वा पओए

वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥

अंतलिव्वे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य ।

रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं त्ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा

ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।

से कोह लोह भयसा^१ व माणवो^२

न हासमाणो वि गिरं दएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।

२—भय-हास (ख, ज, ह) ।

३—माणवा (ख) ।

सवक्कसुद्धि^१ समुपेहिया मुणी
 गिरं च दुद्धं परिवज्जए सया ।
 मियं अदुद्धं अणुवीइ भासए
 सयाण मज्जे लहई पसंसणं ॥५५॥
 भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुद्धे परिवज्जए^२ सया ।
 छसु संजए सामणिए सया जए
 वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
 परिकखभासी सुसमाहिइंदिए
 चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
 स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं
 आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—सव्वक्क ° (क, घ) ; सुव्वक्क ° (ल, ग) ।

२—विवज्जगो (अ) ।

अट्टमज्जयणं

आयारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा ।
 तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥
 पुढवि दग अगणि मारुय तणस्ख सबीयगा ।
 तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
 तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया ।
 मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
 पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिदे न संलिहे ।
 तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
 सुद्धपुढवीए^१ न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
 पमजित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओगहं ॥ ५ ॥
 सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं^२ हिमाणि य ।
 उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज सजए ॥ ६ ॥
 उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे ।
 समुप्पेह^३ तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
 इंगालं अगणि अच्चिं अलायं व सजोइयं ।
 न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
 तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
 न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा विपोगलं ॥ ९ ॥

१—० पुढवी (ख) ।

२—० वुट्ठि (क, ख) ।

३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणस्खं^१ नं छिदेज्जा फलं मूलं व कस्सई ।
 आमगं विविहं बीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥
 गहणेसु^२ न चिद्वेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
 उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा ।
 उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥
 अट्ठ सुहुमाइं 'पेहाए'^३ 'जाइं जाणित्तु संजए'^४ ।
 दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥
 कयराइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
 इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥
 सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य ।
 पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥
 एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
 अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विदियसमाहिए ॥१६॥
 धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च संथारं अदुवासणं ॥१७॥
 उच्चारं पासवणं खेलं सिघाणजल्लियं ।
 फासुर्यं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥
 पविसिंत्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
 जयं चिट्ठे मियं भासे ण^५ य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

१—^० रक्खे (अ) ।

२—गहणमि (अ) ।

३—मेहावी (अ) ।

४—पडिलेहित्तु संजए (अ) ।

५—णो (अ) ।

बहं सुणेइ कण्णेहिं बहं अच्छीहिं पेच्छइ^१ ।
 न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
 सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
 न य केणइ^२ उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
 निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दं पावणं ति वा ।
 पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निदिसे ॥२२॥
 न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
 अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥
 सन्तिहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
 मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥
 लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
 आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥२५॥
 कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
 दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥
 खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
 अहियासे अव्वहिओ देहे^३ दुक्खं महाफलं ॥२७॥
 अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
 आहारमइयं^४ सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
 अर्तित्तिणे अचवले अप्पभासी^५ मियासणे ।
 हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।

२—कोइ (ज) ; केण (स, घ) ।

३—देह (क, ख, घ) ।

४—^० माइयं (क) ।

५—^० वादी (अ, ज) ।

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्खसे ।
 सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धि ॥३०॥
 से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
 संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥३१॥
 अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
 सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥
 अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
 तं परिगिज्झ वायाए कम्ममुणा उववायए ॥३३॥
 अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमगं वियाणिया ।
 विणियट्टेज्ज^१ भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥
 [बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
 खेत्तं कालं च विन्ताय तहप्पाणं निजुंजए ॥]^२
 जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्डई ।
 जाविदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥
 कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्डणं ।
 वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥
 कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
 माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥
 उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
 मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ^३ जिणे ॥३८॥

१—विणिव्विज्जेज्ज (अ) ।

२—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

३—सत्तुद्धि (ज) ।

कोहो य माणो य अणिग्गहीयां

माया य लोभो य पवद्धमाणा ।

चत्तारि-ए-ए कसिणा कसाया

सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥

राइणिएसु विणयं पउंजे

धुवसीलयं सययं न हावएज्जा ।

कुम्मो व्व अलीणपलीणगुत्तो

परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४०॥

निदं च न बहुमन्नेज्जा संपहासं^१ विवज्जए ।

मिहोक्कहाहिं न रमे संज्झायम्मि^२ रओ सया ॥४१॥

जोगं च समणधम्मम्मि^३ जुजे अणलसो^४ धुवं ।

जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥

इहलोगपारत्तहिं जेण गच्छइ सोग्गइ ।

बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थ विणिच्छयं ॥४३॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए ।

अलीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।

न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा ।

पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥४६॥

अप्पत्तियं जेण सिया आसुकुप्पेज्ज वा परो ।

सव्वसो त न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं^४ ॥४७॥

१—सप्पहास (क, ख, ग, घ, ह) ।

२—अज्झायणम्मि (ज) ।

३—^० धम्मस्स (अ) ।

४—^० गामिणी (अ) ।

दिद्वं मियं असंदिद्वं पडिपुन्नं वियंजियं ।
 अयंपिरमणुव्विगं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥
 आयारपन्नत्तिधरं दिद्विवायमहिज्जगं ।
 वइविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणो ॥४९॥
 नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं ।
 गिहिणो ते न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥
 अन्नद्वं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं ।
 उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
 विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
 गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहि संथवं ॥५२॥
 जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललो भयं ।
 एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥
 चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं ।
 भक्खरं पिव दट्ठुणं दिद्वि पडिसमाहरे ॥५४॥
 हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
 अवि वाससइं नारिं 'बंभयारी विवज्जए'^१ ॥५५॥
 विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं^२ ।
 नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥
 अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं^३ ।
 इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥
 विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
 अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामंपोगलाणउ^४ ॥५८॥

१—दूरओ परिवज्जए (ज) ।

२—पणीय रसं (क, ख, ग) ।

३—चारुल्लविय^० (अ, ज) ।

४—य (क, ख, ग, घ) ।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तथा ।
 विणीयत्तण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
 जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं - ।
 तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
 तवं चिमं संजमजोगयं^१ च

सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।

सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
 अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥

सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
 अपावभावस्स तवे रयस्स ।

विसुज्झई जं सि मलं^२ पुरेकडं
 समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६२॥

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
 सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।

विरायई^३ कम्मघणम्मि^४ अवगए
 कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥६३॥

—त्ति बेमि ॥

२—० जोगं (अ) ।

३—रयं (अ) ।

१—विसुज्झई (अ), विमुच्चाइ (ज) ।

२—पुब्बकडेण कम्मणा (अ, ज) ।

नवमं अज्जमयणं
---विणयसमाही (पढमो उद्देशो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्ख^१ ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्सं वहाय होइ ॥ १ ॥
जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवेज्जमाणा
करेति आसायण ते गुरुणं ॥ २ ॥
पगईए मंदा वि भवेति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायण से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥
आसीविसो यावि^२ परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ^३ परं नुकुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायणनत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—चिट्ठे (अ, ज, हा) ।

२—यावि (क, ख, ग, ज) ।

३—जीवि (घ) ; जीवित (अ) ।

जो पावगं जलियमवकमेज्जा
 आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
 जो वा विसं खायइ जीवियद्दी
 एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥
 सिया हु से पावय तो डहेज्जा
 आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
 सिया विसं हालहलं न मारे
 न यावि मोक्खो गुरूहीलणाए ॥ ७ ॥
 जो पच्चयं सिरसा भेतुमिच्छे
 सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
 जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
 एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ८ ॥
 सिया हु सीसेण गिरि पि भिदे
 सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
 सिया न भिदेज्ज व सत्तिअगं
 न यावि मोक्खो गुरूहीलणाए ॥ ९ ॥
 आयरियपाया पुणं अप्पसन्ना
 अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
 तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी
 गुरूप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥ १० ॥
 जहाहियग्गी जलणं नमंसे
 नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
 एवायरियं उवचिद्वएज्जा
 अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥ ११ ॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायगिरा भो मणसा य^१ निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्जे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्जे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'^२ ।
संपाविउकामे अणुत्तराई
आराहए^३ तोसए धम्मकामी ॥१६॥

१—वि (ख) ।

२—समाहिजोगस्सुय^० (हा) ।

३—उवद्धिओ (अ) ।

सोच्चाण मेहावौ सुभासियाङ् . . .
 सुस्सुसए आयरियप्पमत्तो ।

आराहइत्ताण गुणे अणेगे
 से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
 —त्ति वेमि ॥

*

नवम अज्झयण

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खघप्पभवो दुमस्स
 खधाओ पच्छा समुवेति साहा ।
 साहप्पसाहा विरूति पत्ता
 तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥
 एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
 जेण कित्ति सुयं सिग्घ निस्सेस चाभिगच्छई^१ ॥ २ ॥
 जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
 वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥
 विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो ।
 दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥
 तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥
 तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
 दीसति सुहमेहता इड्ढि^२ पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
 तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसति दुहमेहंता छाया विगलितेदिया^३ ॥ ७ ॥
 दंडसत्थपरिजुणा असव्व वयणेहि य ।
 कल्लुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए^४ परिगया ॥ ८ ॥

१—चाधिगच्छई (अ, ह) ।

२—इड्ढि (अ) ।

३—ते विगलितिया (क, ख, ग, घ) , विगलितिया (अ) ।

४—खुप्पिवासा (घ) , खुप्पिवासाहि (क, ग) , खुप्पिवासा य (ख) ।

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिढ पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
 तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ १० ॥
 तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
 दीसंति सुहमेहंता इडिढ पत्ता महायसा ॥ ११ ॥
 जे आयरियउवज्झायाणं सुस्सूसावयणंकरा ।
 तेसि सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव^१ पायवा ॥ १२ ॥
 अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य ।
 गिहिणो उवभोगट्ठा इह्लोग्गस्स कारणा ॥ १३ ॥
 जेण वंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं ।
 सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥ १४ ॥
 ते वि. तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
 सक्कारेति^२ नमंसंति^३ तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥ १५ ॥
 किं पुण जे सुयग्गाही 'अणंतहियकामए'^४ ।
 आयरिया जंवए भिक्खू तग्हा तं नाइवत्तए ॥ १६ ॥
 नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य ।
 नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥ १७ ॥
 संघट्ठइत्ता काएणं तग्हा उवहिणामवि ।
 खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥ १८ ॥
 दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं ।
 एवं दुबुद्धि किच्चाणं^५ वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥ १९ ॥

१—व (अ) ।

२—समणेंति (अ) ।

३—^० सुहकामए (अ) ।

४—'किच्चाइ' (अ, ज, हा) ।

[आलवन्ते लवन्ते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
 मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥]^१
 कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
 तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥२०॥
 विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
 जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ^२ ॥२१॥
 जे यावि चंडे मइइड्डिगारवे
 पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
 अदिदुधम्मे विणए अकोविए
 असंविभागी नहु तस्स मोक्खो ॥२२॥
 निहेसवत्ती पुण जे गुरूणं
 सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
 तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
 खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है, किन्तु चूणि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

२—अधिगच्छइ (हा) ।

नवमं अज्जमयणं

विणयसमाही (तइओ उइसो)

आयरियं^१ अग्गिमिवाहियग्गी

सुस्सुसमाणो पडिजागरेजा ।

आलोइयं^२ इंगियमेव तच्चा

जो छन्दमाराहयइ स पुज्जे ॥ १ ॥

आयारमइ विणयं पउंजे

सुस्सुसमाणो पस्सिगिज्झ वक्कं ।

जहोवइट्टं अभिकंखमाणो^३

‘गुरुं तु नमसाययई’^४ स पुज्जे ॥ २ ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे

डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।

नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई

ओवायवं वक्करे स पुज्जे ॥ ३ ॥

अग्गायलंछं चरई विसुद्धं

जवणट्टया समुयाणं च निच्चं ।

अलद्धयं नो परिदेवएज्जा

लद्धं न विकत्थयई’ स पुज्जे ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ, क, ख, ग) ।

२—आलोइय (क, ख) ।

३—अविकंखमाणो (अ, ज) ।

४—जो छन्दमाराहयइ (अ, ज) ।

५—विकंथई (ग) : विकंथयई (क, ख, घ) ।

संथारसेज्जासणभत्तपाणे

अप्पिच्छ्या अइलाभे वि संते ।

जो एवमप्पाणभित्तोसएज्जा

संतोसपाहन्न ए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए^१ कंटया

अओमया उच्छहया नरेणं ।

अणासए जो उ सहेज्ज कंटए

वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु^२ हवन्ति कंटया

अओमया ते वि तओ सुउद्धरा^३ ।

वायादुस्ताणि दुरुद्धराणि

वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयन्ता वयणाभिधाया

कण्णंगया दुम्मणियं जणत्ति ।

धम्मो त्ति किच्चा परमगसूरे

जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्महुस्स

पच्चक्खल्लो पडिणीयं च भासं ।

ओहारिणि अप्पियकारिणि च

भासं नं भासेज्ज सया सं पुज्जो ॥ ९ ॥

१—आसाय (स) ।

२—उ (क, ख, ग, घ) ।

३—सुउद्धरा (क) ।

अलोलुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
 नो भावए नो वि य भावियप्पा
 अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
 गिण्हाहि साहूगुण मुंचऽसाहू ।
 वियाणिया अप्पगमप्पएणं
 जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लं वा
 इत्थीपुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
 नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
 थंभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति
 जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
 ते भाणए माणरिहे तवस्सी
 जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
 सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
 चरे मुणी पंचरए^१ तिगुत्तो
 चउक्कसोयावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
 जिणमयनिउणे^१ अभिगमकुसले ।
 घुणिय रयमलं पुरेकडं
 भासुरमउलं गइं गय^२ ॥१५॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—जिणवयण^० (अ) ।

२—वइ (ज, ह) ।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देशो)

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।

अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥

॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणु-सासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्मं संपडिबज्जइ (३) वेयमाराहयइ^१ (४) न य भवइ अत्तसंपग्हिए । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ^२

हियाणुसासणं

सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।

न य माणमएण मज्जइ

विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥

॥ सू० ४ ॥

१—वेयमाराहइ (ख, ज) ।

२—पेहेति (अ) ।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (२) एगगचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थं सिलोगो—

नाणमेगगचित्तो य' ठिओ ठावयई परं ।

सुयाणि य अहिज्जिता रओ सुयसमाहिण ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगइयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगइयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसइसिलोगइयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरइयाए तवमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थं सिलोगो—

विविहगुणतवोरए य निच्चं

भवइ निरासए निज्जरइए ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

जुत्तो सया तवसमाहिण ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगइयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगइयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसइसिलोगइयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहतेहि हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए^१

अर्त्तितिणे

पडिपुण्णाययमाययट्टिए ।

आयारसमाहिसंवुडे

भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥

॥ सू० ७ ॥

अभिगम^२ चउरो समाहिओ^३

सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।

विजलहियसुहावहं

पुणो

कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ

मुच्चई

इत्थं^४ च चयइ^५ सव्वसो ।

सिद्धे वा भवइ सासए

देवे वा अप्परए महिड्डिए ॥ ७ ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—०मए (अ) ।

२—अभिगत (अ) ।

३—सपाहीओ (ख) ।

४—इत्थत्तं (अ) ।

५—जहाइ (अ. ज) ।

दसमज्जयणं
स-भिक्षू

निकखम्ममाणाए^१ वुद्धवयणे^२
 निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
 इत्थीण वसं न यावि गच्छे
 वतं नो पडियायई जे स भिक्षू ॥१॥
 पुढवि^३ न खणे न खणावए
 सीओदगं न पिए^४ न पियावए^५ ।
 अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
 तं न जले न जलावए जे स भिक्षू ॥२॥
 अनिलेण न 'वीए न वीयावए'^६
 हरियाणि न 'छिदे न छिदावए'^७ ।
 वीयाणि सया विवज्जयंतो
 सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्षू ॥३॥
 वहणं तसथावराण होइ
 पुढवितणकट्टनिस्सियाणं ।
 तम्हा उद्देसियं न भुंजे
 नो 'विपए'^८ न पयावए जे स भिक्षू ॥४॥

१—^० माणाइय (क, ख, ग), ^० मादाय (जा) ।

२—^० वयण (जा) ।

३—पुढवि (अ) ।

४—पीए (ख) ।

५—पीयावए (ख) ।

६—वीयावए न वीए (अ) ।

७—छिदावए न छिदे (अ) ।

८—न पए (अ) ।

रोइय नायपुत्तवयणे

अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए ।

पंच य फासे महव्वयाइं

पंचासवसंवरे^१ जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए

धुवजोगी य^२ हवेज्ज बुद्धवयणे ।

अहणे निज्जायरुवरयए^३

गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे

अत्थि हु नाणे तवे संजमे य ।

तवसा धुणइ पुराणपावगं

मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा

विविहं खाइमसाइमं लभित्ता ।

होही अट्ठो सुए परे वा

तं न निहेन निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा

विविहं खाइमसाइम लभित्ता ।

छंदिय साहम्मियाण भुंजे

भोच्चा सज्जायरए य^४ जे स भिक्खू ॥९॥

१—^० सवुडे (घ, ह) ।

२—^x (ज, ह) ।

३—^० रए (ख, ग) ।

४—^x (क, ख, ग) ।

न य वृग्गहियं^१ कहं कहेज्जा
 न य^२ कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
 संजमधुवजोगजुत्ते
 उवसंते अविहेडए^३ जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु^४ गामकंटए
 अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
 भयभेरवसदसंपहासे^५
 समसुहुदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
 नो भायए भयभेरवाइं दिस्स^६ ।
 विविहगुणतवोरए य निच्चं
 न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्टत्तदेहे
 अक्कुट्टे व हए व लूसिए वा ।
 पुढवि समे मुणी हवेज्जा
 अनियाणे अकोउहल्ले^७ य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—विग्गहिय (अ, ह) ।

२—हु (क, ख, ग) ।

३—अवहेडए (क, ग) ।

४—इइ (ख) ।

५—^० सप्पहासे (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।

६—दिअत्स (ख) ।

७—अक्कुहलि (अ) ।

अभिभूय काएण परीसहाइं
 समुद्धरे जाइपहाओ^१ अप्पयं ।
 विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
 तवे^२ राए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥
 हत्थसंजए पायसंजए
 वायसंजए संजइंदिए ।
 अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
 सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥
 उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे^३
 अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए ।
 कयविक्रयसन्निहिओ^४ विरए
 सव्वसंगावगएय जे स भिक्खू ॥१६॥
 अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
 उंछं चरे जीविएनाभिकंखे^५ ।
 इड्ढि च सक्कारण पूयणं च
 चए^६ ठियप्पा अणिहे^७ जे स भिक्खू ॥१७॥
 न परं वएज्जासि अयं कुसीले
 जेणउन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा ।
 जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
 अत्ताणं न समुक्खसे जे स भिक्खू ॥१८॥

१—^०वहाओ (अ. ज) ।

२—भवे (अ) ।

३—अगट्टिए (अ) ।

४—^०सन्निहीहि (अ) ।

५—^०नावकखे (अ) : ^०नाभिकखी (क, ख, ग, घ) ।

६—जहे (अ, ज) ।

७—अणिहिय (क) ; अणिहिए (ग) ।

न जाइमत्ते न य ख्वमत्ते
 न लाभमत्ते न नुएणमत्ते ।
 मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता^१
 धम्मज्झाणए जे^२ स भिक्खू ॥१९॥
 पवेयए अज्जपयं^३ महामुणी
 धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
 निक्खम्मं वज्जेज कुसीललिंगं
 न यावि हस्सकुहए^४ जे स भिक्खू ॥२०॥
 तं देहवासं अमुडं असासयं
 सया चए^५ निच्च हियट्ठियप्पा ।
 छिंदित्तु जाईमरणस्स वंघणं
 उवेड भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—विवज्जयतो (क. त्त) ; विणि च धीतो (ज.) ।

२—^० ए य जे (क.) ।

३—अज्जवय (ज.) ।

४—हासं ^० (क. ख. ग. घ.) ।

५—जहे (ज.) ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्त-
चित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सिगयंकुस-
पोयपडागाभूयाइं^१ इमाइं अट्टारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं
भवन्ति । तंजहा—

- १—हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी^२ ।
- २—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।
- ३—भुज्जो य साइबहुला^३ मणुस्सा ।
- ४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्ठाई भविस्सइ ।
- ५—ओमजणपुरक्कारे ।
- ६—वंतस्स य पडियाइयणं ।
- ७—अहरगइवासोवसंपया ।
- ८—दुल्लभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्जे वसन्ताणं ।
- ९—आयंके से वहाय होइ ।
- १०—संकप्पे से वहाय होइ ।
- ११—सोवक्केसे गिहवासे ॥ निरुवक्केसे परियाए ॥
- १२—बंधे गिहवासे ॥ मोक्खे परियाए ॥
- १३—सावज्जे गिहवासे ॥ अणवज्जे परियाए ॥
- १४—बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥
- १५—पत्तेयं पुण्णपावं ॥
- १६—अणिच्चे खलु^४ भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिदुच्चं चले ॥

१—^० पडागारो (अ) ।

२—दुप्पजीवं (अ) ।

३—साय^० (क, दी, ग, घ)

४—x (आ, जा) ।

१७-वहुं च खलु^१ पावं कम्मं पगडं ॥

१८-पावाणं च खलु भो । कटाणं कम्माणं पुत्रि दुग्गिणाणं
दुप्पडिकंताणं^२ वेयडत्ता मोक्खो, नन्थि अवेयडत्ता, तवसा
वा भोसडत्ता अट्टारसमं पयं भवड ॥ गू० १ ॥

भवड य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई^३ धम्मं अणज्जो भांगकाग्णा ।

से तत्थ मुच्छिण्णं वाले आयडं नाववुज्झड ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होड डो वा पटिओ छमं ।

सव्वधम्मं परिभट्टो स पच्छा पग्निप्पड ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होड पच्छा होड अवदिमो ।

देवया व चुया ठाणा स पच्छा पग्निप्पड ॥ ३ ॥

जया य पूडमो होड पच्छा होड अपूडमो ।

राया व रज्जपभट्टो स पच्छा पग्निप्पड ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होड पच्छा होड अमाणिमो ।

सेट्ठि व्व कट्ठडे छूडो स पच्छा पग्निप्पड ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होड समडवकंनजोव्वणो ।

मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा पग्निप्पड ॥ ६ ॥

‘जया य कुकुडंस्सा कुतत्तीहि विहम्मड ।

हत्थी व वंधणे वट्टो स पच्छा पग्निप्पड ॥ ७ ॥’

१-खलु भो (ख. घ.) ।

२-दुप्परसकनान (ह.), दुप्परिकतान (ल.) ।

३-जई (ल. ल.) ।

४-यद् इत्थं इत्थं लिखितं पत्तियो मे हे तथा टीका मे इत्थं च १ हे विष्णु पुत्रिद्वय मे
व्याख्यानं स मही हे ।

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
 पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 'अज्ज आहं'^१ गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
 जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलीगसमाणो उ^२ परियाओ महेसिणं ।
 रयाणं अरयाणं तु^३ महानिरयसारिसो ॥१०॥
 अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
 रयाण परियाए तहारयाणं ।
 निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
 रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥११॥
 धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं^४
 जन्तग्गि विज्झायमिव प्पतेयं ।
 हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला^५
 दाहुद्धियं^६ घोरविसं व नागं ॥१२॥
 इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
 दुन्तामधेज्जं^७ च पिहुज्जणम्मि ।
 चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
 संभिल्लवित्तस्स य^८ हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।

२—य (ख) ।

३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।

४—अवेयं (क, ग, घ, ह) ।

५—कुसील (अ, ज,) ।

६—दाहुद्धियं (क, ज, ह) ।

७—^० गोत्तं (अ, ज) ।

८—उ (क, घ) ।

भुञ्जितु भोगाड पसज्ज चयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं वहुं ।
गडं च गच्छे अणभिज्जियं' दुहं
बोही य से नो मुदभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरडयस्स जंतुणां
दुहोवणीयस्स किल्लेसवत्तिणो ।
पलिओवमं भिज्जइ सागरोवमं
किमंगपुण मज्ज इमं मणादुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे' सरोरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई' जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमण्या उ हवेज्ज निच्छिओ'
नागज' देहं न उ' धम्मगानणं ।
तं तारिसं नो पयन्तेति इट्ठिया
उवेनवाया' व मुदंसणं गिरि ॥१७॥

१—अग्निहिज्जिय (क. स. ग. घ) ।

२—मे (उ) ।

३—वियरसई (उ) ।

४—भिज्जओ (स) ।

५—उहेज्ज (अ) ।

६—य (ल. ज) ।

७—उट्ठिया (क) ; उट्ठिया (ग) ।

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो

आयं उवायं विविहं वियाणिया ।

काएण वाया अदु माणसेणं

तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्धिज्जासि^१ ॥१८॥

—त्ति वेमि ॥

*

विविक्तचरिया (विद्या चरिया)

चूलियं तु पक्कवामि मुयं केवल्लिभानियं ।
जं मुणित्त्वं सपुत्राणं^१ धम्मं उणञ्जाणं मई ॥ १ ॥
अणुसोयपट्टिण्वहुजणम्मि पडिसोयल्लहल्लकेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा दायच्चो होउकामेणं ॥ २ ॥
अणुसोयसुहोळोगो

पडिसोओ आत्तवो^२ गृविहियाणं ।

अणुसोओ संसारो

पडिसोओ तस्सा उत्तारो^३ ॥ ३ ॥

तम्हा^४ आयारपरक्केण संवरसमाहिबहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य होति साहूण दट्टच्चा ॥ ४ ॥
अणिएवामो समुयाणचरिया

अन्नायउच्छ परगिया य ।

अप्पोवही कल्लहविवज्जणा य^५

विहारचरिया इत्तिणं पत्तया ॥ ५ ॥

आउण्णओमाणविवज्जणा य

अंसल्लिद्धाहडभत्तपाणे^६ ।

ससट्टक्केण चरेज भिक्खु

नज्जायनसट्ट जट्ठं जण्जा ॥ ६ ॥

१—समुज्जलं (घ), मुज्जल (ह) ।

२—आत्तवो (अ, हा) ।

३—निगारो (अ, ल) ।

४—हं (अ, ल) ।

५—न (ल) ।

६—अपाण (अ) ।

अमज्जमंसासि अमच्छरीया
 'अभिक्षणं' निव्विगइं^१ गया य^२ ।
 अभिक्षणं काउस्सगकारी
 सज्झायजोगे पयओ ह्वेज्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइं
 सेज्जं निसेज्जं तह भत्तपाणं ।
 गामे कुले वा नगरे व देसे
 ममत्तभावं^३ न 'कहिं चि'^४ कुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेयावडियं न कुज्जा
 अभिवायणं वंदण पूयणं च^५ ।
 असंकिलिट्ठेहिं समं वसेज्जा
 मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न या लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
 एक्को वि पावाइं विवज्जयंतो
 विहरेज्ज^६ कामेसु असज्जमाणो ॥ १० ॥
 संवच्छरं चावि परं पमाणं
 बीयं च वासं न तहिं वसेज्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥ ११ ॥

१—निव्विगइं (अ, घ) ।

२—अभिक्षणि वित्तियजोगया य (आ, जा) ।

३—ममत्ति^० (अ) ।

४—कहिं पि (ख) ।

५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।

६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
 संपिक्खई^१ अप्पगमप्पएणं ।
 कि मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?
 किं सकणिज्जं न समायरामि ? ॥१२॥

कि मे परो पासइ ? किं व^२ अप्पा ?
 किं वाह^३ 'खलियं न विवज्जयामि'^४ ?
 इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
 अणागयं नो पडिबंधं कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्त^५
 काएण वाया अट्ठ माणसेणं ।
 तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
 आइन्नओ^६ खिप्पमिव^७ क्वलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
 धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
 तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
 सो जीवइ संजमजीविणं ॥१५॥

१—सारक्खई (अ, ज) ।

२—च (क, ग, घ, ज) ।

३—चाह (क) ।

४—खलितो वि^० (अ) ; खलित्ति ण वि^० (आ) ।

५—दुप्पणीय (अ, ज) ; दुप्पहत (क) ।

६—आइण्णो (अ) ; आइण्ण (ज) ।

७—खिप्प^० (आ, जा) ; खित्त^० (अ, जा) ; ओखित्त^० (ज) ।

अप्पा^१ खलु सययं रक्खियव्वो
 सन्विदिएहि सुसमाहिएहि ।
 अरक्खओ जाइपहं^२ उवेइ
 सुरक्खओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—अप्पा ह (क. ख, ग, घ) ।

२—^० वहं (जा, आ) ।

उत्तरज्झयणं

पदमं अज्मयणं

विणयसुयं

- १-संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुब्बि सुणेह मे ॥
- २-आणानिद्देसकरे गुरुणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥
- ३-आणाऽनिद्देसकरे' गुरुणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- ४-जहा सुणी पूइक्कणी निक्कसिज्जइ सब्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥
- ५-कणकुण्डगं चइत्ताणं^२ विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए^३ ॥
- ६-सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छन्तो हियमप्पणो ॥
- ७-तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं 'पडिलमे जओ'^४ ।
वुद्धपुत्ते^५ नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥

१-आणा अनिद्देसकरे (अ) ।

२-जहिताण (वृ०, चू०) ।

३-मिई (आ) ।

४-पडिलमिज्जओ (ऋ) ; पडिलमेज्जओ (अ) ।

५-वुद्धउत्ते (वृ०) : बुद्धपुत्ते, बुद्धवुत्ते (वृ० पा०) ।

- ८—निसन्ते सियाऽमुहरी^१ बुद्धाणं अन्ति ए सया ।
 अट्टजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्टाणि उ वज्जए ॥
- ९—अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंति सेविज्ज पण्डिए ।
 खुट्ठेहि सह संसग्गि हासं कीढं च वज्जए ॥
- १०—माय चण्डालियं कासी^२ बहुयं मा य आलवे ।
 कालेण य अहिज्जिता तओ भाएज्ज एगगो^३ ॥
- ११—आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
 कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥
- १२—मा 'गलियस्सेव'^४ कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
 कसं व दट्ठुमाइण्णे पावगं परिवज्जए^५ ॥
- १३—अणासवा^६ थूलवया कुसीला
 मिउं पि चण्डं पकरेति सीसा ।
 चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
 पसायए ते हु दुरासयं पि ॥
- १४—नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
 कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥
- १५—'अप्पा चेव दमेयव्वो'^७ अप्पा हु खलु दुइमो ।
 अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सि लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।

२—कुज्जा (उ) ।

३—एक्कओ (अ) ।

४—गलियस्सुव्व (उ, ऋ) ; गलियस्सेव्व (अ) ।

५—पडिवज्जए (अ, वृ० पा०) ।

६—अणासुणा (वृ० पा०) ।

७—अप्पाणमेव दमए (वृ०, चू०) ।

- १६—वरं^१ मे अप्पादन्तो संजमेण तवेण य ।
 माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
- १७—पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
 आवी वाजइ वारहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥
- १८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
 न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥
- १९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए ।
 पाए पसारिए^२ वावि न चिट्ठे गुरुणन्ति ॥
- २०—आयरिएहिं वाहिनो^३ तुसिणीओ न कयाइ वि ।
 पसायपेही^४ नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
- २१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
 चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं^५ पडिस्सुणे ॥
- २२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सेज्जागओ कया'^६ ।
 आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो^७ ॥
- २३—एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्यं च तदुभयं ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं ॥
- २४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
 भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
- २५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
 अप्पेणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वो ॥

१—वर (अ, उ, म) ।

२—पसारि नो (वृ०) ; पसारिए (वृ० पा०) ।

३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ) ।

४—पसायट्ठी (वृ० पा०) ।

५—जुत्तं (अ, उ) ।

६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०) ।

७—पजलीउडो (वृ०) , पजलीउडो (वृ० पा०) ।

- २६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'^१ ।
 एगो एगित्थिए सद्धि नेव चिट्ठे न संलवे ॥
- २७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण^२ फरुसेण वा ।
 मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥
- २८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं^३ ।
 हियं तं मन्तए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥
- २९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
 वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं^४ पयं ॥
- ३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'^५ थिरे ।
 अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥
- ३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्खमे ।
 अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥
- ३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
 पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥
- ३३—नाइदूरमणासन्ने^६ नन्नेसि चक्खुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्खमे^७ ॥
- ३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु) ; गिहसधिसु अ महापहेसु (वृ०) ।

२—सीत्तेण (अ) ; सीलेण (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पेरणं (वृ०) ; चोयणा (चू०) ।

४—^० सुद्धिकरं (वृ०) ।

५—अणुच्चेऽकुक्कुए (वृ०) ।

६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।

७—न अइक्खमे (अ) ।

४४—वित्ते अचोइए निच्चं^१ 'खिप्पं हवइं सुचोइए'^२ ।

जहोवइहं सुकयं किञ्चाइं कुव्वई सया ॥

४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'^३ जायए ।

हवई किञ्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥

४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया ।

पसन्ता^४ लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥

४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए

'मणोरुई' चिट्ठइ कम्मसंपया ।'^५

तवोसमायारिसमाहिसंवुडे

महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥

४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए

चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।

सिद्धे वा हवइ सासए

देवे वा अप्परए महिद्धिइए ॥

—त्ति बैमि ॥

१—खिप्पं (वृ० पा०, चू० पा०) ।

२—पसन्ते थामवं करे (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—कित्तीय (अ, उ, ऋ) ; कित्ती सि (ऋ) ।

४—संपन्ता (वृ० पा०) ।

५—मणोरुइ (वृ० पा०) ।

६—मणोरुई चिट्ठइ कम्मसपय (वृ० पा०) ; मणिच्छियं संपयमुत्तम गया (नागार्जुनीयाः) ।

वीर्यं अज्भयणं

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए^१ परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा^२ ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१. दिगिच्छापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,^३ १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।

तं मे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०) ; भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।

२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।

३—उक्कोस ° (अ, क्र) ।

(१) दिगिच्छापरीसहे

- २—दिगिच्छापरिणए^१ देहे तवस्सी भिक्खु थामवं ।
 न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥
 ३—कालीपव्वंगसंकासे किसे धम्मणिसंतए ।
 मायन्ते असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

- ४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए^२ ।
 सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥
 ५—छिन्नावाएसु पत्थेसु आउरे सुपिवासिए^३ ।
 परिसुक्कमुहेऽदीणे^४ तं तितिक्वे परीसहं^५ ॥

(३) सीयपरीसहे

- ६—चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया ।
 नाइवलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं^६ ॥
 ७—न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई ।
 अहं तु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

- ८—उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए ।
 धिसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए ॥

१—परियावेण (वृ०) : परितापेग (चू०) : पस्सिते (वृ० पा०) ।

२—लज्जसंजने (वृ० चू०) : लज्जासंजए, लज्जसंजने (वृ० पा०) : लज्जसंजते (चू० पा०) ।

३—सुप्पिवासिए (अ) : सुपिवासए (ऋ) ।

४—मुहोदीणे (अ, सु) : मुहोदीणे (ऋ) ।

५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।

६—नाइवलं विहन्निज्जा पावदिही विहन्नइ (चू०, वृ०) : नाइवलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उप्पहाहितत्ते मेहावी सिणाणं 'नो वि पत्थए'^१ ।
गायं नो परिसिंचेज्जा^२ न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दंसमसप्परीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव^३ महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा सूरुो अभिहणे परं ॥
११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए ।
उवेहे^४ न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्येहिं होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥
१३—'एगयाऽचेलए होइ'^५ सचेले यावि एगया ।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—नामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥
१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए ।
धम्मरामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोणंमि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं^६ तस्स सामण्णं ॥

१—नामिपत्थए (चू०, वृ०) ; णोऽवि पत्थए (वृ० पा०) ।

२—परिसेविज्जा (उ, ऋ) ।

३—सम एव (अ) ।

४—उवेह (उ, चू०, ऋ) ।

५—एगया अचेलगे भवति (चू०) : अचेलए सयं होइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सुकर (वृ० पा०) ।

१७—एवमादाय^१ मेहांवी 'पंकभूया उ इत्थिओ'^२ ।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा^३ चरेज्जत्तगवेसए ॥

(६) चरियापरीसहे

१८—एग एव^४ चरे लाढे अभिभूय पंरीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव^५ कुज्जा परिगंहं ।
असंसत्तो गिहत्थेहि अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुत्तगारे वा स्वखमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स^६ 'उवसग्गाभिधारए'^७ ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता^८ अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नेई ॥

२३—पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'^९ एवं तत्थज्जहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, व०) ; एवपादाय (चू० पा०, व० पा०) ।

२—जहा एया लहुस्सगा (चू० पा०, व० पा०) ।

३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।

४—एगो (चू० पा०) : एगे (व० पा०) ।

५—नेयं (अ) ।

६—अच्छमाणस्स (व० पा०, चू०) ।

७—उवसग्गमय भवे (व० पा०, चू० पा०) ।

८—उवट्ठित्ता (उ) ।

९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अक्रोसपरीसहे

- २४—अक्रोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥
२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) बहपरीसहे

- २६—हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा 'भिक्खुधम्मं विचितए'^१ ॥
२७—समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एवं पेहेज्ज संजए'^२ ॥

(१४) जायणापरीसहे

- २८—दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥
२९—गोयरगगपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

- ३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुत्तप्पेज्ज संजए'^३ ॥
३१—अज्जेवाह न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंविक्खे^४ अलाभो तं न तज्जए ॥

१—^० धम्मपि चितए (वृ०) ; ^० धम्मं व चितए (वृ० पा०) ।

२—ग त पेहे असाइव (वृ०) ; न ता पेहे असायुव (चू०) : एव पीहेज्ज संजए (चू० पा०) ; न य पेहे असायुय, पठन्ति च—एव पेहिज्ज सज्जतो (वृ० पा०) ।

३—पडिए (अ) ।

४—पडिसचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

- ३२—नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए ।
 अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥
 ३३—तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
 एवं^१ खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तण्णफासपरीसहे

- ३४—अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥
 ३५—आयवस्स निवाएणं अउला^२ हवइ वेयणा ।
 एवं^३ नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं^४ तणतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

- ३६—किलिन्तगाए^५ मेहावी पंकेण व रएण वा ।
 धिसु वा परितावेण सायं नो परिदेवए ॥
 ३७—वेएज्ज^६ निज्जरापेही 'आरियं धम्मणुत्तरं'^७ ।
 जाव सरीरभेउ त्ति जल्ल काएण धारए^८ ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

- ३८—अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।
 जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

२—सिउला (चू०, वृ०) , अतुला, विपुला वा (वृ० पा०) ।

३—एयं (अ, उ, ऋ, वृ०) ; एव (वृ० पा०) ।

४—तन्तय (चू० पा०, वृ० पा०) ।

५—किलिद्धगाए (चू० पा०, वृ० पा०) ।

६—वेयज्ज (अ) ; वेइ तो, वेइज्ज, वेयतो (वृ० पा०) ।

७—आरियं धम्मपणुत्तरं (स०), आरिय धम्ममणुत्तर (अ) ।

८—उव्वटे (चू०, वृ० पा०) ; धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसो अलोलुए ।
‘रसेसु’^१ नाणुगिज्जेज्जा’^२ ‘नाणुतप्पेज्ज पन्नवं’^३ ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूण मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाह नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरड्ढगमि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जोसक्ख^{*} नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावणं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ^४ ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्ठई ॥

(२२) दंसणपरीसहे

४४—नत्थि नूणं परे लोए इड्ढीवावितवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
भुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।

२—रसिपसु णालिगिज्जेज्जा (चू०) , रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—न तेसि पीहए मु० नी (चू०, वृ०) ; नाणुतप्पेज्ज पण्णव (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४—सप्रक्ख (चू०) ।

५—पडिवज्जिअ (वृ०) , पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तइयं अज्जयणं

चाउरंगिज्जं

- १-चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो^१ ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥
- २-समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्ठु पुढो^२ विस्संभिया पया ॥
- ३-एगया देवलोएसु नराएसु वि एगया ।
एगया आसुर कायं आहाकम्मेहि गच्छई ॥
- ४-एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुत्थुपिवीलिया ॥
- ५-एवमावट्ठजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्ठेसु व^३४' खत्तिया ॥
- ६-कम्मसंगेहि सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥
- ७-कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'^५ ॥
- ८-माणुस्सं विग्गहं लद्धु सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१-देहिणो (बु० पा०, चू०) ।

२-पुणो (चू० पा०) ।

३-य (अ) ; वि (ऋ) ।

४-सव्वट्ठ इव (बु० पा०, चू० पा०) ।

५-जायन्ते मणुसत्तय (बु० पा०) ।

- ९-आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
 सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥
- १०-सुइं च लद्धु सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
 बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं' पडिवज्जए ॥
- ११-माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्देहे ।
 तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं ॥
- १२-"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
 निव्वाणं परमं जाइ 'धयसित्तं व्व'"^१ पावए ॥^३
- १३-विगिंच^२ कम्मणो^४ हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
 पाढवं सरीरं हिच्चा उड्डं पक्कमई दिस ॥
- १४-विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
 महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥
- १५-अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
 उड्डं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥
- १६-तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
 उवेन्ति माणुसं जोणि से दसंगेऽभिजायई ॥
- १७-खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
 चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१-नो य ण (स, सु, वृ०) ।

२-धयसित्तिव्व (उ) ; धयसित्तिव्व (ऋ, सु,) , धयसित्ते व (वृ०) ।

३-चउद्धा सपय लद्धु इहेव ताव भायते ।

तेयस्ते तेजसपन्ने धयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।

४-विकिंचि (अ, आ) , विकिंच (चू०) ; विगिंच (चू० पा०) ।

५-कम्मणो (उ, ऋ) ।

१८—मित्रं नायवं^१ होइ उजागोए य वण्यवं ।

अप्ययं महान्ते जनिजाए जसोवले ॥

१९—मोडा मायुन्मए मोए अप्यडिले अहाउयं ।

पुवं विमुद्धस्त्रने केवचं वोहि दुज्जिया ॥

२०—चउरंगं कुल्लहं मत्ता^२ मंजमं पडिवज्जिया ।

नवसा वुयकन्ममे मिछे हवइ नासए ॥

—ति वेनि ॥

*

१—नइहं (अ) : नइहं (उ) ।

२—नइहं (उ) ।

चउत्थं अज्मयणं

असंखयं

- १—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं^१ वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्ण विहिंसा अजया गहन्ति ॥
- २—जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं^२ गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'^३ नरे
वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति ॥
- ३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च^४ इहं च^५ लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख^६ अत्थि'^७ ॥
- ४—संसारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एण (वृ० पा०) ।

२—अमय (वृ० पा०, चू० पा०) ।

३—पासपयट्टिए (ऋ) ; पासपइट्टिए (उ) ।

४—पेच्च (वृ०) ; पेच्च (वृ० पा०) ।

५—पि (चू०, वृ० पा०) ।

६—मोक्खो (वृ०, चू०) ।

७—ण कम्मुणो पीहाति तो क्याती (वृ० पा०, चू० पा०) ।

- ५—वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पण्हे व अणन्तमोहे
नेयाउयं दट्टुमदट्टुमेव ॥
- ६—सुत्तेसु यावी पडिवुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपत्ते ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥
- ७—चरे पयाइं परिसंकमाणो
जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लामन्तरे जीविय बूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥
- ८—छन्दं निरोहेण उवेइ मोक्खं
आसे जहा सिक्खियवम्मघारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥
- ९—स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विस्सीयई सिद्धिले आउयंमि^१
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥
- १०—खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो^२ ॥

१—आउंमि (उ) ।

२—व चरप्पमत्तो (ऋ) : चरप्पमत्तो (उ) ।

- ११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥
- १२—‘मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा’^१
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खेज्ज कोह विणएज्ज माणं
मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥
- १३—जे संखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए ‘अहम्मे’त्ति दुगुंछमाणो
कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—मदाउ तहा हियस्स बहुलोमणेज्जा (चू० पा०) ।

प वम अज्जम्भयणं

अकाममरणिज्जं

- १—अण्वंसि महोहंसि^१ एगे तिण्णे^२ दुरुत्तरं ।
तत्थ एगे महापत्ते इमं पट्टमुदाहरे^३ ॥
- २—सन्तिमे य^४ दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया ।
अकाममरणं चेव सकाममरणं तहा ॥
- ३—बालाणं^५ अकामं तु मरणं असइं भवे ।
पण्डियाण सकाम तु उक्कोसेण सइं भवे ॥
- ४—तत्थिम पढमं^५ ठाणं महावीरेण देसियं ।
कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥
- ५—जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥
- ६—हत्थागया इमे कामा
कालिया जे अणागया ।
को जाणइ परे लोए
अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥
- ७—जणेण सद्धि होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएणं केसं सपडिवज्जई ॥
- ८—तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिसई ॥

१—महोघसि (वृ० पा०) ।

२—तरइ (वृ०, चू०.) ; तिण्णे (वृ० पा०) ।

३—पण्डमुदाहरे (वृ० पा०, चू० पा०, सु) ।

४—खलु (चू०) , ए (वृ०) ।

५—बालाण य (ऋ) ।

- ९—हिसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
 भुंजमाणे सुरं मंस सेयमेयं ति मन्नई ॥
- १०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
 दुहुओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥
- ११—तओ पुट्टो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई ।
 पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
- १२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
 बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥
- १३—तत्थोववाइय ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
 आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥
- १४—जहा सागडिओ जाण सम हिच्चा महापहं ।
 विसमं मग्गामोइण्णो^१ 'अक्खे भग्गमि'^२ सोयई ॥
- १५—एवं धम्म विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
 बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥
- १६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई^३ भया ।
 अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥
- १७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
 एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥
- १८—मरण पि सपुण्णाणं^४ जहा मेयमणुस्सुयं ।
 विप्पसण्णमणाघायं^५ सजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गामोगाढो (चू०) ; मग्गामोगाढो (वृ० पा०) ।

२—अक्खे भग्गमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) ; अक्खे भग्गमि (वृ० पा०) ।

३—सन्तस्सई (चू०) ।

४—सपुण्णाण (अ) ।

५—सुपसन्नेहि अक्खाय (वृ० पा०, चू०) , सुप्पसन्नमणक्खाय (वृ०) ;
 विप्पसण्णमणाघाय (चू० पा०) ।

१९—न इमं 'सव्वेसु भिक्खूसु'^१

न इमं सव्वेसुअगारिसु ।

नाणासील्ला

अगारत्था

विसमसीला य भिक्खुणो ॥

२०—सन्ति एगेहि भिक्खूहि गारत्था संजमुत्तरा ।

गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥

२१—चीराणिं नगिणिणं^२ जडीसंघाडिमुण्डिणं ।

एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं ॥

२२—पिण्डोलए व^३ दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई ।

भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं ॥

२३—अगारिसामाइयंगाइं सड्ढी काएण फासए ।

पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए ॥

२४—एवं सिक्खासमावन्ने गिहवासे^४ वि सुव्वए ।

मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥

२५—अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे^५ सिया ।

सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्ढिण ॥

२६—उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो ।

समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो ॥

२७—दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो ।

अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥

१—सव्वेसिं भिक्खुणं (चू०) ।

२—णिगिणिणं (वृ०) ; णियण (चू०) ।

३—वि० (अ, चू०) ।

४—गिह्मिवासे (उ) ।

५—एगयरे (चू०) ।

- २८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
 भिक्खाए वा गिहत्ये वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥
- २९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं^१ संजयाण वुसीमओ ।
 न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
 विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥
- ३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
 विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥
- ३२—अह कालंमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'^२
 सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—सपुज्जाण (चू०) ।

२—सुदक्खाल समाहितो (चू०) ; आघायाए समुच्छय (चू० पा०) ।

छट्ठमंज्जयणं

खुड्ढागनियंठिज्जं

- १—जावेन्तऽविज्जापुरिसा 'सव्वे ते दुक्खसंभवा' ।
 लुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारंमि अणन्ताए ॥
- २—'समिक्ख पंडिएतम्हा' पासजाईपहे वूह ।
 अप्पणा^३ सच्चमेसेज्जा मेत्ति भूएसु^४ कप्पए ॥
- ३—माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
 नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥
- ४—एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे ।
 छिन्द-गेहि^५ सिणेहं च न कखे पुव्वसंथवं ॥
- ५—गवासं मणिकुंडलं पसवो दासपोरुसं ।
 सव्वमेय चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥
- [थावर जंगमं चेव धणं धण्ण उवक्खर ।
 पच्चमाणस्स कम्मेहिं नाल दुक्खाउ मोयणे ॥]^६
- ६—अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए ।
 'न हणे पाणिणो पाणे'^७ भयवेराओ उवरए ॥
- ७—आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि ।
 'दोगुंछी' अप्पणो पाए'^८ दिन्नं भुजेज्ज भोयण ॥

१—तै सव्वे दुक्खप ज्जिया (न ग,जुनीयाः) ।

२—जम्हा समिक्ख मेहावी (चू०, वू० पा०) ; समिक्ख प.डिए तम्हा (चू० पा०) ।

३—अत्तट्ठा (वू० पा०) ।

४—भूएहिं (चू०) ।

५—गेह (उ) ।

६—यह श्लोक चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

७—नो हिंसेज्ज पाणिण पाणे (चू०) ; नो हणे पाणिण पाणे (वू० पा०) ।

८—दोगछी (ऋ) ।

९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०) ।

८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावणं ।
आयरिय^१ विदित्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥

९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥

१०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं^२ बाला पंडियमाणिणो ॥

११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केण'^३ सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

१२—आवन्ता दीहमद्धाणं ससारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥

१३—बहिया उड्डमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इम देहं समुद्धरे ॥

१४—विविच्च^४ कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥

१५—सन्निहि च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो^५ परिव्वए ॥

१६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिंडवायं गवेसए ॥

१—आयरिय (वृ० पा०, उ, सु) ।

२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।

३—मणसा वयसा चैव (चू०, वृ०), मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।

४—विगिच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।

५—निरवेक्खी (चू०) ।

१७—‘एवं से उदाहु, अणुत्तरनाणी

अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे ।

अरहा नायपुत्ते

भगवं वेसालिए वियाहिए ॥’^१

—त्ति बेमि ।’

*

१—एव से उदाहु अरहा पासे पुरिसादणीए ।

भगवंते वेसालिए वुद्धे परिनिव्वुडे ॥ (दृ० पा०, चू० पा०)

सत्तमं अज्जमयणं

उरब्भिज्जं

- १—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं 'जवसं देज्जा'^१ पोसेज्जा 'वि सयंगणे'^२ ॥
- २—तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए^३ ॥
- ३—जाव न एइ^४ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
- ४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
एवं बाले अहम्मिद्वे ईहई नरयाउयं ॥
- ५—हिंसे बाले^५ मुसावाई अद्धानंमि विलोवए ।
अन्नदत्तहरे तेणे^६ माई कण्हुहरे^७ सढे ॥
- ६—इत्थीविसयगिद्वे य महारंभपरिगहे ।
भुजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
- ७—अयककरभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए^८ ।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
- ८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया ।
दुस्साहडं धणं हिच्चा बहं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे दैति (चू०) ।

२—विसयगणे (वृ० पा०, चू०) ।

३—पडिं (वृ०) : परिं (वृ० पा०) ।

४—एज्जति (चू०) ।

५—कोही (वृ० पा०) ।

६—बाले (वृ०) : तेणे (वृ० पा०) ।

७—किन्नुहरे (चू०) ; कन्नुहरे (सु) ।

८—^० सोणिए (उ, ऋ) ।

- ९—तओ कम्मगुरू जत्तू पच्चुप्पन्नपरायणे^१ ।
 अय व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥
- १०—तओ आउपरिक्खीणे 'चुयादेहा'^२ विहिंसगा^३ ।
 आसुरियं दिसं बाला^४ 'गच्छन्ति अवसा'^५ तमं ॥
- ११—जहां कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो ।
 अपत्थं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥
- १२—एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ।
 सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य^६ दिव्विया ॥
- १३—अणेगवासानउयो जा सा पन्नवओ ठिई ।
 'जाणि जीयन्ति'^७ दुम्मेहा अणे वाससयाउए ॥
- १४—जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेतूण निग्गया ।
 एगोऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥
- १५—एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ ।
 ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥
- १६—माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे ।
 मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं ध्रुवं ॥
- १७—दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया ।
 देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासडे ॥

१—० पलज्जणे (चू०) ।

२—चुओदेहा (बृ०) ; चुयदेहो (बृ० पा०) ।

३—विहिंसगो (बृ०) ।

४—बालो (बृ०) ।

५—गच्छइ अवसो (बृ०) ।

६—उ (ऋ) ।

७—हारिन्ति (बृ० पा०) ।

- १८-तओ जिए सइं होइ दुविहं दोगइं गए ।
दुल्लाह तस्स उम्मज्जा अट्ठाए सुइरादवि ॥
- १९-एवं जिय^१ सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमिन्ति^२ जे ॥
- २०-वेमायाहिं सिक्खाहि जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणि कम्मसच्चा^३ हु पाणिणो ॥
- २१-जेसितु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया^४ ।
सीलवन्ता सवीसेसा अदीणा जन्ति देवयं ॥
- २२-एवमदीणवं^५ भिक्खु अगारिं^६ च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्ख 'जिच्चमाणे न'^७ संविदे ? ॥
- २३-जहां कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एव माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥
- २४-कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं^८ जोगक्खेमं न संविदे ? ॥
- २५-इह कामाणियट्ठस्स अत्तट्ठे अवरज्झई ।
'सोच्चा' नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई^९ ॥

१-जिए (वृ०) ।

२-जोणिमिन्ति (उ, चू०) ।

३-कम्मसत्ता (वृ० पा०, चू० पा०) ।

४-तिउच्छिया (अ) ; ते उड्डिया (चू०) , ते अइच्छिया (चू० पा०) ;
विउड्डिया, अतिड्डिया, अत्तिच्छिया (वृ०) ।

५-एव अदीगव (चू०, वृ०) ।

६-अगारिं (उ, ऋ) ।

७-जिच्चमाण व (चू०) ।

८-पुराकाउ (चू०) ।

९-पत्तो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

१०-पूइदेह निरोहेण भवे देवे त्ति मे सुय (चू० पा०) ।

- २६—‘इह कामणियट्टस्सं अत्तट्ठे नावरज्झई ।
 पूइदेहनिरोहेणं भवे देवि त्ति मे सुयं ॥’^१
- २७—इड्ढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई ॥
- २८—बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवज्जिया^२ ।
 चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठे नरण^३ उववज्जई ॥
- २९—धीरस्स पस्स धीरत्तं सन्वधम्माणुवत्तिणो ।
 चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे^४ देवेसु उववज्जई ॥
- ३०—तुलियाण बालभावं अबालं चेव पण्डिए ।
 चंडऊण बालभावं अबालं सेवए मुणि ॥
 —त्ति वेमि ।

*

१—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है ।

२—पडिवज्जिणो (अ, बृ० पा०) ।

३—नरणसु (अ, उ) ।

४—धम्मट्ठे (उ) ।

अट्टमं अज्मयणं

काविलीयं

- १—'अधुवे असासयंमि'^१
ससारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
'जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा'^२ ॥
- २—विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं^३ मुच्चए भिक्खू ॥
- ३—तो नाणदंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए^४ सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥
- ४—सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं^५ भिक्खू ।
'सव्वेसु कामजाएसु'^६
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१—अधुवमि मोहगहणए (नागार्जुनीयाः) ।

२—जेणाह (घ) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।

३—दोसपएहिं (वृ०) , दोसपउसेहिं (वृ० पा०) ।

४—हियनिस्सेसाय (चू०, सू) ।

५—तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।

६—सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

५—भोगामिसदोसविसण्णे

हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।

बाले य मन्दिए मूढे

बज्जई मच्छिया व खेलंमि ॥

६—दुपरिचया इमे कामा

नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।

अह सन्ति सुव्वया साहू'

जे तरन्ति 'अतरं वणिया व' ॥

७—समणा मु एगे वयमाणा

पाणवहं मिया अयाणन्ता ।

मन्दा निरयं^३ गच्छन्ति

बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥

८—न हु पाणवहं अणुजाणे

मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं ।

एवारिएहिं^४ अक्खायं

जेहि इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥

९—पाणे य नाइवाएज्जा

से 'समिए त्ति'^५ वुच्चई ताई ।

तओ से पावयं कम्मं

निज्जाइ^६ उदगं व थलाओ ॥

१—सव्वे (चू०) ।

२—वणिया व समुद्धं (बू० पा०, चू०) ; अतर वणिया व (चू० पा०)

३—नरय (बू० पा०, चू०) ।

४—एवारिएहिं (अ, ऋ) , एक्कारिएहिं (आ, सु) ।

५—समिय त्ति (चू०) , समीए त्ति (अ०) , समीइ त्ति (उ. ऋ) ।

६—णिज्जाइ (बू० पा०) ।

१०—‘जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहिं थावरेहिं च ।’^१

नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अट्ट वुक्कसं पुलागं वा
‘जवणट्ठाए निसेवए’^२ मंथु ॥

१३—जे लक्खणं च सुविणं च
अगविज्जं च जे पउंजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं^३ अक्खायं ॥

१४—इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०) ;
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च । (चू०) ;
जगनिस्सितेसु थावराणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (चू० पा०) ;
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा । (चू०) ।

२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०) ; जवणट्ठाए निसेवए (वृ० पा०) ।

३—आरिएहिं (अ, वृ०) ।

- १५—तत्तो वि य उवट्ठित्ता
संसारं बहुं अणुपरियडन्ति^१ ।
बहुकम्मलेवलित्ताणं
बोही होइ^२ सुदुल्ला तेसिं ॥
- १६—कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से^३
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥
- १७—जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमासकयं कज्जं
कोडीए वि न निट्ठियं ॥
- १८—नो रक्खसीसु गिज्जेज्जा
गंडवच्छासु ण्णेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता
खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥
- १९—नारीसु नोपगिज्जेज्जा
इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥

१—अनुपरियट्ठति (ऋ) : अनुपरियति (अ, वृ०), अनुचरंति (वृ० पा०) ।

२—जत्थ (वृ० पा०) ।

३—संतुसिज्जा (ऋ) ; तुसिज्ज (उ) ; तुसिज्जा (अ) ; (सं) तुस्से (चू०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
 कविलेणं चे विमुद्धपन्नेणं ।
 तरिहन्ति जे उ काहन्ति
 तेहि आराहिया दुवे लोग ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

नवम अजम्भयणं

नमिपव्वज्जा

१—चइअण

देवलोगाओ

उववन्नो माणुसंमि लोगंमि ।

उवसन्तमोहणिज्जो

सरई पोराणियं जाइं ॥

२—जाइं

सरित्तु

भयवं

सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।

पुत्तं

ठवेत्तु

रज्जे

अभिणिव्वमई नमी राया ॥

३—से

देवलोगसरिसे

अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।

भुंजित्तु

नमी

राया

बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥

४—मिहिल

सपुरजणवय

बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।

चिच्चा

अभिनिक्खन्तो

एगन्तमहिद्विओ भयवं ॥

५—कोलाहलगभूयं

आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि ।

तइया

रायरिसिमि

नमिमि अभिणिव्वमन्तंमि ॥

६—अब्भुद्वियं

रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं ।

सको

माहणरूवेण इमं वयणमव्ववी ॥

७—किण्णु भो ! अञ्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला . . . ?

सुव्वन्ति दारुणा सदा पासाएमु गिहेसु य ? ॥

८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ . . .

तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥

९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे .

पत्तपुप्फफलोवेए वट्ठणं बहुगुणे सया ॥

१०—वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे . . .

दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥

११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ . . .

तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥

१२—एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं .

भयवं ! अन्तेउरं तेणं कीसणं नावपेक्खसि^१ ? ॥

१३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ . . .

तओ नमो रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥

१४—सुहं वसामो जीवामो जेसि मो नत्थि किंचण . . .

मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण

१५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणे

पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जाए

१६—बहुं खु मुणिणो भदं अणगारस्स भिक्खुणो

सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ . . .

१७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ . . .

तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी

- १८—पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उत्सूलगसयग्धीओ^१ तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- १९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २०—सद्धं नगरं^२ किच्चा तवसंवरमगलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'^३ ॥
- २१—धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए^४ ॥
- २२—तवनारायजुत्तेण भेतूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥
- २३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥
- २४—पासाए^५ कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
बालगपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥
- २६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥
- २७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्छुला^० (स) ।

२—नगरी (वृ०) ।

३—खन्ति निउण पागार तिगुत्ति दुप्पधसय (वृ० पा०) ।

४—पलिकथए (चू०) ।

५—पासायं (ऋ) ।

- २८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तकरे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- २९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ३०—असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ वज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥
- ३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं^१ नानमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ३४—जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जे जिणे ।
एणं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥
- ३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्जेण वज्झओ ।
अप्पाणमेव^२ अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥
- ३६—पंचिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥
- ३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—वुज्झ (वृ० पा०) ।

२—अप्पणा चेव (अ) ।

- ३९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४०—जो सहस्स सहस्साण मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥
- ४१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४२—घोरासमं चइत्ताणं^१ अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥
- ४३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४४—मासे मासे तु जो वालो कुसगेण तु^२ भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसि ॥
- ४५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसि देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ४६—हिरणंसुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं 'च वाहणं'^३ ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥
- ४७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ४८—सुवण्णरूपस्स उ^४ पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुंद्धस्स न तेहिं^५ किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणत्तिया ॥

१—जहिलाणं (वृ० पा०) ।

२—व (अ) ।

३—सवाहण (वृ० पा०, दू०) ।

४—य (अ) ।

५—तेणं (वृ० पा०) ।

- ४९—पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं^१ नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥
- ५०—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमव्ववी ॥
- ५१—अच्छेरगमव्मुदए भोए चंयसिं^२ पत्थिवा^३ ।
असन्ते कामे पत्थेसिं संकप्पेण विहन्त्तसि ॥
- ५२—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमव्ववी ॥
- ५३—सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइ ॥
- ५४—अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥
- ५५—अवउज्झिऊण माहणहवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्युणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥
- ५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥
- ५७—अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥
- ५८—इहं सि उत्तमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं^४ ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥

१—सल्लत (वृ० पा०) ।

२—जहासि (वृ०) , चयसि (वृ० पा०) ।

३—सत्तिया (वृ० पा०) ।

४—लोगुत्तम मुत्तमं (वृ० पा०) ।

५९—एवं

अभित्युणन्तो.

रायरिसि उत्तमाए सद्धाए ।

पयाहिणं^१

करेन्तो

पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥

६०—तो^२

वन्दिऊण

पाए

चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।

आगासेणुप्पइओ

ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥

६१—नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं^३ सक्केण चोइओ ।

चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥

६२—एवं करेन्ति संबुद्धा^४ पंडियां पवियक्खणा ।

विणियट्ठन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥

—त्ति वेमि ॥

१—पायाहिण (वृ०) ।

२—स (वृ० पा०) ।

३—सक्कं (क्क) ।

४—सपन्ना (चू०) ।

दसमं अज्भयणं

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए णण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए ।

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

२—कुसगे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए ।

एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'^१ ।

विट्ठणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं ।

गाढा य विवाग कम्मणो
समयं गोयम! मा पमायए ॥

५—पुढविक्कायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।

कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१—एवं मणुयाण जीविए
एत्तिरिए बहुपच्चवायए । (वृ० पा०) ।

६—आउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

७—तेउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

८—वाउक्कायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

९—वणस्सइकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१०—ब्रेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

११—तेइन्दियकायमइगओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्दियकायमङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१३—पंचिन्दियकायमङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
सत्तट्ठभवग्गहणे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१४—देवे नेरइए य अङ्गओ

उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
इक्किक्कभवग्गहणे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१५—एवं

भवसंसारे
संसरइ सुहासुहेहि कम्मोहि ।
जीवो पमायवहुलो
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१६—लद्धूणं

वि माणुसत्तणं
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
वहवे दसुया मिलेक्खुया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१७—लद्धूणं

वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे
 उत्तमधम्मसुई हु दुल्लाहा ।
 कुत्तिथिनिसेवए^१ जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१९—लद्धूण वि उत्तमं सुइं
 सद्धहणा पुणरावि दुल्लाहा ।
 मिच्छत्तनिसेवए जणे
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२०—धम्मं पि हु सद्धहत्तया
 दुल्लाहया^२ काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि^३ मुच्छिया
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२१—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से सोयबले य हायई
 समय गोयम ! मा पमायए ॥

२२—परिजूरइ ते सरीरयं
 केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
 से चक्खुबले य हायई
 समयं गोयम ! मा पमायए ॥

१—कुत्तिथि ० (वृ० पा०, चू०) ।

२—दुल्लाहा (उ) ।

३—कामगुणेषु (उ, म, वृ०) ; काम गुणेहि (वृ० पा०) ।

- २३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिग्भबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २७—अरई गण्डं विसूइया
आयका विविहा फुसन्ति ते ।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम ! मा पमायए ॥
- २८—बोद्धिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व^१ पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
 पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
 मा वन्तं पुणो वि आइए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३०—अवउज्झियं मित्तबन्धवं
 विउलं चेव धणोहसंचयं ।
 मा तं बिइयं गवेसए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
 बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
 संपइ नेयाउए पहे
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३२—अवसोहिय कण्टगापहं
 ओइण्णो सि पहं महालयं ।
 गच्छसि मग्गं विसोहिया
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३३—अबले जह भारवाहए
 मा मग्गे विससे वगाहिया ।
 पच्छा पच्छाणुतावए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
 किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
 अभितुर पारं गमित्तए
 समयं गोयम! मा पमायए ॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया

सिद्धिं गोयंम लोयं गच्छसि ।

खेमं च सिवं अणुत्तरं

समयं गोयम! मा पमायए ॥

३६—बुद्धे

परिनिव्वुडे चरे

गामगाए नगरे व संजए ।

सन्तिमगं

च

बूहए

समयं गोयम! मा पमायए ॥

३७—बुद्धस्स

निसम्म

भासियं

सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।

रागं दोसं

च छिन्दिया

सिद्धिगइं गए गोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

इकारसमं अज्भयणं

बहुस्सुयपुज्जा

- १—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥
- २—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥
- ३—अह पंचहिं ठाणेहि जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥
- ४—अह अट्ठहिं ठाणेहि सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥
- ५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥
- ६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वारणं च न गच्छइ ॥
- ७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥
- ८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥
- ९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १०—अह पन्तरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥

- ११—अप्यं चाऽहिक्खवई^१ पवन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धं न मज्जई ॥
- १२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाणं भासई ॥
- १३—कलहडमरवज्जए वुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥
- १४—वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धमरिहई ॥
- १५—जहा संखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'^२ वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥
- १६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १७—जहाइण्णसमारुढे सूरे दहपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- १९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्वे विरायई ।
वसहे जूहाहिवाई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१—चाऽहिक्खवई (अ) ; चाऽहिक्खवई (उ) ।

२—णिसित उभयतो (दू०) ।

- २१-जहा से त्रासुदेवे संखन्नकायाधरे ।
अप्प्रडिह्यबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २२-जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिडिहए ।
चउदसरयणाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २३-जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्खे देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २४-जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २५-जहा से उडुवई च्छन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २६-जहा से सामाइयाणां^१ कोट्टागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्मपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २७-जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाळियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २८-जहा सा नईण पवरा सलिल्ला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा^२ एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- २९-जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥
- ३०-जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणाख्यणपडिपुण्णे^३ एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१-सामाइयणाणां (बु० पा०) ।

२-० पवहा (बु०) ; ० पवहा (बु० पा०) ।

३-० संपुण्णे (अ) ।

३१-समुद्गम्भीरसमा दुर्लसंया
 अचक्रिया केणइ दुप्पहंसया^१ ।
 सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
 खवित्तु कम्मं गंइमुत्तमं गया ॥
 ३२-तम्हो सुयमहिद्वेज्जा उत्तमद्वगवेसए^२ ।
 जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१-दुप्पहंसिया (चू०) ।

२-उत्तमिद्व ^० (अ) ।

वारसमं अज्मयणं

हरिएसिज्जं

१-सोवागकुलसंभूओ

गुणुत्तरधरो^१

मुणी ।

हरिएसबलो

नाम

आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२-इरिएसणभासाए

उच्चारसमिईसु

य ।

जओ

आयाणनिक्खेवे

संजओ

सुसमाहिओ ॥

३-मणगुत्तो

वयगुत्तो

कायगुत्तो

जिइन्दिओ ।

भिक्खट्ठा

बम्भइज्जम्मि

जन्नवाडं

उवट्ठिओ ॥

४-तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।

पन्तोवहिउवगरणं

उवहसन्ति अणारिया ॥

५-जाईमयपडिथट्ठा^२

हिसगा अजिइन्दिया ।

अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमन्ववी ॥

६-‘कयरे आगच्छइ’^३ दित्तरूवे

काले विगराले फोक्कनासे ।

ओमचेलए

पंसुपिसायभूए

संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१-अणुत्तरधरो (अ, वृ०पा०, चू०) ।

२-^० पडिथट्ठा (उ, वृ०पा०) ।

३-कयरे तुम एसिघ (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;

को रे आगच्छइ (वृ० पा०) ।

७-कये^१ तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसाइ हमागओ सि ।
ओमचेल्गा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८-जक्खो तहिं तिन्दुयस्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियग सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९-समणो अहं संजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०-वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु^२ त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११-उवक्खडंभोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१-को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।

२-^२ जीवणो त्ति (वृ० पा०) ।

१२-थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
 तहेव निन्नेसु य आससाए ।
 एयाए सद्धाए दलाह मज्झं
 'आराहए पुण्णमिणं खु खेत्त'^१ ॥

१३-खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए
 जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
 जे माहणा जाइविज्जोववेया
 ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१४-कोहो य माणो य वहो य जेसि
 मोसं अदत्तं च परिग्गहं च ।
 ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
 ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥

१५-तुम्हेत्थ भो भावधरा^२ गिराणं
 अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए ।
 उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति
 ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१६-अज्झावयाणं पडिकूलभासी
 पभाससे किं तु सगासि अम्हं ।
 अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं^३
 न य णं दहामु तुमं नियण्ठा ! ॥

१-आराहगा होहिम पुण्ण खेत्तं (बु० पा०) ।

२-भाववहा (बु० पा०) ।

३-भक्षपाण (ऋ) ।

१७—समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
 गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
 जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
 किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८—के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
 अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
 एयं^१ दण्डेण फलेण हन्ता
 कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९—अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता
 उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
 दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
 समागया तं 'इसि तालयन्ति'^२ ॥

२०—रन्तो तहिं कोसलियस्स धूया
 भइ त्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
 तं पासिया संजय हम्ममाणं
 कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१—देवाभिओगेण निओइएणं
 दिन्ना मु रत्ता मणसा न स्साया ।
 नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
 जेणमिह वन्ता इसिणा स एसो ॥

१—एय खु (अ उ) ; एयं वु (आ) ।

२—इसि ताडयति (उ, ऋ) ।

२२-एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे'^१ तया नेच्छइ दिज्जमार्णि
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

२३-महाजसो एस महाणुभागो^२
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण मे निद्दहेज्जा ॥

२४-एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति^३ ॥

२५-ते घोररूवा ठिय अन्तलिकखे
असुरा तहि तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६-गिरि नहेहि खणह
अयं दन्तेहि खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खु अवमन्नह ॥

१-जो म (अ, आ०) ।

२-महानुभावो (वृ० पा०, चू०) ।

३-विणिवारयन्ति (वृ० पा०) ।

२७-आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।

अगणिं व पक्खन्द पर्यंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह^१ ॥

२८-सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे ।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९-अवहेडिय^२ पिट्टिसउत्तमंगे
पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे ।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्डंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०-ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
इसि पसाएइ सभारियाओ.
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ! ॥

३१-बालेहि मूढेहि अयाणएहि
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते ! ।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१-हणेह (ऋ) ।

२-आवडिय (वृ० पा०) ।

३२-‘पुव्वि च इण्हि च अणागयं च’^१

मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।

जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति

तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥

३३-अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा

तुब्भे न वि कुप्पह भूइपत्ता ।

तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो

समागया सव्वजणेण अम्हे ॥

३४-अच्चेमु ते महाभाग!^२ न ते किंचि न अच्चिमो ।

भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥

३५-इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं

तं भुंजसू अम्ह अणुगहट्ठा ।

बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं

मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥

३६-तहियं गन्धोदयपुप्फवासं

दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।

पहयाओ^३ दुन्दुहीओ सुरेहि

आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥

३७-सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो

न दीसई जाइविसेस कोई ।

‘सोवागपुत्ते हरिएससाहू’^४

जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१—पुव्वि च पच्छा व तहैव मज्झे (वृ० पा०) ; पुव्वि च पच्छा व अणागय च (चू०)

२—महाभागा ! (अ, उ, क) ।

३—पहया (उ, क) ।

४—सोवागपुत्तं हरिएससाहू (वृ० पा०) ।

३८-कि माहणा ! जोइसमारभन्ता

उदएण सोहि वहिया विमग्गहा ? ।

जं मग्गहा वाहिरियं विसोहि

न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९-कुसं च जूवं तणकट्टमग्गि

सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।

पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता

भुज्जो वि मन्दा ! पगरेह पावं ॥

४०-कहं चरे ? भिक्खु ! वयं जयामो ?

पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।

अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया !

कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥

४१-छज्जीवकाए

असमारभन्ता

मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।

परिग्गहं इत्थिओ माणमायं

एयं परिन्नाय चरन्ति^१ दन्ता ॥

४२-सुसंवुडो^२

पंचहिं संवरेहि

इह जीवियं अणवकंखमाणो^३ ।

वोसट्ठकाओ^४

सुइचत्तदेहो^५

महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१-चरेज्ज (वृ०) ; चरन्ति (वृ० पा०) ।

२-सुसंवुडा (उ, सु) ।

३-अणवकंखमाणा (उ, सु) ।

४-वोसट्ठकाया (उ, सु) ।

५-सुइचत्तदेहा (उ, सु) ।

४३—के ते जोई ? के व ते जोइठाणे ?

का ते सुया ? कि व^१ ते कारिसंगं ? ।

एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू !

कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥

४४—तवो जोई जीवो जोइठाणं

जोगा सुया सरीरं कारिसंगं ।

कम्म एहा संजमजोगसन्ती

होम हुणामी इसिणं पसत्थं ॥

४५—के ते हरए ? के य ते सन्तितित्थे ?

कहिंसि ण्हाओ व रयं जहासि ? ।

आइक्ख णे संजय ! जक्खपूइया ।

इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥

४६—धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे

अणाविले अत्तपसन्तलेसे ।

जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो

सुसीइभूओ^२ पजहामि दोसं ॥

४७—एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं

महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।

'जहिंसि ण्हाया'^३ विमला विसुद्धा

महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥

—त्ति वेमि ॥

१—व (उ, ऋ) ।

२—सुसीलभूओ (वृ० पा०) ।

३—जहिं सिणाया (अ, उ, ऋ) ।

तेरसमं अज्जमयणं
चित्तसम्भूज्जं

- १-जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो
उववन्तो पउमगुम्माओ ॥
- २-कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥
- ३-कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एकमेक्कस्स ॥
- ४-चक्खवट्ठी महिड्ढीओ वम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमव्ववी ॥
- ५-आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥
- ६-दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे^१ सोवागा^२ कासिभूमिए ॥

१-मयंगतीराए (अ, उ, ऋ) ।

२-चडाला (उ, ऋ) ।

- ७—देवा य^१ देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्डिया ।
 'इमा नो'^२ छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥
- ८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
 तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥
- ९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते 'अज्ज परिभुंजामो किं नुचित्ते विसेतहा ? ॥
- १०—सत्त्वं सुचिण्णं सफलं नराणं
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि
 आया ममं पुण्णफलोववेए ॥
- ११—जाणासि संभूय ! महानुभागं
 महिड्डियं पुण्णफलोववेयं ।
 चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !
 इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥
- १२—महत्थरूवा वयणप्पभूया
 गाहाणुगीया नरसंघमज्जे ।
 जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
 'इहज्जयन्ते समणो'^३ म्हि जाओ ॥
- १३—उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
 पवेइया आवसहा 'य रम्मा'^४ ।
 इम गिहं चित्तघणप्पभूय^५
 पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ) ।

२—इमामे (बृ०) ; इमाणो (बृ० पा०) ।

३—इहज्जयन्ते सुमणो (चू० पा०) ; इहज्जयन्ते सुमणो (बृ० पा०) ।

४—उत्तरम्मा, सुरम्मा वा (बृ० पा०) ।

५—वित्तघणोववेय (बृ०) ; घणवित्तोववेय (चू०) ; वित्तघणप्पभूय (बृ० पा०) ।

- १४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहि
नारीजणाइं परिवारयन्तो^१ ।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥
- १५—तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेषु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था^२ ॥
- १६—सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं^३ ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥
- १७—‘वालाभिरामेषु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेषु रायं ।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥’^४
- १८—नरिद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहि वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेषु ॥
- १९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेषु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥

१—पवियारियन्तो (वृ० पा०) ; परियारयतो (अ, उ, ऋ) ।

२—वक्क^० (वृ०) ; वयण^० (वृ० पा०) ।

३—विडम्बणा (उ, चू०) ।

४—यहःश्लोक चूणि में व्याख्यात नहीं है ।

- २०—सो दाणि सि राय । महाणुभागो
महिडिढओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
'आयाणहेउं अभिणिक्खमाहि'^१ ॥
- २१—इह जीविए राय । असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥
- २२—जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'^२
कालम्मि तम्मिसहरा^३ भवंति ॥
- २३—न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥
- २४—चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
कम्मप्पवीओ^४ अवसो पयाइ
परं भवं सुंदर पावगं वा ॥

१—आदाणमेव अणुचित्तयाहि (चू०) ; आदाण हेउ अभिणिक्खमाहि (चू० पा०) ;
आयाणमेवा अणुचित्तयाहि (बृ० पा०) ।

२—न पिया न माया (उ) ।

३—तम्मसहरा (उ) ।

४—सकम्मप्पवीओ (उ) ; सकम्मवीओ (ऋ) ; कम्मप्पविइओ (अ) ।

२५—तं इक्कं तुच्छसरीरं से
चिईगयं डहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता^१ वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥

२७—अहं पि जाणामि 'जहेह साहू !'^२
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहि ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइ महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पंकजलावसन्तो
दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—पुत्तो (वृ०) ।

२—जो एत्थ सारो (वृ० पा०, चू०) ।

- ३१—अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
 न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
 उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति^१
 दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥
- ३२—‘जइ ता सि’^२ भोगे चइउं असत्तो
 अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ! ।
 धम्मो ठिओ सव्वपयाणकम्पी
 तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥
- ३३—न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
 गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
 मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
 गच्छामि रायं ! आमन्तिओ सि ॥
- ३४—पंचालराया वि य बम्भदत्तो
 साहुस्स तस्स^३ वयणं अकाउं ।
 अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
 अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥
- ३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
 उदग्गचारित्तवो^४ महेसी ।
 अणुत्तरं संजम पालइत्ता
 अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—जहंति (चू०) ।

२—जइ तसि (उ, बू० पा०, ऋ) ; जईउसि (चू०) ।

३—तस्सा (अ, आ, इ, स) ।

४—उदत्त^० (चू०, बू०, सु) ।

चउदसमं अजभयणं

उसुयारिज्जं

१—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।

पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए, समिट्ठे सुरलोगरम्मे ॥

२—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेमु दग्गेमु^१ य ते पसूया ।

निव्विण्णसंसारभया जहाय
जिणिन्दमग्ग सरणं पवन्ता ॥

३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।

विसालकित्ती य तहोमुयारो
गयत्थ देवी कमलावई य ॥

४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया^२
वहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।

ससारचयस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥

५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।

सरित्तु पोराणिय तत्थ जाडं
तहा मुच्चिणं तवसंजम च ॥

१—दत्तेसु (चू०, वृ०) ; उग्गेसु (उ) ।

२—^० भयाभिभूए (वृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
 माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
 मोक्खाभिकंखी अभिजायसइढा
 तायं उवागम्म. इमं उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इमं विहारं
 बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
 तम्हा गिहंसि न रइं लहामो
 आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं
 तवस्स वाघायकरं वयासी ।
 इमं वयं वेयविओ वयन्ति
 जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए पग्विस्स विप्पे
 पुत्ते पडिद्वप्प^१ गिहंसि जाया ! ।
 भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
 'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'^२ ॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
 मोहाणिला पज्जलणाहिणं ।
 संतत्तभावं परित्थप्पमाणं
 लोलुप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥

१—परिद्वप्प (वृ० पा०) ।

२—पच्छा वणप्पवेस पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहितं तं कमसोऽणुणन्तं^१
 निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
 जहक्कमं कामगुणेहि^२ चेव
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताणं
 भुत्ता दिया नित्ति तमं तमेणं ।
 जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज^३ एयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
 पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
 संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
 खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

१४—परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
 अहो य राओ परितप्पमाणे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
 पप्पोत्ति मच्चु पुरिसे जरं च ॥

१५—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
 इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
 तं एवमेव लालप्पमाणं
 हरा हरन्ति त्ति कहं पमाए ? ॥

१—^० णिणत्तं (उ) ।

२—कामगुणेषु (वृ० पा०) ।

३—अणुमोदेज्ज (अ) ।

- १६—धणं पभूयं सहं इत्थियाहि
 सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
 तवं कए तप्पइ जस्स लोगो
 तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥
- १७—धणेण कि धम्मधुराहिगारे
 सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी
 बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥
- १८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
 खीरे घयं तेल्लामहा तिलेसु ।
 एमेव जाया ! सरीरंसि सत्ता
 संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥
- १९—तो इन्दियगेज्झ अमुत्तभावा
 अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्झत्थहेउं निययऽस्स बन्धो
 ससारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥
- २०—जहा वयं धम्ममजाणमाणा
 पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता
 तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥
- २१—अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
 'अमोहाहिं पडन्तीहि'^१ गिहंसि न रइं लभे ॥
- २२—केण अब्भाहओ लोगो ? केण वा परिवारिओ ? ।
 का वा अमोहा वुत्ता ? जाया ! चितावरो हुमि ॥

१—अमोहायए पुत्तीहि (उ) ।

- २३—मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय । वियाणह ॥
- २४—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥
- २५—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
 धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥
- २६—एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
 पच्छाजाया ! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥
- २७—जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि^१ पलायणं ।
 जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥
- २८—अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो
 जहि पवन्ता न पुणब्भवामो ।
 अणागयं नेव य अत्थि किञ्चि
 सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥
- २९—पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
 वासिट्ठि । भिक्खायरियाइ कालो ।
 साहाहि रुक्खो लहए समाहि
 छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥
- ३०—पंखाविहूणो व्व^२ जहेह^३ पक्खी
 भिच्चाविहूणो^४ व्व^२ रणे नरिन्दो ।
 विवन्तसारो वणिओ व्व पोए
 पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥

१—चउत्थि (ऋ) ।

२—व (उ, ऋ) ।

३—जहेव (अ, उ, ऋ) ।

४—भिच्चाविहूणु (ऋ) ; मिच्चुविहूणु (उ) ।

- ३१—सुसंभिया कामगुणा इमे ते
संपिण्डिया अगगरसापभूया^१ ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं
पच्छा- गमिस्सामु पहाणमगं ॥
- ३२—भुत्ता रसा भोइ^२ ! जहाइ णे वओ
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
संचिक्खमाणो^३ चरिस्सामि^४ मोणं ॥
- ३३—मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइ मए समानं
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥
- ३४—जहा य भोई^५ ! तणुयं भुयंगो^६
निम्मोयणि हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए^७ जाया पयहन्ति भोए
'ते हं'^८ कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥
- ३५—छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया
मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा
धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥

१—अगगरसप्पभूया (उ, ऋ) ।

२—होइ (वृ०) ।

३—संचिक्खमाणो (चू० उ) ।

४—चरिस्सामिः (अ, ऋ) ; करिस्सामि (चू०) ।

५—भोगि (वृ० पा०) ।

६—भुयंगमो (अ, वृ०) ।

७—इमेति (वृ० पा०) ।

८—ताह (उ, चू०) ; तोह (अ) ।

- ३६—नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
तथाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता-य पई य मज्झं
'ते हं' कहां नाणुगमिस्समेक्का ? ॥
- ३७—पुरोहियं तं ससुयं सदारं
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं त
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥
- ३८—वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥
- ३९—सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥
- ४०—मरिहिसि रायं । जया तया वा
मणोरमे कामगुणे पहाय^१ ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥
- ४१—नाहं रमे पक्खणि पंजरे वा
संताणद्धिन्ता चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
परिगहारम्भनियत्तदोसा ॥
- ४२—दवगिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागदोसवसं गया ॥

१—ताह (उ, चू०) ; तोह (अ) ।

२—जहाय (चू०) ।

- ४३—एवमेव^१ वयं मूढा कामभोगेषु मुच्छ्रिया ।
 डञ्जमाणं न वुज्झामो रागद्वोसगिणा जगं ॥
- ४४—भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
 आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ॥
- ४५—इमे य वद्धा^२ फन्दन्ति मम हृत्यऽज्जमागया ।
 वयं च सत्ता कामेषु भविस्सामो जहा इमे ॥
- ४६—सामिसं कुललं दिस्स वज्जमाणं निरामिसं ।
 आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामि निरामिसा ॥
- ४७—गिद्वोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे ।
 उरगो 'सुवण्णपासे व'^३ संकमाणो तणुं चरे ॥
- ४८—नागो व्व वन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
 एयं पत्थं महारायं ! उसुयारि त्ति मे सुयं ॥
- ४९—चइत्ता विउलं रज्जं^४ कामभोगे य दुच्चए ।
 निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥
- ५०—सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे ।
 तवं पगिज्जऽहक्खायं^५ घोरं घोरपरक्कमा ॥
- ५१—एवं ते कमसो बुद्धा
 सव्वे धम्मपरायणा^६ ।

जम्ममच्चुभउव्विगा

दुक्खस्सन्तगवेसिणो

॥

१—एवमेवं (वृ०) ।

२—लद्धा (चू०) ।

३—सुवण्णपासेव्व (उ, चू०, सु) ; सुवण्णपासित्ता (ऋ) ; सुवण्णपासिव्वा (अ) ।

४—रट्ठ (वृ०, चू०) ; रज्जं (वृ० पा०) ।

५—^०अहकामं (चू० पा०) ।

६—^०परंपरा (वृ० पा०) ।

- ५२-सासणे विगयमोहाणं पुर्व्वि भावणभाविया ।
 अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥
- ५३-राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।
 माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड^१ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१-परिनिव्वुड्ड (ऋ) - परिनिव्वुडि (अ) ; परिनिव्वुए (चू०) ।

पनरसमं अज्जम्भयणं

सभिक्षुवुयं

१-मोणं चरिस्सामि^१ समिच्च धम्मं

सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।

संथवं जहिज्ज अकामकामे

अन्तायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥

२-राओवरयं^२ चरेज्ज लाढे

विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।

पन्ते अभिभूय सव्वदंसी

जे कम्हिचि^३ न मुच्छिए स भिक्खू ॥

३-अक्कोसवहं विइत्तु धीरे

मुणो चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।

अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे

जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

४-पन्तं सयणासणं भइत्ता

सीउण्हं विविहं च ढंसमसग ।

अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे

जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

५-नो सक्खियमिच्छई न पूयं

नो वि य वन्दणं कुओ पसंसं ।

से संजए सुव्वए तवस्सी

सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१-चरिस्सामो (वृ०) ।

२-राओवरय (वृ०) ; राओवरयं (वृ० पा०) ।

३-कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीवियं
 मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
 नरनारिं पजहे सया तवस्सी
 न य कोळ्हलं उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
 सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
 अगवियारं सरस्स विजयं
 जो विज्जाहि न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्तं मूल विविहं वेज्जचिन्तं
 वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
 आउरे सरणं तिगिच्छियं च
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउगारायपुत्ता
 माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो'^१ ।
 नो तेसि वयइ^२ सिलोगपूयं
 तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
 अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
 तेसि इहलोइयफलट्ठा^३
 जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥

१—सिप्पिणोऽणे (वृ० पा०) ।

२—करेइ (चू०) ।

३—इहलोगफलट्ठाए (अ, आ, इ, चू०) ।

११—सयणासणपाणभोयणं

विविहं खाइमसाइमं परेसि ।

अदए पडिसेहिए नियण्ठे

जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—जं किचि आहारपाणं^१ विविहं

खाइमसाइमं परेसि लद्धं ।

जो तं तिविहेण नाणुकम्पे

मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामगं चेव जवोदणं च

‘सीयं च सोवीरजवोदणं च’^२ ।

नो हीलए पिण्डं नीरसं तु

पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सद्दा विविहा भवन्ति लोए

दिव्वा ‘माणुस्सगा तहा तिरिच्छा’^३ ।

भीमा भयभेरवा उराला

जो सोच्चा न वहिज्जई^४ स भिक्खू ॥

१५—वादं विविहं समिच्च लोए

सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।

पन्ते अभिभूय सव्वदंसी

उवसन्ते अविहेडए^५ स भिक्खू ॥

१—वाहार^० (अ) ।

२—सीय सुवीर च जवोदण च (स, सु) ।

३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०) ।

४—वहिए (उ) ।

५—उविहेडए (उ) ।

१६-असिप्पजीवी^१ अगिहे अमित्ते
 जिइन्दिए सब्बओ विप्पमुक्के ।
 अणुक्साई लहुअप्पभक्खी
 चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सोलसमं अज्जमयण

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २—कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३—इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, तं जहा—‘वित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा’, से निग्गन्थे ।’^१ नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ ‘वा धम्माओ’^३ भंसेज्जा । तम्हा नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

१—सेविज्जा हवइ (उ) ।

२—“वित्ताइ सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गन्थे” इतना पाठ चूणि मे नहीं है ।

३—धम्माओ (उ, इ) ।

सू० ४—नो इत्थीणं कंहं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कंहं कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीणं' कंहं कहेज्जा ।

सू० ५—नो इत्थीहिं^१ सद्धि सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धि सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धि सन्निसेज्जागए विहरेज्जा^२ ।

सू० ६—नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवल-

१—तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीण (उ) ।

२—इत्थीण (अ, ऋ) ।

३—विहरइ (अ) ।

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु 'निगन्थे नो' इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएज्जा, निज्झाएज्जा ।

सू० ७-नो इत्थीणं कुडुत्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा, सुणेत्ता हवइ से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु इत्थीणं 'कुडुत्तंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा'^१, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु निगन्थे नो इत्थीणं कुडुत्तरंसि वा, दूसन्तरंसि वा, भित्तन्तरंसि वा, कुइयसहं वा, रुइयसहं वा, गीयसहं वा, हसियसहं वा, थणियसहं वा, कन्दियसहं वा, विलवियसहं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ।

सू० ८-नो निगन्थे पुव्वरयं, पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निगन्थस्स खलु पुव्वरयं^२, पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा,

१-नो निगन्थे (अ) ।

२-मिति अतरसि वा (अ, ऋ) ; भित्तिरसि (उ) ।

३-कुडुत्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (दू०, स) ; कडुत्तरसि वा^३ (अ) ।

४-इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ) ।

वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ।

सू० ९-नो पणीयं आहार आहारित्ता हवइ, से निगन्थे । १

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-निगन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ।

सू० १०-नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-निगन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारे-माणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीह-कालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुंजिजा ।

सू० ११-नो विभूसाणुवाई हवइ, से निगन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह-विभूसावत्ति^१, विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ । तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

१-निगन्थस्स खलु विभूसावत्ति (अ) ।

बम्भचरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया ।

सू० १२—नो सद्वरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु सद्वरसगन्धफासाणुवाईस्स बम्भयारिस्स बम्भचरे संका वा, कंखा वा, वित्तिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्वरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा । दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ।

भवन्ति इत्थं सिलोगा, तं जहा—

१—जं विवित्तमणाइणं रहियं थीजणेण य ।

बम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलयं तु निसेवए ॥

२—मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणि ।

बम्भचेरओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥

३—समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं ।

बम्भचेरओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

४—अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं ।

बम्भचेरओ थीणं^१ चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥

५—कुइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं ।

बम्भचेरओ थीणं सोयगिज्झं विवज्जए ॥

- ६—“हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि^१ य’^२ ।
 बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥
- ७—पणीय भत्तपाणं तु^३ खिप्पं मयविवड्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥
- ८—धम्मलद्धं^४ मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं ।
 नाइमत्तं तु भुंजेज्जा वम्भचेररओ सया ॥
- ९—विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं ।
 बम्भचेररओ भिक्खू सिगारत्थं न धारए ॥
- १०—सहे रूवे य गन्वे य रसे फासे तहेव य ।
 पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥
- ११—आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा ।
 संथवो चेव नारीणं^५ तासिं इन्दियदरिसणं ॥
- १२—कुइयं रुइयं गीयं हसियं^६ भुत्तासियाणि य ।
 पणीयं भत्तपाणं च अडमायं^७ पाणभोयणं ॥
- १३—गतभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया ।
 नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥
- १४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
 सकट्टाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा^८ पणिहाणवं ॥

१—सहसावित्ता^० (ऋ), सहमुत्ता^० (अ) ।

२—हस्स दप्प रइ किड्ड सहमुत्ता^० (वृ० पा०) ।

३—च (अ) ।

४—धम्म लद्ध (वृ०), धम्मलद्धु, धम्मलद्ध (वृ० पा०) ।

५—नारिहिं (ऋ) ।

६—सहमुत्ता^० (अ) ।

७—अडमाणं (ऋ) ।

८—वज्जिया (ऋ) ।

१५—धम्मारासे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।

धम्मारामए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥

१६—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।

बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति त^१ ॥

१७—एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।

सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

सतरसमं अज्मयणं
पावसमणिज्जं

- १-जे 'के इमे'^१ पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणिता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं^२
विहरेज्ज पण्छा य जहासुहं तु ॥
- २-सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं^३ तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्ठइ आउसु । त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥
- ३-जे के इमे पव्वइए निहासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ^३ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ४-आयरियउवज्झाएहि सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ५-आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ६-सम्महमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ७-संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१-केइ उ (वृ०, ऋ, सु), के इमे (वृ० पा०) ।

२-भुत्तु (ऋ) ।

३-वसइ (वृ० पा०) ।

- ८—द्वद्वस्त चरई पमत्ते य अभिक्त्तणं ।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं ।
पडिलेहणाअणाउत्ते^१ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि द्दु निसामिया ।
गुरुपरिभावए^२ निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- ११—बहुमाई पमुहरे^३ थडे लुद्धे अणिगाहे ।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १२—विवादं न उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा^४ ।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणन्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १४—सत्तरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ ।
संयारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १५—दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्त्तणं ।
अरण य तवोक्कम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १६—अत्थन्तन्मि^५ य सूरम्मि आहारेइ अभिक्त्तणं ।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥
- १७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए ।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—पडिलेहा^० (स) ।

२—गुरुपरिभावइ (ठ) : गुरुपरिमत्तर (दृ०) : गुरुपरिभावए (दृ० पा०) ।

३—पमुहरे (इ, चू. स) :

४—अत्तपन्नहा (दृ०) : अत्तज्जहा (दृ० पा०) ।

५—अत्थन्तन्मि (दृ० पा०) ।

१८—सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे^१ ।

निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१९—सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।

गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

२०—एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे

रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।

अयंसि लोए विसमेव गरहिए

न से इहं नेव परत्थ लोए ॥

२१—जे वज्जए एए सया उ दोसे

से सुव्वए होइ मुणीण मज्जे ।

अयंसि लोए अमयं व पूइए

आराहए 'दुहओ लोगमिण'^२ ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—वावरे (वृ०, सु) ; ववहरे (वृ० पा०) ।

२—लोगमिण तहापर (उ, स, सु, ऋ) ।

अट्टारसम अज्भयण

संजइज्जं

उक्खेव-पदं

- १—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥
- २—हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए^१ ॥
- ३—मिए छुभित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
- ४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥
- ५—अप्पोवमण्डवम्मि झायई झवियासवे^२ ।
तस्सागए मिए पासं वहेई से नराहिवे ॥
- ६—अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहि ।
हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥
- ७—अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घत्तुणा^३ ॥
- ८—आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥
- ९—अह मोणेण सो भगवं अणगारे झ्माणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥

१—परिवारए (अ) ।

२—खवियासवे (स) ।

३—घत्तुणा (उ) ; घम्मुणा (ऋ) ।

- १०—सजओ अहम्ममीति भगवं ! वाहराहि मे ।
 कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥
 ११—अभओ^१पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥

सवोहि-पद

- १२—जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
 अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि^२पसज्जसि ? ॥
 १३—जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचल ।
 जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥
 १४—‘दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
 जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥’^३
 १५—नीहरन्ति मयं पुत्ता पियर परमदुक्खिया ।
 पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं । तवं चरे ॥
 १६—तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरिक्खिए ।
 कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥
 १७—तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
 कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भव ॥

रायरिसि-पदं

- १८—सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
 महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥

१—अमय (अ, आ) ।

२—रज्जेण (उ, ऋ), हिंसाए (वृ० पा०) ।

३—इदं सूत्र चिरन्तनवृत्तिकृता न व्याख्यात, प्रत्यन्तरेषु च दृश्यत
 इत्यस्माभिरुन्नीतम् (वृ०) ।

- १९—संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
 गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥
- २०—चिच्चा रट्ट पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
 जहा ते दीसई रूव पसन्नं ते तहा मणो ॥
- २१—किंनामे ? किगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
 कहं पडियरसी बुद्धे ? कहं विणोए त्तिवुच्चसि^१ ? ॥
- २२—संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमे ।
 गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
- २३—किरियं अकिरियं विणयं
 अन्नाणं च महामुणी ! ।
 एएहि चउहि ठाणेहि
 मेयन्ने^२ कि पभासई ? ॥
- २४—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
 विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्खमे ॥
- २५—पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
 दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥
- २६—‘मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
 संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥’^३
- २७—सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
 विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पगं ॥
- २८—अहमासी महापाणे जुइमं वरिससओवमे ।
 जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥

१—वुच्चई (अ, ऋ, वृ०) ।

२—मियन्ना (चू०) ।

३—इदमपि सूत्र प्रायो न दृश्यते (वृ०) ।

- २९—से चुए^१ बम्भलोगाओ माणुस्स भवमाणए ।
अप्पणो य परेसि च आउं जाणे जहा तहा ॥
- २०—नाणारुइ च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥
- ३१—पडिक्कमामि पसिणाण परमन्तेहि वा पुणो ।
अहो उट्टिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥
- ३२—जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण^२ चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे त नाणं जिणसासणे ॥
- ३३—किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ते धम्मं चर सुदुच्चरं ॥
- ३४—एय पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वास चेच्चा कामाइ पव्वए ॥
- ३५—सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिबो ।
इस्सरियं केवल हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे^३ ॥
- ३६—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥
- ३७—सणकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं^४ सो वि राया तवं चरे ॥
- ३८—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥

१—चुया (अ) ।

२—सुद्धेण (वृ०) ।

३—परिनिव्वुओ (उ, ऋ) ।

४—ठवेऊण (उ ऋ) ।

३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती धिइमं^१ 'भोक्खं गओ अणुत्तरं'^२ ॥

४०—सागरन्तं जहिताणं^३ 'भरह वासं नरीसरो'^४ ।
अरो य अरयं^५ पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥

४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्ठी नराहो^६ ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥

४२—एगच्छत्तं पसाहिता महि माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो^७ गइमणुत्तरं ॥

४३—अन्तिओ रायसहस्सेहि सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खाय पत्तो गइमणुत्तरं ॥

४४—दसण्णरज्जं मुइय चइत्ताणं मुणी चरे ।
दसण्णभट्ठो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥
[नमी नमेइ अप्पाणं सक्ख सक्केण चोइओ ।
चइळण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवड्ढिओ ॥]^८

४५—करकण्डू कलिगेसु पंचालेसु य दुस्सुहो^९ ।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नगई ॥

१—भगव (उ, ऋ) ।

२—पत्तो गइमणुत्तर (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (उ, ऋ, स) ।

४—भरह नरवरीसरो (उ, ऋ) ।

५—अरस (वृ० पा०) ।

६—महिड्ढिओ (उ, ऋ) ।

७—गओ (अ) ।

८—यह श्लोक वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

९—दुस्महा (ऋ) ।

- ४६—एए^१ नरिन्दवसभा निवखन्ता जिणसासणे ।
 पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं^२ सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
 ४७—सवीररायवसभो चेच्चा^३ रज्जं मुणी चरे ।
 उदायणो^४ पव्वडओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
 ४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
 कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
 ४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति' पव्वए^५ ।
 रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
 ५०—तहेवुगं^६ तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेतसा ।
 महावलो^७ रायरिसी अदायं सिरसा सिरं^{१०} ॥

निकखेव-पद

- ५१—कह धीरो अहेऊहि उम्मत्तो^{११} व्व^{१२} महिं चरे ? ।
 एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
 ५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा^{१३} मे भासिया वई ।
 अतरिमु तरन्तेगे^{१४} तरिस्सन्ति अणागया^{१५} ॥

१—एव (उ, ऋ) ।

२—ठवैज्जण (उ, ऋ) ।

३—चइत्ताण (अ, उ, ऋ) ।

४—उदाहणो (ऋ) , उदायणो (वृ०, आ, उ, ऋ) ।

५—अणट्ठा^० (वृ०) ; आणट्ठा^० (सु) ।

६—आणट्ठा किइ पव्वइ (वृ० पा०) ।

७—तहेवउग (अ) ।

८—महवलो (अ, आ, ऋ) . महवलो (उ) ।

९—आदाय (उ, ऋ, सु, वृ० पा०) ।

१०—सिरिं (वृ० पा० अ, आ, उ, ऋ) ।

११—उम्मत्तु (उ, ऋ) ।

१२—व (अ) ।

१३—एसा (वृ०) सव्वा, सच्चा (वृ० पा०) ।

१४—तरन्ते (वृ० पा०) ।

१५—अणागय (अ) ।

५३—कहं धीरे अहेऊहि अत्ताणं^१ परियावसे ? ।

सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरण ॥

—त्ति बेमि ॥

*

एगूणविसइमं अज्मयणं

मियापुतिज्जं

उक्खेव-पढं

- १—सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिंसो ॥
- २—तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दसीसरे ॥
- ३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए^१ सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥
- ४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउकतियच्चरे ॥
- ५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलइढं गुणआगरं ॥
- ६—तं देहई^२ मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रुवं दिट्ठपुव्वं मए पुरां ॥
- ७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्मवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥
[देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥]^३
- ८—जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥

१—कीलिए (ऋ) ।

२—पेहइ (वृ०) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति और सर्वार्थसिद्धि में व्याख्यात नहीं है ।

- ९-विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य ।
 अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥
- १०-सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
 नराएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
 निव्विण्णकामो मि^१ महण्णवाओ
 अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥
- ११-अम्मताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
 पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥
- १२-इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं ।
 असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥
- १३-असासए^२ सरीरम्मि रइं नोवलभामहं ।
 पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्तिभे ॥
- १४-माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
 जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥

दुक्ख-पदं

- १५-जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य ।
 अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो^३ ॥
- १६-खेतं वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा^४ ।
 चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥
- १७-जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो ।
 एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१-हि (स) ।

२-आसासए (अ, उ) ।

३-जन्तुणो (आ, ऋ) ; पाणिणो (उ, स) ।

४-वधवं (उ) ।

धम्म-पद

- १८—अद्वाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥
 १९—एवं धम्मं अकाळणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥
 २०—अद्वाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥
 २१—एवं धम्मं पि काळणं जो गच्छइ परं भवं ।
 गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥

सारभण्ड-पदं

- २२—जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
 सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥
 २३—एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
 अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥

महव्वय-पद

- २४—तं बित्तं ऽम्मापियरो सामणं पुत्त ! दुच्चरं ।
 गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो^१ ॥
 २५—समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तसु वा जगे ।
 पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करा^२ ॥
 २६—निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।
 भासियव्व हिंयं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥
 २७—दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
 अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हुणा अवि दुक्करं ॥

१—भिक्खुणा (वृ०), भिक्खुणो (वृ० पा०) ।

२—दुक्कर (वृ०, सु) ।

- २८—विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
 उगं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥
- २९ धणधन्तपेसवगोसु परिग्गहविवज्जणं^१ ।
 सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥
- ३०—चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
 सन्तिहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो^२ ॥

दुक्कर-पद

- ३१—छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
 अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
- ३२—तालणा तज्जणा चेव वहवन्धपरीसहा ।
 दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥
- ३३—कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
 दुक्खं बम्भवयं घोर धारेउं अ महप्पणो ॥
- ३४—सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
 न हुसी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्णमणुपालिउं ॥
- ३५—जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो ।
 गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥
- ३६—आगासे गंगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
 बाहाहि सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥
- ३७—वालुयाकवले^३ चेव निरस्साए उं^४ संजमे ।
 असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

१—^० विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।

२—सुदुक्कर (उ) ।

३—^० कवला (अ) ।

४—व (उ) ।

- ३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुक्करे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥
- ३९—जहा अग्निसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं^१ ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥
- ४०—जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥
- ४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसकं दुक्करं समणत्तणं ॥
- ४२—जहा भुयाहि तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं^२ दमसागरो ॥
- ४३—भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥
- ४४—‘तं वित ऽम्मापियरो’^३ एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किञ्चि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पदं

- ४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥
- ४६—जराभरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

- ४७—जहा इहं अगणी उण्हो ‘एत्तोऽणन्तगुणे तहि’^४ ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥

१—सुदुक्करा (वृ० पा०) ।

२—दुत्तरं (आ) ।

३—तो वे अम्मापियरो (उ, वृ० पा० ऋ) : तो वेत्तुम्मान्दिरो (वृ० पा०) ।

४—दत्तोऽणन्तगुणा तहि (वृ० पा०) ।

- ४८—जहा 'इमं इहं'^१ सीयं 'एत्तोऽणन्तगुणं तहि'^२ ।
 नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥
- ४९—कन्दन्तो कदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
 हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५०—महादवगिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
 कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५१—रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
 करवत्तकरकयार्हिहि छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥
- ५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
 खेवियं^३ पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहि दुक्करं ॥
- ५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
 पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥
- ५४—कूवन्तो कोलसुणएहि
 सामेहि सबलेहि य ।
 पाडिओ फालिओ छिन्नो
 विप्फुरन्तो^४ अणेगसो ॥
- ५५—असीहि^५ अयसिवण्णाहि
 भल्लीहि पट्टिसेहि य ।
 छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
 ओइण्णो^६ पावकम्मुणा ॥

१—इहं इम (उ, ऋ) ।

२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहि (वृ० पा०) ।

३—खेदिय (वृ०) ।

४—विप्फुरन्तो (अ, ऋ) ।

५—अरसाहि (वृ०), असीहि (वृ० पा०) ।

६—उववण्णो (ऋ) ।

- ५६-अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते^१ समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जहपाडिओ ॥
- ५७-हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥
- ५८-बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो ह ढंकगिद्धेहिंणन्तसो ॥
- ५९-तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदि ।
जलं 'पाहि ति'^२ चिन्तन्तो खुरधारहिं विवाइओ^३ ॥
- ६०-उण्हाभित्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो^४ ॥
- ६१-मुगारेहिं मुसंडीहिं सूलेहिं मुसलेहिं य ।
गयासं भग्गत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥
- ६२-खुरेहिं तिक्खधारेहिं^५ छुरियाहिं^६ कप्पणीहिं य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो^७ य अणेगसो^८ ॥
- ६३-पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ^९ वद्धरुद्धो अ 'बहुसो'^{१०} चेव विवाइओ ॥

१-जलत्त (वृ० पा०) ।

२-पाहि ति (वृ०) ।

३-विपाडिओ (वृ०) , विवाइओ (वृ० पा०) ।

४-अणन्तसो (उ, ऋ) ।

५-तिक्ख दाढेहिं (उ) ।

६-छुरीहिं (ऋ) ।

७-उक्कित्तो (वृ० पा०, सु) ।

८-गहिओ (वृ० पा०) ।

९-विवसो (उ, ऋ) ।

- ६४—गलेहि मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ^१ फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६५—वीदंसएहि^२ जालेहि
लेप्पाहि सउणो विव ।
गहिओ लगो^३ बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो ॥
- ६६—कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो ॥
- ६७—चवेडमुट्टिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो ॥
- ६८—तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं ॥
- ६९—तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि^४ समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥
- ७०—तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महुणि^५ य ।
पाइओ^५ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ) ।

२—वीसंदएहि (ऋ) ; वीस देहिप (उ) ।

३—भगो (अ) ।

४—वि (ऋ) ।

५—पज्जितो (वृ०) ।

७१—निच्चं^१ भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।

परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥

७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।

महब्भयाओ^२ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥

७३—जारिसा माणुसे लोए ताया ! दीसन्ति वेयणा ।

एत्तो^३ अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥

७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।

निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥

मिगचारिया-पदं

७५—तं बित्तं^४ म्मापियरो छन्देणं पुत्त ! पव्वया ।

नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥

७६—सो बित्तं म्मापियरो ! एवमेयं जहाफुडं ।

पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ? ॥

७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।

एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥

७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई ।

अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि कोणं ताहे तिगिच्छई^५ ? ॥

७९—को वा से ओसहं देई ? को वा से पुच्छई सुहं ? ।

को से भत्तं च 'पाणं च'^६ आहरित्तु पणामए ? ॥

८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।

भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥

१—निच्च (अ, ऋ) ।

२—महालया (वृ० पा०) ।

३—तत्तो (अ) ; इत्तो (उ, ऋ) ।

४—विगिच्छई (उ), विगिच्छई (ऋ) ।

५—पाण वा (ऋ) ।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा ।

मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥

८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ^१ ।

मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

८३—जहा मिगे एग अणेगचारी

अणेगवासे धुवगोयरे य ।

एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे

नो हीलए नो वि य खिसएज्जा ॥

८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता ! जहासुहं ।

अम्मापिऊहिंणुन्नाओ जहाइ उवहि तओ ॥

८५—मिगचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणि ।

तुब्भेहि अम्म ! णुन्नाओ गच्छ पुत्त ! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पदं

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमानित्ताण बहुविहं ।

समत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥

८७—इड्ढि^२ वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।

रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समत्ता-पदं

८८—पंचमहव्वयजुत्तो

पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

सन्निन्तरबाहिरओ

तवोकम्मंसि

उज्जुओ ॥

१—अणेगसो (अ, ऋ) ; अणिपयणे (वृ० पा०) ।

२—इड्ढी (उ, ऋ) ।

- ८९—निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो । --
 समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥
- ९०—लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
 समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥
- ९१—गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
 नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अवन्धणो ॥
- ९२—अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
 वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥
- ९३—अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
 अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।
- ९४—एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
 भावणाहि 'यसुद्धाहि' सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥
- ९५—बहुयाणि उ^२ वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
 मासिएण उ^३ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥
 निक्खेव-पदं
- ९६—एवं करन्ति संवुद्धा^४ पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्ठन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी^५ ॥
- ९७—महापभावस्स महाजसस्स
 मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
 तवप्पहाणं चरियं^६ च उत्तमं
 गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

१—विमुद्धाहि (वृ०, सु) ।

२—ओ (उ) ; अ (ऋ) ।

३—य (अ) ।

४—सपन्ना (उ, वृ०) ।

५—जहामिसी (वृ०, सु) ।

६—चरित्तं (अ) ।

९८—वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं
 ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
 सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं
 धारेह निव्वाणगुणावहं^१ महं ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

विसईमं अज्जयणं
महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—सिद्धाणं नमो किञ्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं^१ तच्चं अणुत्तट्ठिं सुणेह मे ॥
- २—पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥
- ३—नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछल्लं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥
- ४—तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसल्लं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
- ५—तस्स रुवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रुक्खविम्हओ ॥
- ६—अहो! वण्णो अहो! रुवं अहो! अज्जस्स सोमया ।
अहो! खन्ती अहो! मुत्ती अहो! भोगे असंगया ॥
- ७—तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने^२ पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पदं

- ८—तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ^३ सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१—^० गत (अ) ; ^० वइ (वृ० पा०) ।

२—निसण्णो नाइदूरंमि (आ) ।

३—उवहितो (वृ० पा०) ।

- ९—अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
 अणुकम्पगं सुहि वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'^१ ॥
- १०—तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
 एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई ? ॥
- ११—होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
 मित्तनार्हपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥
- १२—अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिया ! ।
 अप्पणा अणाहो सन्तो कहं^२ नाहो भविस्ससि ? ॥
- १३—एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
 वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ^३ ॥
- १४—अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
 भुंजामि माणुसे भोगे^४ आणाइस्सरियं च मे ॥
- १५—एरिसे सम्पयग्गम्मि^५ सव्वकामसमप्पिए ।
 कहं अणाहो भवइ ? 'मा ह्नु भन्ते ! मुसं वए'^६ ॥
- १६—न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'^७ पत्थिवा ! ।
 जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिया ? ॥
- १७—सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण^८ चेयसा ।
 जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१—कचीनाहि तुमे मह (वृ०, सु) ; कची नाभिसमेमऽहं (वृ० पा०) ।

२—कस्स (आ) ।

३—विम्हयन्निओ (अ, उ, ऋ) ।

४—लोए (अ) ।

५—संपयायम्मि (वृ० पा०) ।

६—भन्ते ! माह्नु मुस वए (वृ० पा०) ।

७—उत्थं व (वृ०) ; पोत्थं च (अ) ; पोत्थं व (वृ० पा०) ।

८—अविविक्खित्तेण (ऋ) ।

- १८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी^१ ।
तत्थ आसी पिआ मज्झ पभूयघणसंचओ ॥
- १९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो^२ दाहो 'सव्वंगेसु य'^३ पत्थिवा ! ॥
- २०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे^४ ।
पवेसेज्ज^५ अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
- २१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
- २२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छणा^६ ।
'अवीया सत्थकुसला'^७ मन्तमूलविसारया ॥
- २३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा^८ विमोएइ^९ एसा मज्झ अणाहया ॥
- २५—माया य^{१०} मे महाराय !
पुत्तसोगदुहट्ठिया^{११} ।
न य दुक्खा^{१२} विमोएइ
एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुढभेयण (वृ० पा०) ।

२—सिउलो (वृ०) ; विउलो (वृ० पा०) ।

३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा) ।

४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०) ।

५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ) ।

६—^० विगिच्छणा (ऋ) ।

७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) ; अवीया (अ) ।

८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।

९—विमोयन्ति (वृ०), एव सर्वत्र ।

११—^० दुहट्ठिया (वृ० पा०) ।

१०—वि (उ) ।

१२—पा० टि० ७

- २६—भायरो^१ मे महाराय ! सगा जेठ्ठकणिट्ठगा ।
 न य दुक्खा^२ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २७—भइणीओ मे महाराय ! सगा जेठ्ठकणिट्ठगा ।
 न य दुक्खा^३ विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
- २८—भारिया मे महाराय ! 'अणुरत्ता अणुव्वया'^४ ।
 अंसुपुण्णेहि नयणेहि उरं मे परिसिचई ॥
- २९—अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं ।
 'मए नायमणायं वा'^५ सा बाला नोवभुंजई ॥
- ३०—खणं पि मे महाराय ! पासाओ वि^६ न फिट्ठई ।
 न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥
- ३१—तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
 वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए ॥
- ३२—सइं^७ च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए^८ अणगारियं ॥
- ३३—एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा ! ।
 परियट्ठन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥
- ३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
 खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं ॥
- ३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।
 सव्वेसि चैव भूयाणं तसाण थावराण य ॥

१—भाया (उ) ।

२, ३—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।

४—अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०) ।

५—तारिसं रोगमावण्णे (वृ० पा०) ।

६—य (अ, आ, उ) ।

७—सयं (उ, वृ०) ; सइय (अ) ।

८—पव्वइए (-उ) ।

अत्त-पदं

३६—अप्पो नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।

अप्पा कामदुहा वेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥

३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्ते च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥

धम्मलोव-पद

३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !

तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।

नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहां

सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥

३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं

सम्मं नो फासयई^१ पमाया ।

अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे

न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से ॥

४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ

इरियाए भासाए तहेसणाए ।

आयाणनिकखेवदुगुछणाए

न वीरजायं^२ अणुजाइ मगं ॥

४१—चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता

अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।

चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता

न पारए होइ हु संपराए ॥

१—फासइ (उ, ऋ) ।

२—वीरजाय (सु) ।

- ४२—‘पोल्ले व’^१ मुट्ठी जह से असारे
 अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
 राढामणी वेरुलिथप्पगासे
 अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥
- ४३—कुसीललिंगं इह धारइत्ता
 इसिज्ज्मयं जीविय बूहइत्ता ।
 असंजए संजयलप्पमाणे^२
 विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥
- ४४—‘विसं तु पीयं’^३ जह कालकूडं
 हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
 ‘एसे व’^४ धम्मो विसओववन्नो
 हणाइ वेयाल इवाविवन्नो^५ ॥
- ४५—जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे
 निमित्तकोज्जहलसंपगाढे ।
 कुहेडविज्जासवदारजीवी
 न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥
- ४६—तमंतमेणेव उ से असीले
 सया दुहो विप्परियासुवेइ^६ ।
 संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
 मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥

१—पोल्लार (वृ० पा०) ।

२—सजयलाममाणे (वृ० पा०) ।

३—विस पिपित्ता (अ, आ) : विस पिपन्ती (वृ०) ।

४—एसो वि (अ) : एसो व (उ) ।

५—इवाविंवघणो (वृ० पा०) ।

६—^० समेइ (अ) ।

४७—उद्देसियं कीयगडं नियामं
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभवल्ली भवित्ता
इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥

४८—न तं अरी कण्ठछेत्ता करेड
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा^१ ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्टिया नग्गरई उ तस्स
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से भिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाट्ठकुसीलह्वे
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
निरट्ठसोया परियावमेइ ॥
निक्खेवपदं

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासियं इन्नं
अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
महानियण्ठाण वए पहेणं ॥

१—दुरप्पया (॥) ।

५२—चरित्तमायारगुणन्ति^१ तओ
अणुत्तरं संजम पालियाणं ।

निरासवे संखवियाण कम्मं
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥

५३—एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ते महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं
से काहए महया वित्थरेणं ॥

५४—तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूय सुट्ठु मे उवदंसियं ॥

५५—तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ! ।
तुब्भे सणाहा य सवन्धवा य
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं ॥

५६—तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ! ।
खामेमि ते महाभाग ! इच्छामि अणुसासिउं ॥

५७—पुच्छिऊण मए तुब्भं फाणविग्घो उ^३जो कओ ।
निमन्तिओ^३ य भोगेहि तं सव्वं मरिसेहि मे ॥

५८—एवं थुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।

‘सओरोहो य सपरियणो य’^४

धम्माणुरत्तो विमलेण चेतसा ॥

१—^० गुणन्ति (अ) ।

२—अ (ऋ) ।

३—निमत्ति (अ, आ, इ, उ) ।

४—सओरोहो सपरियणो सवधवो (अ, आ, इ) ।

५९—ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
 अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ^१ नराहिवो ॥
 ६०—इयरो वि गुणसमिद्धो
 तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
 विहग इव विप्पमुक्को
 विहरइ वसुह विगयमोहो ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

एगविसइम अज्जमयण

समुद्दपालीयं

उक्खेव-पदं

- १-चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥
- २-निग्गन्थे पावयणे सावए से विकोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥
- ३-पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥
- ४-अह पालियस्स धरणी समुद्दंमि पसवई ।
अह 'दारए तहि'^१ जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥
- ५-खेमेण आगए चम्पं सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥
- ६-बावत्तरिं कलाओ य सिक्खए^२ नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने^३ सुरूवे पियदंसणे ॥
- ७-तस्स रूववइं भज्ज पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥
- ८-अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥

१-वालए ° (उ) ; वालए तम्मि (ऋ) ।

२-सिक्खिए (उ, ऋ, वृ०) ; सिक्खए (वृ० पा०) ।

३-अप्पुण्णे (वृ०) ; सम्पन्ने (वृ० पा०) ।

- ९-तं पासिऊण संविग्गो^१ समुद्दपालो इणमव्ववी ।
 अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥
 १०-संबुद्धो सो तर्हि भगवं 'परं संवेगमागओ'^२ ।
 आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए^३ अणगारियं ॥
 ११-'जहित्तु संगं च'^४ महाकिलेसं
 महत्तमोहं कसिणं भयावहं^५ ।
 परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
 वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥

महव्वय-पद

- १२-अहिंस सच्चं च अतेणगं च
 तत्तो य 'वम्मं अपरिगहं च'^६ ।
 पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
 चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥
 चरिया-पद

- १३-सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी^७
 खन्तिकखमे संजयवम्भयारी ।
 सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
 चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

१-सवेगं (उ, ऋ, वृ०) ।

२-परम ० (उ) ।

३-पव्वइए (उ) ।

४-जहिज्ज सगगथ (वृ०) ; जहित्तुऽसंगगथ (चू०) ; जहित्तु संगगथ ० (सु) ;
 जहित्तु सग च, जहाय सग च (वृ० पा०) ।

५-भयाणग (वृ०, चू०) ।

६-अव्वम परिगह च (वृ० पा०) ।

७-दयाणुकपो (वृ० पा०) ।

१४-कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे^१

बलाबलं जाणिय अप्पणो य^२ ।

सीहो व सट्ठेण न संतसेज्जा

वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥

१५-उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा

पियमप्पियं सव्व तित्तिक्खएज्जा ।

न सव्व सव्वत्थऽभिरोगएज्जा

न यावि पूयं गरहं च संजए ॥

१६-अणेगच्छन्दाइह^३ माणवेहिं

जे भावओ संपगरेइ^४ भिक्खू ।

भंयभेखा तत्थ उइन्ति^५ भीमा

दिग्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥

१७-परीसहा दुव्विसहा अणेगे

सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।

से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू

संगामसीसे इव नागराया ॥

१८-सीओसिणा दंसमसा य फासा

आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।

अकुक्कुओ^६ तत्थऽहियासएज्जा

रयाइं^७ खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१-रिट्ठे (ऋ) ।

२-उ (अ) ।

३-^० छदामिह (वृ०) ।

४-सोपगरेइ (वृ०) ।

५-उवेन्ति (वृ० पा०) ।

६-अक्ककरे (वृ० पा०, चू०) ।

७-रज्जाइं (उ) ।

- १९—पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥
- २०—अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥
- २१—अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमद्वपएहिं चिट्ठई
द्धिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥
- २२—विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई^१
निरोवलेवाइ असंथडाइ ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहि
काएण फासेज्ज परीसहाइ ॥
- २३—सन्नाणनाणोवगए^२ महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेनाणधरे^३ जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिकवे^४ ॥

१—ताया (ऋ) ।

२—सन्नाईण ° (ऋ) : सन्नाण ° (वृ० पा०) ; सन्नाण ° (वृ०) ।

३—गुणुत्तरे ° (वृ० पा०) ।

४—वन्तलिकस (अ) ।

निक्खेव-पदं

२४—दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं
 निरंगणे^१ सव्वओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता समुदं व महाभवोधं
 समुदपाले 'अपुणागमं गए'^२ ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—निरंजणे (बृ०) ; निरंगणे (बृ० पा०) ।

२—^० गहं गउ (अ, चू०, क्र, सु) ।

वाङ्मयम् अञ्जयण

रहनेमिञ्जं

उक्खेव-पदं

- १—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिङ्खिए ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥
- २—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥
- ३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिङ्खिए ।
समुद्विजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥
- ४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥
- ५—सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ^१ ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निज्जाण-पदं

- ६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो भसोयरो ।
तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥
- ७—अहं सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपुन्ना^२ विज्जुसोयामणिप्पभा ॥
- ८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिङ्खियं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलाम हं ॥

१—वज्जस्सर ° (अ, वृ० पा०) ।

२— ° संपन्ना (च. क्र.) ।

- ९—सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमंगलो ।
 दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहि विभूसिओ^१ ॥
- १०—मत्तं च गन्धहत्थिं^२ वामुदेवस्स जेड्ढां ।
 आरुढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥
- ११—‘अह ऊसिएण’^३ छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
 दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥
- १२—चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहकमं ।
 तुरियाण सन्तिनाएण दिव्वेण गगणं फुत्ते ॥
- १३—एयारिसीए इड्ढोए जुईए उत्तिमाए य ।
 नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥
- १४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
 वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धे^४ सुदुक्खिए ॥

मकेग-पदं

- १५—जीवियन्तं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
 पासेत्ता से महापन्ते सारहि इणमव्ववी ॥
- १६—कस्सअट्ठा ‘इमेपाणा’^५ एए सव्वे मुहेसिणो ।
 वाडेहि पंजरेहि च सन्निरुद्धायअच्छहि ? ॥
- १७—अह सारहीतओभणइ एए भट्ठा उ पाणिणो ।
 तुज्जं विवाहकज्जंमि भोयावेउं वहुं जणं ॥

१—विभूतई (ऋ) ।

२—^० हत्थिं च (अ, आ, इ, उ) ।

३—ते ओसिएण (दृ० पा०) ।

४—वद्धरुद्धे (दृ० पा०) ।

५—दहृपाणे (दृ० पा०) ।

१८—सौळण तस्स^१ वयणं बहुपाणिविणासणं^२ ।

चित्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥

१९—जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'^३ जिया ।

न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥

२०—सो कुण्डलाण जुयलं

सुत्तगं च महायसो ।

आभरणाणि य सव्वाणि^४

सारहिस्स पणामए ॥

अभिनिकखमण-पदं

२१—मणपरिणामे य कए

देवा य जहोइयं समोइण्णा^५ ।

सव्वड्ढीए सपरिसा

निकखमणं तस्स काउं जे ॥

२२—देवमणुस्सपरिवुडो

सीयारयणं^६ तओ. समारूढो ।

निकखमिय बारगाओ

रेवययंमि द्विओ भगवं ॥

२३—उज्जाण संपत्तो

ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ^७ ।

साहस्सीए परिवुडो

अह निकखमई उ चित्ताहिं ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ) ।

२—बहुपाण^० (वृ०) ।

३—हम्मंति सुवहू (उ, ऋ, वृ०), हम्मिहिंति सु वहू (वृ० पा०) ।

४—सैसाणि (उ, ऋ) ।

५—समोवड्डिया (वृ० पा०) ।

६, ७—सीइया^० (ऋ) ।

२४—अहं से सुगन्धगन्धि^१ तुरियं मउयकुंचिए^२ ।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुड्डीहिं^३ समाहिओ ॥

आसीवाय-पद

२५—वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू^४ तं दमीसरा ॥
२६—नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव^५ य ।
खन्तीए मुत्तीए^६ वड्डमाणो भवाहि य ॥
२७—एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिद्वणेमि वन्दित्ता अइगया बारगापुरि ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ता पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया^७ ॥
२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सेयं पव्वइउं'^८ मम ॥
३०—अहं सा भमरसन्निभे^९ कुच्चफणगपसाहिए^{१०} ।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया^{११} ॥

१—सुगन्धि^० (ऋ, बु०) ।

२—मओए^० (अ) ।

३—पचउड्डीहिं (बु०) ।

४—पावसु (बु०) ।

५—तवेण (सु) ।

६—मुत्तीए चव (उ) ।

७—समुत्थिया (अ) ; समुच्छया (आ) ।

८—सेउं पव्वइउं (ऋ) ; से ओ पव्वइओ (उ) ; सेउं-पव्वइयं (अ) ।

९—^० संकासे (अ) ।

१०—^० फला^० (अ) ।

११—वि तवस्सिया (अ) ।

- ३१-वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेंसं जिइन्दियं ।
 संसारसागरं घोरं तर कन्ते ! लहुं लहुं ॥
- ३२-सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी^१ तहिं बहुं ।
 सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥
- ३३-गिरिं रेवययं^२ जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
 वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥
- ३४-चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
 रह्नेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥
- ३५-भीयाय सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
 वाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥
- ३६-अह सो वि रायपुत्तो समुद्विजयंगओ ।
 भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ॥
- ३७-रह्नेमी अहं भदे ! सुखे ! चारुभासिणि ! ।
 ममं^३ भयाहि सुयणू ! न ते पीला भविस्सई ॥
- ३८-एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
 'भुत्तभोगातओ'^४ पच्छा जिणमगं चरिस्सिमो ॥
- ३९-दट्ठूण रह्नेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
 राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥
- ४०-अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
 जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥
- ४१-जइ सि ख्वेण वेसमणो लल्लिएण नलकूवरो ।
 तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥

१-पव्वावेसी (अ) ।

२-रेवइय (अ) ।

३-मम (वृ० पा०) ।

४-भुत्तमोगी तओ (उ, ऋ) ; भुत्तमोगा पुणो (वृ०) ।

[पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥]^१

४२—धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥

४३—अह च भोयरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥

४४—जइ तं काहिसि भावं जाजा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥

४५—गोवालो भण्डवालो^२ वा
जहा तद्व्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि
सामणस्स भविस्ससि ॥

[कोहं माणं निगिण्हित्ता मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥]^३

४६—तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥

४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥

४८—उगं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

१—यह श्लोक चूणि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

२—दंडपाली (बृ० पा०) ।

३—यह श्लोक चूणि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

वाङ्मयं-अजभयणं

निक्खेव-पदं

४९—एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
 विणियट्टन्ति भोगेषु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

तेविसइमं अज्भयणं
केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पदं

- १—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्तू धम्मतित्थयरे जिणे'^१ ॥
- २—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
- ३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
- ४—तिन्दुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ५—अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
- ६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे^२ ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥
- ७—बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
- ८—कोट्ठगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा^३ सुसमाहिया ॥

१—..... अरिहा लोगविस्सुए ।

सव्वन्तू सव्वदंस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।

२—महिद्धिदए (अ) ।

३—अलीणा (वृ० पा०) ।

- १०—उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥
- ११—केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
- १२—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
- १३—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तस्सत्तरो ।
एगकज्जपवन्ताणं विसेसे किं नु कारणं ? ॥
- १४—अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्खिं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
- १५—गोयमे पडिख्वन्तू सीससंघसमाउले ।
जेहं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥
- १६—केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिख्वं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥
- १७—पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥
- १८—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥
- १९—समागया बहू तत्थ पासण्डा 'कोउगा मिगा'^१ ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥
- २०—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥
- २१—पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममव्ववी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

१—कोउगासिया (वृ०) ; कोउगा मिगा (वृ० पा०) ।

२२—पुच्छ भन्ते! जहिच्छं ते केसि गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुत्ताए गोयमं इणमब्बवी ॥

चाउज्जाम-पद

२३—चाउज्जामो यजो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

२४—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे कि नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि! कहं^१ विप्पच्चओ न ते ? ॥

२५—तओ केसि बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं^२ ॥

२६—पुरिमा उज्जुजडा^३ उ वंकजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा 'उज्जुपन्नाय'^४ तेण धम्मे दुहा कए ॥

२७—पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु
सुविसोज्झो सुपालओ ॥

२८—साहु गोयम! 'पन्ना ते'^५
छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्तो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा! ॥

१—कहिं (अ) ।

२—^० विणिच्छियं (उ, ऋ) ।

३—उज्जुजडा (अ) ।

४—उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ) ।

५—पन्नाए (दृ० पा०) ।

अचेलंग-पदं

२९-अचेलंगो य जो घम्मो जो इमो सन्तस्तरो ।

देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा^१ ॥

३०-एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।

लिंगे दुविहे मेहावि । कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥

३१-केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।

विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥

३२-पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं ।

जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयणं ॥

३३-अह भवे पइन्ना उ मोक्खसम्भूयसाहणे^२ ।

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥

३४-साहु गोयम ! पन्ता ते छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

विजय-पद

३५-अणेगाणं सहस्साणं मज्जे चिद्धसि गोयमा ! ।

ते य ते अहिगच्छन्ति कहं ते निज्जिया तुमे ? ॥

३६-एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।

दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥

३७-सत्तू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

तओ केसि बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

३८-एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।

ते जिणित्तु^३ जहानायं विहरामि अहं मुणी ! ॥

१-महामुणी (बृ०), महाजसा (बृ० पा०) ।

२-मुक्ख सम्भूय^० (उ, ऋ), मोक्खे सम्भूय^० (अ) ।

३-जहिन्तु (अ) ।

- ३९-साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो विसंसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥
 ४०-दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ कहं तं विहरसी? मुणी! ॥

पास-पद

- ४१-ते पासे सव्वसो छिता निहन्तूण उवायओ ।
 मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी! ॥
 ४२-पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ४३-रागदोसादओ तिब्वा नेहपासा भयंकरा ।
 ते छिन्दित्तु जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥
 ४४-साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

लया-पद

- ४५-अन्तोहिययसंभूया लया चिट्ठइ गोयमा! ।
 फलेइ विसमक्खीणि^१ सा उ उद्धरिया कहं? ॥
 ४६-तं लयं सव्वसो छिता उद्धरित्ता समूलियं ।
 विहरामि जहानायं मुक्को मि विसमक्खणं ॥
 ४७-लया य इइ कावुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
 ४८-भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया ।
 तमुद्धरित्तु^२ जहानायं विहरामि महामुणी! ॥

१-विसमक्खीण (बु०) ।

२-तमुच्छित्तु (उ, क) ; तमुद्धरित्ता (आ) ।

४९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

अग्गी-पदं

५०—संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ।

जे डहन्ति सरीरत्था^१ कहं विज्झाविया तुमे ? ॥

५१—महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।

‘सिंचामि सययं देहं’^२ सित्ता नो व डहन्ति मे ॥

५२—अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५३—कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।

सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥

५४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दुट्ठस्स-पद

५५—अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।

जंसि गोयम ! आरूढो कहं तेण न हीरसि ? ॥

५६—पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं ।

न मे गच्छइ उम्मगं मगं च पडिवज्जई ॥

५७—अस्से य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं^३ बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५८—मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।

तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं ॥

१—जा डहेति सरीरत्था (बु० पा०) ।

२—सिंचामि सयय ते ओ (ते उ) (उ, ऋ, वृ) ; सिंचामि सयय देहा,
सिंचामि सयय त तु (बु० पा०) ।

३—तओ केसि (अ) ।

५९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

कुप्पह-पदं

६०—कुप्पहा वहवो लोए जेहि नासन्ति जंतवो ।
अट्ठाणे कह वट्ठन्ते तं न नस्ससि ? गोयमा ! ॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्ठिया'^१ ।
ते सव्वे विइया मज्झं तो न नस्सामहं^२ मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि^३ उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दीव-पदं

६५—महाउदगवेगेणं वुज्झसाणाण पाणिणं ।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं 'कंमन्नसी'^४ मुणी ! ॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्जे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममव्ववी ।
केसिमेवं वुवंतं तु गोयमो इणमव्ववी ॥

१—जे उम्मग्ग पट्ठिया (अ) ।

२—नस्सामिह (अ) ।

३—है (अ) ।

४—कम्मणसी (अ) ।

६८—जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।

धम्मो दीवो 'पइट्ठा य'^१ गई सरणमुत्तमं ॥

६९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

नावा-पदं

७०—अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।

जंसि गोयममारूढो कंहं पारं गमिस्ससि ? ॥

७१—जा उ अस्साविणी^२ नावा

न सा पारस्स गामिणी ।

जा निरस्साविणी नावा

सा उ पारस्स गामिणी ॥

७२—नावाय इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।

केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।

संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥

७४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।

अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

उज्जोय-पदं

७५—अन्धयारे तमे घोरे चिद्धन्ति पाणिणो बहू ।

को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ? ॥

७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।

सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—पचिट्ठा णं (अ) ।

२—सस्साविणी (वृ० पा०) ।

- ७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ७८—उगओ खीणसंसारो सव्वन्तू जिणभक्खरो ।
 सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ॥
- ७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 अन्तो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पदं

- ८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणोणं^१ पाणिणं ।
 खेमं सिवमणाबाहं ठाणं किंमन्नसी मुणी ? ॥
- ८१—अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जत्थं नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥
- ८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
 केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
- ८३—निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोगगमेव य ।
 खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो ॥
- ८४—तं ठाणं सासयंवासं लोगगंमि दुरारुहं ।
 जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥
- ८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
 नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ॥
- ८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
 'अभिंवन्दिता सिरसा गोयमं तु महायसं'^२ ॥

१—पञ्चमाणोण (वृ० पा०) ।

२—वन्दिता पंजलिउडो गोतमं तु महामुणी (चू०) ।

८७—‘पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी^१ मग्गे तत्थ सुहावहे ॥’^२

निक्खेव-पदं

८८—केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थइत्थविणिच्चओ ॥
८९—तोसिया परिसा सब्बा ‘सम्मगं^३ समुवट्ठिया’^४ ।
‘संथुया ते पसीयन्तु’^५ भयवं केसिगोयमे ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—पच्छिमस्सी (अ) ।

२—पंच महव्वय जुत्तं भावतो पडिवज्जिया ।

धम्म पुरिमस्स पच्छिममि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०) ।

३—पज्जुवट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सम्मत्ते पज्जुवट्ठिया (चू०) ।

५—सज्जता ते पदीसन्तु (चू०) ।

चउर्विसइमं अज्जमयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पदं

- १-अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
 पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
 २-इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
 मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य^१ अट्ठमा ॥
 ३-एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया ।
 दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥

समिइ-पद

- ४-आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
 चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥
 ५-तत्थ आलंबणं नाणं दंसणं चरणं तहा ।
 काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए^२ ॥
 ६-दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
 जयणा^३ चउव्विहावुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥
 ७-दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
 कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
 ८-इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा ।
 तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं^४ रिए ॥

१-उ (अ) ।

२-दुप्पह वज्जिए (अ) ।

३-जायणा (क्क) ।

४-रियं (क्क) ।

- ९—‘कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया’^१ ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥’^२
- १०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥
- ११—‘गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥’^३
- १२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥
- १३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तोय पउंजेज्ज इमं विहिं ॥
- १४—चक्खुसा पडिलेहिता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥
- १५—उच्चारं पासवणं खेलं सिघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥
- १६—अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥
- १७—अणावायमसंलोए परस्सणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥
- १८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ते बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।
हास मय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०) ।

३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।
आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०) ।

१९—एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पदं

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥
२१—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥
२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥
२३—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥
२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥
२५—संरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥

निकखेव-पद

२६—एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥
२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिइ ॥

—त्ति बेमि ॥

पञ्चविंशत्तमं अज्जयणं

जन्मइज्जं

उक्खेव-पद

- १—माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्तंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥
- २—इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥
- ३—वाणारसीए^१ बहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
- ४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्तं जयइ वेयवी ॥
- ५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्तंमि भिक्खमट्ठा^२ उवट्ठिए ॥
- ६—समुवट्ठियं तर्हि सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥
- ७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्तट्ठा य 'जे दिया'^३ ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥
- ८—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥
- ९—सो 'एवंतत्थ'^४ पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमद्दगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।

२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।

३—जिहदिया (आ) ।

४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नद्वं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणद्वाए इमं वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

- ११—नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ।
१२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
१३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहि दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महानुणि ॥
१४—वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥
१५—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहयं पुच्छिओ ॥
१६—अग्निहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥
१७—जहा चन्दं गहाईया चिद्वन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥^१
१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
गूढा^३ सज्जायतवसा भासच्छन्ता इवऽग्निणो ॥

माहण-पद

- १९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिद्वं तं वयं बूम माहणं ॥

१—कहइ (अ) ।

२—जहा चन्दे गहाईये चिद्वन्ती पजलीउडा ।

णमंसमाणा वदती उद्धत्तमणहारिणो [उद्धत्तमणहारिणो] ॥ (बृ० पा०) ।

३—मूढा (बृ०) ; गूढा (बृ० पा०) ।

- २०—जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई^१ ।
 रमए अज्जवयणंमि तं वयं वूम माहणं ॥
- २१—जायरूवं जहामट्टं^२ निद्धन्तमलपावगं ।
 रागट्ठोसभयाईयं तं वयं वूम माहणं ॥
 [तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
 सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं वूम माहणं ॥]^३
- २२—तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण 'य थावरे'^४ ।
 जो न हिंसइ तिविहेणं^५ तं वयं वूम माहणं ॥
- २३—कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
 मुसं न वयई जो उ तं वयं वूम माहणं ॥
- २४—चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा वहुं ।
 न गेण्हइ अदत्तं जो तं वयं वूम माहणं ॥
- २५—दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
 मणसा कायवक्केणं तं वयं वूम माहणं ॥
- २६—जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ चारिणा ।
 एवं अलित्तो^६ कामेहिं तं वयं वूम माहणं ॥
- २७—अलोलुयं मुहाजीवी^७ अणगारं अकिंचणं ।
 असंसत्तं गिहत्येसु तं वयं वूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।

२—महामट्टं (दृ०) ; जहामट्टं (दृ० पा०) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

४—सथावरे (दृ० पा०) ।

५—एयं तु (दृ०) ; तिविहेण (दृ० पा०) ।

६—अलित्तं (जा, इ, सु) ।

७—मुहाजीवि (दृ० पा०) ।

- [अहिता पुव्वसंजोगं नाइसंगे^१ - य बन्धवे । --
 जो न सज्जइ एएहिं^२ तं वयं बूम माहणं ॥]^३
 २८—पसुबन्धा^४ सव्ववेया^५ जट्ठं च पावकम्मणा ।
 न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥
 २९—त विमुण्डिण समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
 न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो ॥
 ३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
 नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥
 ३१—कम्मणा बम्भणो होइ कम्मणा होइ खत्तिओ ।
 वइस्सो कम्मणा होइ सुदो हवइ^६ कम्मणा ॥
 ३२—एए^७ 'पाउकरे बुद्धे'^८ जेहिं होइ सिणायओ ।
 सव्वकम्मविनिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ॥
 ३३—एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्था उ उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ॥

बुद्ध-पदं

- ३४—एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे^९ ।
 'समुदाय लयं' तं तु^{१०} जयघोसं महामुणि ॥

१—नाइ सजोगे (ऋ) ।

२—भोगेसु (ऋ) ; एएसु (उ) ।

३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।

४—पसुवद्धा (बृ० पा०) ।

५—सव्व देया य (अ) ।

६—होइय (अ) ; होइ उ (बृ०) ।

७—पाउकराधम्मा (बृ० पा०) ।

८—बमणे (बृ०) ; माहणे (बृ० पा०) ।

९—तओ (अ, सु, ऋ) ।

१०—सजाणंतो तओ तं तु (बृ० पा०) ; समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्टे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली ।

माहणत्तं जहाभूयं मुट्ठु मे उवदंसियं ॥

३६—तुव्भे जइया जन्नाणं तुव्भे वेयविरु विरु ।

जोइसंगविरु तुव्भे तुव्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुव्भे समत्था उद्धत्तु परं अप्पाणमेव य ।

तमणुगहं करेहम्मं^१ भिक्खेणं^२ भिक्खुउत्तमा ॥

संवोहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खममू दिया ।

मा भमिहिसि भयावट्टे^३ घोरे^४ संसारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।

भोगी भमइ संसारे अभोगी^५ विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो लूढा गोलया मट्टियामया ।

दो वि आवडिया कुट्टे जो उल्लोसोतत्थं^६ लग्गई ॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।

विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पदं

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।

अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं^१ सोच्चा अणुत्तरं^२ ॥

१—करे उम्मं (अ, इ) ।

२—भिक्खुणं (दृ०) ।

३—मगावत्ते (दृ० पा०) ।

४—दीहे (दृ० पा०) ।

५—सोत्त (दृ०, ऋ) ।

६—सोच्चा अणुत्तरं (दृ० पा०) ।

४३—खवित्ता पुव्वकम्माई संजमेण तवेण य ।

जयघोसविजयघोसा सिद्धि पत्ता अणुत्तरं ॥

—त्ति बेमि ॥

*

छवीसइमं अज्मयणं

सामायारी

सामायारी-पदं

- १-सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणि ।
जं चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा संसारसागरं ॥
- २-पढमा आवस्सियानाम विइया य^१ निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥
- ३-पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठो ।
सत्तमो मिच्छाकारो य^२ तहक्कारो य अट्ठमो ॥
- ४-अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥
- ५-गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥
- ६-छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य^३ पडिस्सुए ॥
- ७-अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'^{*} सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पदं

- ८-पुव्विल्लमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहिता वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥

१-होइ (उ) ।

२-उ (आ, इ) ।

३-X (उ) ।

४-एसा दसंगा साहूण (वृ० पा०) ।

- ९-पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
 इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥
 १०-वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ ।
 सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पदं

- ११-दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
 १२-पढमं पोरिसि सज्झायं बीयं भाणं क्रियायई ।
 तइयाए भिक्खायरियं पुणोचउत्थीए सज्झायं ॥
 १३-आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
 चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
 १४-अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण य दुअंगुलं ।
 वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥
 १५-आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
 फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा^१ अमोरत्ताओ ॥
 १६-जेट्टामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्ठहिं बीयतियंमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पदं

- १७-रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
 तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
 १८-पढमं पोरिसि सज्झायं बीयं भाणं क्रियायई ।
 तइयाए निहमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो^२ वि सज्झायं ॥

१-बोद्धवा (आ) ।

२-पुणो (अ) ।

१९—जं नेइ जया रत्ति
नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा
सज्झायं पओसकालम्मि ॥
पडिलेहण-पद

२०—तम्मेव य नक्खत्ते
गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं
पडिलेहिता मुणी कुज्जा ॥

२१—पुब्बिल्लंमि चउब्भाए पडिलेहिताण भण्डयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥
२२—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पद
२३—मुहपोत्तियं^१ पडिलेहिता पडिलेहिज्ज गोच्छ्रां ।
गोच्छ्रगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥
२४—उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५—अणच्चावियं अवलियं
अणाणुबन्धि, अमोसलिं^२ चेव ।

छप्पुरिमा नव खोडा
^३पाणीपाणविसोहणं ॥

१—मुहपत्ति (आ, इ, उ, क्र) ।

२—अमोसल (अ) ; आमोसलि (वृ०) ।

३—पाणीपाणि० (वृ०) ।

४—^० पमज्जण (आ, वृ० पा०) ; ^० पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६-आरभडा

सम्मद्दा

वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।

पप्फोडणा

चउत्थी

विक्खित्ता वेइया छद्दा ॥

२७-पसिढिलपलम्बलोल

एगामोसा

अणेगरूवधुणा^१ ।

कुणइ

पमाणि

पमायं

संकिएगणणोवगं

कुज्जा ॥

२८-अणूणाइरित्तपडिलेहा

अविक्खासा

तहेव

य ।

पढमं

पयं

पसत्थं

सेसाणि

उ

अप्पसत्थाइं ॥

२९-पडिलेहणं

कुणन्तो

मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा ॥

देइ

व

पच्चक्खाणं

वाएइ

सयं

पडिच्छइ वा ॥

३०-पुढवीआउक्काए

तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ।

पडिलेहणापमत्तो

छण्हं

पि

विराहओ

होइ ॥

आहार-पदं

[पुढवीआउक्काए

तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ।

पडिलेहणआउत्तो

छण्हं आराहओ होइ ॥]^२

१-अणेगरूवधुया (वृ० पा०) ।

२-यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है ।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।

छहं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे

इरियट्ठाए ये संजमट्ठाए ।

तह

पाणवत्तियाए

छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥

अणाहार-पदं

३३—निगन्थो

धिइमन्तो

निगन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।

ठाणेहिं

उ

इमेहिं

अणइक्कमणा य से होइ ॥

३४—आयंके

उवसगो^१

तितिक्खया बम्भचेरंगुत्तीसु ।

पाणिदया

तवहेउं

सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥

विहार-पदं

३५—अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।

परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।

सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं^२ ॥

संझा-पदं

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दिताण तओ गुरुं ।

पडिक्कमिता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥

१—उमगो (उ) ।

२—सव्वदुक्खविमोक्खण (वृ० पा०) ।

३८-पातवणुच्चारभूमि च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्खण-पदं

३९-देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वतो ।
ताणे^१ दंसणे चेव चरित्तस्मि तहेव य ॥

४०-पारियकाउत्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४१-पडिक्खमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

४२-पारियकाउत्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
'शुद्धमंगलं च काळण'^२ कालं संपडिलेहए ॥

४३-पढमं पोरिसिं सज्जायं बोयं भाणं भियायई ।
तइयाए निद्धमोक्खं तु सज्जायं तु चउत्थिए ॥^३

४४-पोरिसीए चउत्थोए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्जायं तओ कुज्जा अबोहेत्तो असंजए ॥^४

४५-पोरिसीए चउत्थोए वन्दित्ताण तओ गुरुं^५ ।
पडिक्खमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥

४६-आगए कायवोत्सगे सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउत्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१-नालेय (आ) : नागंनि (उ) ।

२-सिद्धाणं संदवं लिखा (हु० पा०) ।

३-पढमा पोरिसिं सज्जायं बोयं भाणं भियायई !

तइयाए निद्धमोक्खं च चउत्थोए चउत्थिए ॥ (हु० पा०) ।

४-कालं तु पडिलेहिता अबोहेत्तो असंजए ।

कुज्जा मुणी र सज्जायं सव्वदुक्खविमोक्खणं : (हु० पा०) ।

५-ते ते वंदित्ते ते गुरुं (हु० पा०) :

- ४७—राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
 नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य ॥
- ४८—पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥
- ४९—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 काउस्सगं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
- ५०—किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्ताए ।
 काउस्सग तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥
- ५१—पारियकाउस्सगो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
 तवं संपडिवज्जेत्ता^१ करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥

निक्खेव-पदं

- ५२—एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
 जं चरित्ता वहु जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

सत्तावीसद्धमं जम्भयणं

खलुंकिज्जं

- १—थेरे गणहरे गगगे मुणो आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहि पडिसंधए ॥
- २—बहणे बहमाणस्स^१ कन्तारं अइवत्तई ।
जोए बहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥
- ३—खलुके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई^२ ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥
- ४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिकत्तणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥
- ५—एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुट्ठइ उप्पिडई सढे वालगवी वए ॥
- ६—माई मुट्ठेण पडइ कुट्ठे गच्छइ पडिप्पहं ।
'मयलक्खेण चिट्ठई'^३ वेगेण य पहावई ॥
- ७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लि दुट्ठन्तो भंजए जुगं ।
से वि य सुत्सुयाइत्ता^४ उज्जाहिता^५ पलायए ॥
- ८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुव्वला ॥

१—बहयमाणस्स (अ. चु) ; बहमाणस्स (क.) ।

२—किल्लमई (वृ०) ; किलिस्सई (वृ० पा०) ।

३—पल्यं (दलं) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०) ।

४—सुत्सुयता (अ.) ।

५—उज्जुहिता (आ. वृ०, चु) ।

- ९-इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्य रसगारवे ।
 सायागारविए एगे एगे मुचिरकोहणे ॥
- १०-भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्वे ।
 एगं च^१ अणुसासम्मी हेळहिं कारणेहि य ॥
- ११-सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुब्बई^२ ।
 आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेड अभिक्खणं ॥
- १२-न सा ममं वियाणाड न वि^३ सा मज्झ दाहिई ।
 निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्य वच्चउ ॥
- १३-पेसिया^४ पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ ।
 रायवेट्ठि^५ व मन्नन्ता करेन्ति भिडडिं मुहे ॥
- १४-वाइया संगहिया चेव 'भत्तपाणे य'^६ पोसिया ।
 जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं ॥
- १५-अह सारही विचिन्तेइ^७ खलुकेहिं समागओ ।
 किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयई ॥
- १६-जारिसा^८ मम सीसाउ तारिसा^९ गल्लिगद्दहा ।
 गल्लिगद्दहे चडत्ताणं^{१०} दढं परिगिण्हड^{११} तवं ॥

१-× (अ) ।

२-पभासए (वृ० पा०) ।

३-य (उ) ।

४-पोसिया (वृ० पा०) ।

५-रायाविट्ठं (अ) ।

६-भत्तपाणेण (अ, आ, इ) ।

७-हि चित्तेइ (अ) ।

८-तारिसा (अ) ।

९-जारिसा (अ) ।

१०-उत्तिमान (आ) ।

११-परिगिहामि (वृ०) : परिगिहई (वृ० पा०) ।

१७—मिउ मद्दवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
 विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥
 —त्ति बेमि ॥

✽

अट्टावीसइमं अज्जमयणं

मोक्खमग्गगई

१-मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२-नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस^१ मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥
३-नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता^२ जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

नाण-पदं

४-तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५-एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं ॥

दव्व-पदं

६-गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ^३ अस्सिया भवे ॥
७-धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो-।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१-एय (अ) ।

२-सव्वदसिहि (अ) ।

३-एव^० (अ) ।

४-इहओ (अ) ।

- ८—धम्मो अहम्मो आगासं दब्बं इक्किमाहिं ।
अणन्ताणि य दब्बाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥
- ९—गइलक्खणो उ^१ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदब्बाणं न्हं ओगाहलक्खेणं ॥
- १०—वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥
- ११—नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥
- १२—सइन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'^२ ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥
- १३—एगत्तं च पुहत्तं^३ च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पदं

- १४—जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तखंड-पदं

- १५—तहियाणं तु भावाणं 'सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सदहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं'^४ ॥

१—य (अ) ।

२—^० तवेइ या (अ, ऋ) : ^० तवुलि वा (वृ०) ।

३—दुहत्ता (उ) ।

४—सब्भावो (वेणो) वएसणे ।

भावेण उ सदहणा सम्मुत्ता होति आहियं ॥ (वृ० पा०) ।

१६-निसग्गुवएसरुई

आणारुई सुत्तवीयरुईमेव ।

अभिगमवित्थारुई

किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७-भूयत्थेणाहिगया

जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।

सहसम्मुइयासवसंवरो य^१

रोएइ उ निसग्गो ॥

१८-जो जिणदिट्ठे भावे

चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।

एमेव^२ नज्जह ति य

निसग्गरुइ ति नायव्वो ॥

१९-एए चेव उ^३ भावे

उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।

छउमत्थेण जिणेण व^४

उवएसरुइ ति नायव्वो ॥

२०-रागो दोसो मोहो

अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।

आणाए रीयंतो

सो खलु आणारुई नाम ॥

१-उ (अ) ।

२-एमेय (अ, उ, वृ०) ।

३-हु (ऋ) ।

४-य (ऋ) ।

- २१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
 सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
 अंगेण बाहिरेण व^१
 सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २२—एगेण अणेगाइं
 पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
 उदए व्व तेलबिन्दू
 सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥
- २३—सो होइ अभिगमरुई
 सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं^२ ।
 'एक्कारस' अंगाइं^३
 पइण्णगं^३ दिट्ठिवाओ य ॥
- २४—दव्वाण सव्वभावा
 सव्वप्रमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
 सव्वाहि नयविहीहि य
 वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥
- २५—दंसणनाणचरित्ते
 तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु^४ ।
 जो किरियाभावरुई
 सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।

२—इक्कारसमगाइं (उ, ऋ) ।

३—पइण्णियं (अ) ।

४—सव्व^० (अ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी

सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ॥

अविसारओ

पवयणे

अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥

२७—जो

अत्थिकायधम्मं

सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।

सद्दहइ

जिणाभिहियं

सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसंथवो

वा

सुदिट्ठपरमत्थसेवणा चा वि ॥

वावन्नकुदंसणवज्जणा

य

सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं

दंसणे उ

भइयव्वं ।

सम्मत्तचरित्ताइं

जुगवं पुव्वं व^१ सम्मत्तं ॥

३०—नादंसणिस्स

नाणं

नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।

अगुणिस्स

नत्थि मोकखो

नत्थि अमोकखस्स निव्वानं ॥

३१—निस्संकिय

निककंखिय

निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।

उववूह

थिरीकरणे

वच्छल्ल पभावणे

अट्ठ ॥

चारित्त-पदं

- ३२—सामाइयत्थ^१ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीयं ।
 परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥
 ३३—अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
 एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥

- तव-पदं

- ३४—तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
 बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निकखेव-पद

- ३५—नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे ।
 चरित्तेण निगिण्हाइ^२ तवेण परिसुज्झई ॥
 ३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
 सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

१—सामाइयं च (उ, ऋ) ।

२—न गिण्हति (बु० पा०) ।

एगूणतीसइमं अज्झयणं

सम्मत्तपरक्रमे

उक्खेव-पदं

सू० १—‘सुयं मे आजस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-
परक्रमे ‘नाम अज्झयणे’ समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं
पवेइए जं सम्मं सद्विहत्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता”
तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बह्वे
जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं
करेन्ति । तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्झइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २
धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सुसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६
गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए” १०
पडिक्कमणे ११ काउस्सगगे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले” १४
कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७
सज्झाए १८ वायणया” १९ पडिपुच्छणया २० परियट्ठणया २१ अणु-
प्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवे-
सणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडि-
बद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्ठणया ३२ संभोग-
पच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसाय-
पच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ) ; नामज्झयणे (स, उ) ।

२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ) ।

३—वदणे (अ) ।

४—थय थुइ मंगले (अ, ऋ) , थण थुई मंगले (उ) ।

५—वायणाए (ऋ) ; वायणा (उ) ।

पञ्चक्खाणे ३९ भत्तपञ्चक्खाणे ४० सम्भावपञ्चक्खाणे ४१ पडिरुवया^१
 ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपण्णया^२ ४४ वीयरगया ४५
 खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे^३ ४८ मह्वे^४ ४९ भावसच्चे ५० करण-
 सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया
 ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया
 ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्संपन्नया ६१
 सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४
 जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७
 माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-
 दंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

सवेग-पदं

सू० २—संवेगेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए
 धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धि कोहमाणमायालोभे
 खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण
 दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए
 तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो
 भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पद

सू० ३—निव्वेएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं
 हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिरुवणया (ऋ) ।

२—^० संपुण्णया (अ, आ, इ, वृ०) ।

३—मह्वे (अ, सु, वृ०) ।

४—अज्जवे (अ, सु, वृ०) ।

५—नवं च कम्मं (अ, आ, इ) ।

आरम्भपरिच्चायं^१ करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ते य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पद

सू० ४-धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । अगारधम्मं च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण-संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अक्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ^२ ॥

सुस्सुसणा-पद

सू० ५-गुरुसाहम्मियसुस्सुसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सुसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ । 'विणय-पडिवन्ते य णं'^३ जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-मणुस्सदेवदोगईओ निरुम्भइ । वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसोगईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ । पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ । अन्ते य बह्वे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६-आलोयणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं^४ उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च^५ जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ते^६ य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ । पुव्ववद्धं च णं निज्जरेइ ॥

१-आरम्भपरिग्गाह (अ) ।

२-निव्वित्ते (ऋ) ।

३-^० पडिवन्तएण (ऋ) ।

४-^० वद्धमाणेण (अ) ।

५-च ण (उ, ऋ, स) ।

६-^० पडिवन्तएण (ऋ) ।

निन्दण-पदं

सू० ७—निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ । पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेट्ठि^१ पडिवज्जइ । करणगुणसेट्ठि 'पडिवन्ते य'^२ णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥

गरहण-पदं

सू० ८—गरहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ । अपुरक्कारयाए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ^३ पसत्थजोगपडिवन्ते य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय-पदं

सू० ९—सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव-पदं

सू० १०—चउव्वीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण-पदं

सू० ११—वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ । उच्चागोयं निवन्धइ । सोहगं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ ॥

१—० सेट्ठी (अ) ; ० सेट्ठी (वृ०) ।

२—पडिवन्ते य (ऋ) : पडिवन्ते (उ, अ) ।

३—नियत्तेइ पसत्थे य पवत्तइ (उ, ऋ) ।

पडिक्कमण-पदं

सू० १२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयच्छिद्दाइं पिहेइ । पिहियवयच्छिहे पुण जीवे
निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते^१
सुप्पणिहिए^२ विहरइ ।

काउस्सग-पदं

सू० १३—काउस्सगणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सगणेणं तीयपडुप्पन्तं पायच्छित्तं विसोहेइ ।
विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'^३ भारवहे
पसत्थज्झाणोवगाए^४ सुहंसुहेणं विहरइ ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ^५ ।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ ।
नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ते य णं जीवे अन्तकिरियं
कप्पविमाणोववत्तिणं आराहणं आराहेइ ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०) ।

२—सुप्पणिहिंदिए (वृ० पा०) ; सुप्पणिहिए (अ, उ, ऋ) ।

३—० भरव्व (उ, ऋ) ।

४—० ज्झाणज्झाइ (वृ० पा०) ।

५—निरुम्भइ । पच्चक्खाणेण इच्छानिरोहं जणयइ । इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु
विणीयतणहे सीइमूए विहरइ । (इ, उ) ।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ । सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

खमावण-पदं

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाएणं पल्हायणभावं^१ जणयइ । पल्हायणभावमुवगाए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगाए यावि जीवे भावविसोहिं कारुण निब्भए भवइ ।

सज्झाय-पदं

सू० १९—सज्झाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निजरं जणयइ । सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'^२ । सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ । तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतट्ठभयाइं विसोहेइ । कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ।

सू० २२—परियट्ठणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्ठणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ।

१—पल्हाएणंत भावं (वृ०) ; पल्हायणभावं (वृ० पा०) ।

२—अणुसज्जणाए वट्टइ (वृ० पा०) ।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिद्धिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्टिइयाओ हस्सकालट्टिइयाओ पकरेइ । तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ । 'बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ'^१ । आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ । 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'^२ अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'^३ । 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'^४ । पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भट्ठाए कम्मं निबन्धइ ।

सुय-पदं

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।

एगग्गमण-पदं

सू० २६—एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ।

संजम-पदं

सू० २७—संजमेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०) ।

२—साया वेयणिज्जं च ण कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०) ।

३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०) ।

४—X (वृ०) ।

तव-पदं

सू० २८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

वोदाण-पदं

सू० २९—वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सुहसाय-पदं

सू० ३०—सुहसाएणं^१ भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुभडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

अप्पडिबद्ध-पदं

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं^२ जीवे एगे एगगचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

विवित्त-पदं

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए^३ णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिबन्ते अट्ठविहकम्मगण्ठि निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएण (बु०) ; सुहसायाएण, सुहसाएणं (बु० पा०) ;

सुहसायाएणं (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्तं गएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अट्ठुट्ठेइ ।
पुव्ववद्वाणं यं निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं
संसारकन्तारं वीइवयइ ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइंखवेइ । निरालम्बणस्स य
आययट्ठिया जोगा भवन्ति । सएणं लाभेणं संतुस्सइ^१ परलाभं
'नो आसाएइ'^२ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्येइ नो अभिलसइ ।
परलाभं अणासायमाणे^३ अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्येमाणे
अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ । निरुवहिएणं जीवे
निककखे^४ उवहिमन्तरेणं यं न संकिलिस्सइ ।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियासंसप्पओगं'^५ वोच्छिन्दइ^६ ।
जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न
संकिलिस्सइ ।

१—सुस्सइ (उ, ऋ) ।

२—'नो आसाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०) ।

३—अणस्सायमाणे (वृ०) ।

४—'निककखे' एतच्च पदं क्वचिदेव दृश्यते (वृ०) ।

५—जीवियास संसप्पओगं (वृ० पा०) ।

६—वोच्छिदिय (वृ० पा०) ।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरगभावं जणयइ ।
वीयरगभावपडिवन्ते वि य णं जीवे समसुहुदुक्खे भवइ ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ । अजोगी^१ णं जीवे नव
कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं^२ निव्वत्तेइ ।
सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगगमुवगए परमसुही भवइ ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ । एगीभावभूए वि^३ य
णं^४ जीवे एगगं भावेमाणे अप्पसद्धे^५ अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए
अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्ठि^६ जणयइ । अनियट्ठिपडिवन्ते^७
य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ) ।

२—^० सयगुणत्तं (उ, ऋ) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४—X (उ, ऋ) ।

५—X (वृ०) ।

६—नियट्ठि (वृ० पा०) ।

७—नियट्ठि० (वृ० पा०) ।

नामं गोयं । तयो^१ पच्छा सिज्झइ, वुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ
सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

पडित्त्व-पदं

मू० ४३—पडित्त्वयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडित्त्वयाए णं लाघवियं जणयइ । लट्ठभूए णं^२ जीवे
अप्पमत्ते पागडल्लिगे पसत्थल्लिगे विमुद्धसम्मत्ते सत्तसमिज्झसमत्ते
सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्झत्वे अप्पडिल्लेहे^३ जिइन्द्रिण
विज्जलतवसमिज्झसमन्नागए यावि भवइ ।

वेयावच्च-पदं

मू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ।

सव्वगुणसंपन्न-पदं

मू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्ति जणयइ । अपुणरावत्ति
पत्तए यं^४ णं जीवे सारीरमाणत्ताणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ।

वीयरग-पदं

मू० ४६—वीयरगयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वीयरगयाए णं 'नेहाणुवन्धणाणि तप्हाणुवन्धणाणि'^५ य
वोच्चिन्तइ मणुन्तेनु^६ सद्धफरिसरत्तस्सवगन्वेनु चैव विज्झइ ।

१—य (उ. अ.) ।

२—य न (उ. अ.) ।

३—अप्पडिल्लेहे (६० पा०) ।

४—० मणुन्तेनु (उ. अ.) ।

५—य (उ. अ.) ।

६—० धम्मणि तप्हा वन्धनि (६०) : नेहाणु वन्धनि तप्हा वन्धनि (६० पा०) ।

७—मणुन्तेनु (उ. अ.) ।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पदं

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे
अत्थल्लोलाणं^१ अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं
अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपत्तयाए णं जीवे धम्मस्स
आराहए भवइ ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्ते णं
जीवे मिउमद्दवसंपत्ते अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ'^२ ।

सत्त्व-पदं

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ । भावविसोहीए वट्टमाणे
जीवे अरहन्तपत्तत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ ।

१—अत्थल्लोलाण पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स) ।

२—अणुस्सुअत्तं जणइ । अणुसुअत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ) ; मद्दवयाए ण
मिउ० (उ, वृ०, ऋ) ; मद्द० अणुसियत्तं जणेति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ०
(वृ० पा०) ।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए^१ अब्भुट्ठिता-
परलोगधम्मस्स^२ आराहए हवइ ।

सू० ५२-करणसच्चवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चवेणं करणसत्तिं जणयइ । करणसच्चवे वट्टमाणे-
जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ।

सू० ५३-जोगसच्चवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगसच्चवेणं जोगं विसोहेइ ।

सू० ५४-मणगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगगं जणयइ । एगमाचित्ते णं जीवे
मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ।

गुत्ति-पदं

सू० ५५-वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं^३ जणयइ । 'निव्वियारेणं जीवे'^४
वइगुत्ते अज्झप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'^५ यावि भवइ ।

सू० ५६-कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ । संवरेणं कायगुत्ते पुणो
पावासवनिरोहं करेइ ।

समाहारण-पदं

सू० ५७-मणसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारणयाए णं एगगं जणयइ । एगगं जणइत्ता
नाणपज्जवे जणयइ । नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ सिच्छत्तं
च निज्जरेइ ।

१-आराहणयाए ण (ऋ) ।

२-परलोगाराहए (वृ० पा०) ।

३-निव्वियारत्तं (अ, स) ।

४-निव्वियारे णं जीवे वयगुत्तयं जणयइ (वृ० पा०) ।

५-० साहणज्जुत्ते (उ, ऋ, वृ०) ।

सू० ५८—वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए णं वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ ।
वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ
दुल्लहबोहियत्तं निज्जेइ ।

सू० ५९—कायसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ । चरित्तपज्जवे
विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ । अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता
चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ
परिनिव्वंएइ सव्वहुक्खाणमन्तं करेइ ।

सपन्नया-पद

सू० ६०—नाणसंपन्नायाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नायाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।
नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ ।

जहा सूई ससुत्ता

पडिया वि न विणस्सइ ।

तहा जीवे ससुत्ते

संसारे न विणस्सइ ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय^१
संघायणिज्जे भवइ ।

सू० ६१—दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तल्लेयणं करेइ परं न विज्झायइ^२ ।
‘अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ’^३ ।

१—० समय विसारए य (अ) ।

२—विज्झाइ (ऋ) ; वज्झाइ । पर आणाज्झायमाणे (अ) ।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं विहरइ (अ) ; अनुत्तरेणं
नाणदंसणेणं विहरइ (वृ० पा०) ।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ । सेलेसि पडिबन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तओ पच्छा सिज्झइ वुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सब्बदुक्खाणमत्तं करेइ^१ ।

इन्दियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सट्ठेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रुवेसु^२ रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६६—जिब्बिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जिब्बिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न वन्धइ पुव्ववद्धं च निज्जरेइ ।

१—सेलेसी पडिबन्ने विहरइ (वृ०) ; सेलेसि पडिबन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति (वृ० पा०) ।

२—चक्खिदिप्पसु (अ) ।

वरताणंदेसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ तत्रि यं इरियावहियं
कम्मं बन्धेइ सुहफरिसे दुसमयठिइयं । तं पढमेसमए बद्धं बिइयंसमए
वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं^१ तं बद्धं पुढं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं
सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ।

सू० ७३-अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए^२ जोगनिरोहं
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कम्माणं कायमाणे
तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्भइ २ ता वइजोगं निरुम्भइ २ ता
आणापाणुनिरोहं'^३ करेइ २ ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं
अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कम्माणं भियायमाणे
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि^४ कम्मसे
जुगवं^५ खवेइ ।

निकखेव-पदं

सू० ७४-तओ ओरालियकम्माइ च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं
विप्पजहिता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्डं एगसमएणं
अविगहेणं तत्थ गत्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ
परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ^६ ।

१-निविण्ण (अ) ।

२-अंतोमुहुत्तद्धावसेसाए (वृ० पा०) ; अंतोमुहुत्तावसेसाउए । (उ, क्र, वृ० पा०) ।

३-मणजोग निरुम्भइ वइजोगं निरुम्भइ आणापाणुनिरोह करेइ (वृ०) ; मणजोगं
निरुम्भइ, वइजोग निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ आणापाणु^० (आ, इ) ।

४-X (उ, क्र) ।

५-X (उ, क्र) ।

६-(क) इह च चूर्णिकृता-“सेलेसीए णं मन्ते । जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं
जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झति” इति पाठः, पूर्वत्र च कचित्किञ्चित्पाठ-
भेदेनाहपा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्माभिस्तु भूयसीषु प्रतिषु
यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (वृ० पा०) ।

(ख) सेलेसीएण मन्ते । जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा
सिज्झति बुज्झति मुक्कं^० इति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अर्तं करंति (वृ०) ।

एस खलु, सम्मत्तपरक्कमस्स, अज्झयणस्स अट्टे समणेणं;
 भगवयाः महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए^१ उवदंसिए ।

—त्ति वेमि ॥

*

तीसइमं अज्जमयणं

तवमग्गई

उक्खेव-पदं

१-जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।

खवेइ तवसा भिक्खू तमेग्गमणो सुण ॥

२-पाणवहमुसावाया^१

अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।

राईभौयणविरओ

जीवो भवइ अणासवो ॥

३-पंचसमिओ 'तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।

अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४-एएसि तु विवच्चासे^२ रागदोससमज्जियं ।

'जहा खवयइ 'भिक्खू'^३ 'तं मे एग्गमणो'^४ सुण ॥

५-जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागंभे ।

उत्तिस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥

६-'एवं तु'^५ संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।

भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पदं

७-सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तथा ।

बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१-पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।

२-विवज्जासे (वृ९) ।

३-खवेइ ज जहा कम्म (उ, ऋ) ; खवेइ तं जहा भिक्खू (वृ०) ।

४-त मे एग्गमणा (स) ; तमेग्गमणो (सु)-।

५-एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पदं

८-अणसणमूणोयरिया

भिक्षायरिया य रसपरिच्चाओ ।

कायकिल्लेसो संलीणया य

बज्झो तवो होइ ॥

९-इत्तिरिया मरणकाले^१ 'दुविहा अणसणा'^२ भवे ।

इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा^३ बिइज्जिया ॥

१०-जो सो इत्तरियतवो

सो समासेण छव्विहो ।

सेद्धितवो पयरतवो

घणो य 'तह होइ वग्गो य'^४ ॥

११-तत्तो य वग्गवग्गो उ- पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो ।

मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥

१२-जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया ।

सवियारअवियारा^५ कायचिद्धं पई भवे ॥

१३-अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'^६ य आहिया ।

तीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥

१४-ओमोयरियं^७ पंचहा समासेण वियाहियं ।

'दव्वओ खेत्तकालेण'^८ भावेणं^९ पज्जवेहि य ॥

१-० कालाय (उ, ऋ) ।

२-अणसणा दुविहा (उ, ऋ, वृ०) ।

३-निरकंखा उ (वृ०) ; निरवकंखा उ (सु) ; निरवकंखा (वृ० पा०) ।

४-वग्गो चउत्थोउ (अ) ।

५-सवियारमवियारा (उ, ऋ, वृ०, सु) ।

६-सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ) ।

७-ओमोयरियं (अ, वृ० पा०, ऋ) ।

८-खित्तओ काले (ऋ) ; खेत्त काले य (अ) ।

९-भावओ (अ) ।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं^१ तु जो करे ।

जहन्तेणेगसिंथाई एवं दब्बेण ऊ भवे ॥

१६—गामेनगरेतह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।

खेडे कब्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंवाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥

थलिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्थियं खेतं ।

कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अट्ठपेडा

गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।

सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं

पच्चागया छट्ठा ॥

२०—दिवसस्स पोरुसीणं

चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो ।

एवं चरमाणो खलु

कालोमाणं मुणेयब्बो^२ ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए

ऊणाइ घासमेसन्तो ।

चउभागूणाए

वा

एवं कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा

पुरिसो वा

अलंकिओ वाऽणलकिओ वा वि ।

अन्नयरवयत्थो

वा

अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥

१—ऊण (अ) ।

२—मुणेयब्बं (उ, ऋ) ।

२३—अन्तेण

विसेसेणं

वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ ।

एवं

चरमाणो

खलु

भावोमाणं

मुण्येयव्वो^१ ॥

२४—दव्वे

खेत्ते

काले

भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।

एएहि

ओमचरओ

पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥

२५—अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा ।

अभिग्गहा य जे अन्ते भिक्खायरियमाहिया ॥

२६—खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं ।

परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥

२७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।

उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥

२८—एगन्तमणावाए इत्थोपसुविवज्जिए ।

सयणासणसेवणया विवित्तसयणासणं ॥

२९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।

अब्भिन्तरं 'तवं एत्तो'^२ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

अब्भित्तरतव-पदं

३०—पायच्छित्तं

विणओ

वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।

'झाणं

च

विउस्सगो'^३'एसो अब्भिन्तरो तवो'^४ ॥

१—मुण्येयव्व (उ, ऋ) ।

२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।

३—झाण उस्सगो वि य (उ, ऋ, स) ।

४—अब्भिन्तरो तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

- ३१—आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
 जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥
- ३२—अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
 गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥
- ३३—आयरियमाइयम्मि^१ य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
 आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥
- ३४—वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्ठणा ।
 अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥
- ३५—अट्ठरुद्धाणि वज्जित्ता भाएज्जा सुसमाहिए ।
 धम्मसुक्काइं ज्ञाणाइं ज्ञाणं तं तु बुहा वए ॥
- ३६—सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
 कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निकखेव-पदं

- ३७—एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयेरे-मुणी ।
 'से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए'^२ ॥
 —त्ति वेमि ॥

*

१—आयरिमाईए (उ, ऋ) ।

२—सो खवेत्तुरय अरओ नीरय तु गहं गए (वृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्भयणं

चरणविही

- १—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥
- २—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्ति च संजमे य पवत्तणं ॥
- ३—रागदोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ^१ मण्डले ॥
- ४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ^२ मण्डले ॥
- ५—दिब्बे य जे^३ उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ^४ मण्डले ॥
- ६—विगहांकसायसन्नाणं भाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ^५ मण्डले ॥
- ७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'^६ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ९—पिण्डोग्गहपडिमासु भयद्वाणेषु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

३—X (उ, ऋ) ।

४, ५—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।

६—समीतीसु य तहेव य (वृ० पा०) ।

- १०—मयेसु बम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्ममि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- ११—उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १२—किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १३—गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १४—बम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १५—एगवीसाए सवलेसु बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १६—तेवीसइ सूयगडे रुवाहिएसु सुरेसु^१ अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १७—पणवीसणावणाहिं^२ उदेसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १८—अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य^३ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- १९—पावसुयपसगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
- २०—सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु^४ य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१—देवेसु (दू० पा०) ।

२—पणु^० (अ) ।

३—उ (उ, ऋ, वृ) ।

४—^०णाणि (अ) ।

૨૧—ઈહ એસુ ઠાણેસુ જે ભિક્ષૂ જયઈ સયા ।
 ક્ષિપ્પં સે સન્નસંસારા વિપ્પમુચ્છઈ પણ્ડિઓ ॥
 —ત્તિ વેમિ ॥

*

वत्तीसइमं अज्झयण

पमायट्ठाणं

उक्खेव-पदं

- १—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
सुणेह एगग्हियं^१ हियत्थं ॥
- २—नाणस्स सव्वस्स^२ पगासणाए
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥
- ३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'^३
सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥
- ४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
सहायमिच्छे निउणत्थवुद्धिं^४ ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोगं
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त^० (वृ० पा०, सु) ।

२—सव्वस्स (वृ० पा०, सु, पा) ।

३—^० निसेवणाए (वृ० पा०), ^० निवेसणा य (वृ०) ।

४—निउणेह^० (वृ० पा०) ।

५-न वा लभेज्जा निउणं सहायं
 गुणाहियं वा गुणजो समं वा ।
 एको वि पावाइ विवज्जयन्तो^१
 विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥
 तण्हा-पदं

६-जहा य अण्डप्पभवा बलागा
 अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
 एमेव मोहाययणं खु तण्हं^२
 मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥

७-रागो य दोसो वि य कम्मवीयं
 कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
 कम्मं च जाईमरणस्स मूलं
 दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥
 ८-दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो
 मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
 तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
 लोहो हओ जस्स न किंचणाइं^३ ॥

उवाय-पदं
 ९-रागं च दोसं च तहेव मोहं
 उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
 जे जे 'उवाया पडिवज्जियव्वा'^४
 ते कित्तइस्सामि अहाणुपुब्बि ॥

१-अणायरन्तो (वृ० पा०) ।

२-तण्हा (अ) ।

३-किंचनत्थि (वृ० पा०) ।

४-अपाया परि० (वृ० पा०) ।

१०—रसा पगामं न निसेवियंवा
पायं रसा दित्तिकरा^१ नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्वन्ति
दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥

११—जहा दवग्गी पउरित्थणे वणे
समारुओ नोवसमं उवेइ ।-
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥

१२—विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं
ओमासणाणं^२ दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं
पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥

१३—जहा बिरालावसहस्स मूले
न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्जे
न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥

१४—न ख्वलावण्णविलासहासं
न जंपियं इंगियपेहियं^३ वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥

१—दित्तिकरा (वृ० पा०) ।

२—ओमासणाए, ओमासणाई (वृ०, पा०) ।

३—^० वीहिय (वृ०, सु) ।

१५—अदंसणं चेव अपत्थणं च
अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।

इत्थीजणस्सारियभाणजोगं
हियं सया बम्भवए^१ रयाणं ॥

१६—कामं तु देवीहि विभूसियाहिं
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा
विवित्तवासो^२ मुणिणं^३ पसत्थो ॥

१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मो ।
नेयारिसं^४ दुत्तरमत्थि लोए
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥

१८—एए य संगे समइक्कमित्ता
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता
नई भवे अवि गंगासमाणा ॥
दुक्ख-पदं

१९—कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं
सन्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि
तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरारो ॥

१—बम्भवेरे (उ, षू० पा०, ऋ) ।

२—० मावो (उ, ऋ) ।

३—मुणिणो (अ) ।

४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किपागफला मणोरमा

रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।

ते खुहुए जीविय^१ पच्चमाणा

एओवमा कामगुणा विवागे ॥

२१—जे इन्दियाण विसया मणुन्ता

न तेसु^२ भावं निसिरे कयाइ ।

न याऽमणुन्तेसु मणं पि^३ कुज्जा

समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति

तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु

समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

रूव-पद

२३—रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति ।

रागस्स हेउं समणुन्नमाहु^४

दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु^५ ॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं^६

अकालियं पावइ से विणासं^७ ।

रागाजरे से जह वा पयंगे

आलोयलोले समुवेइ मच्चुं ॥

१—ते जीविय खुहुए (अ), ते जीविय खुदति (वृ० पा०) ; ते खुहुए जीविय (सु) ।

२—तेसि (अ) ।

३—चु (अ) ।

४—समणुण्णमाहु (वृ० पा०) ।

५—समणुण्णमाहु (वृ० पा०) ।

६—निच्चं (अ) ।

७—किलेसं (वृ० पा०) ।

- २५—जे यावि दोसं समुवेइ तिळ्वं^१
 तंसि कवणे से 'उ उवेइ दुक्खं'^२ ।
 दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू
 न किंचि ख्वं अवरज्झई से ॥
- २६—एगन्तरत्ते^३ रुइरंसि ख्वे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- २७—रूवाणुगासाणुगए^४ य जीवे
 चराचरे हिसइ ऽणेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिङ्गे ॥
- २८—रूवाणुवाएण^५ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे^६ ।
 वए विओगे य कर्हि सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^७ ॥
- २९—रूवे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—समुवेति सव्वं (वृ० पा०) ।

३—^०रुत्तो (अ) ।

४—^०वायाणुगए (वृ० पा०) ।

५—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

६—^०सन्निओगे (उ) ।

७—अतित्त ^० (वृ०) ; अतित्ति ^० (वृ० पा०) ।

३०—तण्हाभिभूयस्सं अदत्तहारिणो
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य ।

मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।

एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पदुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

३५—सोयस्स सट्ठं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणून्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरामो ॥

३६—सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।

रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

३७—सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^१
अकालियं पावइ से विणास ।
रागाउरे हरिणमिगे व^२ मुद्धे^३
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥

३८—जे यात्रि दोसं समुवेइ तिव्वं^४
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्धन्तादोसेण सएण जन्तू
न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे
अतालसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागे ॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ बाले
पीलेइ अत्तइगुरू किलिद्धे ॥

१—निच्च (अ) ।

२—व्व (उ, ऋ) ।

३—बुद्ध (अ) ।

४—निच्च (अ, बु०) ।

४१—सद्धानुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

४२—सद्दे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

४३—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

४४—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

४५—सद्धानुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचिं ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—^० वाए य (अ) ; रागेण (वु० पा०) ; वाए ण (सु) ।

२—अतित्त (वृ) ; अतित्ति (वृ० पा०) ।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओसं
 उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
 पटुद्धचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
 जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो^२
 एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे वि सन्तो
 जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
 तं रागहेउं तु मणुन्तमाहु ।
 तं दोसहेउं अमणुन्तमाहु
 समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

४९—गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति
 घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्तमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्तमाहु ॥

५०—गन्धेसु^३ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^४
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
 सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ) ।

२—असोगो (अ) ।

३—गंधस्स (अ, ऋ) ।

४—निच्चं (अ) ।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१
 तंसि कवणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइत्तदोसेण सएण जन्तु
 न किंचि गन्धं अवरज्जई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिंसइ ऽणैगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तद्वगुरू किलिद्धे ॥

५४—गन्धाणुवाएण^२ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कहिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।

२—^० वाए य (अ), ^० रागेण (वृ० पा०), ^० वाए ण (सु) ।

३—अत्ति^० (वृ०) ; अत्ति^० (वृ० पा०) ।

- ५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किञ्चि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुइचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
रस-पदं
- ६१—जिहाए रसं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्तमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्तमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

- ६२-रसस्स जिब्भं^१ गहणं वयन्ति
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥
- ६३-रसेसु^२ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^३
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे^४ ॥
- ६४-जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^५
तंसि क्वणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुहत्तदोसेण सएण जन्तू
'रसं न किंचि'^६ अवरज्झई से ॥
- ६५-एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥
- ६६-रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिद्धे ॥

१-जीहा (उ, ऋ) ।

२-रसस्स (अ, ऋ) ।

३-निच्चं (अ) ।

४-लोभगिद्धे (अ) ।

५-निच्च (वृ०, अ) ।

६-न किंचि रस्सं (अ) ।

६७—रसाणुवाएण^१ परिग्गहेण
 उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कर्हिं सुहं से ?
 संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

६८—रसे अतित्ते य परिग्गहे य
 सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
 लोभाविले आययई अदत्तं ॥

६९—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
 रसे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

७०—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
 पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एवं अदत्ताणि समाययन्तो
 रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

७१—रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं
 कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
 निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ? ॥

१—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

२—अत्ति^० (वृ०) ; अत्तित्ति^० (वृ० पा०) ।

७२—एमेव रसम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पट्टुट्ठचित्तो य^१ चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

७३—रसे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

फास-पदं

७४—कायस्स फासं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

७५—फासस्स कायं गहणं वयन्ति
कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।

‘रागस्स हेउं समणुन्नमाहु’^२
‘दोसस्स हेउं’^३ अमणुन्नमाहु ॥

७६—फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्बं^४
अकालियं पावइ से विणासं ।

रागाउरे सीयजलावसन्ने
गाहग्गहीए महिसे व ऽरन्ने ॥

१—उ (अ) ।

२—त राग हेउ तु मणुन्नमाहु (अ) ।

३—त दोस हेउस्स (अ) ।

४—निच्च (अ) ।

७७—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^१

तंसि कखणे से उ उवेइ दुक्खं ।

दुद्धन्तदोसेण सएण जन्तू

न किंचि फासं अवरज्झई से ॥

७८—एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे

अतालसे से कुणई पओसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले

न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९—फासाणुगासाणुगए य जीवे

चराचरे हिंसइ ऽणेरूवे ।

चित्तेहि ते परितावेइ बाले

पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

८०—फासाणुवाएण^२ परिग्गहेण

उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।

वए विओगे य कहिं सुहं से ?

संभोगकाले य अतित्तिलाभे^३ ॥

८१—फासे अतित्ते य परिग्गहे य

सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स

लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्चं (वृ०, अ) ।

२—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (वृ० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

३—अतित्त^० (वृ०) ; अतित्ति^० (वृ० पा०) ।

- ८२-तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
- ८३-मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरत्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
- ८४-फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्जकयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
- ८५-एमेव फासम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य' चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
- ८६-फासे विरत्तो मणुओ विसोणो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झो वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥
भाव-पदं
- ८७-मणस्स भावं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरगो ॥

८८—भावस्स मणं गहणं वयन्ति
 मणस्स भावं गहणं वयन्ति ।
 रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
 दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेसु^१ जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं^२
 अकालियं पावइ से विणासं ।
 रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे
 करेणुमगावहिए 'व नागे'^३ ॥

९०—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं^४
 तंसि वखणे से उ उवेइ दुक्खं ।
 दुइत्तदोसेण सएण जन्तू
 न किचि भावं अवरज्झई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे
 अतालसे से कुणई पओसं ।
 दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
 चराचरे हिसइ ऽणेरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ बाले
 पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिद्धे ॥

१—मणेण (अ) ; भावस्स (ऋ) ।

२—निच्च (अ) ।

३—गए व्व (अ) ।

४—निच्च (वृ०, अ) ।

९३—भावाणुवाएण^१ परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे^२ ॥

९४—भावे अत्ति ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अत्तिस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अत्ति तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेत्तदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—^०वाए य (अ) ; ^०रागेण (दू० पा०) ; ^०वाए ण (सु) ।

२—अत्ति ^० (दू०) ; अत्ति ^० (दू० पा०) ।

९८-एमेव भावस्मि गळो पळोसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।

पट्टुच्चित्तो यं चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

९९-भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।

न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणोपलासं ॥

निक्खेव-पदं

१००-एविन्दियत्था य मणस्त अत्था
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।

ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं
न वीयरगस्स करेन्ति किंचि ॥

१०१-न कामभोगा समयं उवेन्ति
न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।

जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥

१०२-कोहं च माणं च तहेव मायं
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।

हासं भयं सोगपुमित्तियेयं
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥

१०३-आवज्जई एवमणेगरूवे
एवंविहे कामगुणेषु सत्तो ।

अन्ते य एयप्पभवे विसेसे
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

- १०४—कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छं
पच्छाणुतावेयं^१ तवप्पभावं ।
एवं वियारे अमियप्पयारे
आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥
- १०५—तओ से जायन्ति पओयणाइं
निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा^२
तप्पच्चयं^३ उज्जमए य रागी ॥
- १०६—विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
सद्दाइया^४ तावइयप्पगारा ।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥
- १०७—एवं ससंकप्पविकप्पणासु^५
संजायई समयमुवट्ठियस्स ।
'अत्थे य संकप्पयओ'^६ तओ से
पहीयए कामगुणेसु तप्प्हा ॥
- १०८—स वीयरगो कयसव्वकिच्चो
खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ
जं चउत्तरायं पकरेइ कम्मं ॥

१—पच्छाणुतावेण (सु) ।

२—दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०) ।

३—सप्पच्चया (वृ० पा०) ।

४—वण्णाइया (वृ० पा०) ।

५—^० विकप्पणासो (वृ० पा०) ।

६—अत्थे असकप्पयतो (वृ० पा०) ।

- १०९—सर्व्वं तओ जाणइ पासए य
 अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणासवे भाणसमाहिजुत्ते
 आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥
- ११०—सो तस्स सर्व्वस्स दुहस्स मुक्को
 जं बाहई सययं जन्तुमेयं ।
 दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
 तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥
- १११—अणाइकालप्पभवस्स एसो
 'सर्व्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गे'^१ ।
 वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता
 कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥
 —त्ति बेमि ॥

*

तेतीसइमं अज्मयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ट कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्वि जहकमं^१ ।
जेहि बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्ताए^२ ॥

कम्म-पदं

२—नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तथा ।
वेयणिज्जं तथा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्टेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५—निदा तहेव पयला
निदानिदा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पंचमा होइ नायव्वा ॥

६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं^३ तु नवविगप्पं
नायव्वं दंसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (वृ० पा०) ।

२—परिभम्मए (वृ० पा०) ।

३—एय (अ) ।

- ७—वेयणीयं पि य^१ दुविहं
 सायमसायं च आहियं ।
 सायस्स उ बहू भेया
 एमेव असायस्स वि ॥
- ८—मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा ।
 दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे ॥
- ९—सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य ।
 एयाओ तित्ति पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥
- १०—‘चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं’^२ ।
 ‘कसायमोहणिज्जं’^३ तु नोकसायं तहेव य ॥
- ११—सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं ।
 सत्तविहं नवविहं वा कम्मं नोकसायजं ॥
- १२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य ।
 देवाउयं चउत्थं तु^४ आउकम्मं चउच्चिहं ॥
- १३—नामं कम्मं तु^५ दुविहं सुहमसुहं ‘च आहियं’^६ ।
 सुहस्स उ^७ बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥
- १४—गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ।
 उच्चं अट्टविहं होइ एवं नीयं पि आहियं ॥
- १५—दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तहा ।
 पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥

१—हु (ऋ) ।

२—चरित्त मोहणिज्ज दुविह वोच्चासि अणुपुल्लसो (बु० पा०) ।

३—^० वेयणिज्ज य (बु०) ।

४, ५—× (उ, ऋ) ।

६—वियाहियं (उ, ऋ) ।

७—य (उ, ऋ) ।

तेतोसइमं अज्झयणं

१६-एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसगं खेतकाले य भावं चादुत्तरं सुण ॥

पएस-पदं

१७-सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताइयं^१ अन्तो सिद्धाण आहियं ॥

१८-सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥

ठिद्धय-पदं

१९-उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२०-आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥

२१-उदहीसरिनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२२-तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

२३-उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पदं

२४-सिद्धाणऽणन्तभागो य^२ अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसगं सव्व जीवेसु ऽइच्छियं^३ ॥

१-गण्ठ सत्ताणाइ (वृ० पा०) ।

२-X (उ, क्र) ।

३-स इच्छिय (उ, सु) ; अहिच्छिय (स) ।

निक्खेव-पदं

२५-तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया ।
 एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥
 —त्ति वेमि ॥

चउतीसइमं अज्मयणं

लेसज्मयणं

उक्खेव-पदं

- १-लेसज्मयणं पवक्खामि आणुपुर्व्वि जहक्कमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥
- २-नामाइं वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥

लेसा-पदं

- ३-किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य-
सुक्कलेसा य छट्ठा उ' नामाइं तु जहक्कमं ॥

वण्ण-पदं

- ४-जीमूयनिद्धसकासा गवलरिद्धगसन्निभा ।
खंजणंणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥
- ५-नीलाऽसो गसंकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥
- ६-अयसीपुप्फसकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥
- ७-हिं गुलुयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा ।
सुयतुण्डपईवनिभा तेउलेसा उ वण्णओ ॥
- ८-हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा ।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ' वण्णओ ॥

१-य (उ, ऋ) ।

२-० छावि (वृ० पा०) ।

३-सुयतुण्डगसंकासा, सुयतुण्डालत्तदीवामा (वृ० पा०) ।

४-० सप्पभा (अ, आ, इ) ।

५-य (ऋ) ।

९—संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा^१ ।
 रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ^२ वण्णओ ॥

रस-पदं

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
 निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^३ किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
 तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
 तुवरकविट्ठस्स^४ वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
 पक्कविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
 एत्तो वि अणन्तगुणो
 रसो उ^५ तेऊए नायव्वो ॥

१—सीरतूल^० (दृ०) ; सीरघार^०, सीरपूर^० (दृ० पा०) ।

२, ३—य (ऋ) ।

४—तुंदर^० (अ) ; तुंदरु^० (उ) ; अट्ट^० (दृ० पा०) ।

५—य (ऋ) ।

१४—वरवारणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए^१ परएणं^२ ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसकररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ^३ सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पदं

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स^४ व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'^५ अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाणं^६ पिस्समाणाणं^७ ।
'एत्तो वि'^८ अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।

२—एत्तो वि अणन्त गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (वु० पा०) ।

३—य (ऋ) ।

४—^० मडस्स (उ, ऋ) ।

५—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

६—गंधाण य (वु० पा०) ।

७—पिस्समाणाणं (अ) ।

८—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पदं

१८-जह करगयस्स फासो
गोजिम्भाए व सागपत्ताणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१९-जह वूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिहं पि ॥

एत्ता ।) परिणाम-पद

विहो वा

१२-जह तरुणजीवीसइविहेक्खसीओ वा ।
तुवरकं वा
एत्तो वि अणन्तगुणो होइ परिणामो ॥
रसो उ

१३-जहपरिणयम्बगरसो च्छसु अविरओ य ।
पक्कविट्ठस्स वा
एत्तो वि अणन्तगुणो ने नरो^१ ॥
रसो उ तेऊए 'इन्दिओ'^२ ।

१-सीरत्तल ° (वृ०) ; सीरघार °, सीरपूर ° (वृ० पा०) ; रिणमे ॥

२, ३-य (क्र) ।

४-तुवर ° (अ) ; तुवर ° (उ) ; अट्ट ° (वृ० पा०) ।

५-य (क्र) ।

- २३—इस्साअंमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'^१ ।
 गेद्वी पओसे य सढे पमत्ते^२ रसलोलुए सायगवेसए य ॥
- २४—आरम्भाओ^३ अविरओ खुट्ठो साहस्सिओ नरो ।
 एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥
- २५—वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए ।
 पलिउंचग ओवहिए मिच्छद्विटी अणारिए ॥
- २६—उप्फालगदुट्ठवाई^४ य तेणे यावि य मच्छरी ।
 एयजोगसमाउत्तो काउलेस तु परिणमे ॥
- २७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुळहले ।
 विणीयविणए दन्ते जोगव उवहाणवं ॥
- २८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए^५ ।
 एयजोगसमाउत्तो तेउलेस तु परिणमे ॥
- २९—पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥
- ३०—तहा पयणुवाई^६ य उवसन्ते जिडन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥
- ३१—अट्ठरुद्धाणि वज्जित्ता धम्ममुक्काणि भायए^७ ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ) ।

२—य मत्ते (वृ० पा०) ।

३—आरम्भाओ (अ) . आरम्भा (उ, ऋ) ।

४—उफालदुट्ठवाई (अ) ; उप्फाला^० (उ) ; उप्फाला^० (ऋ) ।

५—हियासए, अणासए (वृ० पा०) ।

६—^० याइ (अ) ।

७—साहए (वृ०, चु) झायए (वृ० पा०) ।

३२—सरागे वीयरगे वा^१ उवसन्ते^२ जिइन्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥

ठाण-पदं

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण^३
 उस्सप्पिणीण जे समया ।
 संखाईया^४ लोगा
 लेसाण हुन्ति ठाणाइं ॥

ठिइ-पद

३४—‘मुहुत्तद्धं तु’^५ जहन्ना
 तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा किण्हलेसाए ॥

३५—‘मुहुत्तद्धं तु’^६ जहन्ना
 दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा नीललेसाए ॥

३६—‘मुहुत्तद्धं तु’^७ जहन्ना
 तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिई
 नायव्वा काउलेसाए ॥

१—य (अ) ।

२—सुद्धजोगे (वृ० पा०) ।

३—असखेज्जाणओ उस्सप्पिणीण (अ) ।

४—असखेया (वृ० पा०) ।

५—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

६—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

७—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।

- ३७-‘मुहुत्तद्वं तु’^१ जहन्ता
दोउदही पलियमसंखभागमव्वहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥
- ३८-‘मुहुत्तद्वं तु’^२ जहन्ता
दस ‘होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया’^३ ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥
- ३९-‘मुहुत्तद्वं तु’^४ जहन्ता
तेत्तीसं सागरा मुहुत्ताहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥
- ४०-एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वणिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥
- ४१-दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्तिया होइ ।
‘तिण्णुदही ‘पलिओवम
असंखभागं’^५ च उक्कोसा’^६ ॥

१-मुहुत्तद्वं उ (वृ० पा०) ।

२-मुहुत्तद्वं उ (वृ० पा०) ।

३-उदही इति मुहुत्तमव्वहिया (उ, ऋ) ।

४-मुहुत्तद्वं उ (वृ० पा०) ।

५-पलियमसख भाग (सु), पलियमसखेज्ज भाग (वृ०) ।

६-उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसखेज्जभागहिया (वृ० पा०) ।

४२-तिण्णुदही

पलिय-

मसंखभागा जहन्नेण नीलठिई ।

दस उदही

'पलिओवम

असंखभागं'^१ च उक्कोसा ॥

४३-दस उदही

'पलिय-

मसंखभागं'^२ जहन्निया होइ ।

तेत्तीससागराई

उक्कोसा

होइ

किण्हाए ॥^३

४४-एसा

नेरइयाणं

लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।

तेण परं

वोच्छामि

तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५-अन्तोमुहुत्तमद्धं

लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।

तिरियाण

नराणं

वा^४

वज्जित्ता केवलं लेसं ॥

४६-मुहुत्तद्धं

तु

जहन्ना

उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।

नवहि

वरिसेहि

ऊणा

नायव्वा

सुक्कलेसाए ॥

१-पलिअ असखभागा (उ, ऋ) ।

२-पलियमसखं भागं च (उ) ।

३-दस उदही पलियमसखं भागं च जहन्नेण कण्ह लेसाए ।

तेत्तीस सागराई मुहुत्त अहिया उ उक्कोसा ॥ (अ) ॥

४-तु (वृ०) ; च (उ, ऋ) ।

४७-एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८-दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९-जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
जहन्नेणं नीलाए
'पलियमसंखं तु' उक्कोसा ॥

५०-जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमव्वहिया ।
जहन्नेणं काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१-तेण परं वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवडवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

१-पलियमसंखं च (उ, ऋ) ; पलियमसंखिज्ज (वृ०) ।

५२-पलिओवमं^१

जहन्ना

उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया^२ ।

पलियमसंखेज्जेणं

होई भागेण^३ तेऊए ॥

५३-दस

वाससहस्साइं

तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।

दुण्णुदही^४

पलिओवम

असंखभागं च उक्कोसा ॥

५४-जा तेऊए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेणं

पम्हाए दसउ

मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥

५५-जा पम्हाए

ठिई खलु

उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।

जहन्नेणं

सुक्काए

तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥

अहम्मलेसा-पद

५६-किण्हा

नीला

काऊ

तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ^५ ।

एयाहि तिहि वि जीवो

दुग्गइं उववज्जई बहुसो^५ ॥

१-पलिओवम च (अ) ।

२-दुन्निहिया (उ, ऋ) ।

३-तिभागेण (अ) ।

४-अहम^० (अ, वृ० पा०) ।

५-X (उ, ऋ) ।

धम्मलेसा-पदं

५७-तेऊ पम्हा सुक्का
तिन्ति वि एयाओ धम्मलेसाओ ।
एयाहि तिहि वि जीवो
सुगइं उववज्जई वहुसो^१ ॥

उववात-पद

५८-लेसाहिं सव्वाहिं
पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
'न वि कस्सवि उववाओ'^२
परे भवे अत्थि^३ जीवस्स ॥

५९-लेसाहिं सव्वाहिं
चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु ।
'न वि कस्सवि उववाओ'^४
परे भवे अत्थि^५ जीवस्स ॥

६०-अन्तमुहुत्तम्मि गए
अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव ।
लेसाहिं परिणयाहिं
जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

१-× (उ, ऋ) ।

२-न इ कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

न वि^० (वृ० पा०) ; न इ^० (उ, ऋ, सु) ।

३-भवइ (वृ०, सु) ।

४-न इ कस्सवि उववत्ति (वृ०) ।

५-भवइ (वृ०, सु) ।

निकलेव-पदं

६१—तम्हा एयाण^१ लेसाणं

अणुभागे वियाणिया ।

अप्पसत्थाओ वज्जित्ता

पसत्थाओ अहिट्टेज्जासि^२ ॥

—त्ति बेमि ॥

१—एयासि (उ, ऋ) ।

२—अहिट्टिण (उ, ऋ) ।

पणतीसइमं अज्मयणं

अणगारमंगगई

- १—सुणेह 'मे एगममणा'^१ मगं बुद्धेहि देसियं ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥
- २—गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ^२ मुणी ।
इमे संगे वियाणिज्जा^३ जेहि सज्जत्ति माणवा ॥
- ३—तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवणं ।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥
- ४—मणोहर चित्तहर मल्लधूवेण वासियं ।
सकवाढं पण्डुरल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥
- ५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइं निवारेउं^४ कामरागविवड्डणे ॥
- ६—सुसाणे सुन्नगारे वा खल्लमूले व एकओ^५ ।
पइरिक्के^६ परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥
- ७—फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥
- ८—न सय गिहाइं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो ॥

१—मे एगममणा (उ, ऋ) ।

२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।

३—वियाणेत्ता (अ) ।

४—उ धारेउ (वृ०) : निवारेउ (वृ० पा०) ।

५—एगओ (उ, ऋ) . एगया (वृ०) ; एकतो (वृ० पा०) ।

६—परक्के (वृ०) , पइरिक्के (वृ० पा०) ।

- ९—तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥
- १०—तहेव भत्तपाणेषु पयण^१ पयावणेषु य ।
पाणभूयदयद्वाए न पये न पयावए ॥
- ११—जलधन्तनिससिया जीवा^२ पुढवीकट्टनिससिया^३ ।
हम्मन्ति भत्तपाणेषु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
- १२—विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥
- १३—हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्रए ॥
- १४—किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्रयम्मि वट्ठन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
- १५—भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्रओ महादोसो भिक्खावत्ती^४ सुहावहा ॥
- १६—समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं चरे मुणी^५ ॥
- १७—अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिष्टए ।
न रसद्वाए भुंजिज्जा जवणद्वाए महामुणी ॥
- १८—अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

१—पयणेषु (ऋ) ; पयणे य (अ) ।

२—पाणा (अ) ।

३—^०काय^० (उ) ।

४—भिक्खू वित्ती (उ, ऋ) ।

५—गवेसए (बृ० पा०) ।

पणतीसइमं अज्झयणं

- १९—सुक्कभाणं भियाएज्जा अणियाणे अकिचणे ।
 वोसइक्काए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥
- २०—निज्जूहिऊण आहारं कालघम्मे उवट्ठिए ।
 जहिऊण^१ माणुसं बोन्दि पट्टु दुक्खे विमुच्चई ॥
- २१—निम्ममो निरहंकारो वीयरगो अणासवो^२ ।
 संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥
 —ति वेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।

२—निरासवे (चू०) ।

छत्तीसइम अज्जमयणं

जीवाजीवविभत्ती

उक्खेव-पद

१—जीवाजीवविभत्ति 'सुणेह मे' ^१ एगमणा इओ ।
 जं जाणिऊण समणे ^२ सम्मं जयइ संजमे ॥

लोकालोक-पदं

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए ।
 अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए ॥
 ३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तुहा ।
 परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥
 ४—रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे ।
 अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा ॥

अरूवि-अजीव-पदं

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए ।
 अहम्मो तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥
 ६—आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ।
 अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥
 ७—धम्माधम्मो य दोऽवे ^३ लोगमिक्का वियाहिया ।
 लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए ॥
 ८—धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया ।
 अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ॥

१—मे सुणेह (बु०) ।

२—मिक्खू (उ, ऋ, बु०) ; समणे (बु० पा०) ।

३—दोएए (उ) ; दोवे य (ऋ) ।

१—‘समए वि सन्तइं पप्प एवमेव’^१ वियाहिए ।
आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥

रूवि अजीव-पदं

- १०—खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य ।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥
- ११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो ।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा तेउ खेत्तओ ॥
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
- १२—संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १३—असंखकालमुक्कोसं ‘एगं समयं जहन्निया’^२ ।
अजीवाण^३ य रूवीणं ठिईं एसा वियाहिया ॥
- १४—अणन्तकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्नयं ।
अजीवाण^३ य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं ॥
- १५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा ।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसिं पंचहा ॥
- १६—वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥
- १७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य ॥
- १८—रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला म्हुरा तहा ॥

१—एमेव सत्तइं पप्प समए वि (वृ० पा०) ।

२—एगो समयो जहन्नय (ऋ), इको समयो जहन्निया (उ) ।

३—अजीवाण (उ) ।

- १९—फासओ परिणया जे उ अट्टहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गस्या लहुया तहा ॥
- २०—सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए पुग्गला समूदाहिया ॥
- २१—संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला 'य वट्ठा' तंसा चउरंसमायया ॥
- २२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २५—वण्णओ पीयाए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २६—वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २७—गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २८—गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- २९—रसओ तित्ताए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

- ३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३३—रसओ महुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥
- ४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४२-परिमण्डसंज्ञो नइए ते उ वग्नो ।

गन्धो रसो वेव नइए फासो वि य ॥

४३-संज्ञो नइए ते उ वग्नो ।

गन्धो रसो वेव नइए फासो वि य ॥

४४-संज्ञो नइए ते उ वग्नो ।

गन्धो रसो वेव नइए फासो वि य ॥

४५-संज्ञो य वग्नो नइए ते उ वग्नो ।

गन्धो रसो वेव नइए फासो वि य ॥

४६-जे आयसंज्ञो नइए ते उ वग्नो ।

गन्धो रसो वेव नइए फासो वि य ॥

४७-एता ज्योतिर्विनिर्गता सन्निभ विराहिया ।

इतो ज्योतिर्विनिर्गता वृद्धानि जगृह्णन्ती ॥

जिह्वन्तं

४८-संज्ञा एता य सिद्धा य दुर्विहा ज्योतिर्विहाहिया ।

सिद्धा ज्योतिर्विहाहिया ते ते कित्तय्यो नुग ॥

निर्गन्तव्यं

४९-इतो पुरिसिद्धा य तेह्व य नमुत्तपा ।

सल्लि अल्लि य गिहिल्लि तेह्व य ॥

५०-उज्जोत्तोगाहगार य जह्मन्तिज्जिमाइ य ।

उद्धं जहे यत्तिरियं य समुद्धन्ति जलन्ति य ॥

५१-इत वेव नमुत्तपुं वीत्तं इत्थियानु य ।

पुरिसिन्धु य लुक्कयं सनएगेण सिग्गई ॥

१-संज्ञे ते (कु० प०) :

२-संज्ञे तेह्व सिद्धा (कु० प०) :

३-य नमुत्तपुं (कु०) :

५२—चत्तारि य गिहिल्लिगे अन्नल्लिगे दसेव य ।

सल्लिगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई ॥

५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे ।

चत्तारि जहन्नाए जवमज्झऽट्ठुत्तरं^१ सयं ॥

५४—‘चउरुद्धलोए य दुवे समुद्धे

तओ जले वीसमहे तहेव^२ ।

सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए

समएणेगेण उ ‘सिज्झई उ’^३ ॥’^४

५५—कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्ठिया ? ।

कहिं वोन्दि चइत्ताणं ? कत्थ गन्तूण सिज्झई ? ॥

५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया ।

इहं वोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥

५७—वारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे ।

ईसीपव्वभारनामा उ^५ पुढवी छत्तसंठिया ॥

५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया ।-

तावइयं चेव वित्थिण्णा ‘तिगुणो तस्सेव परिरओ’^६ ॥

५९—अट्ठजोयणवाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया ।

परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी ॥

१—मज्झे अट्ठुत्तर (अ) ।

२—तहेव य (अ) ।

३—सिज्झइ थुव (उ, क) ।

४—चउरो चउद्धोलोगमि वीसपहुत्त अहे भवे ।

सय अट्ठोत्तर तिरिए एण समएण सिज्झइ ॥

दुवे समुद्धे सिज्झति सेस जलेसु ततो जणा ।

एसा ह सिज्झणा मणिया पुव्वभावं पडुच्च उ ॥ (वृ० पा०) ।

५—× (उ, क) ।

६—तिउण साहिय पडिरिय (वृ० पा०) ।

६०—अज्जुणसुवण्णगमई

सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।

उत्ताणगच्छत्तगसंठिया य

भणिया जिणवरेहि ॥

६१—संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।

सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥

६२—जोयणस्स उ जो तस्स^१ कोसो उवरिमो भवे ।

‘तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे’^२ ॥

६३—तत्थ सिद्धा महाभागा लोयगम्मि पइट्ठिया^३ ।

भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धि वरगइं गया ॥

६४—उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ^४ ।

तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

६५—एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य ।

पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥

६६—अरुविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया ।

अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥

६७—लोएगदेसे^५ ते सव्वे नाणदंसणसन्निया ।

संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धि वरगइं गया ॥

संसारत्यजीव-पढ

६८—संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया ।

तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥

१—तत्थ (बृ०) ; तस्स (बृ० पा०) ।

२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भाओ उवरिमो भवे (बृ० पा०) ।

३—य सट्ठिया (अ) ।

४—य (ऋ) ।

५—लोएगग^० (बृ० पा०) ।

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पदं

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^१ दुहा पुणो ॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तर्हि ॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य^२
हालिद्दा सुक्किला तहा ।

पण्डुपणगमट्टिया

खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।

‘अयतम्बतउय’^३-सीसग-

रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले

हिंगुलुए

मणोसिला सासगंजणपवाले ।

अन्मपडलऽन्मवालय

वायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (वृ० पा०) ।

२—X (अ) ।

३—अयव तजो य (अ) ; अय तउय तम्ब (उ, ऋ) ।

७५—गोमेज्जए य स्यगे
अंके फलिहे य लोहियक्खे य ।

मरगयमसारगल्ले

भुयमोयगइन्दनीले य ॥

७६—चन्दणगेरुयहंसगन्ध

पुलए सोगन्धिए य वोद्धव्वे ।

चन्दप्पहवेरुलिए

जलकन्ते मूरकन्ते य ॥

७७—एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया ।

एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥

७८—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगढेसे य वायरा ।

इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

७९—संतइं पप्पऽणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

८०—त्रावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।

आउठिई पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥

८१—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

८२—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजडमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ॥

८३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—^० तेगाई (अ) ।

२—जहन्नगं (अ) ।

आउ-पदं

- ८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
- ८६—एगविहमंणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥
- ८७—सन्तइं पप्पणाईया^१ अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- ८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^२ ॥
- ८९—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विज्जडंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥
- ९१—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वणस्सई-पदं

- ९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए^३ दुहा पुणो ॥
- ९३—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—तेणाई (अ) ।

२—जहन्ना (अ) ।

३—एवमेव (अ) ।

९४—‘पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया’^१ ।

एक्खा गुच्छाय गुम्माय लया वल्ली तणा तथा ॥

९५—लयावलया^२ पव्वगा^३ कुहुणा

जलरुहा ओसहीतिणा^४ ।

हरियकाया य बोद्धवा

पत्तेया इति आहिया ॥

९६—साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।

आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥

९७—हिरिली सिरिली सिस्सिरिली

जावई केदकन्दली^५ ।

पलंदूलसणकन्दे य

कन्दली य कुडुंबए^६ ॥

९८—लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य ।

कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए^७ तथा ॥

९९—अस्सकणी य बोद्धवा सीहकणी तहेव य ।

मुसुण्डी य हलिद्दा य ऽणेगहा एवमायओ ॥

१००—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य ब्रायरा ॥

१—बारसविह मेएण पत्तेया उ वियाहिय (बृ० पा०) ।

२—वलया य (अ) ।

३—पव्वया (बृ०) ; पव्वगा (बृ० पा०) ।

४—^० तथा (अ, आ, इ, उ, सु) ।

५—केलि ^० (उ) ।

६—कुडुव्वए (उ, ऋ) ; कुहुव्वए (स) ।

७—पुसुरणे (उ) ।

१०१—संतइं पप्पणार्इया^१ अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च सार्इया सपज्जवसिया वि य ॥

१०२—दस चव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।

वणप्फईण^२ आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥

१०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

कायठिई पणमाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजडंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥

१०५—एएसि वण्णओ चव गन्धओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।

इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

१०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।

इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

तेउ-पदं

१०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।

पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥

१०९—बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया ।

इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चिं जाला तहेव य ॥

११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ ।

एगविहमणानत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥

१११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^३ य बायरा ।

इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

१—० तेणाह (अ) ।

२—वणस्सईण (उ, ऋ, वृ०) ; वणप्फईण (वृ० पा०) ।

३—एगदेसे (अ) ।

- ११२—संतईं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि यं ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि यं ॥
- ११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्ठिईं तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- ११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 कायट्ठिईं तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥
- ११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 विजडंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥
- ११६—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वाउ-पदं

- ११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा वायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
- ११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया ।
 उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य ॥
- ११९—संवट्ठगवाते य ऽण्णेगविहा^१ एवमायओ ।
 एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥
- १२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे^२ य बायरा ।
 इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥
- १२१—संतईं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि यं ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि यं ॥
- १२२—तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
 आउट्ठिईं वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—ऽण्णेगहा (उ, ऋ) ।

२—एगदेसे (अ) ।

१२३—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

कायद्धिं वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विज्जंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा^१ ते पकित्तिया ।

बेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥

बेइन्दिय-पदं

१२७—बेइन्दिया उ^२ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।

पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवांहया ।

वासीमुहा य सिप्पीया^३ संखा संखणगा^४ तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया^५ चेव तहेव य वराडगा ।

जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ बेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।

लोगेगंदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥^६

१३१—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउविहा (ऋ) ।

२—य (अ, ऋ) ।

३—सिप्पीया (आ, इ, ऋ) ।

४—सखलगा (अ) ; संखाणगा (उ) ।

५—गल्लोया^० (आ) ; अल्लोया^० (ऋ) ।

६—इस श्लोक के वाद इतना और है :—

एतो काल विभागं तु तेसिं वुच्चं चउविहं ॥ (उ) ।

- १३२—वासाइं वारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्नियां ॥
- १३३—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
 वेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
- १३४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
 वेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं^२ वियाहियं ॥
- १३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पदं

- १३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
- १३७—कुन्थुपिवील्लिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तथा ।
 तण्हारकट्टहारा मालुगा पत्तहारगा ॥
- १३८—कप्पासऽट्ठिमिजा य तिंदुगा तउसमिजगा ।
 सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥
- १३९—इन्दगोवगमाइया णेगहा एवमायओ ।
 लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥
- १४०—संतइं पप्पऽणाइया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साइया सपज्जवसिया वि य ॥
- १४१—एगूणवण्णऽहोरत्ता^३ उक्कोसेण वियाहिया ।
 तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।

२—^० णं (अ) ।

३—एगूणवण्ण^० (उ, ऋ) ।

१४२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^१ ।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥

१४३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥

१४४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

चउरिन्दिय-पदं

१४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तथा ।
भमरे कीडपयंगे य ठिंकुणे कुंकुणे तथा ॥

१४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विच्छिए ।
डोले भिंगारी^२ य विरली अच्छिवेहए ॥

१४८—अच्छिले माहए^३ अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए ।

ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगाविय^४ ॥

१४९—इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ-।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥^५

१—जहन्निया (अ) ।

२—सिंगिरीडी (उ, ऋ, स) ।

३—साहिए (अ) ।

४—तवगाविया (उ, ऋ) ।

५—इस श्लोक के पश्चात्-इतना और है :—

एत्तो काल विभागं तु तेसिं वुच्चं चउव्विह ॥ (उ) ।

- १५०—संतइं पप्पण्णाईयां अपज्जवसिया वि य ॥
 ठिइं पडुच्च साईयां सपज्जवसिया वि य ॥
 १५१—‘छच्चेव य’^१ मासा उ उक्कोसेण वियाहियां ।
 चउरिन्दियआउठिई^२ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
 १५२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^३ ।
 चउरिन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥
 १५३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं^४ ।
 ‘विजढंमि सए काए’^५ अन्तरेयं वियाहियं ॥
 १५४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 ‘संठाणादेसओ वावि’^६ विहाणाइं सहस्ससो ॥

पचिन्दिय-पदं

- १५५—पंचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया ।
 नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया ॥

नेरइय-पदं

- १५६—नेरइया सत्तविहा पुंढवीसु सत्तसू भवे ।
 रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया ॥
 १५७—पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा ।
 इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया ॥
 १५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सब्बे उ वियाहिया ।
 एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥

१—छच्चेविउ (अ) ।

२—चउरिन्दिया य आउठिई (अ) ।

३—जहन्निया (अ) ।

४—जहन्निया (अ) ।

५—चउरिन्दियजीवाणं (च) ।

६—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

- १५९—संतइं पप्पण्णाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १६०—सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- १६१—तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ॥
- १६२—सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा ॥
- १६३—दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा ॥
- १६४—सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा ॥
- १६५—बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- १६६—तेत्तीस सागरा^१ ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
- १६७—जा चेव उ आउठिई नेरइयाण वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे ॥
- १६८—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुतं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं ॥
- १६९—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'^२ विहाणाइं सहस्ससो ॥

१—सागराङ्ग (ऋ) ।

२—सठाण भेयओ या वि (अ) ।

तिरिक्खजोणिय-पदं

१७०—पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।

सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ^१ गन्भवक्कन्तिया तथा ॥

१७१—दुविहावि ते भवे तिविहा

जलयरा थलयरा तथा ।

खह्यरा य बोद्धव्वा

तेसि भेए सुणेह मे ॥

१७२—मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तथा ।

सुसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा^२ जलयराहिया ॥

१७३—लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।

एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥

१७४—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।

ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१७५—एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया ।

आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७६—पुव्वकोडीपुहुत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया ।

कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७७—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।

विजडंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं ॥

१७८—‘एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ।

संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥’^३

१— ° तिरिक्खा य (उ) ।

२—पचविहा (अ) ।

३—X (अ, क) ।

- १७९-चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥
- १८०-एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाङ्गोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥
- १८१-भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥
- १८२-लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥
- १८३-संतड पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिडं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १८४-पलिओवमाउ^१ तिण्णिउ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥
- १८५-पलिओवमाउ तिण्णिउ^२ उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- १८६-कायट्ठिई थलयराण अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- १८७-एएसि वण्णओ चेव गंघओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाडं सहस्ससो ॥
- १८८-चम्मे उ लोमपक्खी य तडया समुगपक्खिया ।
विययपक्खी य वोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

१-०५ (उ) ।

२-य (अ) ।

- १८९—लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
 इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥^१
- १९०—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- १९१—पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
 आउट्ठिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्तिया ॥
- १९२—असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ ।
 पुन्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्तिया ॥
- १९३—कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
 कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्तियं ॥
- १९४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 'संठाणादेसओ वावि'^२ विहाणाइं सहस्सओ ॥

मणुय-पद

- १९५—मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तियओ सुण ।
 संमुच्छिमा य मणुया गव्वभवक्कन्तिया तहा ॥

१—श्लोक क्रमाक १८७ से १८९ के स्थान पर निम्न श्लोक है—

विजडमि सए काए थलयराणं तु अत्तरं ।
 चम्मेय लोप पक्खीय तइया समुग पक्खिया ॥
 वित्तपक्खी उ (य) वोधव्वा पक्खिणो उ चउव्विहा ।
 लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (अ, ऋ) ।
 विजडमि सए काए थलयराणं तु अत्तरं ।
 एएसिं वण्णओ चेव गधओ रसफासओ ॥
 संठाण देसओ वावि विहाणाइ सहस्सओ ।
 चम्मे उ लोम पक्खाअ तइया समुग पक्खिया ॥
 विययपक्खी य वोधव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ।
 लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (उ) ।

२—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

- १९६—गब्भवक्कन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया ।
 अकम्मकम्मभूमा य अन्तरदीवया तहा ॥
- १९७—‘पन्नरस तीसइ विहा’^१ भेया अट्टवीसइं ।
 संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥
- १९८—संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहियो ।
 लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि^२ वियाहिया ॥
- १९९—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य ।
 ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २००—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
 आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥
- २०१—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया^३ ।
 पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया^४ ॥
- २०२—कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
 अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥
- २०३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
 ‘संठाणादेसओ वावि’^५ विहाणाइं सहस्ससो ॥

देव-पदं

- २०४—देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तहा ॥
- २०५—दसहा उ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो ।
 पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥

१—तीस पन्नरस विहा (वृ० पा०) ।

२—य (अ) ; × (च) ।

३—तु साहिया (ऋ) ।

४—जहन्नग (अ) ।

५—सठाण भेयओ या वि (अ) ।

२०६-असुरा नागसुवर्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।

दोवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७-पिसायभूय जक्खा य

रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।

महोरगा य गन्धव्वा

अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८-चन्दा मूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।

दिसाविचारिणो^१ चेव पंचहा^२ जोइसालया ॥

२०९-वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।

कप्पोवगा य वोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०-कप्पोवगा वारसहा सोहम्मोसाणगा तहा ।

सणकुमारमाहिन्दा वन्धलोगा य लन्तगा ॥

२११-महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।

आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२-कप्पाईया उ^३ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।

गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तर्हि^४ ॥

२१३-हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।

हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४-मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।

उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१-ठिया^० (आ, उ, ऋ) ।

२-पंचविहा (ल) ।

३-य (ऋ) ।

४-तहा (ऋ) ।

- २१५-उवरिमाउवरिमा चैव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य^१ जयन्ता अपराजिया ॥
- २१६-सव्वट्टसिद्धगा^२ चैव पंचहाणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा^३ नेगहा एवमायओ ॥
- २१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसि चउव्विहं ॥
- २१८-संतइं पप्पाणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिईं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
- २१९-साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२०-पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥
- २२१-पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्टभागो जोइसेसु जहन्तिया ॥
- २२२-दो चैव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया^४ ।
सोहम्ममि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥
- २२३-सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया^५ ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥
- २२४-सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१-× (अ) ।

२-^० सिद्धिगा (अ) ।

३-एष (उ, क) ।

४-ठिई भवे (आ, स) ।

५-ठिई भवे (आ, स) ।

- २२५-साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे ।
 माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्नि सागरा ॥
- २२६-दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥
- २२७-चउद्दस^१ सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥
- २२८-सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 महासुक्के जहन्नेणं चउद्दस सागरोवमा ॥
- २२९-अट्टारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥
- २३०-सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आणयम्मि जहन्नेणं अट्टारस सागरोवमा ॥
- २३१-वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥
- २३२-सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
 आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥
- २३३-बावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कवीसई ॥
- २३४-तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 पढमम्मि जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥
- २३५-चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 बिइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥
- २३६-पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
 तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥

- २३७—छव्वीस सागराई उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥
- २३८—सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥
- २३९—सागरा अट्टवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥
- २४०—सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्टवीसई ॥
- २४१—तीसं तु सागराई उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥
- २४२—सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥
- २४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसुं पि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कतीसई^१ ॥
- २४४—अजहन्नमणुक्कोसा^२ तेत्तीसं सागरोवमा ।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
- २४५—जा चव उ^३ आउठिई देवाणं तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया^४ भवे ॥
- २४६—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजडंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥^५

१—जहन्ना इक्कतीसई (उ, ऋ) ।

२—^० मणुक्कोसं (अ, ऋ) ।

३—य (अ) ।

४—जहन्नमु^० (ऋ. ड०) ।

५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं :-

अणत्तकालमुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नयं ।

आणयादीण-क्कप्पाणं गेविज्जाणं तु अन्तरं ॥

सस्सिज्जसागरक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नयं ।

अणुत्तराण देवाणं अन्तरं तु वियाहियं ॥ (उ) ।

२४७—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।

‘संठाणादेसओवावि’^१ विहाणाइं सहस्सओ ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया ।

रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्वहिञ्जण य ।

सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥^२

सलेहणा-पदं

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया ।

इमेण कमजोगेण अप्पाणं सल्लिहे मुणी ॥

२५१—बारसेव उ वासाइं

सल्लेहुक्कोसिया^३ भवे ।

संवच्छरं मज्झिमिया^४

छम्मासा^५ य जहन्तिया^६ ॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं^७ करे ।

बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्ठु संवच्छरे दुवे ।

तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥

१—संठाण मेयओ या वि (अ) ।

२—श्लोक क्रमाक २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि मे निम्न दो श्लोक हैं :—

जीवमजीवे एते णच्चा सद्वहिञ्जण य ।

सव्वन्नसमत्तमी जएज्जा सजमे विदू ॥

पसत्थसज्झाणीवणए कालं किच्चा ण सजए ।

सिद्धे वा सासए भवत्ति देवे वावि महद्धिदए ॥

३—सल्लेहुक्कोसतो (बृ० पा०) ।

४—मज्झिमतो (बृ० पा०) , मज्झिमिया (ऋ) ।

५—छम्मासे (अ) ।

६—जहन्ततो (बृ० पा०) ।

७—वित्ति^० (बृ०) , विगई^० (बृ० पा०) ।

२५४—‘तओ संवच्छरद्धं तु विगिद्धं तु तवं चरे ।

परिमियं चैव आयामं तंमि संवच्छरे करे ॥’^१

२५५—कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी ।

‘मासद्धमासिएणं तु आहारेण’ तवं चरे ॥

२५६—कन्दप्पमाभिओगं^३

किन्बिसियं मोहमासुरत्त च ।

एयाओ

दुग्गईओ

मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥

भावणा-पद

२५७—मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा ।

इय जे मरन्ति जीवा तेसि पुण दुल्ला बोही ॥

२५८—सम्मदंसणरत्ता

अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

सुल्ला तेसि भवे वोही ॥

२५९—मिच्छादंसणरत्ता

सनियाणा कण्हेलेसमोगाढा ।

इय जे मरन्ति जीवा

तेसि पुण दुल्ला बोही ॥

१—परिमियं चैव आयामं गुणुक्कस्स मुणी चरे ।

तत्तो संवच्छरद्धणं विगिद्धं तु तवं चरे ॥ (वृ० पा०) ।

२—समणेरणं (वृ० पा०) ।

३—कन्दप्पमाभिओगं च (अ) ।

२६०—जिणवयणे

अणुरत्ता

अमला

जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।

असंकिलिद्धा

ते होन्ति परित्तसंसारी ॥

२६१—बालमरणाणि

बहुसो

अकाममरणाणि चेव य बहूणि^१।मरिहन्ति^२

ते

वराया

जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥

२६२—बहुआगमविन्ताणा

समाहिउप्पायगा^३ य गुणगाही ।

एएण

कारणेणं

अरिहा आलोयणं सोउं ॥

२६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइं^४

तह

सीलसहावहासविगहार्हि^५ ।

विम्हावेन्तो

य

परं

कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥

२६४—मन्ताजोगं^६

काउं

भूईकम्मं च जे पउंजन्ति ।

सायरसइडिढहेउं

अभिओगं भावणं कुणइ ॥

१—बहुयाणि (इ, उ, ऋ, स) ।

२—मरहन्ति (उ) ; मरिहन्ति (ऋ) ।

३—^० सुपायगा (अ) ।४—^० कोक्कुयाइ (वु०, सु०) ।५—^० हसण (वु०, सु०) ।

६—मन्तं (अ) ।

- २६५—नाणस्स केवलीणं
धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई
किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥
- २६६—अणुबद्धरोसपसरो
तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि
आसुरियं भावणं कुणइ ॥
- २६७—सत्थग्गहणं विसभक्खणं च
जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा
जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥
निकखेव-पदं
- २६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए^१ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

परिशिष्ट-१
दसवेआलिय शब्दसूची

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरों को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशाचिह्न (ढैश) के बाद हैं ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ	उ	अउल	उ	४३
अ	१६(४)	१	६(३)	१५
अइउक्त	५(२)	४२	अओमय	६(३)
अइक्रमित्तु	५(२)	११	अंकुस	२
अइक्रम	५(२)	२५		१ चू० सू० १
अइद्वर	५(१)	२३	अंग	८
अइभूमि	५(१)	२४		१ चू० १५
अइयार	५(१)	८६	अंगुलिया	४ सू० १८
अइलाम	६(३)	५	अंजण	३ ६
अइवत्त *				५(१) ३३
-अइवत्तए	६(२)	१६	अंजली	६(२) १७
अइवाय *			अंड	८ १५
-अइवाएज्जा	४ सू० ११		अंडय	४ सू० ६
-अइवायावेज्जा	४ सू० ११		अंतरा	८ ४६
अइवायत *			अंतलिक्ख	७ ५३
-अइवायते	४ सू० ११		अतिय	८ ४५
अइहील *				६(१) १२
-अइहीलेज्जा	५(१) ६६		अंघगवण्ह	२ ८
अईअ	७ ८ से १०			

१—शब्द के सामने दी हुई पहली सख्या अध्ययन और अध्ययन-सख्या के बाद कोष्ठगत सख्या उद्देश्य का द्योतन करती है । वाद की सख्या श्लोक की द्योतक है । 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है । 'चू०' चुलिका का संकेत है ।

अंब	७	३३
अंबिल	५(१)	६७
अक्कास	७	३
अकप्प	५(१)	४४
अकप्पिय	५(१)	२७, ४१, ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४
	५(२)	१५, १७
	६	४७
अकाम	५(१)	८०
अकाल	५(२)	४, ५
अकिचण	६	६८
	८	६३
अकित्ति	१ चू०	१३
अकेज्ज	७	४५
अकोउहल्ल	६(३)	१०
	१०	१३
अकोविय	६(२)	२२
अक्कम*		
-अक्कमे	५(१)	७
अक्कुट्ठ	१०	१३
अक्कुहअ	६(३)	१०
अक्कोस	१०	११
अक्खाउं	८	२०
अक्खाय	४	सू० १ से ८
	६(४)	सू० १

अक्खोड*

-अक्खोडेज्जा	४	सू० १६
अक्खोडत	४	सू० १६
अखडफुडिय	६	६
अगंघण	२	६
अगणि	४	सू० २०
	८	२, ८
	१०	२
अगारि	६	५७
अगाह	७	३६
अगिद्ध	१०	१६
अगुण	५(२)	४४
	६(३)	११
अगुणप्पेहि	५(२)	४१
अगुत्ति	६	५८
अग्ग	५(१)	२
	६(१)	८, ९
अग्गवीय	४	सू० ८
अग्गला	५(२)	६
	७	२७
अग्गि	६(३)	१
	१ चू०	१२
अचक्खुविसअ	५(१)	२०
अचक्खुस	६	२७, ३०
		४१, ४४
अचवल	८	२६

अचित्त	५(१)	८१, ८६
	६	१३
अचित्तमत	४	सू० १३, १५
अचित्त (दि०)	५(१)	१७
	७	४३
अचवविल	५(१)	७८, ७९
अचि	४	सू० २०
	८	८
अचिमालि	६(१)	१४
अच्छणजोय	८	३
अच्छद	२	२
अच्छि	८	२०
अजय	४	१ से ६
अजाइया	५(१)	१८
	६	१३
अजाण	६	६
	८	३१
अजीव	४	१२ से १४
	५(१)	७७
अज्ज (आर्य)	६	५३
अज्ज (अद्य)	१ चू०	६
अज्जपय	१०	२०
अज्जय	७	१८
अज्जव	६	६७
अज्जवभाव	८	३८
अज्जिया	७	१५

अज्जप्परय	१०	१५
अज्जयण	४	सू० १ से ३
अज्जाइयव्व	६(४)	सू० ५
अज्जोयर	५(१)	५५
अट्ट (अर्थ)	३	४, १३
	४	सू० १७
	५(१)	३०, ४०, ४७,
		४६, ५१, ५३,
		५६, ६५, ६७,
		७८, ८४, ८७
	६	११, १६, ३४
		५२, ५५, ६३
	७	४, ७, ८, १३,
		४०, ४६
	८	४२, ५१
	६(२)	१३
	६(३)	२, ४
	६(४)	सू० ६, ७
	१०	८
अट्ठ (अष्ट)	६	७
	८	१३, १४
अट्ठम	८	१५
अट्ठया	६(४)	सू० ६
अट्ठारस	१ चू०	सू० १
अट्ठारसम	१ चू०	सू० १
अट्ठावय	४	३

अट्ठिय	५(१)	८४
अट्ठियप्प	२	६
अणंतनाण	६(१)	११
अणंतहियकामय	६(२)	१६
अणगारिया	४	१८, १९
अणज्ज	१ चू०	१
अणभिज्झमय	१ चू०	१४
अणलस	८	४२
अणवज्ज	७	३, ४६
	१ चू०	सू० १
अणाइण्ण(न्न)	३	१, १०
	७	२
अणाउल	५(१)	१३
अणागय	७	८, ९
	२ चू०	१३
अणाबाह	६(१)	१०
अणायण	५(१)	१०
अणायरिय	६	५३
अणायार	६	५६
	८	३२
अणासा	६(३)	६
अणिएयवास	२ चू०	५
अणिगहीय	८	३९
अणिन्न	८	५८
	१ चू०	सू० १
अणिमिस	५(१)	७३

अणिस्सिय	७	५७
अणिह	१०	१३
अणु	४ सू०	१३, १५
अणुगय	६	६८
अणुगय	८	२८
अणुग्गह	५(१)	६४
अणुचिट्ठ *		
-अणुचिट्ठई	५(२)	३०
अणुजाण *		
-अणुजाणति	६	१४
अणुत्तर	४	१६, २०
	८	४२
	६(१)	१६, १७
अणुदिसा	६	३३
अणुन्तय	५(१)	१३
अणुन्तविय	५(१)	१६
अणुन्तवेत्तु	५(१)	८३
अणुपाल *		
-अणुपालए	६	४६
-अणुपालेज्जा	८	६०
अणुपासमाण	२ चू०	१३
अणुप्पत्त	३	१५
अणुफास	६	१८
अणुबंधि	६(३)	७
अणुमाय	५(२)	४९
	८	२४
अणुमोयणी	७	५४

दसवेआलिय अब्द-सूची

५

अणुविग	५(१)	२,६०
	८	४८
अणुवीइ	७	४४,५५
अणुसास *		
-अणुसासयंति	६(१)	१३
अणुसासण	६(४)	२
अणुसासिज्जत	६(४)	सू० ४
अणुसोय	२ चू०	२,३
अणुस्तिन्न	५(२)	२१
अणेग	४	सू० ४ से ६
	५(२)	४३
	६(१)	१७
अणोहाइय	१ चू०	मू० १
अत्तिणिण	८	२६
	६(४)	५
अत्त	४	मू० १७
	८	३०
	१०	५,१८
अत्तकम्म	५(२)	३६
अत्तगवेसि	८	५६
अत्तट्ठागुरुअ	५(२)	३२
अत्तव	८	४८
अत्तसपग्गहिअ	६(४)	सू० ४
अत्थ (अर्य)	१०	१५
	२ चू०	११
अत्थ (अन्न)	३	१४

अत्थंगय	८	२८
अत्थविणिच्छय	८	४३
अत्थसंजुत्त	५(२)	४३
अत्थिय	५(१)	७३
अदिट्ठवम्म	६(२)	२३
अदिन्न	४	सू० १३
अदिन्नादाण	४	सू० १३
अदीण	५(२)	२६
अदीणवित्ति	६(३)	१०
अटु	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
अटुटु	७	५५
अटुव	५	१५
	६	२,६, २३
	८	१२
अटुवा	५(१)	७५
	६	६३
	८	१७
अदेत	५(२)	२८
अवुव	८	३४
अनियाण	१०	१३
अनिल	६	३६
	१०	३
अनिव्वाण	५(२)	३८
अनिव्वुड	३	७
	५(२)	१८

अन्न (अन्यत्) ४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३	अपावमान	८	६३
		अपासंत	६	२३
५(१)	६, ७१, ८०, ८४, ९७	अपि	२	४
५(२)	१४, १६, १८, ३६	अपिसुण	६(३)	१०
६	११, १४	अपुच्छिय	८	४६
७	४, १३	अपुष्ट	८	२२
८	५१	अपुणागम	१०	२१
१०	१८	अपूझ	१ चू०	४
अन्न (दे०) ७	१६	अप्य (आत्मन्) ४	मू० १० से १६, सू० १८ से २३	
अन्नत्य ४	सू० ४ से ८		४	६
६	५		५(१)	१८, ८०
६(४) सू० ६, ७			५(२)	५, ३६
अन्नयर ४	सू० २३		६	१३, १४, २१, ६७
६	७, १८, ३२		८	७, ६, ३१, ३४, ३६, ५६, ६१
अन्नयराग ६	५६		६(१)	१५
अन्ना (दे०) ७	१६		६(२)	३, ५, ७, १०
अन्नाणि ४	१०		६(३)	५
अन्नायउच्छ ६(३)	४		६(४)	१, ६
१०	१६		१०	१५
२ चू०	५		१ चू०	१७
अन्नेसमाण ५(२)	३०		२ चू०	२, १३, १६
अपडिलेहाए ६	५५			
अपरिसाड्य ५(१)	६६			

दसवेआलिय गब्द-सूची

.७

अप्य (अल्प)	४	सू० १३, १५
	५(१)	७४, ६६
	६	१३
	२ चू०	५
अप्पग	६(३)	११
	२ चू०	१२
अप्पगघ	७	४६
अप्पण	६	११
	६(२)	१३
अप्पतेय	१ चू०	१२
अप्पत्तिय (दि०)	५(२)	१२
	८	४७
अप्पभासि	८	२६
अप्पभूय	४	६
अप्पमत्त	८	१६
	६(१)	१७
अप्पय	१	२
	१०	१४
अप्परय	६(४)	७
अप्पसन्न	६(१)	५, ७, १०
अप्पसुय	६(१)	२
अप्पहिट्ठ	५(१)	१३
अप्पिच्छ	८	२५
अप्पिच्छया	६(३)	५
अप्पियकारिणी	६(३)	६
अफासुय	८	२३

अवंमचरिय	६	१५
अवोहि	४	२०, २१
	६(१)	५, १०
अवोहिय	६	५६
अव्म	८	६३
	६(१)	१५
अविमंतर	४	१७, १८
अभिकंख *		
-अभिकंखई	१०	१२
-अभिकंखे	१०	१७
अभिकखमाण	६(३)	२
अभिकंखि	६(१)	१०
अभिककत	४	सू० ६
अभिकखणं	५(१)	१०
	२ चू०	७
अभिगच्छ *		
-अभिगच्छई	४	२१, २२
	६(२)	२
-अभिगच्छेज्जा	५(१)	१४
-अभिगच्छइ	६(२)	२१
अभिगम		
(अभिगम) ६(३)		१५
अभिगम		
(अभिगम्य) ६(४)		६
अभिगिज्झ	७	१७, २०
अभिघाय	६(३)	८

अभितोस *		
-अभितोसएज्जा	६(३)	५
अभिघार *		
-अभिघारए	५(२)	२५
अभिनिवेस *		
-अभिनिवेसए	८	२६, ५८
अभिभूय		
(अभिभूत)	६	५६
अभिभूय		
(अभिभूय)	१०	१४
अभिमुह	६(१)	१०
अभिराम *		
-अभिरामयंति	६(४)	१
अभिवायण	२ चू०	६
अभिसित्त	६(१)	११
अभिहृड	३	२
अभूडभाव	६(१)	१
अभोज्ज	६	४६
अमच्छरि	२ चू०	७
अमज्जमंसासि	२ चू०	७
अमम	६	६८
	८	६३
अमर	१ चू०	११
अमाइ	६(३)	१०
अमाणिम	१ चू०	५
अमुग	७	६

अमुच्छिद्य	५(१)	१
	५(२)	२६
	१०	१६
अमुय	७	५०
अमूढ	१०	७
अमोह	८	३३
अमोहदसि	६	६७
अम्मा	७	१५
अम्ह	१	४
अयपिर	५(१)	२३
	८	२३, ४८
अयस	५(२)	३८
	१ चू०	१३
अयाणंत	४	१२
अरइ	८	२७
	१ चू०	सू० १
अरक्खिय	२ चू०	१६
अरय	१ चू०	१०, ११
अरस	५(१)	६८
अरिह	८	२०
अरोगि	६	६०
अलं	५(१)	७८, ७९
	७	२७
	८	६१
अलंकार	२	२
अलद्धयं	६(३)	४

दसवेआलिय शब्द-सूची

अलाम	५(२)	६
	८	२२
अलाय	४	सू० २०
	८	८
अलोग	४	२२, २३
अलोल	१०	१७
अलोलुअ	६(३)	१०
अल्लिण	८	४०, ४४
अवंदिम	१ चू०	३
अवक्कम *		
(अप + क्रम)		
-अवक्कमे	५(१)	८५
अवक्कम *		
(अप + क्रम)		
-अवक्कमेज्जा	६(१)	६
अवक्कमिन्ता	५(१)	८१, ८६
	५(२)	११
	८	६३
अवगम	७	५७
अवगय	८	६३
	६(३)	१४
	१०	१६
	५(१)	१३
अवणय		
अवणी *	४ ; सू०	२३
-अवणेज्जा	६(३)	६
अवण्णवाय	७	२, ४३
अवत्तव्व		

४६

अवपंगुर *

-अवपंगुरे	५(१)	१८
अवरज्ज *		
-अवरज्जई	६	७
अवररत्त	२ चू०	१२
अवराह	६(२)	१८
अवलंविया	५(२)	६
अवलोय *		
-अवलोयए	५(१)	२३
अवह	६	५७
अवाउड	३	१२
अवि	१	१
अविक्किय	७	४३
अविणीय	६(२)	३, ५, ७, १०,
		२१
		१२
अविस्सास	६	१०
अविहेडअ	१०	
अवे *		
-अवेस्सइ	१ चू०	१६
-अविस्सइ	१ चू०	१६
अवेयइत्ता	१ चू०	सू० १
अव्वक्खित्त	५(१)	२, ६०.
अव्वहिय	८	२७
अस *		
-सति	१	३
	६	२३, ६१
	२	८
-होमो		

-અમિ	૪	સૂં ૧૧	સે ૧૬	અસળ	૬	૪૬,૫૦
-અત્થિ	૫(૨)	૨૭			૧૦	૮,૬
	૭	૪૩		અસત્થપરિણય	૫(૨)	૨૩
	૬(૧)	૧૦		અસન્નભવયણ	૬(૨)	૮
	૧૦	૭		અસાવજ્જ	૫(૧)	૬૨
	૧ ચૂં	સૂં ૧		અસાસય	૧૦	૨૧
અસહ	૧૦	૧૩			૧ ચૂં	૧૬
અસંકિલિટ્ઠ	૨ ચૂં	૬		અસાહુ	૭	૪૮
અસંજમ	૫(૧)	૨૬, ૬૬			૬(૩)	૧૧
	૬	૫૧		અસાહુયા	૫(૨)	૩૮
	૧ ચૂં	૧૪		અસિણાણ	૬	૬૨
અસંજય	૭	૪૭		અસુહ	૧૦	૨૧
અસંથહ	૭	૩૩		અસુહ્ય	૫(૧)	૬૮
અસદિદ્ધ	૭	૩		અસ્સિય	૫(૧)	૧૧
	૮	૪૮		અહ	૪	સૂં ૧૧ સે ૧૬
અસંવદ્ધ	૮	૨૪			૫(૧)	૭૭, ૬૬
અસંભત	૫(૧)	૧		અહણ	૧૦	૬
અસવિભાગિ	૬(૨)	૨૨		અહમ્મ	૬	૧૬
અસંસટ્ઠ	૫(૧)	૩૪, ૩૫		અહમ્મસેવિ	૧ ચૂં	૧૩
અસંસત્ત	૫(૧)	૨૩		અહર	૧ ચૂં	સૂં ૧
	૮	૩૨		અહાગહ	૧	૪
અસન્નમોસા	૭	૩		અહિસા	૧	૧
અસજ્જમાણ	૨ ચૂં	૧૦			૬	૮
અસળ	૪	સૂં ૧૬		અહિગરણ	૮	૫૦
	૫(૧)	૪૭, ૪૬, ૫૧, ૫૩, ૫૭, ૫૯, ૬૧		અહિજ્જગ	૮	૪૬

दसवेआलिय शब्द-सूची

अहिज्जिउं	४	सू० १ से ३
अहिज्जिता	६(४)	३
अहिट्ट ^४		
-अहिट्टए	८	६१
	६(४)	२
-अहिट्टेज्जा	६(४)	सू० ६, ७
-अहिट्टिज्जासि	१ चू०	१८
अहिट्ठग	६	५४, ६२
अहिय (अहित)	६(१)	४
अहिय (अधिक)	२ चू०	१०
अहियगामिणी	८	४७
अहियास *		
-अहियासए	५(२)	६
	८	२६
-अहियासे	८	२७
अहुणाघोय	५(१)	७५
अहुणोवलित्त	५(१)	२१
अहे	६	३३
अहो	५(१)	६२
	६	२२
आ		
आ	१ चू०	६
आइ	६	४६
	७	७

आइक्ख *

-आइक्खइ	६	३
-आइक्खेज्ज	८	१४
-आइक्खे	८	५०
आइच्च	८	२८
आइद्ध	२	६
आइण्ण	२ चू०	६
आइन्नअ	२ चू०	१४
आउ (अप्)	४	सू० ५
आउ (आयुस्)	८	३४
आउकाइय	४	सू० ३
आउकाय	६	२६ से ३१
आउरस्सरण	३	६
आउल्लग	४	२६
आउस	४	सू० १
	६(४)	सू० १
आगअ	५(१)	८८
आगइ	४	सू० ६
आगम	६	१
	७	११
आगमण	५(१)	८६
आगम्म	५(१)	८६
आगाहइत्ता	५(१)	३१
आघाअ	६	३४
आजीववित्तिया	३	६

आणव *

-आणवेइ	२ चू०	११
आणा	१०	१
आणुपुव्वी	८	१
आणुलोमिआ	७	५६
आभिओग	६(२)	५, १०
आभोएत्ताण	५(१)	८६
आम	५(१)	७०
	५(२)	२३

आमग	३	७, ८
	५(१)	७०
	५(२)	१६, २१, २२, २४
	८	१०
आमिया	५(२)	२०

आमुस *

-आमुसेज्जा	४	सू० १६
-आमुसावेज्जा	४	सू० १६
आमुसंत	४	सू० १६
आय	१ चू०	१८
आयइ	१ चू०	१
आयंक	१ चू०	सू० १
आयय	६(४)	५
आययट्टि	५(२)	३४
आययट्टिय	६(४)	२
आययण	६	१५

आयर *

-आयरंति	६	१५, २१, ६३
आयरिय	५(२)	४०, ४५
	८	३३, ६०
	६(१)	४, ५, १०,
		११, १४, १६,
		१७
	६(२)	१२, १६
	६(३)	१

आया *

-आयए	५(२)	३१
आयाण	५(१)	२६
आयाय	५(१)	८८
आयार	६	५०, ६०
	६(३)	२
	६(४)	१
	६(४)	सू० ७
	२ चू०	४
	७	१३
	८	४६
आयारगोयर	६	२, ४
आयारपणिहि	८	
	८	१
आयारभावतेण	५(२)	४६
आयारमंत	६(१)	३
आयारसमाहि	६(४)	सू० ३, ७
	६(४)	५

आयाव *		
-आर्यावयाही	२	५
-आयावयंति	३	१२
-आयावेज्जा	४	सू० १६
आयावत	४	सू० १६
आयावयट्ठ	५(२)	२
आरंभ *		
-आरभे	६	३४
आरन्धिय	५(१)	१६
आरहंत	६(४)	सू० ७
आराह *		
-आराहेइ	५(२)	३६, ४०, ४५
-आराहए	७	५७
	६(१)	१६
-आराहयइ	६(३)	१
	६(४)	सू० ४
आराहइत्ताण	६(१)	१७
आरुह *		
-आरुहे	५(१)	६७
आलव *		
-आलवे	७	१६, १६, २१, २३, ३५, ४२, ४८, ५३
-आलवेज्ज	७	१७, २०
आलिह *		
-आलिहेज्जा	४	सू० १८

-आलिहावेज्जा	४	सू० १८
आलिहंत	४	सू० १८
आलोइय		
(आलोचित)	५(१)	६१
आलोइय		
(आलोकित)	६(३)	१
आलोअ *		
-आलोए	५(१)	६०, ६६
आलोय	५(१)	१५
	५(१)	६६
आवगा	७	३६, ३७, ३६
आवज्ज *		
-आवज्जेज्जा	४	सू० २३
आवज्जइ	६	५६
आवण	५(१)-	७१
आविअ *		
-आवियइ	१	२
आवील *		
-आवीलेज्जा	४	सू० १६
-आवीलावेज्जा	४	सू० १६
आवीलंत	४	सू० १६
आवेउं	२	७
आस *		
-आसे	४	७
आसं	७	४७
	८	१३
आसइत्तु	६	५४

आसंदी	३	५
	६	५३ से ५५
आसण	५(२)	२८
	७	२९
	८	५, १७, ५१
	९(२)	१७
	९(३)	५
	२ चू०	८
आसमाण	४	३
आसय	५(१)	८५
आसव	३	११
	१०	५
	४	९
	२ चू०	३
आसा	९(३)	६
आसाअ ^३		
-आसायए	९(१)	४
-आसाययई	९(३)	२
आसाइत्ताण	५(१)	७७
आसायण	५(१)	७८
आसायणा	९(१)	२, ५, ६
	८	१०
आसालय	६	५३
आसोविस	९(१)	५ से ७
आसु	८	४७
आसुरत्त	८	२५

आहड	५(१)	५५
	६	४८, ४९
	८	२३
आहम्मिय	८	३१
आहर *		
-आहरे	५(१)	२७, ३१, ४२
	५(२)	३३
-आहारए	१०	३
आहार	६	२५, ४६
आहारमइय	८	२८
आहारंत	५(१)	२८
आहियग्नि	९(१)	११
	९(३)	१
आहुइ	९(१)	११
इ		
इ	१	४
	३	१४
	५(१)	९५, ९६
इ *		
-एहि	७	४७
इइ	२	४
इंगाल(अङ्गार)	४	सू० २०
	८	८
इंगाल(आङ्गार)	५(१)	७
इंगिय	९(३)	१

इंद	६(१)	१४
	१ चू०	२
इदिय	५(१)	१३, २६, ६६
	८	१६, ३५
	१०	१५
	१ चू०	१७
	२ चू०	१६
इच्छ "		
-इच्छसि	२	७
-इच्छेज्जा	५(१)	२७, ३५, ३७, ८२, ८७, ६५, ६६
	६	४७
-इच्छति	६	१०, १७, ३२, ३७
-इच्छे	६(१)	८
इच्छत	८	३६
इच्छा	५(२)	२७
इट्टाल(दि०)	५(१)	६५
इडिह	६(२)	६, ६, ११, २२
	१०	१७
इति	२	२
इत्तरिय	१ चू०	सू० १
इत्थ	३	१४
	६(४)	सू० ४ से ७
	१ चू०	सू० १

इत्थंथ	६(४)	७
इत्थी	२	२
	५(२)	२६
	७	१६, १७, २१
	८	५१, ५३, ५६, ५७
	६(३)	१२
	१०	१
इत्थीओ	६	५८
इम	४	सू० ३
इमेरिस	६	५६
इरियानहिया	५(१)	८८
इव	६(२)	१२
इसि	६	४६
	२ चू०	५
इह	४	सू० १
इहलोग	८	४३
	६(२)	१३
	६(४)	सू० ६, ७
ई		
ई	५(१)	४५
	८	१०, २१

उ		
उ	४	१
उईर *		
-उईरंति	६	३८
उउ	६	६८
उछ	८	२३
	१०	१७
उंज *		
-उंजेज्जा	४	सू० २०
	८	८
-उंजावेज्जा	४	सू० २०
उंजंत	४	सू० २०
उंडा (दि०)	४	सू० २३
उंडुय (दि०)	५(१)	८७
उककट्ट	५(१)	३४
उक्का	४	सू० २०
उक्किट्ट	१	१
	४	१६, २०
उक्खिवित्तु	५(१)	८५
उग्गम	५(१)	५६
उच्चार	८	१८
उच्चार-भूमि	८	१७, ५१
उच्चावय	५(१)	१४, ७५
	५(२)	७, २५
उच्छह	६(३)	६

उच्छुखण्ड	३	७
	५(१)	७३
	५(२)	१८
उच्छोलणा	४	२६
उज्जाण	६	१
	७	२६, ३०
उज्जाल *		
-उज्जालेजा	४	सू० २०
-उज्जालावेज्जा	४	सू० २०
उज्जालंत	४	सू० २०
उज्जालिया	५(१)	६३
उज्जुदंसि	३	११
उज्जुप्पन्त	५(१)	६०
उज्जुमइ	४	२७
उट्ट *		
-उट्टए	५(१)	४०
उट्टिअ	५(१)	४०
उट्टह	६	३३
उट्टिदय	१ चू०	१२
उण्ह	७	५१
	८	२७
उत्तम	८	६०
	६(२)	२३
	१ चू०	११
उत्तर	५(२)	३
उत्तरओ	६	३३
उत्तार	२ चू०	३

दसवेआलिय शब्द-सूची

उत्तिग	५(१)	५६
	८	११, १५
उद + उल्ल	६	२४
	८	७
उदओल्ल	४	सू० १६
	५(१)	३३
उदग	४	सू० १६
	५(१)	३०, ५८, ७५
	८	११
उदगदोणी	७	२७
उदर	४	सू० २३
उदाहर *		
-उदाहरिस्सामि	८	१
उद्देसिय	३	२
	५(१)	५५
	६	४८, ४९
	८	२३
	१०	४
उन्नय	७	५२
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जए	२ चू०	१
उप्पण्ण	५(१)	६६
	५(२)	३
	१ चू०	सू० १
उप्पल	५(२)	१४, १६, १८
उप्पिलाव *		
-उप्पिलावए	६	६१

उप्पिलोदगा	७	३६
उप्पेहि	१ चू०	सू० १
उप्पुल्ल	५(१)	२३
उन्मिदिया	५(१)	४६
उन्मिय	४	सू० ६
उन्मेइय	६	१७
उभय	४	११
	५(२)	१२
उम्मीस	५(१)	५७
उयर	८	२६
उल्ल	५(१)	२१, ६८
उल्लंघिया	५(१)	२२
उवइट्ठ	६(३)	२
उवगय	६(१)	११
उवगरण	४	सू० २३
उवघाइणी	७	११, २६, ५४
उवचिट्ठ *		
-उवचिट्ठएज्जा	६(१)	११
उवचिय	७	२३
उवज्झाय	६(२)	१२
उवट्ठाइ	१ चू०	सू० १
उवट्ठिय	४	सू० ११ से १६
	६(२)	५, १०
उवणीय	१ चू०	१५
उवन्नत्थ	५(१)	३६
उवभोग	६(२)	१३

૧૮

ઉવમા	૬(૧)	૬,૮
	૧ ચૂં	૧૧
ઉવયાર	૬(૨)	૨૦
ઉવરઅ	૮	૧૨
ઉવવજ્ઞ	૬(૨)	૫,૬
ઉવવન્ન	૫(૨)	૪૭
ઉવવાઇય	૪	સૂં ૬
ઉવવાય *		
-ઉવવાયણ	૮	૩૩
ઉવવેય	૬(૧)	૩
ઉવસંકમ *		
-ઉવસંકમેજ્ઞ	૫(૨)	૧૩
ઉવસંકમંત	૫(૨)	૧૦
ઉવસંત	૬	૬૪,૬૮
	૧૦	૧૦
ઉવસંપજ્ઞિતાણં	૪	સૂં ૧૭
ઉવસંપયા	૧ ચૂં	સૂં ૧
ઉવસમ	૮	૩૮
ઉવસ્સઅ	૭	૨૬
ઉવહણ *		
-ઉવહમ્મઈ	૧	૪
	૭	૧૩
ઉવહસ *		
-ઉવહસે	૮	૪૬
વહિ	૬	૨૧

પરિહિ

ઉવહિ	૬(૨)	૧૮
	૧૦	૧૬
	૨ ચૂં	૫
ઉવાય	૮	૨૧
	૬(૨)	૪,૨૦
	૧ ચૂં	૧૮
ઉવે		
-ઉવોત	૬	૬૮
-ઉવેઈ	૧૦	૨૧
	૨ ચૂં	૧૬
ઉવેત	૧ ચૂં	૧૭
ઉવ્વટ્ટણ	૩	૫
	૬	૬૩
	૬(૧)	૧૨
ઉવ્વિગ્ગ	૫(૨)	૩૬
ઉસિણ	૬	૬૨
ઉસિણોદગ	૮	૬
ઉસ્સવિકયા	૫(૧)	૬૩
ઉસ્સવિત્તાણં	૫(૧)	૬૭
ઉસ્સિચિયા	૫(૧)	૬૩
ઉ		
ઉરુ	૪	સૂં ૨૩
	૮	૪૫

दसवेआलिय शब्द-सूची

उत्स	५(१)	३३
उत्सद	५(२)	२५
	७	३५

ए

एक	२ चू०	१०
एकक	५(१)	६६
एग	५(१)	३७
	६(१)	३
एगळ	४	सू० १८ से २३
एगइय	५(२)	३१, ३३, ३७
एगत	४	सू० २३
	५(१)	११, ८१,
		८५, ८६

एगगचित्त

	५(२)	११
	६(४)	सू० ५
	६(४)	३
एकभत्त	६	२२
एगया	५(१)	६५
एज्जत	६(२)	४
एय	१	३
एयारिस	५(१)	६६
एरिस	६	५
	७	४३
	२ चू०	१५

एल्ला	५(१)	२२
एल्लमूयया	५(२)	४८
एव	४	सू० १०
एवं	१	३
एस -		
-ऐसेज्जा	५(२)	२६
एसकाल	७	७
एसणा	१	३
	५(२)	३६, ५०
एसणिय	५(१)	३६, ३८
	६	२३
एहत	६(२)	५ से ७
		६ से १

ओ

ओगास	५(१)	१६
ओग्गह	५(१)	१८
	६	१३
	८	५
ओघ	६(२)	२३
ओमज्जण	१ चू०	सू० १
ओमाण	२ चू०	६
ओयारिया	५(१)	६३
ओवघाइय	८	२१
ओवत्तिया	५(१)	६३

ओववाइय	४	सू० ६
ओवाय	५(१)	४
ओवायव	६(३)	३
ओसक्किया	५(१)	६३
ओसन्न	१ चू०	७
ओसन्नदिट्टाहड	२ चू०	६
ओसहि	७	३४
ओसा (दे०)	४	सू० १६
ओह	६(२)	२३
ओहाण	१ चू०	सू० १
ओहारिणी	७	५४
	६(३)	६
ओहाविअ	१ चू०	२

क

क	१	४
कइ	२ चू०	१४
कटय	५(१)	८४
	६(३)	६, ७
कत	२	३
कंद	३	७
	५(१)	७०
कंस	६	५०
कंसपाय	६	५०
कक्क	६	६३

कक्कस	८	२६
कज्ज	७	३६
कट्ट	८	३१
	१ चू०	१४
कट्ट	४	सू० १८
	५(१)	६५, ८४
	६(२)	३
	१०	४
कड	४	२०, २१
	५(१)	५६, ६१
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१२
कडुय	४	१ से ६
	५(१)	६७
कण्ण	४	सू० २१
	८	२०, २६, ५५
	६(३)	८
कण्णसर	६(३)	६
कत्थइ	५(२)	८
कन्ना	६(३)	१३
कप्प *		
-कप्पइ	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४

-कप्पइ	५(१)	७२, ७४, ७६
	५(२)	१५, १७, २०
-कप्पई	६	५२, ५६, ५६
कप्प	५(१)	४४
कप्पिय	५(१)	२७
	६	४७
कब्बड	१ चू०	५
कम *		
-कमाही	२	५
कम	५(१)	१, ४
कमिय	२	५
कम्म	३	१५
	४	१ से ६
	४	२०, २१, २४,
		२५, २८
	६	६५
	८	१२, ३३, ६३
	६(२)	२३
	१ चू०	सू० १
कम्महेउअ	७	४२
कय (कृत)	५(१)	३४
कय (क्रय)	७	४६
	१०	१६
कयर	४	सू० २
	८	१४
	६(४)	सू० २

कया	७	५१
कयाइ	६	६३
कर *		
-काहिसि	२	६
-काही	४	१०
-कुज्जा	५(१)	६४
	५(२)	६
	८	३३, ५२
	६(१)	५
	६(२)	१७
	२ चू०	८, ९, १३
-करेति	६	६७
	६(१)	२
-करिस्सामि	७	६
-करिस्सई	७	६
-करेहि	७	४७
-करे	८	१६
कर	५(१)	१६, २६
करत	४	सू० १० से १६,
		१८ से २३
करग	४	सू० १६
करण	६	२६, २६,
		४०, ४३
	८	४
करेता	५(१)	६३
करेत्ताणं	३	१४

कलह	५(१)	१२	काम	२	१,५
	२ चू०	५		६	१८
कलुण	६(२)	८		८	५७
कलुस	४	२०, २१		१ चू०	सू० १
कल्लाण	४	११		२ चू०	१०
	५(२)	४३	कामय	५(२)	३५
कल्लाणभाणि	६(१)	१३	काय	४	सू० १० से १६,
कवाड	५(१)	१८			१८ से २३
	५(२)	६		६	२६, २६, ४०
कविट्ट	५(२)	२३			४३
कसाय	५(१)	६७		८	३, ७, ६,
	७	५७			२६, ४४
	८	३६		६(१)	१२
	६(३)	१४		६(२)	१८
	१०	६		१०	५, ७, १४
कसिण	८	३६, ६३		१ चू०	१८
कह	१०	१०		२ चू०	१४
कहं	२	१	कायतिज्ज	७	३८
	४	७, १२	कायव्व	६	६
	६	२, २३, २४		८	१
कहा	५(२)	८	कारण	२	७
	८	५२		५(२)	३
	१०	१०		६(२)	१३, १५
कहि	२ चू०	८		१ चू०	१
काउत्सगकारि	२ चू०	७	कारिय	६	६४
काण	७	१२	काल	५(१)	१

काल	५(२)	४ से ६
	७	८
	६(२)	२०
	२ चू०	१२
कालमासिणी	५(१)	४०
कालालोण	३	८
कासव	४	सू० १ से ३
कासवनालिआ	५(२)	२१
किं	३	१४
	४	१०
	५(२)	४७
	६	६४
	७	५
	६(१)	५
	६(२)	१६
	२ चू०	१२, १३
किंवि	६	३४
	७	२६
किच्च	७	३६
	२ चू०	१२
किच्चा	५(२)	४७
	६(२)	१६
	६(३)	८
किच्चाण	८	४५
कित्त *		
-कित्तइस्सं	५(२)	४३

कित्ति	६(२)	२
	६(४)	सू० ६, ७
किमिच्छय	३	३
किलाम *		
-किलामेइ	१	२
-किलामेसि	५(२)	५
किंलिच (दि०)	४	सू० १८
किलेस	१ चू०	१५
किविण	५(२)	१०
कीड	४	सू० ६, २३
कीय	६	४८, ४९
	८	२३
कीय	६(१)	१
कीयगड	३	२
	५(१)	५५
कीरमाण	७	४०
कील	५(१)	६७
कुंडमोय (दि०)	६	५०
कुंथु	४	सू० ६, २३
कुकुडं	१ चू०	७
कुक्कुड	८	५३
कुक्कुस	५(१)	३४
कुत्तित्ति	१ चू०	७
कुप्प *		
-कुप्पे	५(२)	२७, ३०
	१०	१०

-कुप्पई	६(२)	४	केवल	६(१)	१४
-कुप्पेज्ज	८	४७	केवलि	४	२२, २३
	१०	१८		२ चू०	१
-कुप्पेज्जा	५(२)	२८	कोट्ठअ	५(१)	२१, २२
कुमारिया	५(१)	४२	कोट्ठग	५(१)	२०, ८२
कुमुय	५(२)	१४, १६, १८	कोमुई	६(१)	१५
कुम्म	८	४०	कोल	४ सू०	२२
कुम्मास	५(१)	६८		५(२)	२१
कुल	२	६, ८	कोलचुण्ण	५(१)	७१
	५(१)	१४, १७, २४	कोविय	६(२)	२३
	५(२)	२५	कोह	४ सू०	१२
	२ चू०	८		६	११
कुललओ	८	५३		७	५४
कुविय	६(१)	७, ६		८	३६ से ३६
कुव्व				६(१)	१
-कुव्वइ	५(२)	४२, ४६		६(३)	१२
	६(४)	६			
-कुव्वई	५(२)	३५			
-कुव्वेज्जा	८	२४	ख		
कुसग्ग	१ चू०	सू० १	ख	६(१)	१५
कुसल	६(३)	१५	खति	४	२७
कुसील	६	५८	खंच	६(२)	१
	१०	१८	खघबीय	४ सू०	८
	१ चू०	१२	खंभ	७	२७
कुसीललिग	१०	२०	खण	५(१)	६३
केज्ज	७	४५			

दसवेआलिय गब्द-सूची

खण *		
-खणावण	१०	२
-खणे	१०	२
खत्तिय	६	२
खम *		
-खमेह	६(२)	१८
खलिय	२ चू०	१३
खलीण	२ चू०	१४
खलू	४	सू० १ से ३, ६
	७	१
	६(४)	सू० १ से ७
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१६

खव *		६७
-खवैति	६	१५
खविता	३	२४, २५
खवित्ताणं	४	२३
खवित्तु	६(२)	
खाज *		
-खाणज्जा	८	४६
-खायइ	६(१)	६
खाइम	४	सू० १६
	५(१)	४७, ४८, ५१, ५३, ५७, ५८, ६१
	५(२)	२७
	१०	८, ६

खाणु	५(१)	४
खिस *		२६
-खिसण	८	१२
-खिसणज्जा	६(३)	३१
खिप्प	८	१४
	२ चू०	५
	२	८
खु	६(२)	८
खु	६	६
खुहुग		
खुडियायारकहा	३	२७
खुहा	८	५१
खेम	७	६
	६(४)	१८
खेल	८	

बा		
गज(य)	२	१
	४	सू० १८ से २६
	५(१)	२, २४, ८१
	५(२)	८
	६(२)	३, २३
	२ चू०	७
	४	सू० ६
	४	१४, १५
गड	६(२)	१७

गङ्ग	६(३)	१५	गणि	६	१
	१०	२१		६(१)	१५
	१ चू०	सू० १		१ चू०	६
	१ चू०	१३, १४, २३	गन्मिय	७	३५
गङ्गिआ	७	२८	गमण	५(१)	८६
गङ्गुं	७	२६, ३०	गय	५(१)	१२
गङ्ग	२	२		६(२)	५, ६
	३	२		१ चू०	सू० १
गङ्गग	२	८	गरह *		
गङ्गीर	५(१)	६६	गरहंति	५(२)	४०
गङ्गीर टिजय	६	५५	गरहिय	६	१२
गच्छ *			गरिह *		
गच्छा	४	२४, २५	गरिहसि	५(२)	५
	८	४३	गरिहामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
गच्छई	५(२)	३२			
गच्छंति	५(१)	१००	गल	१ चू०	६
गच्छामो	७	६	गव	७	२५
गच्छावेज्जा	४	सू० २२	गवेस *		
गच्छे	१०	१	गवेमए	५(१)	१
	१ चू०	१४		५(२)	३
गच्छेज्जा	४	सू० २२	गहण	८	११
	५(१)	४.६.२४,	गहिय	५(१)	६०
		६६	गहेऊण	५(१)	८५
	८	२५	गा	७	२४
गच्छंति	४	सू० २२	गाढ	७	४२
गण	६(१)	१५			

गाम	४	सू० १३, १५	गिहि	६	१८
	५(१)	२		८	५०
	२ चू०	८		९(२)	१३
गाम कटअ	१०	११		९(३)	१२
गाय	३	५		१ चू०	सू० १
	६	६३		२ चू०	६
गायाभाग	३	६	गिहिजोग	८	२१
गारख	९(२)	२२		१०	६
गावी (दे०)	५(१)	१२	गिहिभायण	६	५२
गिण्ह			गिहिमत्त	३	३
-गिण्हहि	९(३)	११	गिहिसंथव	८	५२
गिद्ध	८	२३	गुज्झग	९(२)	१०, ११
	१०	१७	गुज्झाणुचरिअ	७	५३
गिम्ह	३	१२	गुण	४	२७
गिरा	७	३, ५, ५२,		५(२)	४१
		५४, ५५		६	६, ६७
	९(१)	१२		७	४९, ५६
गिरि	९(१)	६		८	६०
	१ चू०	१७		९(१)	३, १७
गिलित्ता	१ चू०	६		९(३)	११, १४
गिह	७	२७		९(४)	४
गिहतर निसेज्जा	३	५		१०	१२
गिहत्थ	५(२)	४०, ४५		२ चू०	४, १०
गिहवई	५(१)	१६	गुणओ	२ चू०	१०
गिहवास	१ चू० - सू० १		गुणप्पेहि	५(२)	४४
गिहि	३	६	गुणव	५(२)	५०

गुत्त	८	४०,४४
	१ चू०	१८
गुरु	५(१)	८८,६०
	७	१२
	८	४४,४५
	९(१)	१,२,६,७,
		८,१०,१३
	९(२)	१५,२३
	९(३)	२,१४,१५
गुब्बिणी	५(१)	३६,४०
गूह *		
-गूहे	८	३२
गेण्ह *		
-गेण्ह	७	४५
-गेण्हावए	६	१४
-गेण्हावेज्जा	४	सू० १३
-गेण्हेज्जा	४	सू० १३
-गेण्हंति	६	१४
गेण्हंत	४	सू० १३
गेण्हमाणं	६	१४
गेख्य	५(१)	३४
गोच्छ्रा	४	सू० २३
गोण (दे०)	५(१)	१२
गोत्त	७	१७,२०
गोमय	५(१)	७
गोमि	७	१६

गोमिणी	७	१६
गोयर	५(१)	१४
	५(२)	२
गोयरग्ग	५(१)	१६
	५(२)	८
	६	५६
गोरह्य (दे०)	७	२४
गोल (दे०)	७	१४,१६
गोला (दे०)	७	१६

घ

घट्ट *		
-घट्टावेज्जा	४	सू० १८
-घट्टेज्जा	४	सू० १८
	८	८
घट्ट त	४	सू० १८,२०
घट्टियाण	५(१)	३०
घण	८	६३
घय	५(१)	६७
घसा (दे०)	६	६१
घाय *		
-घायए	६	६
घोर	६	१०,१५,६२,
		६५
	९(२)	१४
	१ चू०	१२

चं		
च	१	४
चङत्ताण	५(२)	४८
चउ	६	४६
	७	१,५७
	८	३६,३६
	९(३)	१४
	९(४)	सू० १ से ७
	१०	६
चउत्थ	४	सू० १४
	६	४७
	९(४)	सू० ४ से ७
चउरिदिय	४	सू० ६
चउम्बिह	९(४)	सू० ४ से ७
चगवेर (दे०)	७	२८
चचल	१ चू०	सू० १
चह	९(२)	३,२२
चदिम	६	६८
	८	६३
चकुगोयर	५(२)	११
चकुस	६	२७,३०, ४१,४४
चय *		
-चए	९(३)	१२
	१०	१७,२१
-चय	२	५

-चयइ	२	३
	४	१७,१८
	९(४)	७
	१ चू०	१
चर *		
-चर	२	८
-चरसि	५(२)	५
-चरे	४	१ ७,८
	५(१)	२,३,१३
	५(२)	६,२५
	६	२३,२४
	८	२३
-चरेज्ज	५(१)	८,९
	२ चू०	६,११
चरंत	५(१)	१०,१५
चरमाण	४	१
चरित्त	२ चू०	६
चरिया	२ चू०	४,५
चलइत्ता	५(१)	३१
चलाचल	५(१)	६५
चाइ	७	२,३
चाउल (दे०)	५(२)	२२
चाउलोदग (दे०)	५(१)	७५
चारु	८	५७
चि	४	सू० ६
	२ चू०	८

६०

वित्त *

-चित्तए ५(१) ६१

-चित्ते ५(१) ६४

चिक्कण ६ ६५

चिट्ट *

-चिट्ट ७ ४७

८ १३

-चिट्टइ ४ १०

-चिट्टे ४ ७

८ १६

-चिट्टेज्ज ५(२) ६१

-चिट्टेज्जा ४ सू० २२

५(१) २६

५(२) ६

८ ११, ४५

-चिट्टावेज्जा ४ सू० २२

चिट्ठंत ४ सू० २२

चिट्ठमाण ४ २

५(१) २७

चिट्ठित्ताण ५(२) ८

चित्त १० १

१ चू० सू० १

चित्तमिति ८ ५४

चित्तमंत ४ सू० ४ से ८,

१३, १५

६ १३

चियत्त (दि०)

चिरं १ चू० १६

चिरकाल १ चू० सू० १

चिराघोषं ५(१) ७६

१ चू० सू० १

चुय १ चू० ३, १३

चुल्लपिउ ७ १८

चूलिया २ चू० १

चे १ चू० १६

चेय ५(१) २, ६०

६ ६६

१ चू० १४

चेल ४ सू० २१

चोह्य ६ २, ४

चोर ७ १२

छ

छ

छद

छंदिय

५(१)

१ चू०

१ चू०

५(१)

१ चू०

१ चू०

७

२ चू०

१ चू०

५(१)

६

१ चू०

४

६

७

३

४

७

१०

५(१)

५६(२)

६(३)

१०

१७, ६५

१६

सू० १

७६

सू० १

३, १३

१८

१

१६

२, ६०

६६

१४

२१

२, ४

१२

११

६, १०

५६

५

३७

२०

१

६

छज्जीवणिया	४	सू० १ से ३
	४	२८
छट्ठ	४	सू० ६, १६, १७
छहु *		
-छहुए	५(१)	८५
	५(२)	१
छहुण	६	५१
छण *		
-छनति	६	५१
छत्त	३	४
छमा	१ चू०	२
छविइय	७	३४
छाय	६(२)	७
छारिय	५(१)	७
छिद *		
-छिदावए	१०	३
-छिदाहि	२	५
-छिदे	१०	३
-छिदेज्जा	८	१०
छिदित्तु	१०	२१
छिन्न	४	सू० २२
	५(१)	७०
	७	४२
छिवाडी (दे०)	५(२)	२०
छू	१ चू०	५
छेय	४	१०, ११

ज		
ज	१	१
जअ	७	५०
जइ (यदि)	२	६
	५(१)	६४, ६५, ६८
	५(२)	२
	६	११, १३
	८	२१
	१ चू०	६
जइ (यति)	२ चू०	६
जओ	७	११
	२ चू०	६
जंतलट्टि	७	२८
जंतु	१ चू०	१५, १६
जक्ख	६(२)	१०, ११
जग (दे०)	५(१)	६८
जग(जगत्)	८	१२
जगनिस्सिय	८	२६
जड़	६	६०
जण *		
-जणंति	६(३)	८
जण	२ चू०	२
जत्त	६(३)	१३
जत्य	५(१)	२०, २१
	५(२)	४८
	७	६

जत्थ	२ चू०	१४
जन्न	१ चू०	१२
जय (यत्)	४	८, २८
	५(१) -	६, ८१, ८६, ९६
	५(२)	७
	६	३८
	७	५६
	८	१६
जय (यत्) *		
-जए	८	१६
-जएजा	२ चू०	६
जया	४	१४ से २५
	१ चू०	१ से ७
जरा	६	५६
	८	३५
जराउय	४	सू० ६
जल	६(२)	१२
	१ चू०	सू० १
जल *		
-जलावए	१०	२
-जले	१०	२
जलइत्ताए	६	३३
जलण	६(१)	११
जलिय	२	६
	६(१)	६

जल्लिय (दि०)	८	१८
जवण	६(३)	४
जस	५(२)	३६
जसंसि	६	६८
जसोकामि	२	७
	५(२)	३५
जह	२ चू०	११
जहक्कम	५(१)	८६, ६५
जहा	१	२, ४
	२	१०, ११
	४	सू० ३, ८, ६
	५(१)	६०
	५(२)	३६
	६	६
	८	१, ५३, ५६, ५६
	६(१)	११, १४, १५
	६(२)	३
	६(४)	सू० ३ से ७
	१०	२
	१ चू०	८
जहाभाग	५(१)	१३
जहारिह	७	१७, २०
जहि	५(१)	३५
जहोवड्ड	६(३)	२
जाइ	७	२१
	१०	१६

जाइ	८	३०
	६(४)	७
	१०	१४, २१
जाइत्ता	८	५
जाइयह	६(१)	४
	१०	१४
	२ चू०	१६
जाइमत	७	३१
जागरमाण	४	सू० १८ से २३
जाण #		
-जाणइ	४	११, २२, २३
-जाणई	४	११
-जाणंति	५(२)	४०, ४५
-जाणंतु	५(२)	३४
-जाणेज्ज	५(१)	४७, ७६
-जाणेज्जा	७	८
जाण (जानत्)	६	६
	८	३१
जाण (यान)	७	२६
जाणिऊण	५(१)	६६
जाणित्ता	५(१)	२४
	८	१६
जाणित्तु	८	१३
जाणिय	१०	१८
	१ चू०	११
जाणिया	५(२)	२४
	७	५६

जाय	२	६
	४	सू० २२, २३
जाय #		
-जाएज्जा	५(२)	२६
जायतेय	६	३२
जाला	४	सू० २०
जाव	७	२१
	८	३५
जावत	६	६
जावज्जीव	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५, ६२
जिडंदिय	३	१३
	८	३२, ४४, ६३
	६(३)	८, १३
	६(४)	१
	२ चू०	१५
जिण	४	२२, २३
	५(१)	६२
जिण #		
-जिणे	८	३८
जिणत	४	२७
जिणदेसिय	१ चू०	६

जिणमय	६(३)	१५
जिणवयण	६(४)	५
	१ चू०	१८
जिणसंथव	५(१)	६३
जिणसासण	८	२५
जिय	८	४८
जीव *		
-जीवइ	२ चू०	१५
जीव	४	सू० ४ से ५८
	४	१२ से १५
	५(१)	६८
	६	१०
	८	२
	६(१)	५
जीविउं	६	१०
जीविय	२	७
	८	३४
	१०	१७
	१ चू०	सू० १, १६
जीवियट्ठि	६(१)	६
जुगमाया	५(१)	३
जुत्त	३	१०
	८	४२, ६३
	६(१)	१५

जुल	६(२)	१४
	६(४)	४
	१०	१०
जुद्ध	५(१)	१२
जम्ह	२	८, ६
जुव	७	२५
जोइ	२	६
	३	४
	८	६२
जोग	४	२३, २४
	५(१)	१
	७	४०
	८	४, १७, ४२, ५०, ६१
	६(१)	१५, १६
	२ चू०	१५
जोगय	८	६१
जोय	६	२६, ४०, ४३
जोव्वण	१ चू०	६

२८

भुसिर	५(१)	६६
भोसइत्ता	१ चू०	सू० १

ट		
टाल (दि०)	७	३२

ठ		
ठविय	५(१)	६५
ठाण	५(१)	१६

	६	७, ८, ५, ८
	६(२)	१७
	६(४)	सू० १ से ३
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	३

ठावय *		
-ठावयई	६(४)	३
ठिअ	६(४)	३
	१०	२०
ठियप्प	६	४६
	१०	१७, २१

ड		
डह *		
-डहेज्जा	६(१)	७
डहर	५(२)	२६
	६(१)	२ से ४
	६(३)	३, १२

ण		
ण	५(२)	२

णं	५(२)	२६
णु	७	५१
णो	६	६
	७	६

त		
त (तत्)	१	२
त (त्वत्)	२	८, ६
तज्जुय	५(२)	७
तओ	४	सू० २३
	४	१०
	५(१)	६६
	५(२)	३, १३
	६(२)	१
	६(३)	७

तज्हा	४	सू० ३
तच्च	४	सू० १३
तज्जणा	१०	११
तज्जायसंसट्ठ	२	६
तण	४	सू० ८
	५(१)	८४
	८	२, १०
	१०	४
तण्ण	५(२)	१६
तण्हा	५(१)	७, ७६

तत्तनिव्वुड	५(२)	२२	तव	४	२७
तत्तफामुय	८	६		५(२)	६, ४२
तत्तानिव्वुड-				६	१, ६७
मोडत्त	३	६		७	४६
तत्तो	५(२)	४८		८	४०, ६१, ६२
तत्त्य	५(१)	५, ६,		९(४)	१, ४
		२५ से २८,		१०	७, १२, १४
		३६ से ३८,		१ चू०	सू० १
		६६, ८३, ८४,	तवण	९(१)	१४
		९५	तवतेण	५(२)	४६
	५(२)	११, २७, ४७,	तवसमाही	९(४)	मू० ३, ६
		५०		९(४)	४
	६	७, ८, २४,	तवस्सि	५(२)	४२
		५१, ५२		६	५६
	१ चू०	१		८	३०
	२ चू०	१४		९(३)	१३
तन्निस्सिय	५(१)	६८	तवोक्कम्म	६	२२
तमस	५(१)	२०	तम	४	सू० ६, ११
तयस्सिय	६	२७, ३०,		५(१)	५
		४१, ४४		६	८, २३, २७,
तया	४	१४ से २५			३०, ४१, ४४
तरित्तु	९(२)	२३		८	२, ११
तरुणग	५(२)	१६		१०	४
तरुणिया	५(२)	२०	तसकाड्य	४	मू० ३
तव	१	१	तसकाय	४	सू० ६
	३	१५		६	४३ से ४५

तसिय	४	सू० ६	तारा	६(१)	१५
तह	२ चू०	८	तारिस	५(१)	२८, २९, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
तहप्पगार	४	सू० २३			
तहा	५(१)	३०, ४७, ४९, ५१, ५३, ५६, ६१, ७१, ७५			
	५(२)	२१			
	६	६			
	७	३२, ३८, ५७		५(२)	१५, १७, २०, ३६ से ४१, ४४, ४५
	८	११, ५६			
	६(२)	१८			
	१ चू०	११		६	३६, ६६
तहाभूय	८	७		८	६३
तहामुत्ति	७	५		१ चू०	१७
तहाबिह	५(१)	७१, ८४	तारिसग	४	२६, २७
	१ चू०	१४	तालउड	८	५६
तहि	२ चू०	११	तालियट	४	सू० २१
तहेव	५(१)	७१		६	३७
ता	५(२)	३४		८	६
	१ चू०	१५	ताव	७	२१
ताड	३	१, १५		८	३५
	६	२०, ३६, ६६, ६८	ति	६	५६
	८	६२	तिदुय	५(१)	७३
तारिय	५(१)	६४	तिक्ख	६	३२
तारिम	७	३८	तिगुत्त	३	११
				६(१)	१४

तिगुत्ति	१ चू०	१८
तित्तग	५(१)	६७
तित्थ	७	३७
तिरिक्खजोणि	५(२)	४८
तिरिक्खजोणिय		
(तिर्यग्-योनिक) (ज)	४	सू० ६
तिरिक्खजोणिय		
(तिर्यग्-योनिक) ४	सू० १४	
तिरिच्छसपाइम	५(१)	८
तिरिय	७	५०
तिलपप्पडग	५(२)	२१
तिलपिट्ट	५(२)	२२
तिविह	४	सू० १० से १६, १८ से २३
	६	२६, ४०, ४३
	८	४
तिव्व	५(२)	५०
तु	५(१)	३७
तुवाग	५(१)	७०
तुट्ठ	६(२)	१५
तुयट्ठ *		
-तुयट्ठावेज्जा	४	सू० २२
-तुयट्ठेज्जा	४	सू० २२
तुयट्ठ त	४	सू० २२
तुस	५(१)	७

तेइदिय	४	सू० ६
तेउ	४	सू० ६
	५(१)	६१
तेउकाइअ	४	सू० ३
तेउकाय	६	३५
तेगिच्छ	३	४
तेण	५(२)	३७, ३६
	७	१२
तेणग	७	३६, ३७
तेल्ल	६	१७
तो	५(१)	६५
तोरण	७	२७
तोस *		
-तोसए	६(१)	१६
थ		
थम	६(१)	१
	६(३)	१२
थणग	५(१)	४२
थद्ध	६(२)	३
थावर	४	सू० ११
	५(१)	५
	६	६, २३
	१०	४
थिग्गल (दे०)	५(१)	१५
थिर	७	३५
थूल	४	सू० १३, १५
	७	२२

इसवेआलिय शब्द-सूची

घेर	६(४) सू०	१ से ३
घेरअ	१ चू०	६
थोव	५(१)	७८
	८	२६

व

दड	४ सू०	१०
	६(२)	४, ८
दडग	४ सू०	२३
दत	१	५
	३	१३
	४	६
	५(१)	६
	६	३
	८	२६
	६(४)	५
दंतपहोयणा	३	३
दतवण (दि०)	३	६
दंतसोहण	६	१३
दसण	४	२१, २२
	५(१)	७६
	६	१
	७	४६
दग	५(१)	४५
	८	२, ६

दगभवण	५(१)	१५
दगमट्टिआ	५(१)	३, २६
दच्छ *		
-दच्छसि	२	६
दटुव्व	२ चू०	४
दट्टुणं	५(१)	२१
	५(२)	३१, ४६
	६	२५
	८	५४
दमअ (दि०)	७	१४
दमइत्ता	५(१)	१३
दम्म	७	२४
दया	४	१०
	६(१)	१३
दयाहिगारि	८	१३
दरिसणिय	७	३१
दलय *		
-दलाहि	५(१)	७८
दवदव	५(१)	१४
दव्वी	५(१)	३२, ३५, ३६
दस	६	७
दह *		
-दहे	६	३३
दा *		
-दाए	५(१)	६१, ६३
	५(२)	१४, १६

दावए	५(१)	४६,८०	दिया	६	२४
देज्ज	५(२)	२७	दिव्व	४	सू० १४
देज्जा	५(१)	४६		४	१६, १७
दाइय	५(२)	३१		६(२)	४
दाढा	१ चू०	१२	दिस्स	७	५३
दाण	१	३		१०	१२
	५(१)	४७	दीसय	५(२)	२८
दायग	५(२)	१२	दीह	६	६४
दायव्व	२ चू०	२		७	३१
द्वार (द्वार)	५(१)	१५	दु	४	१४
	५(२)	६		५(१)	३७, ३८, १००
द्वार (द्वार)	१ चू०	८		७	१
द्वारग	५(१)	२२, ४२	दुक्कर	३	१४
दारुण	८	२६	दुक्ख	२	५
	६(२)	१४		३	१३
दावय	५(१)	४६, ६७		८	२७
दाहिणओ	६	३३		१०	११
दिज्जमाण	५(१)	३५ से ३८		१ चू०	सू० १
दिट्ठ	५(१)	६६		१ चू०	११, १६
	६	६, ५१	दुक्खसह	८	६३
	८	२०, २१, ४८	दुग्गअ	६(२)	१६
दिट्ठि	८	५४	दुग्गड	५(१)	११
दिट्ठिवाय	८	४६		६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५
दित्त	५(१)	१२	दुग्घ	५(२)	१
दिन्त	५(२)	१३			
दिया	४	सू० १८ से २३			

दुच्चर	६	५
दुच्चिण	१ चू० सू० १	
दुज्झ	७	२४
दुद्ध	७	५५, ५६
दुत्तोसअ	५(२)	३२
दुन्नामघेज्ज	१ चू०	१३
दुप्पज्ज	२ चू०	१४
दुप्पजीवि	१ चू० सू० १	
दुप्पडिक्कंत	१ चू० सू० १	
दुप्पडिल्लेहग	५(१)	२०
	६	५५
दुवुद्धि	६(२)	१६
दुम	१	२
	६(२)	१
दुमपुप्फिया	१	
दुम्मइ	५(२)	३६
दुम्मणिय	६(३)	८
दुरहिट्ठिय	६	४, १५
दुरासय	२	६
	६	३२
दुस्त	६(३)	७
दुस्तार	६	६५
	६(२)	२३
दुसुद्धर	६(३)	७
दुसुहमाण	५(१)	६८
दुल्लह	४	२८

दुल्लभ	१ चू० सू० १	
दुल्लह	४	२६
	५(१)	१००
दुब्बाई	६(२)	३
दुब्बिहिय	१ चू०	१२
दुस्समा	१ चू० सू० १	
दुस्सह	३	१४
दुस्सेज्जा	८	२७
दुह	६(२)	५, ७, १०
	१ चू०	१४, १५
	२ चू०	१६
दुहअ	७	१४
दुहओ	६(२)	२१
दूरओ	५(१)	१२, १६
	६	५८
देंतिय	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
	५(२)	१५, १७, २०
देव	१	१
	४	सू० ६
	७	५०, ५२
	६(२)	१०, ११
	६(४)	७

देवकिब्बिस	५(२)	४६, ४७	ध		
देवत	५(२)	४७	धम्म	१	१
देवया	१ चू०	३		२	१०
देवलोय (ग)	३	१४		४	१६, २०
	१ चू०	१०		८	३५
देस	२ चू०	८		६(२)	२
देसिय	५(१)	६२		६(३)	८
	६	८		१०	२०
देह	५(१)	६२		१ चू०	सू० १
	६	२१		१ चू०	१, २, १२,
	८	२७			१३
	१ चू०	१७		२ चू०	१
देहपलोयणा	३	३	धम्मकामी	६(१)	१६
देहवात	१०	२१	धम्मजोवि	६	४६
दोच्च	४	सू० १२	धम्मज्झाण	१०	१६
दोस	२	५	धम्मट्टकहा	६	
	५(१)	११, ६६, ६६	धम्मत्यकाम	६	३
	५(२)	३५, ३७	धम्मपण्णत्ति	४	
	६	१६, २५, २८,		४	सू० १ ते ३
		३१, ३५, ३६,	धम्मपय	६(१)	१२
		४२, ४५	धम्मसात्तण	१ चू०	१७
	७	५६	घर	८	४६
	८	३५	घाय (दे०)	७	५१
	६(३)	११	घार *		
दोसन्न	७	१३	-घारए	५(१)	१६
			-घारत्ति	६	१६

धारण	३	४
	५(१)	६२
घिम्भ	२ चू०	१५
घिरत्थु	२	७
धीर	३	११
	७	४, ७, ४७
	२ चू०	१४
धुण *		
-धुणइ	४	२०, २१
	६ (४)	४
	१०	७
-धुणांति	६	६७
धुणिय	६(३)	१५
धुन्नमल	७	५७
धुयमोह	३	१३
धुव	८	१७, ४२
धुवजोग	१०	१०
धुवजोगि	१०	६
धुवसीलया	८	४०
धूमकेउ	२	६
धूया	७	१५
धूवणेत्ति	३	६
धेणु	७	२५
धोय	५(१)	७६
धोयण	६	५१

न	१	२
नई	७	३८
नंगल	७	२८
नक्खत्त	८	५०
	६(१)	१५
नगर	४ सू०	१३, १५
	५(१)	२
	२ चू०	८
नगिण	६	६४
नच्चा	५(१)	१६, २६, ७७
	७	३६, ४०
	८	३४, ४६, ५६
	६(१)	२, ४
	६(३)	१
नत्तुणिय	७	१८
नत्तुणिया	७	१५
नमस *		
-नमसे	६(१)	११
-नमसंति	१	१
	६(२)	१५
नमोक्कार	५(१)	६३
नर	५(२)	४६
	७	५, ५३
	८	५६
	६(२)	४, ७, ६, २२

नर	६(३)	६	नायपुत्त	५(२)	४६
	१ चू०	१८	नारी	२	६
नरय	५(२)	४८		८	५२, ५४, ५५
	१ चू०	६		६(२)	७, ६
नव	६	६७	नालिआ	५(२)	१८
नह	७	५२	नालीया	३	४
नहंसि	६	६४	नावा	७	२७, ३८
ना *			नास *		
-नाहिइ	४	१०, १२, १३	-नासेइ	८	३७
नाग	२	१०	नास	६(१)	५
	६(१)	४	नासण	८	३७
	१ चू०	८, १२	नासा	८	५५
नाण	४	१०, २१, २२	निउण	६	८
	६	१		६(३)	१५
	७	४६		२ चू०	१०
	६(४)	३	निंद *		
	१०	७	-निंदामि	४	सू० १० से १६ १८ से २२
नाणा	६(१)	११	निकाय	४	सू० ६, १०
नाणापिड	१	५	निकखंत	८	६०
नाभि	७	२८	निकखम *		
नाम	४	सू० १ से ३	-निकखमे	५(२)	४
नाम *			निकखम्म	१०	१, २०
-नामेइ	७	४	निक्खित्त	५(१)	५६, ६१
नामधिज्ज	७	१७, २०	निक्खित्ताणं	५(१)	३०
नाय	६(२)	२१	निक्खित्तु	५(१)	४२

निखिव *			निण्हव *		
-निखिवे	५(१)	८५	-निण्हवे	८	३२
निगामसाइ	४	२६	निद्दा	८	४१
निगंथ	३	१, १०, ११	निद्दिस *		
	६	४, १०, १६,	-निद्दिसे	७	१०
		२५, ४६,		८	२२
		५२, ५४	निद्देसवत्ति	६(२)	१५, २३
निगंथत्त	६	७	निद्धणे	७	५७
निगहण	३	११	निप्पुलाअ	१०	१६
निन्न	५(२)	३६	निमत *		
	६	२२	-निमंतए	५(१)	३७, ३८
	८	३, ११, १६,	-निमतेज्ज	५(१)	६५
		५३	निमित्त	८	५०
	६(१)	१२	नियच्छ *		
	६(३)	४	-नियच्छंति	६(२)	१४
	६(४)	१, ४	नियट्ट *		
	१०	१, १२, २१	-नियट्टेज्ज	५(१)	२३
	२ चू०	१५	नियडि (निकृति)	५(२)	३७
निच्छिय	१ चू०	१७	नियडि		
निज्जरट्ठिय	६(४)	४	(निकृति) (मत)	६(२)	३
निज्जरा	६(४)	सू० ६	नियत्तण	६(३)	३
निज्जायल्लवरयअ	१०	६	नियत्तिय	५(२)	१३
निज्झा *			नियम	२ चू०	४
-निज्झाए	८	५४, ५७	नियाग	३	२
निट्ठाण	८	२२		६	४८
निट्ठिय	७	४०	निरअ (य)	१ चू०	१०, ११

निरासय	६(४)	४
निरुभित्ता	४	२३, २४
निख्वक्केस	१ चू०	सू० १
निवार *		
-निवारए	२	१
निवेस *		
-निवेसयति	६(३)	१३
निव्वडिय	६	२४
निव्वाण	५(२)	३२
निव्वाव *		
-निव्वावए	८	८
-निव्वावेज्जा	४	सू० २०
निव्वावत	४	सू० २०
निव्वाविया	५(१)	६३
निव्विद *		
-निव्विदए	४	१६, १७
निव्विगइ	२ चू०	७
निसंत	६(१)	१४
निसन्न	५(१)	४०
निसिर *		
-निसिर	८	४८
निसीअ *		
-निसीए	८	४४
-निसीएज्ज	५(२)	८
-निसीएज्जा	४	सू० २२
	५(१)	४०

-निसीएज्जा	८	५
-निसीयावेज्जा	४	सू० २२
निसीयत	४	सू० २२
निसीहिया	५(२)	२
निसेज्जा	३	५
	६	५४, ५६, ५९
निस्सकिय	५(१)	५६, ७६
	७	१०
निस्सर *		
-निस्सरई	२	४
निस्सिंचिया	५(१)	६३
निस्सिय	१०	४
निस्सेणि	५(१)	६७
निस्सेस	६(२)	२
निहा *		
-निहावए	१०	८
-निहे	१०	८
निहुअ	२	८
	६	३
निहुअप्प	६	२
निहुइंदिय	१०	१०
नीम	५(२)	२१
नीय	५(२)	२५
	६(२)	१७
नीयदुवार	५(१)	२०
नीरय	३	१४
	४	२४, २५

नीलिया	७	३४
नीसा (दे०)	५(१)	४५
नीसेस	५(१)	८८
नु	२	१
	६(१)	५
नेउणिय	६(२)	१३
नेरइय	४	सू० ६
	१ चू०	१५
नो	२	४

प

पइरिक्कया	२ चू०	५
पइट्टिय	४	सू० २२
पईव	६	३४
पउज *		
-पउजे	८	४०
	६(१)	१२
	६(३)	२, ३
पउत्त	५(१)	६७
पउम	५(२)	१४, १६
पउमग	६	६३
पओअ	६(२)	१६
पओय	७	५२
पक	१ चू०	७
पंच	३	११

पंच	४	सू० १७
	६(३)	१४
	१०	५
पंचम	४	सू० १५
पॉचिदिय	४	सू० ६
	७	२१
पंजलि	६(१)	१२
पंडा	७	१२
पंडिय	२	११
	५(२)	२६, २७
	६(४)	१
	१ चू०	११
पंत	५(२)	३४
पंसुखार	३	८
पकुव्व *		
-पकुव्वई	५(२)	३२
	६(२)	१६
पक्क	७	३२, ३४, ४२
पक्कम *		
पक्कमंति	३	१३
पक्कओ	८	४५
पक्कंद *		
-पक्कंदे	२	६
पक्कलंत	५(१)	५
पक्किल	७	२२

पक्खोड *			पट्टिय	२ चू०	२
-पक्खोडावेज्जा	४	सू० १६	पड *		
-पक्खोडेज्जा	४	सू० १६	-पडइ	६	६५
पक्खोडंत	४	सू० १६	पडंत	५(१)	८
पगइ	६(१)	३	पडागा	१ चू०	सू० १
पगड	५(१)	४७, ४६, ५१, ५३	पडिआय *		
	८	५१	-पडिआयई	१०	१
	१ चू०	सू० १	पडिकुट्ट	५(१)	१७
पञ्चग	८	५७	पडिकोह	६	५७
पञ्चक्खओ	६(३)	६	पडिककंत	४	सू० ६
पञ्चक्ख	५(२)	२८	पडिककम *		
पञ्चक्ख *			-पडिककमामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-पञ्चक्खामि	४	सू० ११	-पडिककमे	५(१)	८१, ६१
पच्चुपन्न	७	८ से १०		५(२)	४
पच्छा	५(१)	६१	पडिगाह *		
	६(२)	१	-पडिगाहेज्ज	५(१)	२७, ५६, ७७
	१ चू०	२ से ८		६	४७
पच्छाकम्म	५(१)	३५		८	६
	६	५२	पडिगाह	४	सू० २३
पज्जय	७	१८		५(२)	१
पज्जव	१ चू०	१६	पडिग्घाअ	६	५७
पज्जालिया	५(१)	६३	पडिच्छ *		
पज्जिया	७	१५	-पडिच्छेज्जा	५(१)	३६, ३८
पज्जुवास *			पडिच्छन्न	५(१)	८३
-पज्जुवासेज्जा	८	४३	पडिच्छन्न	८	५५
पट्टवेत्ताणं	५(१)	६३			

पडिच्छिय	५(१)	८०
पडिजागर *		
-पडिजागरेज्जा	६(३)	१
पडिण	६	३३
पडिणीय	६(३)	६
पडिनिस्सिअ	४	सू० २२
पडिन्नद *		
-पडिन्नवेज्जा	२ चू०	८
पडिपुच्छिअण	५(१)	७६
पडिपुण्ण	६(४)	५
पडिपुत्त	८	४८
पडिवंध	२ चू०	१३
पडिवुद्धजीवि	२ चू०	१५
पडिवोह *		
-पडिवोहएज्जा	६(१)	८
पडिमा	१०	१२
पडिय	१ चू०	२
पडियरिय	६(३)	१५
पडियाइक्ख *		
-पडियाइक्खे	५(१)	२८, ३१, ३२, ४१, ४३, ४४, ४६, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४, ७२, ७४, ७६
	५(२)	१५, १७, २०

पडियाइयण	१ चू०	सू० ?
पडिलेह *		
-पडिलेहए	५(१)	३७
-पडिलेहसि	५(२)	५
-पडिलेहेज्जा	५(१)	२५
	८	१७
पडिलेहिता	८	१८
पडिलेहिताण	५(१)	८२
	६(२)	२०
पडिलेहिय	४	सू० २३
पडिलेहिया	५(१)	८१, ८६, ८७
पडिवज्ज *		
-पडिवज्जई	४	२३, २४
पडिवज्जमाण	६(१)	२
पडिवज्जिया	१०	१२
पडिसंलीण	३	१२
पडिसमाहर *		
-पडिसमाहरे	८	५४
पडिसाहर *		
-पडिसाहरेज्जा	२ चू०	१४
पडिसेह *		
-पडिसेहए	६(२)	४
पडिसेहिय	५(२)	१३
पडिसोय	२ चू०	२, ३
पडिहयपच्चक्खाय-		
पावकम्म	४	१८ से २३

पढम	४	सू० ११
	४	१०
	६	८
पणग	५(१)	५६
	८	११, १५
पणास *		
-पणासेइ	८	३७
पणिय	७	४५
पणियट्ट	७	३७, ४६
पणिहाय	८	४४
पणीय	५(२)	४२
पणीयरस	८	५६
पणुल्ल *		
-पणुल्लेज्जा	५(१)	१८
पत्त (पत्र)	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
	६(२)	१
पत्त (प्राप्त)	६(२)	६, ६, ११
पत्तेय	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पत्थ *		
-पत्थए	५(२)	२३
	६	६०
	८	१०, २८
पन्नत्त	६(४)	सू० १ से ३

पन्नत्ति	८	४६
पन्नव	७	१ से ३, १३,
		१४, २४, २६,
		२६, ३०, ३६,
		४४, ४७
पबन्ध *		
-पबन्धेज्जा	५(२)	८
पब्भट्ट	१० चू०	४
पभव	६(२)	१
पभास *		
-पभासई	६(१)	१४
पमज्जित्तु	८	५
पमज्जिय	४	सू० २३
पमाण	२ चू०	११
पमाय	६	१५
	६(१)	१
पमेइल	७	२२
पय	८	३१, ५०
	६(१)	११
	६(४)	सू० ४ से ७
	६(४)	६
	१ चू०	सू० १
पय *		
-पए	१०	४
-पयावए	१०	४
-पयावेज्जा	४	सू० १६

पयञ	२ चू०	७
पयंग	४	सू० ६, २३
पयत्तछिन्न	७	४२
पयत्तपक्क	७	४२
पयत्तलट्ट	७	४२
पयल *		
-पयलेति	१ चू०	१७
पयाय	७	३१
पयाव	६	३४
पयावंत	४	सू० १६
पर	५(१)	४
	६	११, १४, ३७
	७	१३, ४०, ५४,
		५७
	८	४७, ६१
	९(१)	५
	९(२)	१३
	९(४)	सू० ५
	१०	८, १८, २०
	२ चू०	११, १३
परक्कम *		
-परक्कमे	५(१)	६, २४
	५(२)	७
-परक्कमेज्जा	८	४०
परक्कम	२ चू०	४
परक्कम्म	८	३२

परग्व	७	४३
परघर	५(२)	२७
परम	६	५
	९(२)	२
परमग्गसुर	९(३)	८
परम दुच्चर	६	५
परमाहम्मिय	४	सू० ९
परम्महु	९(३)	९
परलोग	९(४)	सू० ६, ७
परागार	८	१९
परिकिन्न	१ चू०	७
परिक्खभासि	७	५७
परिगय	९(२)	८
परिगिज्झ	८	३३
	९(३)	२
परिगेण्ह *		
-परिगेण्हज्जा	४	सू० १५
परिगेण्हंत	४	सू० १५
परिग्गह	४	सू० १५
	६	२०
परिग्गह *		
-परिग्गहे	६	२१
परिज्जुण्ण	९(२)	८
परिट्ठप्प	५(१)	८१, ८६
परिट्ठप्प *		
-परिट्ठवेज्जा	५(१)	८१

-परिट्टावेज्ज	८	१८
परिणय -	५(१)	७७
परिणाम	८	५८
परिनिव्वुड	३	१५
परित्तप्य *		
-परित्तप्यइ	१ चू०	२ से ८
परिदेव *		
-परिदेवएज्जा	६(३)	४
परिन्नाय	३	११
परिब्भट्ट	१ चू०	२
परिभव *		
-परिभवे	८	३०
परिफासिय	५(१)	७२
परिभस्स *		
-परिभस्सइ	६	५०
परिभोत्तुयं	५(१)	८२
परिमिय	८	३४
परियाय	१ चू०	सू० १
	१ चू०	६ से ११
परियायजेट्ट	६(३)	३
परियायट्ठाण	८	६०
परियाव	६(२)	१४
परिवज्ज *		
-परिवज्जए	५(१)	४, १२, १६, १७, २०, २१, २५, २६, ७०

-परिवज्जए	५(२)	१६, २१, २२, २४
	६	५८
	७	५५
	१०	६
परिवज्जंत	५(१)	२६
परिवज्जय	७	५६
परिवुड	६(१)	१५
परिवुड्ढ	७	२३
परिव्वयंत	२	४
परिसंखाय	७	१
परिसह	३	१३
	४	२७
परिसा	४	सू० १८ से २३
परिसाड *		
-परिसाडेज्ज	५(१)	२८
परिहर *		
-परिहरंति	६	१६
परिहा *		
-परिहरति	६	३८
परीणाम	८	५६
पलव	५(१)	७०
पलाइय	४	सू० ६
पलिओवम	१ चू०	१५
पलियंकय	३	५
	६	५३ से ५५

दसवेआन्विय शब्द-सूचो

पलीण (प्रलीन) ङ	४०	
पलोभ *		
-पलोएज्जा	५(१)	२३
पवक्त *		
-पवक्वामि	२ चू०	१
पवड *		
-पवडेज्जा	५(१)	६८
पवडंत	५(१)	५, ८
पवड्ढ *		
-पवड्ढंति	६(२)	१२
पवड्ढमाण	८	३६
पवयण	५(२)	१२
पवाल	५(२)	१६
पविट्ठ	५(१)	१६
	५(२)	८
	६	५६
पविमक्खण	२	११
पविम *		
-पविो	५(१)	१७, २२
	५(२)	११
पविस्सिता	५(१)	८८
पविमित्तु	८	१६
पवीण *		
-पवीलावेज्जा	४	सू० १६
-पवीलेज्जा	८	सू० १६
पवीण	८	सू० १६

पवुच्च *		
-पवुच्चई	४ -	सू० ६
पवेइय	४	सू० १ से ३
पवेय *		
-पवेयए	१०	२०
पव्वइय	४	१८, १६
	६	१८
	६(३)	५२
	१ चू०	सू० १
पव्वय	७	२६, ३०
	६(१)	८
पसत्त	१०	१०
पसंसण	७	५५
पसज्ज	१ चू०	१४
पसद्ध	५(१)	७२
पसत्थ	२ चू०	५
पसन्न	६	६८
पसव *		
-पसवई	५(२)	३५
पसाय	६(१)	१०
पसारिय	४	सू० ६
पसाहा	६(२)	१
पमु	७	२२
	८	५१
पमूय	७	३५

५४

पस्स *

-पस्सइ

पहाण

पहार

पहारागाढ

पहीण

पहोइ

पाइम

पाईण

पाण (प्राण)

पाण (पान)

५(२)

४

६(१)

१०

७

३

४

७

६

४

४

५(१)

५(२)

६

७

८

४

५(१)

३७,४३

२७

८

११

४२

१३

२६

२२

३३

सू० ६,११

१ से ६

३,५,२०,

२६

७

८,१०,२३,

२४,२७,३०,

४१,४४,५५,

५७,६१

२१

२,१२,१५

सू० १६

१,२७,३१,

३६,४१ से

४४,४८,५०,

५२,५४,५८,

पाण (पान)

५(२)

६

८

६(३)

२ चू०

पाणक (ग)

५(१)

१०

पाणहा

३

पाणाइवाय

४

पाणिपेज्जा

७

पामिच्च

५(१)

पाय (पाद)

३

४

४

८

६(१)

६(२)

१०

पाय (पात्र)

६

८

परिशिष्ट-१

६०,६२,६४,

७५,८६

३,१०,१३,

१५,१७,२८,

३३

४६,५०

१६

५

६,८

४७,४९,५१,

५३,५७,५९,

६१

८,९

४

सू० ११

३८

५५

४

सू० १८,२३

७,६८

४४,५५

५,१०

१७

१५

१६,३८,४७

१७

पायखज्ज	७	३२
पायव	६(२)	१२
पारत्त	८	४३
पारेत्ता	५(१)	६३
पाव	४	७ से ६, १५, १६
	५(२)	३२, ३५
	६	६७
	७	५, ११
	८	३६
	१०	१८
	१ नूनं सू०	१
	२ नूनं	१०
पाव *		
-पावई	६(१)	१७
पावग (य)		
(पापक)	४	१ से ६, १०, ११
	८	२२
	६(४)	४
	१०	७
पावग (पावक)	६	३२
	६(१)	६, ७
पावार	५(१)	१८
पास *		
-पासइ	२ नूनं	१३

-पासे	२ नूनं	१४
-पासेज्ज	८	१२
-दीसति	६(२)	५ से ७
पास	४	६
पासवण	८	१८
पासाय	५(१)	६७
	७	२७
पाहन्न	६(३)	५
पिअ *		
-पिए	१०	२
-पियावए	१०	२
पिउस्सिया	७	१५
पिड	६	४७
पिण्डपाय	५(१)	८७
पिंडेसणा	५	
पिज्जेमाण	५(१)	४२
पिट्ठ	५(१)	३४
	५(२)	२२
पिट्ठओ	८	४५
पिट्ठिमस	८	४६
पिण्णाग	५(२)	२२
पिय	२	३
पियाल	५(२)	२४
पिव	५(१)	८
	५(२)	३६, ३७
पिव	८	५४

पिवासा	८	२७
	६(२)	८
	१ चू०	१६
पिवीलिया	४	सू० ६,२३
पिसुण	६(२)	२२
पिहिय	४	६
	५(१)	१८, ४५
पिहुवज्ज	७	३४
पिहुज्जण	१ चू०	१३
पिहुण (दे०)	४	सू० २१
पिहुणहत्थ (दे०)	४	सू० २१
पीइ	८	३७
पीढ	५(१)	६७
पीढा (य)	४	सू० २३
	५(१)	४५
	६	५४
	७	२८
पीण *		
-पीणेइ	१	२
पीणिय	७	२३
पील *		
-पीलेइ	८	३५
पीला	५(१)	१०
पुंछ *		
-पुंछे	८	७
-पुंछेज्ज	८	१४

पुगल	४	सू० २१
	५(१)	७३
पुच्छ *		
-पुच्छेज्जा	५(१)	५६
-पुच्छति	६	२
पुज्ज	६(३)	१ से ६
		८ से १४
पुड	८	६३
पुट्ठ (पृष्ट)	८	२२
पुट्ठ (स्पृष्ट)	७	५
पुढविकाइय	४	सू० ३
पुढविकाय	६	२६ से २८
पुढविजीव	५(१)	६८
पुढवी	४	सू० ४, १८
	८	२, ४
	१०	२, ४, १३
पुढो	४	सू० ४ से ८
पुण	४	सू० ६
पुणब्भव	८	३६
पुण्ण (पुण्य)	४	१५, १६
	५(१)	४६
	१०	१८
	१ चू०	सू० १
पुण्ण (पूर्ण)	७	३८
पुत्त	२ चू०	१
	७	१८
	१ चू०	७

दसवेआलिय शब्द-सूची

पुष्प	१	२ से ४	पुष्करत्त	२ चू०	१२
	५(१)	२१, ५७	पूर्वि	५(१)	६१
	५(२)	१४, १६		१ चू०	सू० १
	८	१५	पूअ *		
	६(२)	१	-पूययामि	६(१)	१३
पुम	७	२१	-पूयंति	५(२)	४५
	६(३)	१२		६(२)	१५
पुरओ	५(१)	३	पूइअ	५(२)	४३
	८	४५	पूइकम्म	५(१)	५५
पुरक्कार	१ चू०	सू० १	पूइम	१ चू०	४
पुरत्थ	८	२८	पूई	५(१)	७८, ७९
पुराण	६(४)	४		५(२)	२२
	१०	७	पूय	५(१)	७१
पुरिस	५(२)	२६	पूयण	१०	१७
	७	१६, २०		२ चू०	६
पुरिसकारिया	५(२)	६	पूयणट्ठि	५(२)	३५
पुरिसोत्तम	२	११	पेच्छ *		
पुरेकड	६	६७	-पेच्छइ	८	२०
	७	५७	पेम	८	२६, ५८
	८	६२	पेह *		
	६(३)	१५	-पेहेइ	६(४)	२
पुरेकम्म	५(१)	३२	पेहमाण	५(१)	३
	६	५३	पेहा	२	४
पुल	१०	१६	पेहाए	७	२६, ३०
पुव्व	३	१५		८	१३
पुव्वउत्त	५(२)	३	पेहिय	८	५७ ८

५८

परिशिष्ट-१

पोगल	८	६, ५८, ५६	फासे	४	१६, २०
पोय	८	५३		१०	५
	१ चू०	सू० १	फासुय	५(१)	१६, ८२, ६६
पोयय	४	सू० ६		८	१८
पोरबीय	४	सू० ८	फुम * (दि०)		
			-फुमावेज्जा	४	सू० २१
			-फुमेज्जा	४	सू० २१
			फुमंत	४	सू० २१
फ					
फरुस	५(२)	२६			
	७	११	व		
फल	३	७	बंध	४	१५, १६
	४	१ से ६		६(२)	१४
	५(२)	२४, ४७		१ चू०	सू० १
	७	३२, ३३	बंध *		
	८	१०	-बंधह	६	६५
	६(१)	१	-वधई	४	१ से ६
	६(२)	१	बंधण	१०	२१
फलग	४	सू० २३		१ चू०	७
	५(१)	६७	बंधचेर	५(१)	६
फलिह	५(२)	६		६	५७, ५८
	७	२७		६(१)	१३
फाणिय	५(१)	७१	बंधयारि	५(१)	६
	६	१७		८	५३, ५५
फास	८	२६	बद्ध	१ चू०	७
फास *			बप्प	७	१८

दसवेआलियं शब्द-सूची

बलाहय	७	५२
बहिद्धा	२	४
बहु	४	सू० ६, १३
बहुअट्टिय	५(१)	७३
बहुउज्झिय		
धम्मिये	५(१)	७४
बहुकट्य	५(१)	७३
बहुनिव्वट्टिम	७	३३
बहुवाहड	७	३६
बहुल	६	३६, ६६
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	४
यहुवित्थडोदगा	७	३६
बहुविह	४	१४, १५
बहुसभूय	७	३३, ३५
बहुसम	७	३७
बहुसलिला	७	३६
बहुस्सुय	८	४३
	१ चू०	६
बायर	४	सू० ११
बाल	६	७
	१ चू०	१
बाहिर	४	सू० २१
	४	१७, १८
	८	६, ३०

बाहु	४	सू० २३
	१ चू०	सू० १
विट्ठु	१ चू०	सू० १
विड	६	१७
विल्ल	५(१)	७३
विहेला	५(२)	२४
वीय (वीज)	३	७
	४	सू० २२
	५(१)	३, १७, २१,
		२६, २६, ५७
	५(२)	२४
	६	२४
	८	१०, ११, १५
	१०	- ३
वीय (द्वितीय)	८	३१
	२ चू०	११
वीयरुह	४	सू० ८
बुद्ध	१	५
	५(२)	५०
	६	२१, २२, ३६,
		५४, ६६
	७	२, ५६
बुद्धवयण	१०	१, ६
बुद्धि	८	३०
	६(१)	३, १४, १६
बुद्धिम	१ चू०	१८

बू *

-बूया

६ ११
७ १७, २०, २३,
२५

वेइंदिय

४ सू० ६

बोधव्व

५(१) ३४

बोहि

५(२) ४८

१ चू० १४

२८

भंग

४ सू० २१

भंत (भ्रान्त)

४ सू० ६

भत (भदन्त)

४ सू० १० से १६,
१८ से २३

भक्ख *

-भक्खे

६(१) ७, ६

भक्खर

८ ५४

भगव

४ सू० १ से ३

६(४) सू० १

भगवंत

६(४) सू० १ से ३

भज्जिप्त

७ ३४

भज्जिय

५(२) २०

भट्ट

७ १६

भट्टा

७ १६

भट्ट

१ चू० १२

भत्त

१ ३
५(१) १, ४१, ४३,

४४, ४८, ५०,

५२, ५४, ५८,

६०, ६२, ६४,

८६

५(२) ३, ७, १०,

१३, १५, १७,

२८

६(३) ५

२ चू० ६

भद्दग

५(२) ३३

८ २२

भमर

१ २, ४

भय *

-भएज्ज

८ ५१

भय

४ सू० १२

६ ११

७ ५४

८ २७, ५३

१० ११, १२

भव *

-भवति

१ ५

भवंत

६ २

८ १

भवित्ताणं

४ १८, १६

दसवेआलिय शब्द-सूची

६१

भस्स *			भासा	७	११, २६, ५६
-भस्सई	६	७		८	४७, ४८
भाइणेज्ज	७	१८		६(३)	६
भाइणेज्जा	७	१५	भासिय	५(२)	४६
भाअ *				६	२५
-भायए	१०	१२		२ चू०	१
भायण	५(१)	३२, ३५, ३६, ६६	भासुर	६(३)	१५
			भिद *		
भाएह	६(१)	१४	-भिदावेज्जा	४	सू० १८
भाव	२	६	-भिदे	८	४
	७	१३		६(१)	६
	२ चू०	८	-भिदेज्ज	६(१)	६
भाव *			-भिदेज्जा	४	सू० १८
-भावए	६(३)	१०	भिदंत	४	सू० १८
भावतेण	५(२)	४६	मिक्खा	५(१)	१, ६६
भावसंघअ	६(४)	५		५(२)	५०
भावियप्प	६(३)	१०	मिक्खु	४	सू० १८ से २३
	१ चू०	६		५(१)	६६, ८७
भास	६(१)	३		५(२)	४ से ६, २५, ३६, ३८, ५०
भास *				६	६१, ६५
-भासेज्ज	७	१, २		८	१, २०
भासत	४	७		६(१)	१५
भासमाण	४	६		६(२)	१६
	५(१)	१४		१०	१ से २१
	८	४६		२ चू०	६, ११
भासा	७	१, ४, ७,			

भिक्षुणी	४	सू० १८ से २३
भित्ति	४	सू० १८
	८	४
भित्तिमूल	५(१)	८२
भिलुगा (दे०)	६	६१
भीम	६	४
भुज		
-भुजंति	२	२
	६	२५, ५२
-भुजावेज्जा	४	सू० १६
-भुजे	५(२)	१
	१०	४, ६
-भुजेज्ज	५(१)	८३, ६६, ६७
-भुजेज्जा	४	सू० १६
	५(१)	६६
	८	२३
भुजत	४	सू० १६
	४	७, ८
	६	५०
भुजमाण	४	५
	५(१)	३७, ३८, ८४
भुजित्तु	१ चू०	१४
भुज्ज	१ चू०	सू० १
भुज्जमाण	५(१)	३६
भुत्त	५(१)	३६
भूमि	५(१)	२४
	८	५२

भूमिभाग	५(१)	२५
भूय	४	१ से ६, ६
	५(१)	५
	६	३, ५, ३४,
		५१
	७	११, २६
	८	१२, १३, ५०
	१ चू०	सू० १
भूयस्त्व	७	३३
भेत्तु	६(१)	८
भेयाययणवज्जि	६	१५
भेरव	१०	११, १२
भेसज	८	५०
भो	६(१)	१२
	१ चू०	सू० १
भोग	२	११
	८	३४
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	१, १४, १६
भोच्चा	५(२)	३३
	१०	६
भोच्चाण	५(२)	२
भोत्तु	२	६
	५(१)	८७
भोय	२	३
	४	१६, १७

भोयण	५(१)	२७, २८, ३१, ३६, ४२, ६८
	५(२)	२६, ३३
	६	२२
	८	१६, २३, ५६
भोयणजाय	५(१)	७४
भोयराय	२	८

न

नड	५(१)	७६
	६(२)	२२
	२ नू०	१
नडळ (दि०)	७	२८
नंगल	१	१
नच	५(१)	६७
	६	५३
नंत	८	५०
	६(१)	११
नथु	५(१)	६८
	५(२)	२४
नंद	५(१)	२
	६(१)	२ से ४
नगदंतिया (दि०)	५(२)	१४, १६
नग	५(१)	६
	२ नू०	११

नच्छ	१ नू०	६
नज्ज		
-नज्जइ	६ (४)	२
-नज्जज्जा	८	३०
नज्जग	५(२)	३६
नज्जप्पमाय	५(२)	४२
नज्ज	७	५५
	६(१)	१४, १५
	१ नू०	सू० १
	१ नू०	१५
नट्टिया	५(१)	३३
नड	७	४१
नण	१	१
	२	४
	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २३
	५(२)	२३
	६	२६, २६, ४०, ४३
	८	३, १०, १६, २८
	६(१)	१२
	१०	७
	१ नू०	१५
नणुण	८	५८

मणुय	४	सू० ६
	७	५०
	१ चू०	सू० १
मणुस्स	७	२२
	१ चू०	सू० १
मणोसिला	५(१)	३३
मत्त (मत्त)	१०	१६
मत्त (अमत्त)	६	५१
मत्थयत्थ	४	२५, २६
मद्दव	८	३८
मन्न *		
-मन्नंति	६	३६, ६६
-मन्नेज्ज	१०	५
ममत्त	२ चू०	८
ममाइय	६	२१
ममाय *		
-ममायंति	६	४८
मय	६(४)	२
	१०	१६
मया	६(१)	१
मरण	२	७
	६(४)	७
	१०	१४, २१
मरणंत	५(२)	३६, ४१, ४४
मरिज्जिउं	६	१०
मल	८	६२
	६(३)	१५

मल्ल	३	२
मसाण	१०	१२
मह	५(१)	६६
	६	१६
	१०	२०
	१ चू०	१०
महग्घ	७	४६
महप्प	८	३३
महब्भय	६(३)	७
	१०	१४
महल्ल	७	२६, ३०
महल्लग (य)	५(२)	२६
	७	२५
	६(३)	१२
महव्वय	४	सू० ११ से १५,
		१७
	१०	५
महाकाय	७	२३
महागर	६(१)	१६
महाफल	८	२७
महायत्त	६(२)	६, ६, ११
महायारकहा	६	
महालय	७	३१
महावाय	५(१)	८
महावीर	४	सू० १ से ३
	६	८

दसवेआलिय शब्द-सूची

६५

महि	५(१)	३
	६	२४
महिङ्गिय	६(४)	७
महिया	४	सू० १६
	५(१)	८
महु	५(१)	६७
महुकार	१	५
महुर	५(१)	६७
महेसि	३	१, १०, १३
	५(१)	६६
	६	२०, ४८
	८	२
	६(१)	१६
	१ चू०	१०
मा	२	८
	५(२)	३१
	७	५०, ५१
माउल	७	१८
माउलिग	५(२)	२३
माउस्सिया	७	१५
माण	५(२)	३५
	८	३६ से ३९
	६(४)	२
माण	६(३)	१३
माणरिह	६(३)	१३
माणव	७	५२, ५४

माणस	१ चू०	१८
	२ चू०	१४
माणिम	१ चू०	५
माणिय	६(३)	१३
माणुस	४	सू० १४
	४	१६, १७
मामग	५(१)	१७
माया (मात्रा)	५(२)	१
माया (माया)	८	३६ से ३९
मायण्ण	५(२)	२६
मायामोत्ता	५(२)	३८, ४६
	८	४६
मायासल्ल	५(२)	३५
माख्य	८	२
मार *		
-मारि	६(१)	७
मालोहड	५(१)	६६
माहण	५(२)	१०
	६	२
मिअ	६(२)	३
मिच्छा	६(१)	२
मित्त	८	३७
मिय	५(१)	२४
	७	५५
	८	१६, ४८
मियासण	८	२६

मिहोकहा	८	४१
मीसजाय	५(१)	५५
मुअ *		
-मुच्चइ	२ वू०	१६
•मुच्चई	६(४)	७
मुंच *		
-मुंच	७	४५
	६(३)	११
मुंड	४	१८, १६
	६	६४
मुक्क	६(१)	१५
मुच्छा	६	२०
मुच्छिय	१ वू०	१
मुणालिया	५(२)	१८
मुणि	५(१)	२, ११, १३, २४, ८८, ६३
	५(२)	६, ३४
	६	१५
	७	४०, ४१, ५५
	८	७, ८, ४४, ४६
	६(३)	१४, १५
	१०	१३, २०
	२ वू०	६
मुत्त (मुक्त्त)	१	३
मुत्त (मूत्र)	५(१)	१६

मुम्भुर	४	सू० २०
मुसा	४	सू० १२
	६	११
	७	२, ५
मुसावाय	४	सू० १२
	६	१२
मुह	४	सू० २१
मुहाजीवि	५(१)	६६, १००
	८	२४
मुहादाइ	५(१)	१००
मुहालद्ध	५(१)	६६
मुहुत्तदुक्ख	६(३)	७
मूल	३	७
	५(१)	७०
	६	१६
	८	१०, ३६
	६(२)	१, २
मूलगतिया	५(२)	२३
मूलय (ग)	३	७
	५(२)	२३
मूलबीय	४	सू० ८
मेत्त	६	१३
मेरग	५(२)	३६
मेह	७	५२
मेहावि	५(१)	८३
	५(२)	४२, ४६

मेहावि	८	१४
	६(१)	१७
	६(२)	१४
मेहुण	४	सू० १४
	६	१६, ६४
मोक्ख	४	१५, १६
	५(१)	६२
	६(१)	५, ७, ६, १०
	६(२)	२, २२
	१ चू०	सू० १
मोसा	६	१२
मोह	१ चू०	८
य		
य	१	२
याण *		
-याणई	४	१२
-याणाड	४	१२
	५(२)	४७
र		
रइवक्का	१ चू०	
रक्खियव्व	२ चू०	१६
रज्ज	१ चू०	४

रण	४	सू० १३, १५
रम *		
-रमंतो	१ चू०	६
-रमे	८	४१
-रमेज्ज	१ चू०	११
-रमेज्जा	६(१)	१०
रय (रत्त)	१	३, ५
	४	२७
	५(२)	२६
	६	१, १७, ६७
	७	४६
	८	४१, ६२
	६(३)	५, १४
	६(४)	३ से ५
	१०	६, १२, १४,
		१६
	१ चू०	१०, ११
रय (रजस्)	४	२०, २१
	५(१)	७२
	६(३)	१५
रयहरण	४	सू० २३
रस	१	२
	५(२)	३६, ४२
	६(२)	१
	१०	१७

रसदया	७	२५
रसनिज्जूढ	८	२२
रसय	४	सू० ६
रस्ति	१ चू०	सू० १
रह	६(२)	१६
रहजोग	७	२४
रहस्स (रहस्य)	५(१)	१६
रहस्स (ह्रस्व)	७	२५
राइ	४	सू० १६
राइणिय	८	४०
	६(३)	३
राइभत्त	३	२
राइभोयण	४	सू० १६, १७
	६	२५
राओ	४	सू० १८ से २३
	६	२३, २४
राग	२	४, ५
	८	५७
	६(३)	११
राय	५(१)	१६
	६	२
	१ चू०	४
रायपिंड	३	३
रायमच्च	६	२
रासि	५(१)	७
रिक्	३	१३

रिद्धिमंत	७	५३
रोअ *		
-रीयंति	१	४
रुख	५(२)	१६
	७	२६, ३०, ३१
	८	२, १०
रुय	४	सू० ६
रुप	८	६२
रुढ	४	सू० २२
	७	३५
रुव	८	१६
	१०	१६
रुवतेण	५(२)	४६
रोअ *		
-रोयए	५(१)	७७
रोइय	१०	५
रोगि	७	१२
रोम	६	६४
रोमालोण	३	८
रोयंत	५(१)	४२
ल		
लक्ख	२ चू०	२
लज्जा	५(२)	५०
	६	१६

लज्जा	६(१)	१३
लज्जासम	६	२२
लद्ध	२	३
	५(१)	६७
	२ चू०	२
लद्ध	५(२)	३१, ३३
	८	१, २६
	६(३)	४
लद्धूण	५(२)	४७
लभ *		
-लभामो	१	४
-लभिमही	५(२)	४८
-लभेज्जा	२ चू०	१०
लभित्ता	१०	८, ६
लभित्तु	४	२८
लयण	८	५१
लया	४	सू० ८
ललिइदिय	६(२)	१४
लव *		
-लवे	७	४०, ४८
	८	५२
-लवेज्ज	७	१७
	८	२१
लवण	५(१)	६७
लविय	८	५७

लह *		
-लहइ	८	४२
-लहई	७	५५
लहुत्त	५(२)	१२
लहुभूयविहारी	३	१०
लहुस्सग	१ चू०	सू० १
लाइम	७	३४
लाम	८	२२, ३०
	१०	१६
लाममट्टिअ	५(१)	६४
लुद्ध	५(२)	३२
लूस *		
-लूसए	५(१)	६८
लूसिए	१०	१३
लूहवित्ती	५(२)	३४
	८	२५
लेलु	४	सू० १८
	८	४
लेव	५(१)	४५
	५(२)	१
लोम (ग)	१	३
	४	२२, २३, २५
	६	५, ८, १२, १५
	७	४८, ५७
	६(२)	७
	२ चू०	३, १५

लोढ (दि०)	५(१)	४५	वंद *		
लोण	३	८	-वंदे	५(२)	३०
	५(१)	३३	-वंदेज्जा	६(२)	१७
	६	१७	वंदण	२ चू०	६
लोद्ध	६	६३	वंदमाण	५(२)	२६
लोभ	५(२)	३१	वंदिअ	५(२)	३०
	६	१८	वंदिम	१ चू०	३
	८	३६ से ३६	वक्क	८	३
लोह	४	सू० १२		६(३)	२
	७	५४	वक्ककर	६(३)	३
			वक्कसुद्धि	७	
			वच्च	५(१)	१६, २५
			वच्छग्ग	५(१)	२२
			वज्ज*		
व (इव)	१	३	-वज्जए	५(१)	११, ५५
	८	६१ से ६३		५(२)	४२
	६(३)	१३		६	२८, ३१, ३५,
	१ चू०	३, ४, ७, १२,			३६, ४२, ४५
		१७		७	४१
व (वा)	५(१)	५	-वज्जयंति	६	१०, १६, ४६
वइ	८	४६	-वज्जेज्ज	१०	२०
वइमय	६(३)	६	वज्जंत	५(१)	३
वत	२	७	वज्जिय	५(१)	६६
	१०	१	वज्झ	७	२२, ३६
	१ चू०	सू० १	वट्ट	७	३१
वतय	२	६			

वट्ट *		
-वट्टड	६(३)	३
वड्ड *		
-वड्डई	५(२)	३८
	८	३५
वड्डण	५(१)	११
	६	२८, ३१, ३५,
		३६, ४२, ४५,
		५८
	८	३६
वण	७	२६, ३०
वणस्सड	४	सू० ८
	६	४० से ४२
वणस्सडकाइय	४	सू० ३
वणिमय (दि०)	५(१)	५१
वणीमगं (दि०)	५(२)	१०, १२
	६	५७
वण्ण	६(४)	सू० ६, ७
वणिण्य	६	२२
वणिण्या	५(१)	३४
वत्तव्व	७	११
वत्ति	१ सू०	१५
वत्थ	२	२
	४	सू० १८, १९, २३
	५(२)	२८
	६	१६, ३८, ४७

वत्थिकम्म	३	६
वमण	३	६
वम *		
-वमे	८	३६
	१०	६
वय (वच्) *		
-वएज्जा	४	सू० १२
-वक्खामो	७	६
-वायावेज्जा	४	सू० १२
वय (वत्त)	४	सू० १६
	५(१)	१०
	६	७, ६२
वय (वड्) *		
-वए	५(२)	२६
	७	६, १२, २२,
		२५, ३१, ३२,
		३४, ३६, ३८,
		४३, ४४, ५०,
		५१
	६(२)	१६
-वएज्ज	७	३३, ५६
	६(२)	१८
-वएज्जा	७	५२, ५४
	१०	१८
-वयावए	६	११
वय (वचस्)	५(२)	४६

वय (वचस्) ६ १७, २६, २६,
४०, ४३

१० ७

वय * (व्रज्)

-वयाहि ७ ४७

वयंत ४ सू० १२

वयण २ १०

८ ३३

६(२) १२

६(३) ८

१० ५

वयणंकर ६(२) १२

वयतेण ५(२) ४६

ववेय १ चू० १२

वस २ १

१० १

वस *

-वसेज्जा २ चू० ६, ११

वसंत १ चू० सू० १

वसाणुअ ५(१) ६

वसुल (दि०) ७ १४, १६

वसुला (दि०) ७ १६

वह ६ १०, ४८, ५७

६(१) १

६(२) १४

१ चू० सू० १

वह *

-वहई ६(२) १६

वहण १० ४

वा ४ ११

वा १ चू० २

वाउ ४ सू० ७

वाउकाइय ४ सू० ३

वाउकाय ६ ३६

वाय २ ६

६ ३८

७ ५१

१ चू० १७

वाय १० १५

वायंत ५(१) ८

वाया ४ सू० १० से १६,

सू० १८ से २३

८ १२, ३३

६(३) ७

१ चू० १८

२ चू० १४

वारधोयण ५(१) ७५

वारय ५(१) ४५

वास (वर्ष) ५(१) ८

२ चू० ११

वास (वास) १ चू० सू० १

वासंत ५(१) ८

वासमड	८	५५
वासमा	३	१२
वाहि	८	३५
वाहिम	७	२४
वाहिय	६	६, ५६, ६०
	७	१२
विडत्ता	६(१)	२
विडत्तु	१०	१४
विडल	५(२)	४२
	६(४)	६
विडलद्वाराभाइ	६	५
विडहिताण	५(१)	२२
विडत्य *		
-विडत्ययई	६(३)	४
विडत्य	७	४६
	१०	१५
विडतायमाण	५(१)	७२
विडतान्त्रिय	८	६६
विडणिय	८	५५
विडणियेदिय	६(२)	७
विडण्ओ	८	५३
विडण *		
-विडणोञ्ज	७	२१
विडणमाण	५(१)	१
विडण	५(१)	१
विडणाय	१ नं०	१०

विडिम	७	३१
विणय	५(१)	८८
	७	१
	८	३७, ४०
	६(१)	१
	६(२)	२, ४, २२, २३
	६(३)	२, ३ -
	६(४)	१
विणयसमाहि	६	
	६(४)	सू० १ से ४
विणासण	८	३७
विणिगूह *		
-विणिगूहई	५(२)	३१
विणिचट्टय	८	४३
विणिज्झा *		
-विणिज्झाए	५(१)	१५, २३
विणिज्जाए	५(१)	७८, ७९
विणिय	६(२)	२१
विणियट्ट *		
-विणियट्टत्ति	२	११
-विणियट्टेज्ज	८	३६
विणी *		
-विणीज्ज	८	४, ५
विणीपतन्हु	८	५६
विण्ह	७	४
विण्हि	१	४

वित्ति	५(१)	६२
	५(२)	२६
	६	२२
विन्नाय	४	सू० ६
(विज्ञात)		
विन्नाय	८	५८
(विज्ञाय)		
विष्पद्गण	५(१)	२१
विष्पमुक्क	३	१
विपिट्टिकुब्ब		
-विपिट्टिकुब्बइ	२	३
विभूषण	३	६
विभूसा	६	६४
	८	५६
विभूसावत्तिय	६	६५, ६६
विमण	५(१)	८०
विमल	६	६८
	६(१)	१५
विमाण	६	६८
विय	८	४८
वियक्खण	५(१)	२५
	६	३
	८	१४
वियड	५(२)	२२
	६	६१
वियडभाव	८	३२

वियत्त	६	६
वियागर *		
-वियागरे	७	३७, ४५, ४६
वियाण *		
-वियाणई	४	१३, १४
	५(२)	३७
	१०	१५
वियाणत	४	१३
वियाणित्ता	५(१)	११
	६	२८, ३१, ३५, ३६, ४२, ४५
वियाणिया	८	३४
	६(३)	११
	१ चू०	१८
विरय	४	सू० १८ से २३
विरस	५(१)	६८
	५(२)	३३, ४२
	१०	१६
विराय *		
-विरायई	८	६३
	६(१)	१४
विरालिया	५(२)	१८
विराह *		
-विराहेज्जासि	४	२८
विस्स *		
-विस्संति	६(२)	१

विरेयण	३	६
विलिह *		
-विलिहावेज्जा	४	सू० १८
-विलिहेज्जा	४	सू० १८
विलिहत	४	सू० १८
विवज्ज *		
-विवज्जए	५(१)	१५, ७५
	५(२)	४६
	७	४, ७
	८	४१, ४६, ५५
-विवज्जयामि	२ चू०	१३
-विवज्जेज्जा	५(१)	३६
	६	२४
विवज्जभ	५(२)	४१, ४३
विवज्जइत्ता	१०	१६
विवज्जंत	६	४६
विवज्जण	२ चू०	५, ६
विवज्जयंत	१०	३
	२ चू०	१०
विवज्जिय	६	५५
	८	५१
विवज्जेत्ता	५(२)	४
विवहुण	८	५७
विवण्ण	५(२)	३३
विवण्णछंद	६(२)	८
विवत्ति	६	५७
	६(२)	२१

विवित्त	८	५२
विवित्तवरिया	२ चू०	
विविह	५(१)	३६
	५(२)	२७, ३३
	६	२७, ३०, ४१,
		४४
	८	१०, १२
	६(४)	४
	१०	८, ६, १२
	१ चू०	१८
विस	८	५६
	६(१)	६
	१ चू०	१२
विसम	५(१)	४
विसय	८	५८
विसीअ *		
-विसीएज्ज	५(२)	२६
विसीदंत	२	१
विसुज्झ *		
-विसुज्झई	८	६२
विसुद्ध	६(३)	४
विसोत्तिया	५(१)	६
विसोहिठाण	६(१)	१३
विह	६(४)	सू० ४
विहगम	१	३

विहम्म *			वुग्गह	७	५०
-विहम्मइ	१ चू०	७	वुग्गहिय	१०	१०
विहर *			वुच्च *		
-विहरामि	४	सू० १७	-वुच्चति	१	५
-विहरे	८	५६		७	४८
-विहरेज्ज	२ चू०	१०	वुज्झ *		
-विहरेज्जासि	५(२)	५०	-वुज्झइ	६(२)	३
विहारचरिया	२ चू०	५	वुट्ठ	७	५१, ५२
विहि	५(२)	३		८	६
विहिसंत	६	२७, ३०, ४१,	वुत्त	६	५, २०, ४८,
		४४			५४-
विहुयण	८	सू० २१		८	२
	६	३७		६(२)	१६
	८	६	वेणइय	६(१)	१२
वीअ *			वेय	६(४)	सू० ४
-वीए	१०	३	वेयइत्ता	१ चू०	सू० १
-वीएज्ज	८	६	वेयावडिय	३	६
-वीएज्जा	४	सू० २१		२ चू०	६
-वीयावए	१०	३	वेर	६(३)	७
-वीयावेज्जा	४	सू० २१	वेरमण	४	सू० ११ से १७
वीयत	४	सू० २१	वेल्लुय	५(२)	२१
वीयण	३	२	वेल्लोइय	७	३२
वीयावेण	६	३७	वेस	५(१)	६, ११
वीसम *			वेहिम	७	३२
-वीसमेज्ज	५(१)	६३	वोक्कत	६	६०
वीसमंत	५(१)	६४	वोसट्ठ	५(१)	६१

वोसट्टुचत्तवेह	१०	१३
वोसिर *		
-वोसिरामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-वोसिरे	५(१)	१६
व्व	२	६
	८	४०
	१ चू०	५, ६

च

स	४	सू० ८
	४	१७, १८
	५(१)	८७
	६	६
	८	२
	२ चू०	१
सअ	५(१)	६
सआ	६	६८
सइ	५(२)	२०
सइकाल	५(२)	६
सइत्तु	६	५३
संकट्टाण	५(१)	१५
सकण	६	५८
संकण्य	२	१
	१ चू०	सू० १

संकम	५(१)	४, ६५
संका	७	६
संकिय	५(१)	४४, ७७
	७	७
सकिल्लस	५(१)	१६
सकुचिय	४	सू० ६
संखडि	७	३६, ३७
संग	१०	१६
संघट्ट		
-सघण्टु	८	७
संघट्टइत्ता	६(२)	१८
सघट्टिया	५(१)	६१
सघाय	४	सू० २३
सजइदिय	१०	१५
संजम	१	१
	२	८
	३	१, १०
	४	१२, १३, २७
	६	१, ८, १६,
		४६, ६०, ६७
	७	४६
	८	४०, ६१
	६(१)	१३
	१०	७, १०
	१ चू०	सू० १

संजमजीविय	२ चू०	१५	संत	५(२)	११ - - -
संजय	२	१० - - -		६(३)	१३ - -
	३	११, १२		६(१)	५ -
	४	सू० १८ से २३	संजत	१ चू०	८
	४	१०	संताण	१ चू०	८ -
	५(१)	५ से ७,	संतुष्ट	५(२)	३४
		२२, ४१, ४३,	संतोस	६(३)	५
		४८, ५०, ५२,	संतोसओ	८	३८
		५४, ५६, ५८,	संयर *		
		६०, ६२, ६४,	-संथरे	५(२)	२
		६६, ७७, ८३,	सथार	८	१७
		८६, ९७		६(३)	५
	५(२)	१, ८ से ११,	संथारग	४ सू०	२३
		१३, १५, १७,	सधि	५(१)	१५
		२८, ५०	संपडिलेहियव्व	१ चू० सू०	१
	६	१४, २६, २६,	संपविडज्ज *		
		३४, ४०, ४३	-संपडिवज्जइ	६(४)	सू० ४
	७	४६, ५६	संपडिवाइय	२	१० - - -
	८	३, ४, ६,	सपडिवाय *		
		१३, १४, १६,	-सपडिवायए	६(२)	२०
		१८, २४	सपणोल्लिया	५(१)	३०
	१०	१५	सपत्त	५(१)	१
संजाय	७	२३	सपत्ति	६(२)	२१
संजोग	४	१७, १८	संपन्न	६	१
संठाण	८	५७		७	४६
संङ्गिभ (दि०)	५(१)	१२		८	५१

दसवेआलिय शब्द-सूची

७६

संपमज्जिता	५(१)	८३
सपय	७	७
सपराय	२	५
सपस्सिय	१ चू०	१८
सपहास	८	४१
	१०	११
संपाविउकाम	६(१)	१६
सपिक्ख *		
-सपिक्खई	२ चू०	१२
सपुच्छण	३	३
सफुस *		
-सफुसावेज्जा	४ सू०	१६
-सफुसेज्जा	४ सू०	१६
सफुसत	४ सू०	१६
सवाहण	३	३
संबुद्ध	२	११
सभिन्नवित्त	१ चू०	१३
समुच्छ्रिय	७	५२
सरक्खण	६	२१
सल्लिह *		
-सल्लिहे	८(४)	७
सल्लिहत्ताण	५(२)	१
सलुचिया	५(२)	१४
सलोग	५(१)	२५
सवच्छर	२ चू०	११
सवर	४	१६, २०

सवर	५(२)	३६, ४१, ४४
	१०	५
	२ चू०	४
संवर *		
-सवरे	८	३१
सवहण	७	२५
सवुड	५(१)	८३
	६(४)	५
ससय	५(१)	१०
	६	३४
ससग्गि	५(१)	१०
	६	१६
	८	५६
ससट्ठ	५(१)	३४, ३६
संसट्ठकप्प	२ चू०	६
ससक्त	६	२४
ससार	२ चू०	३
संसारसायर	६	६५
ससेइम		
(सस्वेदज)	४ सू०	६
ससेइम		
(ससेकिम)	५(१)	७५
सक्क	६(३)	६
सक्कणिज्ज	२ चू०	१२
सक्करा	५(१)	८४

सककार *

सककारण	६(१)	१२
सककारेति	६(२)	१५
सककारण	१०	१७
सककुलि	५(१)	७१
सगास	५(१)	८८, ६०
	५(२)	५०
	८	४४
	६(१)	१

सन्नमोसा

७ ४

सञ्चरय

६(३) १३

सञ्चवाइ

६(३) ३

सञ्चा

७ २, ३, ११

सञ्चामोसा

७ २

सञ्चित्त

३ ७

४ सू० २२

५(१) ३०

५(२) १४, १६

१० ३

सजोइय

८ ८

सज्माण

८ ६२

सज्माय

५(१) ६३

८ ४१, ६१, ६२

१० ६

२ चू० ७

सड

६(२) ३

सत्त

४ सू० ४ से ८

सत्ति

६(१) ८, ६

सत्तुचुण

५(१) ७१

सत्थ

६ ३२

६(२) ८

१० २

सत्थपरिणय

४ सू० ४ से ८

सद्द

८ २६

६(४) सू० ६, ७

१० ११

सद्धा

८ ६०

सद्धि

५(१) ६५

सन्निर (दि०)

५(१) ७०

सन्निवेस

५(२) ५

सन्निहि

३ ३

६ १७, १८

८ २४

सन्निहिओ

१० १६

सप्पि

६ १७

सप्पुरिस

२ चू० १५

सबीय

४ सू० ८

सबीयग

८ २

सभिव्वु

१०

सम

१ ५

२ ४

६(३) ११

१० ५, ११, १३

२ चू० १०

समइक्कंत	१ चू०	६
समं	२ चू०	६
समण	१	३
	४ सू०	१ से ३
	४	२६
	५(१)	३०, ४०, ४६, ५३, ६७
	५(२)	१०, ३४, ४०, ४५
समणधम्म	८	४२
समणुजाण *		
-समणुजाण्ति	६	४८
-समणुजाणामि	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
-समणुजाणेज्जा	४	सू० १० से १६, सू० १८ से २२
समत्त	८	६१
समाउत्त	७	४६
समागय	५(२)	७
समाण	१ चू०	१०
समायर *		
-समायरामि	२ चू०	१२
-समायरे	४	११
	५(२)	४
	८	२१, ३१, ३५
समारंभे	३	४

समारंभ	६	२८, ३१, ३५, ३६, ३६, ४२, ४५, ५१
समारंभ *		
-समारंभावेज्जा	४ सू० १०	-
-समारंभेज्जा	४ सू० १०	-
समारंभंत	४ सू० १०	-
समावन्न	५(२)	२
	१ चू०	सू० १
समावयत	६(३)	८
समासेज्ज	८	४५
समाहि (ही)	६(१)	१६
	६(४)	सू० १ से ७
	६(४)	२ से ६
	२ चू०	४
समाहिय	५(१)	२६, ६६
	८	१६
	१०	१
समीरिय	८	६२
समुक्कस *		
-समुक्कसे	५(२)	३०
	८	३०
	१०	१८
समुद्धर *		
-समुद्धरे	१०	१४

समुपेहिया	७	५५
समुप्यन्न	७	४६
समुप्येह	७	३
	८	७
समुयाण	५(२)	२५
	६(३)	४
	२ चू०	५
समुवे *		
-समुवेति	६(२)	१
समुस्सय	६	१६
समोसढ	६	१
सम्म	४	६
	५(१)	६१
	६(४)	सू० ४
	१ चू०	सू० १
	२ चू०	१३
सम्मद्माण	५(१)	२६
सम्मद्विट्ठि	४	२८
	१०	७
सम्मद्विया	५(२)	१६
सम्मय	८	६०
सम्माण	५(२)	३५
सम्मुच्छिम	४	सू० ८, ६
सय	५(१)	६
	७	५५

सय *		
-सय	७	४७
	८	१३
-सये	४	७, ८
सयं	४	सू० १० से १६
	५(२)	३३
सयण	२	२
	५(२)	२८
	७	२६
	८	५१
	२ चू०	८
सयमाण	४	४
सयय	५(२)	३८
	८	४०
	६(१)	१३
	६(३)	१३, १५
	२ चू०	१६
सयल	६	४
सया	१	१
	४	२८
	५(१)	१४
	५(२)	२५
	७	५५, ५६
	८	३२, ४१, ६
	६(३)	६, १०
	६(४)	४
	१०	३, ६, ७, ८

दसवेआलिय शब्द-सूची

सरीर	१०	१२
	१ चू०	१६
सरीसिव	७	२२
सलागा	४	सू० १८
सवक्कसुद्धि	७	५५
सविज्जविज्जा	६	६६
सव्वओ	६	३२
	७	१
सव्व	३	१०
सव्वत्तग	४	२१, २२
सव्वत्थ	६	२१
	७	४४
सव्वभाव	८	१६
सव्वसो	७	१
	८	४७
	६(४)	७
सव्वुक्कस	७	४३
ससक्ख	५(२)	३६
ससरक्ख	४	सू० १८
	५(१)	७, ३३
	८	५
ससार	७	३५
ससि	६(१)	१५
ससिणिद्ध	४	सू० १६
	५(१)	३३
सह	१०	११

सह *

सहई	६(३)	८
सहे	१०	११
सहेज्ज	६(३)	६
सहाय	२ चू०	१०
सहेउ	६(३)	६
सहेत्तु	३	१४
साइ	१ चू०	सू० १
साइम	४	सू० १६
	५(१)	४७, ४६, ५१,
		५३, ५७, ५६,
		६१
	५(२)	२७
	१०	८, ६
सागर	६(३)	१४
सागरोवम	१ चू०	१५
साण	५(१)	१२, २२
	७	१६
साणी	५(१)	१८
सामंत	५(१)	६, ११
सामणिय	७	५६
	१०	१४
सामण्ण	२	१
	४	२८
	५(१)	१०
	५(२)	३०
	१ चू०	६

सामण्णपुब्बय	२	
सामिणी	७	१६
सामिय	७	१६
सामुद्द	३	८
साय	४	२६
सायग	४	२६
सारक्ख	५(२)	३६
सारिस	१ चू०	१०
साला	७	३१
सालुय	५(२)	१८
सावज्ज	६	३६, ६६
	७	४०, ४१, ५४
	१ चू०	सू० १
सासय (शाश्वत)	४	२५
	६(४)	७
सासय (स्वाशय)	७	४
सासवनालिआ	५(२)	१८
साहट्टु	५(१)	३०
साहण	५(१)	६२
साहम्मिय	१०	६
साहस	६(२)	२२
साहा	४	सू० २१
	६	३७
	८	६
	६(२)	१
साहारण	१ चू०	सू० १

साहीण	२	३
साहु	१	३, ५
	५(१)	५, ६२, १
		६४ से ६६
	५(२)	४३
	६	१२
	७	४८, ४९
	=	५२
	६(३)	११
	२ चू०	४
सिअ	४	सू० २१
सिगबेर	३	७
	५(१)	७०
सिंघाण	८	१८
सिंच		
-सिंचति	=	३६
सिघव	३	८
सिंबलि	५(१)	७३
सिक्ख		
-सिक्खे	७	१
	६(१)	१, १२
सिक्खमाण	६(२)	१४
सिक्खा	६	३
	६(२)	१२, २१
सिक्खिऊण	५(२)	५०
सिग्घ	६(२)	२

सिज्झ #			सिर	६(१)	८, १२
-सिज्झंति	३	१४	सिरी	६(२)	४
सिणाण	३	२		१ चू०	१२
	५(१)	२५	सिला	४	१८
	६	६०, ६३-		५(१)	६५
सिगाय *				८	४, ६
-सिगायति	६	६२	सिलेस	५(१)	४५
सिगायत	६	६१	सिलोग	६(४)	सू० ४ से ७
सिणेह	८	१५		१ चू०	सू० १
सित्त	६(२)	१२	सिव	७	५१
सिद्ध	४	२५	सिहि	६(१)	३
	६(४)	७	सीईभूय	८	५६
सिद्धि	४	२४, २५	सीओदय	६	५१
	६	६८		८	६
	६(१)	१७		१०	२
सिद्धिमग	३	१५	सीय	६	६२
	८	३४		७	५१
सिप्प	६(२)	१३, १५		८	२७
सिया	२	४	सील	६(१)	१४, १६
	५(१)	२८, ४०, ७४,	सीस	४	सू० २३
		८२, ८४		६(१)	६
	५(२)	१२, ३१, ३३	सीह	६(१)	८, ६
	६	१८, ५२	सुअलकिय	८	५४
	७	२८	सुइ	८	३२
	८	३, २५, ४७	सुउद्धर	६(३)	७
	६(१)	७, ६	सुण	१०	८

मुकड	७	४१
मुक्क	५(१)	६८
मुक्कोय	७	४५
मुगंध	५(२)	१
मुगाड	४	२६, २७
मुद्धिन्त	७	४१
मुद्धिअप्य	३	१
	६(१)	३
मुण *		
-मुणेड	८	२०
-मुणेज्जा	५(१)	४७
-मुणेह	५(२)	३७, ४३
	६	४, ६
	८	१
मुणित्तु	२ चू०	१
मुत्तिथा	७	३६
मुत्तोसअ	५(२)	३४
मुत्त (मुत्त)	४	सू० १८ से २३
	६(१)	८
मुत्त (मूत्र)	१०	१५
	२ चू०	११
मुदसण	१ चू०	१७
मुदुल्लह	५(२)	४८
मुद्व	५(१)	५६
मुद्वपुदवी	८	५
मुद्धागणि	४	सू० २०

मुद्धोदग	४	सू० १६
मुनिद्विय	७	४१
मुनिसिय	१०	२
मुपक्क	७	४१
मुपन्नत्त	४	सू० १ से ३
मुप्यणिहिदिअ	५(२)	५०
मुभासिय	२	१०
	६(१)	१७
	६(३)	१४
मुमिण	८	५०
मुय	४	सू० १
	८	२०, २१, ३०, ६३
	६(१)	३, १४, १६
	६(२)	२
	६(४)	सू० १, १, ३
	१०	१६
	२ चू०	१
मुयवखाय	४	सू० १ से ३
मुयगाहि	६(२)	१६
मुयत्यवम्म	६(२)	२३
मुयसमाहि	६(४)	सू० ३, ५
	६(४)	३
सुर	६(१)	१४
सुरक्खिय	२ चू०	१६
सुरा	५(२)	३६

सुसुट्ट	६(१)	५
सुलुट्ट	७	४१
सुलभ	१ चू०	१४
सुलह	४	२७
सुविक्रीय	७	४५
सुविणीय	६(२)	६, ६, ११
सुविसुद्ध	६(४)	६
सुविहिय	२ चू०	३
सुसंतुष्ट	८	२५
सुसंबुद्ध	१०	७
सुसमाजत	६	३
सुसमाहिईदिय	७	५७
सुसमाहिय	३	१२
	५(१)	६
	६	२६, २६, ४०,
		४३
	८	४
	६(४)	६
	१०	१५
	२ चू०	१६
सुस्सुस *		
-सुस्सुसइ	६(४)	२
-सुस्सुसए	६(१)	१७
सुस्सुसमाण	६(३)	१, २
सुस्सुसा	६(२)	१२
सुह	४	२६

सुह	६(१)	१०
	६(२)	६, ६, ११
	१०	११
	२ चू०	३
सुहड	७	४१
सुहर	८	२५
सुहावह	६	३
	६(४)	६
सुहि	२	५
सुहुम	४	सू० ११
	६	२३, ६१
	८	१३ से १५
सूइय	५(१)	६८
सूइया	५(१)	१२
सूर	८	६१
से (दि०)	४	सू० ६, ११ से १६,
		सू० १८ से २३
सेज्जा	४	सू० २३
	५(१)	८७
	५(२)	२
	६	४७
	८	१७, ५२
	६(२)	१७
	६(३)	५
	२ चू०	८
सेज्जायरपिड	३	५

नम

सेट्टि	१ चू०	५
सेडिया	५(१)	३४
सेणा	८	६१
सेय	२	७
	४	सू० १ से ३
सेव	४	सू० १४
	५(२)	३४
	८	६
सेवंत	४	सू० १४
सेविय	६	३७, ६६
सेलेसी	४	२३, २४
सेस	५(१)	३६
	२ चू०	१२
सोउमल्ल	२	५
सोभ *		
सोएज्जा	५(२)	६
सोडिया	५(२)	३८
सोक्ल	८	२६
	१ चू०	११
सोग्गइ	५(१)	१००
	८	४३
सोच्चा	२	१०
	४	११
	५(१)	५६, ७६
सोच्चाण	६(१)	१७
	६(३)	१४

परिशिष्ट-

सोच्चाणं	८	२५
सोय	६(२)	३
सोरट्टिया	५(१)	३४
सोवक्केस	१ चू०	सू० १
सोवच्चल	३	८
सोह *		
सोहई	६(१)	१५
सोहि	५(२)	५०

ह

हं	१ चू०	सू० १
हंदि (दि०)	६	४
हड	२	६
हण *		
हायए	६	६
हणे	६	६
	८	३८
हत्य	४	सू० १८, २१, २३
	५(१)	३२, ३५, ३६,
		६८, ८५-
	८	४४, ५५
	१०	१५
हत्यग	५(१)	७८, ८३
हत्यि	१ चू०	७

हय (हय)	५(१)	१२	हाणि	२ चू०	६
	६(२)	५, ६	हालहल	६(१)	७
	१ चू० सू०	१	हाव *		
हय (हत)	१०	१३	-हावएज्जा	८	४०
हरतणुग (दि०)	४	सू० १६	हास	४	सू० १२
हरिय	४	सू० २२	हासमाण	७	५४
	५(१)	३, २६, २६,	हिगुलव	५(१)	३३
		५७	हिंस *		
	५(२)	१६	-हिंसई	४	१
	८	११, १५		६	२७, ३०, ४१,
	१०	३			४४
हरियाल	५(१)	३३	-हिंसंति	६	२६, २६, ४०,
हल	७	१६			४३
हला	७	१६	-हिसेज्ज	५(१)	५
हव *			-हिसेज्जा	८	१२
-हवंति	६(३)	७	हिसग	६	११
-हवेज्ज	८	२४, २६	हिम	४	सू० १६
	१०	६		८	६
	१ च०	१७	हिय	४	सू० १७
-हवेज्जा	१०	१, १३		५(१)	६४
	२ चू०	७		७	५६
हव्ववाह	६	३४		८	३६, ४३
हसंत	५(१)	१४		६(४)	२, ६
हस्सकुहव	१०	२०		१०	२१
हाव *			हीणपेसण	६(२)	२२
-हार्यंति	८	३५			

हील *

-हीलए	६(३)	१२
-हीलंति	६(१)	२
	१ चू०	१२
हीलणा	६(१)	७, ६
हीलयत	६(१)	४
हीलिय	६(१)	३
ह्य	२	३
ह्य	७	१६
हेउ	५(१)	६२
	६(२)	२०
	६(४)	सू० ७
हेड्ड	१ चू०	१३
हेमत	३	१२
हो *		
-हवइ	४	२५
	६	६०
-होइ	४	१ से ६
	५(२)	३२

-होइ

	६	६०
	६(१)	१, ४
	१०	४
	१ चू० सू०	१
	१ चू०	२ से ६
-होउ	७	५०, ५१
-होज्ज	५(१)	५७, ५६, ८०
	७	५१
-होज्जामि	५(१)	६, ६१
	५(२)	१२
	७	२६
-होज्जामि	५(१)	६४
-होति	२ चू०	४
-होमो	२	८
-होहिसि	२	५
हो	७	१६
होउकाम	२ चू०	२
होयव्वय	८	३
होल (दे०)	७	१४, १६
होला (दे०)	७	१६

*

परिशिष्ट-२

उत्तरज्झयण शब्द-सूची



उत्तराभयण शब्द-सूची

[१—अवयव और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है ।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है । जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द) ।

३—ताराकित शब्द धातुएँ हैं । उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (उँश) के बाद हैं ।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है ।]

अ			अइदूर	१	३३
अ	११६	- २३,६३		२०	७
अइ	२	२७,४६	अइदूरओ	१	३४
अइउच्च	१	३४	अइमत्त	१६	८
अइक्कम *			अइमाय	१६	सू० १०
-अइक्कमे	१	३३		१६	१२
-अइक्कमइ	२६	सू० १	अइयाअ	२०	५६
अइगय	१०	५ से १४	अइरित्त	२६	२८
	२२	२७	अइलोलुअ	११	५
अइच्छत	१६	५	अइवत्त *		
अइच्छिय	३३	२४	-अइवत्तई	२७	२
अइच्छिया	७	२१	अइवाय *		
अइत्तिक्ख	१६	५२	-अइवाएज्जा	८	६
अइदुस्सह	१६	७२	अइविगिट्ट	३६	२५३

१—इस कोष्ठक की सख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं ।

२—इस कोष्ठक का सख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं ।

अइवेला	२	६,२२	अंगण	७	१
अइसय	२६	सू० ३८	अंगविज्जा	८	१३
अईय	२३	८५	अंगवियार	१५	७
	२५	२१	अगुल	२६	१४,१६
	३३	१७	अंगुलि	२६	२३
अईयार	२६	३६,४०,	अजण	३४	४ -
		४७,४८		३६	७४ -
अजणतीस	३६	२४०	अजलिकरण	३०	३२
अजणतीसड	३६	२४१	अड	३२	६
अजणवीस	३६	२३०	अत	१४	५१
अजणवीसड	३६	२३१		२२	१५
अउत्त	१६	२६		२८	४१,५८,६१,
अउल	२	३५			७३
	२०	५,१६		२६	सू० १
	३६	६६		३६	५६,६१
अक	३४	६	अंतकर	२३	८४
	३६	६१,७५		३५	१
अंकुस	६	६०	अंतकाल	१३	२२
	२२	४६	अंतकिरिया	२६	सू० १४
अग	२	३	अतग	३२	१६
	३	१	अतगवेसि	१४	५१
	१२	४३,४४	अतमुहुत्त	३४	६०
	१६	४	अतर	१६	सू० ७ -
अंग	२०	१६		१६	७४
	२८	२१,२३		२०	२०
अंगअ	२२	३६		३६	८२,६०,

अंतर	१०४, ११५, १२४, १३४, १६८, १७७, १८६, १९३, २०२, २४६	अंतोमुहुत्त	३६	८० से ८२, ८८ से ९०, १०२ से १०४, ११३ से ११५, १२२ से १२४, १३२ से १३४, १४१ से १४३, १५१ से १५३, १६८, १७५ से १७७, १८४ से १८६, १९१ से १९३, २०० से २०२, २४६
अंतरद्दीवय	३६ १९६			
अतरमासिल्ल	२७ ११			
अंतरा	२२ ३३			
अंतराय	१४ ७			
	२९ सू० ७१			
	३२ १०८			
	३३ ३, १५, २०			
अतरिच्छा	२० २१			
अंतरेण	१ २५			
	२९ सू० ३४, ३५	अंघगवण्हि	२२	४३
अतरेय	३६ १४, १३४, १४३, १५३	अंघयार	२२	३३
			२३	७५
अतल्लिक्ख	१२ २५		२८	१२
	१५ ७	अंघिय	३६	१४६
	२१ २३	अंसहर	१३	२२
अतो	२२ ३३	अंसु	२०	२८
	२३ ४५	अकंपमाण	२१	१९
	३३ १७	अकड	१	११
अंतोमुहुत्त	२९ सू० ७२	अकम्म	२९	सू० ७१
	३३ १९, २१, २२	अकम्मचेट्टु	१२	२९
	३४ ४५	अकम्म (भूम)	३६	१९६

अकम्भया	२६	सू० १	अकिर्त्तण	३२	१५
अकरणया	२६	सू० ३२	अकिरिया	१८	२३, ३३
अकरैत	६	६		२६	सू० २८
अकलेवरसेणि	१०	३५	अकिरियाव	२६	सू० २८
अकमाय	२८	३३	अकुञ्जल	११	१०
	३०	३		३४	२७
अकालं	१३	३४	अकुक्कुज	२	२०
अकाज्ज	१३	२१		२१	१८
अकाज्जं	१६	१६	अकुय	१	३०
अकान	५	३	अकुब्बमाण	१३	२१
	६	५३	अकोहण	११	५
अकामकाम	१५	१	अक्कोस	१	३८
अकाममरण	५	२, १६, १७		२	सू० ३
	३६	२६१		१५	३
अकाममरणिज्ज	५			१६	३१
अकारि	६	३०	अक्कोस *		
अकाल	१	३१	-अक्कोसेज्ज	२	२४
अकालिय	३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७३, ८६	अक्ख	५	१४, १५
अकिच्चण	२	१४	अक्ख *		
	१४	४१	-अक्खाहि	१२	४०
	२१	२१	अक्खय	११	३०
	२५	२७	अक्खर	२६	सू० ७२
अकिच्चण	२६	सू० ४७	अक्खाय	२	सू० १
	३५	१६		५	२
	१४	१५		८	८, १३, २०
				१६	सू० १

अक्खाय	१८	४३
	२३	६३
	२४	३
	२६	सू० १
अक्खेव	२५	१३
अगणि	१२	२७
	१६	४७
	३६	१०६
अगार	१	२६
अगारत्थ	५	१६
अगारघम्म	२६	सू० ३
अगारव	३०	३
अगारवास	२	२६
अगारि	५	१६, २३
	२७	२२
अगिलायअ	२६	१०
अगिह	१५	१६
अगुणि	२८	३०
अगुत्त	३४	२१
अग (अग्र)	७	२३, २४
	६	४४
	१०	२
	२०	१५
अग (अग्र)	१४	३१
अगमाहिती	१६	१
अगमला	६	२०

अग्नि	२	७
	६	१२
	१२	३६
	१४	१०, १८, ४३
	१६	३६, ६६
	२०	४७
	२३	५०, ५२, ५३
	२५	१८, १६
	३२	११
	३६	२०६
अग्निहोत्त	२५	१६
अग *		
-अगघइ	६	४४
अचक्किय	११	३१
अचक्कु	३३	६
अचयंत	२५	१३
अचवल	११	१०
	३४	२७
अचिन्तण	३२	१५
अचित्त	२५	२४
अचियत्त (दि०)	११	६
	१७	११
अचिर	१४	५२
	२४	१७
अचेल	२	सू० ३
अचेल्ला (अ)	२	१२, १३, ३४
	२३	६३, २६

अचोइय	१	४४
अच्च *		
-अच्चिमो,		
अच्चेम	१२	३४
अच्चन	१८	५२
	२०	५
	३२	१.११०,
		१११
अच्चणा	३५	१८
अच्चय	१०	१
अच्चि	३६	१०६
अच्चिमालि	५	२७
अच्चुय	३६	२११, २३३
अच्चे *		
-अच्चेड	१३	३१
अच्छ	१२	२६
अच्छ *		
-अच्छड	३१	३ से २०
-अच्छहि	२२	१६
अच्छन	१६	७८
अच्छण	२६	७
अच्छि	२०	१६, २०
अच्छिरोडअ	३६	१४८
(दे०)		
अच्छिल (दे०)	३६	१४८
अच्छिवेहअ	३६	१४७
(दे०)		

अच्छेरग	६	५१
अजय	४	१
अजहन्न	३६	२४४
अजाइय	२	२८
अजाणग	२५	१८
अजाणमाग	१४	२०
अजिइंदिय	१२	५
	३४	२२
अजिण	५	२१
अजिय	२३	३८
अजीव	२८	१४, १७
	३६	२ से ४,
		१३, १४,
		२४८, २४९
अजीवविभत्ति	३६	४७
अजोगत्त	२६	सू० ३७
अजोगि	२६	सू० ३७
अज्ज (अद्य)	२	३१
	६	७
	१०	३१
	१२	१७
	१३	६
	१४	२८
अज्ज *		
-अज्जयन्ते	१३	१२

अज्ज (अर्थ)	१३	२७, ३२	अट्ट (अर्थ)	४	४
	१४	४५		५	८
	२०	६, ८		६	४, १३
अज्जव	६	५७		७	२५, २६
	२६	सू० १		८	३, १२
अज्जवयण	२५	२०		९	८, ११, १३,
अज्जवया	२६	सू० ४८			१७, १६, २३,
अज्जिय	१	४२			२५, २७, २६,
	१८	१६			३१, ३३, ३७,
अज्जुण	२६	६०			३६, ४१, ४३,
अज्मन्थ	६	६			४५, ४७, ५०
	१४	१६		११	३२
अज्मप्यजोग	२६	सू० ५४		१२	३, ६ ३५
अज्मप्यजभाण-				१४	४, ३०
जोग	१६	६३		१५	१०
अज्मप्यण	२६	सू० १, ७३		१६	१
अज्मवमाण	१६	७		१८	२१ -
अज्मवय	१२	१६, १८, १६		१९	८०
अज्मुमि	२४	१७		२०	८
अट्ट	३०	३५		२२	१५, १६
	३८	३१		२५	५, ७, ९, १०
अट्टालग	६	१८		२६	३३, ३४
अट्टिय	२	३२		२८	३६
	२०	२५		२९	सू० १, ७३
अट्ट (अर्थ)	१	८, २५, ३३		३०	१०५
	३	५		३५	१०, १३

अट्ठ (अष्टन) १०	१३	अट्ठिय	१	४६
११	४	अट्ठ	१६	५
२२	५	अण्डवक्रमण	२६	३३
२४	१, १०	अणंत	४	५
२६	१६		१०	६
२८	३१		१६	४७, ४८, ७३
२९	सू० ११, ४६		२८	८
३३	१, ३, २३		२९	सू० ५, ७१
३६	५२ से ५४, ५६, २२१		३४	१० से १३, १५ से १६
अट्ठपञ्च	१०		३६	१८६, १६३
अट्ठभाग	३६	अणंतअ (ग)	६	१, १२
अट्ठम	२४		२०	३१
	२६		३३	१७
	३६	अणंतकाल	३६	१४, ८२, ६०,
अट्ठया	१२			१०३, ११५
अट्ठविह	२६			१२४, १३४,
	३०			१४३, १५३,
	३३			१६८, १७७,
	३६			२०२, २४६
अट्ठवीस	३६	अणंतघाड	२६	सू० ७
अट्ठवीसइ	२६	अणंतभाग	३३	२४
	३६	अणंतसो	१६	४५,
अट्ठहा	३६			४६ से ५१.
अट्ठारस	३६			५३, ५८, ६१.
अट्ठअप्प	२२			६४ से ६७

अगंताणुबन्धि	२६	सू० १	-	अणभिद्दुए	३५	७	-
अणगार	१	१		अणभिल्लसमाण	२६	सू० ३३	-
	२	१४, २८		अणलक्किय	३०	२२	
	८	१६		अणवक्खमाण	१२	४२	
	६	१६		अणवज्ज	१६	२७	
	११	१		अणवदग्ग	२६	सू० २२	
	१८	४, ६ से १०,		अणसण	१६	६२	
		१८, १६			३०	८, ६, १२	
	२५	५, २७, ४२		अणाड	३२	१११	
	२६	सू० ३, ६, ७,			३६	१२	
		४१, ६१, ७२		अणाडण्ण	१६	१	
	३१	१८		अणाडय	२६	सू० २२	
अणगारमग्गड्डे	३५				३६	८	
अणगारसीह	२०	५८		अणाईय	३६	६५, ७६, ८७,	
अणगारिया	१०	२६				१०१, ११२,	
	२०	३२, ३४				१२१, १३१,	
	२१	१०				१४०, १५०,	
अणच्चाविय	२६	२५				१५६, १७४,	
अणच्चासायण	२६	सू० ४				१८३, १६०,	
अणट्ट (अनर्थ)	५	८				१६६, २१८	
	१८	३०		अणाउत्त	१७	६, १३, १४	
अणट्ट (अनष्ट)	१८	४६		अणागय	५	६	
अणाहयत्त	२६	सू० २६			१२	३२	
अणत्थ	१४	१३			१४	२८	
अणन्तिय	६	४८			१८	५२	
अणभिग्गहिय	२८	२६		अणाघाय	५	१८	

१०२

परिशिष्ट-२

अणाद्वय	११	२७	अणाहया	२०	२३ से २७,
अणाण	२	४०, ४१			३०, ३८
अणाणत्त	३६	७७, ८६,	अणिण्य	२	१६
		१००, ११०,	अणिदिय	३५	१६
		११६	अणिगाम	१४	१३
अणाणुबंधि	२६	२५	अणिग्गन्न	११	२, ६
अणावाह	२३	८०, ८३		१७	११
	३५	७	अणिच्च	१८	११, १२
अणाय	२०	२६		१६	१२
अणायार	३६	२६७	अणिन्दियगी	१२	२०
अणारिय (अ)	१२	४	अणिमिस्स	१६	६
	१८	२७	अणियथ	६	१६
	३४	२५	अणियट्ठ	७	२५, २६
अणावाय (अ)	२४	१६, १७	अणियत्त	१४	१४
	३०	२८	अणियमेत्ता	८	१४
अणाविल	१२	४६	अणियाण	३५	१६
अणासन्न	१	३३	अणिल	१४	१०
	२०	७	अणिस्स	३२	३१, ४४, ५७,
अणासव	१	१३			७०, ८३, ८६
	३०	२, ३, १०६	अणिस्सर	२२	४५
	३५	२१	अणिस्सिअ	१६	६२
अणासायणा	२६	सू० १६	अणीहारि	३०	१३
अणासायमाण	२६	सू० ३३	अणुकप		
अणाह	२०	६, १२, १५	अणुकम्पे	१५	१२
		से १७, ५६	अणुकपअ (ग)	१२	८
अणाहत्त	२०	५४		२०	६

अणुकंपव	२६	सू० २६	अणुच्च	१	३०
अणुकपि	१३	३२	अणुजा *		
	२१	१३	-अणुजाड	१३	२३
अणुकसाइ	२	३६		२०	४०
	१५	१६	अणुजाण *		
अणुक्कोस			-अणुजाणह	१६	१०
(अनुक्रोश) २२	१८		अणुजाण	८	८
अणुक्कोस			अणुजीव *		
(अनुत्कर्ष) ३६	२४४		-अणुजीवन्ति	१८	१४
अणुग	३२	२७, ४०, ५३,	अणुज्जुअ	३४	२५
		६६, ७६, ६२	अणुणंत	१४	११
अणुगम *			अणुतप्प *		
-अणुगमिस्सम १४	३४, ३६		-अणुतपेज्ज	२	३०, ३६
अणुगय (अ)	४	१३	अणुतावअ	१०	३३
	१५	१५	अणुत्तर	२	३७
	३२	२७, ४०, ५३,		६	१७
		६६, ७६, ६२		७	२७
अणुगिज्झ *				६	२
-अणुगिज्झेज्जा २	३६			१०	३५
अणुगिद्ध	२०	५०		१३	३४, ३५
अणुगिद्धि	३२	१६		१८	३८ से ४०,
अणुगीय	१३	१२			४२, ४३, ४७
अणुगह	१२	३५		१६	६५, ६८
	२५	३७		२०	५२
अणुचित*				२१	२३
-अणुचिन्ते	१६	६		२२	८८

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

१०५

अणुववायकारअ	१	३
अणुवसंत	१६	४२
अणुवाअ	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ९३
अणुवाइ	१६	सू० १२
अणुव्वय *		
-अणुव्वयाम	१३	३०
-अणुव्वयन्ति	१८	१४
अणुव्वय	२०	२८
अणुसकम *		
-अणुसकमन्ति	१३	२५
अणुसचर *		
-अणुसंचरे	१८	३०
अणुसठि	२०	१
अणुसर *		
-अणुसरेज्जा	१६	सू० ८
अणुसरमाण	१६	सू० ८
अणुसरित्ता	१६	सू० ८
अणुसास *		
-अणुसासन्ति	१	२७
-अणुसासम्मी	२७	१०
अणुसासत	१	३८
अणुसासण	१	२८, २९
	६	१०
	२०	५१
अणुसासिडं	२०	५६

अणुसासिय	१	६
अणुस्सियत्त	२९	सू० ४९
अणुस्सुय	५	१३, १८
अणुस्सुयत्त	२९	सू० २९
अणुस्मुया	२९	सू० २९
अणुरत्त	१३	५
अणूण	२६	२८
अणेग	४	११
	७	१३
	८	१८
	१६	८३
	२१	१६, १७
	२३	१९, ३५
	२८	२२
	२९	सू० ४०
	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७९, ९२, १०३
अणेगअ	१९	८२
अणेगरुव्वुगा	२६	२७
अणेगविह	३६	४८
अणेगसो	१९	५४, ६०, ६२, ६९
अणेगहा	३६	९४, ९६, ९९, १०९, ११०, ११९, १३०,

उत्तरजभयण शब्द-सूची

अत्यो	२८	२३	अदुव	१	१७
अत्यत	१७	१६	अदुवा	२	१२
अत्थिकायधम्म	२८	२७		४	५
अथिर	१७	१३		२१	१६
अथिरव्वय	२०	४१	अहाय	१८	५०
अदसण	३२	१५	अदीण	७	२१
अदसणि	२८	३०	अदीणव	७	२२
अदंसणिज्ज	१२	७	अद (अध्वन्)	६	१२
अददु	४	५		७	५, १८
अदत्त	१२	१४, ४१	अद (अर्घ)	२६	३५
	१६	२७		३४	३४ से ३६,
	२५	२५			४५
	३०	२		३६	२५३ से २५५
	३२	२६, ३१, ४२	अद्वपेहा	३०	१६
		से ४४, ५५,	अद्धा	७	१८
		५७, ६८, ७०,		२६	सू० २२, ७२
		८१, ८३, ६४,		३४	४६
		६६		३६	८
अदत्तहारि	३२	३०, ४३, ५६,	अद्धाण	६	१२
		६६, ८२, ६५		७	५
अदय	१५	११		१६	१८, २०
अदित	६	४०		२३	६०
अदिस्स	२३	२०	अद्धासमय	३६	६
अदीण	२	५, ३२	अधम्म	७	२६
अदीणमण	२	३		३६	७, ८
अदु	२	२३	अधीर	८	६
	८	१२			
	३३	१६			

अमुक्	=	१	अन् (अन्त)	२७	१२
अनिग्गह	२०	३८		२८	सू० ४
अनिद्देसे	१	३		३०	२३
अनियट्ठि	२८	सू० ४१, ७२		३२	१०३
अनियान	१८	८१		३५	=
	३६	२५८	अन् (अन्त)	१२	८ से ११,
अन्तिय	१	८, १८			१६, ३५
	५	३१		२०	०८
	७	१२, २३		०५	८, १०
	१८	१८, १८	अन्तओ	०५	६
	२५	४२	अन्तमन्त	१३	५, ७
अन्तेउर	८	३, १२	अन्तयर	५	०५, ३२
	२०	१४		३०	२०
अन्त (अन्त)	१	३३	अन्तयराग	२६	३१
	२	२१	अन्तया	२१	८
	७	५	अन्तल्लि	३६	४८, ५०
	८	४२	अन्तहा	२८	१८
	१३	०५	अन्ताएसि	०	३८
	१४	१४, ४०, ४२	अन्ताण	२	सू० ३
	१८	१६		१८	२३
	२०	३८		२८	२०
	२३	२८		२८	सू० २४
	३४	३८, ४४, ४८		३२	०
		५४, ५८, ६४,	अन्तायएसि	१५	१
		६८, ७४, ७८	अन्तिअ	१८	४३
२४	१५			२०	१३, ५२

अपज्जत्त	१४	३६	अपि	१	१३, २६, ४०
	३६	७०, ८४, ६२,	अपीहेमाण	२६	सू० ३३
		१०८, ११७,	अपुट्ठ	१	१४
		१२७, १३६,	अपुणच्चव	३	१४
		१४५	अपुणरावत्ति	२६	सू० ४४
अपज्जवसिय	३६	८, १२, ६५,	अपुणागम	२१	२४
		७६, ८७,	अपुरक्कार	२६	सू० ७
		१०१, ११२,	अपुहत्त	२६	सू० ११
		१२१, १३१,	अप्य (आत्मन्)	१	६, १५, १६,
		१४०, १५०,			२८, ३६, ४०
		१५६, १७४,		२	४१
		१८३, १६०,		४	१०
		१६६, २१८		५	११, ३०
अपडिक्क	१३	२६		६	२, ७
अपडिक्कमित्ता	२६	२२		८	११, १६
अपत्थ-	७	११		९	३६
अपत्थण-	३२	१५		१०	२८...
अपत्थणिज्ज	२६	सू० ४७		११	३२
अपत्थेमाण	२६	सू० ३३		१४	४६
अपर	१६	१७		१५	१५
अपराजिय	३६	२१५		१८	२६
अपरिकम्म	३०	१३		१९	२३
अपरिग्गह	२१	१२		२०	१२, ३५ से
अपरिसाडिय	१	३५			३७, ३६, ४१
अपलिमंथ	२६	सू० ३४		२१	१५
अपाहेअ	१६	१८		२२	३६

अप्य (आत्मन्)	२३	३८
	२७	१५, १७
	३४	२६, ३१
अप्य (अल्प)	१	३५
	११	११
	१३	१२
	२५	२४
	२६	सू० २२, ३६
अप्यकम्म	१६	२१
अप्यकुक्कुय	१	३०
अप्यगा	१८	२७
अप्यच्चक्खाय	६	८
अप्यड्ढियय	१७	५
अप्यड्ढिवद्ध	२६	सू० ३०
अप्यड्ढिवद्धया	२६	सू० १, ३०
अप्यड्ढिरूव	३	१६
अप्यड्ढिलेह	२६	सू० ४३
अप्यड्ढिवाह	२६	सू० ७२
अप्यड्ढिहय	११	१८, २१
	२६	सू० १०
अप्यण	१	२५
अप्यणिय	२०	८८
अप्यभक्खि	१५	१६
अप्यमज्जिअ	१७	७
अप्यमत्त	४	६, ८, १०
	६	१२, १६
	१६	सू० १ से ३

अप्यमत्त	१६	२६
	२६	सू० ४२
अप्यमाय	१३	२६
अप्यय	२	६
	६	६
	१६	६४
अप्यरय	१	४८
अप्यवइय	१५	१०
अप्यसत्थ	१६	६३
	२६	२८
	२६	सू० ७
	३४	१६, १८, ६१
अप्याण	१	६
	६	३४ से ३६,
		६१
	२५	८, १२, १५
		३३, ३७
	२६	सू० ६०
	३६	२५०
अप्याणरक्खि	४	१०
अप्यायंक	३	१८
अप्यिच्छ	२	३६
अप्यिय (अप्रिय)	१	१४
	६	१५
	११	१२
	२१	१५

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

अप्पिय (अर्पित) ३	१५	
अप्पुट्टाड १	३०	
अप्पोव (दि०) १८	५	
अफल १४	२४	
अफुसमाण २६	सू० ७३	
अवघण १६	६१	
अवघव १६	६१	
अवंगम ३५	३	
अवंगमचरि १२	५	
अवमचेर १६	२८	
अवल ४	६	
	१०	३३
	१४	३५
	२१	१४
अवहुस्सुय ११	२	
अवाल ७	३०	
अवाह २३	८३	
अवीय २०	२२	
अवोहेत २६	४४	
अवमंतर २८	३४	
	३०	७
अवमपडल ३६	७४	
अवमवालुया ३६	७४	
अविमन्तर १६	८८	
	३०	२६ ३०

अवमुट्ट

-अवमुट्टेड

अवमुट्टिय

अवमाहय

अवमुट्टाण

अवमुट्टिवा

अवमुट्टिय

अवमुट्टय

अवमुवगअ

अमय

अमयदाय

अभाव

अभिओग

अमिकंखि

अमिक्ख

अमिक्खण

अमिक्ख

अमिक्खण

अमिक्ख

अमिक्ख

अमिक्ख

अमिक्ख

अमिक्ख

अमिक्ख

अमिक्ख

२६

३४

१४

२

२६

३०

२६

६

६

१८

१८

१८

१

१२

३६

१८

३२

१४

११

१६

१७

२७

सू० ३२.५०, ७१

३५ से ३७

४६, ५०, ५४,

५५

२१ से २३

३८

४, ७

३२

सू० ५०

६

५१

३६

११

११

६

२१

२६४

६

१७

३७

२, ७

३

१७

४, ११

४, ११

४, ११

४, ११

४, ११

११२

अभिगच्छ '		
-अभिगच्छइ	१	४२
अभिगम	२८	१६
अभिगमरूइ	२८	२३
अभिगम्म	१४	१७
अभिगगह	३०	२५
अभिजा "		
-अभिजायइ	३	१६
अभिजाइय	११	१३
अभिजाण *		
-अभिजाणामि	२	४०, ४२
अभिजाय	३	१८
	१४	६
अभिणिकल्लम *		
-अभिणिकल्लमई	६	२
-अभिणिक्खि-		
माहि	१३	२०
अभिणिकल्लमत	६	५
अभितत्त	१६	६०
अभितुर *		
-अभितुर	१०	३४
अमित्थुणंत	६	५५, ५६
अभिघार *		
-अभिघारए	२	२१
अभिनन्द *		
-अभिनन्देज्जा	२	३३
अभिनिक्खंत	६	४

परिशिष्ट-२

अभिनिक्खल्लम् १४	३७
अभिनिविट्ठ १४	४
अभिप्पेअ ५	३१
अभिभूय	
(अभिभूय) २	सू० १ से ३
२	१८
१५	३
३२	३०, ४३, ५६,
	६६, ८२, ८५
अभिभूय	
(अभिभूत) १४	४
१५	१५
अभिराम १३	१७
अभिरोग *	
-अभिरोगज्जा २१	११, १५
-अभिरोगए ३५	६
अभिलस *	
-अभिलसइ २६	सू० ३३
अभिलसणिज्ज १६	सू० ११
अभिलसिज्ज-	
माण १६	सू० ११
अभिवन्दिऊण २०	५६
अभिवन्दिता २३	८६
अभिवन्दिय १२	२१
अभिवायण २	३८

अभिसमे *			अमित्त	१५	१६
-अभिसमेइ	१३	३०		२०	३७
-अभिसमेम	२०	६	अमिय	३२	१०४
अभिहण *			अमुंच	३६	८१, ८६,
-अभिहणे	२	१०			१०३, ११४,
अभिहय	२३	५३			१२३, १३३,
अभिहिय	२८	२७			१४२, १५२
अभोगि	२५	३६	अमुच्छिय	३५	१७
अमइ	४	२	अमुत्त	१४	१६
अमणुन्न	२६	सू० ६३ से ६७	अमुहरि	१	८
	३२	२१ से २३,	अमूढदिट्ठि	२८	३१
		३५, ३६, ४८,	अमोक्ख	२८	३०
		४६, ६१, ६२,	अमोसली	२६	२५
		७४, ७५, ८७,	अमोह	१४	२१ से २३
		८८	अमोहण	३२	१०६
अमणुन्नया	३२	१०६	अम्बग	७	११
अमम	२१	२१		३४	१२, १३
अमय	१७	२१	अम्बिल	३६	१८, ३२
अमरिस	३४	२३	अम्मा	१६	२, ६, १०,
अमल	३६	२६०			११, २४, ४४,
अमहगय	२०	४२			७५, ७६, ८४
अमाइ	११	१०			से ८६
	२६	सू० ५		२१	१०
	३४	२७	अम्ह	१	१
अमाणुस	३	६	अम्हारिस	१३	२७
			अय (अज)	७	७, ६

अवउज्जम् *

-अवउज्जम्	१७	६
	१६	२२
अवउज्जिम्	६	५५
अवउज्जिम्	१०	३०
अवकं		
-अवकले	६	१३
अवगाय	२८	२०
अवगाहिया	१०	३३
अवचिट्ठ *		
-अवचिट्ठे	१४	१८
अवणञ	२१	२०
अवणवाड	३६	२६५
अवत्तासिय	१६	६
अवघसि	४	७
अवपेक्ख *		
-अवपेक्खसि	६	१२
अववुज्जम्		
-अववुज्जम्	१८	१३
अवमन्न *		
-अवमन्नह	१२	२६
अवमाण	१६	६०
अवरज्जम् *		
अवरज्जम्	७	२५, २६
	३२	२५, ३८, ५१, ६४, ७७, ६०

अवलम्ब *

-अवलम्ब	२६	सू० २०
अवलम्बमाण	२६	सू० २०
अवल्लिय	२६	२५
अवस	७	१०
	१३	२४
	१८	१२
	१६	१६, ५६, ५७, ६३, ६४
अवसन्न	१३	३
	३२	७६
अवसीय *		
-अवसीयई	२७	१५
अवसेस	१२	१०
	२६	२०, ३५
	२६	सू० ७३
अवसोहिय	१०	३२
अवहिय	३२	८६
अवहेडिय	१२	२६
अवि	१	११, १७
अविगाह	२६	सू० ७४
अविज्जा	६	१
	३४	२३
अविणीय	१	३
	११	२, ६, ६
अवियार	३०	१२

११६

परिशिष्ट-२

अविरअ	३४	२१, २४	-अत्थि	३२	१७
अविवच्चास	२६	२८		३६	६६
अविवन्न	२०	४४	-अमि	१२	६
अविसंवायण	२६	सू० ४६		१४	३०
अविसारय	२८	२६		१६	१०, ६६, ७०
अविस्साम	१६	३५		२०	६, ३३
अविहेडय	१५	१५	-अमु	८	७
अवेक्खंत	२३	१५	-असि	६	५८
अवेयण	१६	२१		१०	३२, ३४
अव्वक्खत्त	१८	५०		१२	७, ११
	२०	१७		१३	३२, ३३
अव्वगामण	१५	३, ४		१८	१०
अव्वावाह	२६	सू० ४		१६	३४
अस *				२०	८, १२, ४०,
-अत्थि	२	७, २७, २८,			५६
		४४, ४५		२२	४१, ४३
	४	१, ३	-आसिमो	१३	५
	५	६	-आसी	६	५
	६	१४		१२	१
	१२	३२, ३५		१३	६७
	१३	१०		१८	२८
	१४	१५, २७ से		२०	५, १८
		२६		२१	१
	१७	२		२२	१ से ३
	१६	४४, ७४		२३	८८
	२०	४६		२५	१
	२३	६६, ८१			

-सिया	१	८,४०
	२	३१
-सन्ति	५	२,२०
	८	६
असई	५	३
	६	३०
	१६	४५
असंकिलिट्ट	३६	२६०
असंख	३४	४६,५०
असखकाल	३६	१३,८१,८६, १०४,११४, १२३
असखभाग	३४	३५ से ३७, ४१ से ४३, ५३
	३६	१६२
असखय		
(असत्कृत)	४	
	४	१
असखय		
(असख्यक)	६	४८
असंखिज्ज	३४	३३
असंखिज्जइम	३४	४८
असखेज्ज	३४	५२
असंखेज्जइम	३६	१६१
असंगया	२०	६

असजम	३१	२
असंजय (अ)	१७	६
	२०	४३
	२६	४४
असथड	२१	२२
असपहिट्ट	१५	३,४
असबुद्ध	१	३
असम्भन्त	२२	३६
असंलोअ	२४	१६,१७
असविभागि	११	६
	१७	११
अससत्त	२	१६
	२५	२७
असच्च	१	१४
असच्चमोसा	२४	२०,२२
असज्जमाण	१४	६
	२६	सू० ३१
	३२	५
असण (अदान)	२	३०
	१६	६२
असण (असन)	३४	८
असणि	२०	२१
असत्त	१३	३२
असन्त	६	५१
	१४	१८
असवल	२६	सू० १२

असम्भ	२१	१४	असुड	१६	१२
असमंजस	४	११	असुभ	२१	६
असमाण	२	१६		२४	२६
असमारभन्त	१२	४१	असुय	१४	८
असमाहि	२७	३	असुर	१२	२५
	३१	१४		३६	२०६
असरण	६	१०	अमुह	१०	१५
असाय	३३	७		१३	२८
असायावेय-				३३	१३
गिज्ज	२०	४२	असेवमाण	१२	४१
	२६	सू० २३	अस्स	१	१२, ३७
असावज्ज	२४	१०		२०	१४
असासय	८	१		२३	५५, ५७, ५८
	१३	२०, २१	अन्संजम	३१	१३
	१४	७	अस्सकण्णी	३६	६६
	१६	१२, १३	अस्सस *		
असाहु	१	२८	-अस्सासि	२	४१
असाहुल्लव	२०	४६	अस्साय	१६	४७, ४८, ७४
असि	१६	३७, ५५	अस्सविलो	२३	७१
असिगेह	८	२	अस्सिय (अ)	१३	१५
असिपत्त	१६	६०		१८	६
असिप्पजीवि	१५	१६		२८	६
असिय	१६	१२		३५	२
असील	५	१२	अस्सुयपुव्व	२०	१३
	११	५	अह (अय)	२	४१
	२०	४६	अह (अहन)	१४	१४

अहक्खाय	१४	५०
	२८	३३
अहक्खायचरित	२६	सू० ५६
अहम	६	५४
	१३	१८
अहम्म	४	१३
	५	१५
	७	२८
	१४	२४
	१७	१२
	२८	७ से ६
	३६	५
अहम्मलेसा	३४	५६
अहम्मिद्ध	७	४, २८
अहवा	३०	१३
अहस्सिर	११	४
अहाउय	३	१६
	२६	सू० ७३
अहाच्छद	२०	५०
अहाणुपुब्बी	३२	६
अहि	१६	३८
	३४	१६
	३६	१८१
अहिसया	३	८
अहिंसा	२१	१२
अहिक्षिव *		
-अहिक्षिवई	११	११

अहिगच्छ *		
-अहिगच्छंति	२३	३५
अहिगम	२६	सू० ६०
अहिगय	२८	१७
अहिगार	१४	१७
अहिज्ज	१२	१५
	१४	६
अहिज्जत	२८	२१
अहिज्जित्ता	१	१०
अहिट्ठा *		
-अहिट्ठेज्जा	११	३२
-अहिट्ठेज्जासि	३४	६१
अहिट्ठिय	६	४
अहितत्त	२	६
अहिय	१४	१०
	२२	१०
	३१	१६
	३२	५
	३४	३४, ३८, ३६,
		५२, ५४
	३६	१८५, १६२,
		२१६, २२१,
		२२३, २२५
अहियास *		
-अहियासए	२	२३, ३२
	१५	३, ४

-अहियासएज्जा	२१	१८	आड (दि०)	२३	४३
अहिर्वई	११	१६, २२, २३		२४	१८
अहीण	१०	१७, १८		२६	सू० ३
अहीय	१४	१२		३०	१५, १८, २६,
अहीरिया	३४	२३			३१
अहीलणिज्ज	१२	२३		३१	१७
अहुणेवन्न	५	२७		३२	१०६
अहे	६	५४		३६	६६, ११०,
	३६	५०, ५४			११६, १३०,
अहेउ	१८	५१, ५३			१३६, १४६,
अहो (अहो)	६	५६, ५७			१८०, १८१,
	१२	३६			२१६
	१८	३१	आइअ (य)	२५	१७
	१६	१५		३०	२७, ३३
	२०	६		३२	१०६
	२१	६		३६	१३८
अहो (अहन)	१४	१४	आइक्ख *		
अहो (अघस्)	१६	४६	-आइक्ख	१२	४५
अहोरत्त	३६	११३, १४१	आइच्च	२६	८
अहोराय	१८	३१		३४	७
आइ (आ+पा) *			आइण्ण	१	१२
-आइए	१०	२६		११	१६, १७
आइ (आ+दा) *				१६	११
-आइए	२४	१४		१६	५२
आड (दि०)	१६	२७, ५१, ६६,		२०	३
		६७		२७	१

आज (अप्) ३६	६६, ८४, ८८, ८६, ६०	आज्जया	२०	४०
आज (आयुष्) ७	१०, १२, १३, २४, २७	आजर	२	५
१०	३		१५	८
१४	७		३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६
१८	२६	आज्ज	२	सू० १
३३	१२		१६	सू० १
३४	२		१७	२
३६	१०२		२६	सू० १
आज्ज (य) ४	६	आएस	७	१ से ४, ६
७	४, ७, २४		३६	६
२६	सू० २३, ४२, ७३	आगज (य)	५	६
आज्जम्म	३२		७	६, १४, १५
आज्जकाय (अ) १०	६		१०	३४
२६	३०		१२	७, ६
आज्जकय	३		१४	४५
३२	१०६		१८	५, २६
आज्जिह	३६		२१	२, ५, १०
	८०, ८८, ११३, १२२, १३२ से १४१, १५१, १६७, १७५, १८४, १९१, २००, २४५		२३	३, १५, १६
आज्ज	१६		२६	४६
	२६		२६	सू० ४३
		आगन्तु	२५	२०
		आगच्छ*		
		-आगच्छइ	१२	६
			२०	४३
			२६	सू० २, ३

१२२

-आगच्छक	२२	८
आगम	३६	२६२
आगमिस	२६	सू० २४
आगम्म	१	२२
	१४	३
	१८	६
आगर	१६	५,४६
	३०	१६
आगार	१	२
आगास	६	४८,६०
	१२	३६
	१६	३६
	२८	७,८
	३६	२,६ से ८
आषविअ	२६	सू० ७४
आषायाय	५	३२
आणय	३६	२११,२३०
आणा	१	२,३
	२०	१४
	२८	२०
	२६	सू० १,११
आणापाणु	२६	सू० ७३
आणारुइ	२८	१६,२०
आणी *		
-आणेइ	२१	७
आणुपुव्वी	१	१

परिशिष्ट-१

आणुपुव्वी	२	१
	३	७
	११	१
	३३	१
	३४	१
आतव	२८	१२
आदाळं	१४	३८
आदाण	२४	२
आदाय	२	१७,४३
	५	३०
	६	१३
	१८	५१
आदेसओ	३६	८३,६१,
		१०५,११६,
		१२५,१३५,
		१४४,१५४,
		१६६,१७८,
		१८७,१९४,
		२०३,२४७
आनम *		
-आनमति	६	३२
आपुच्छ	२१	१०
आपुच्छणा	२६	२,५
आपुच्छित्ताण	२०	३४
आभरण	१३	१६
	२२	६,२०

आभिजोग	३६	२५६	-
आभिनि (ण)			-
-बोहिय	२८	४	-
	३३	४	
आमत *			
-आमन्नयामो	१४	७	
आमतिअ	१३	३३	
आमय	३२	११०	
आमिस	८	५	
	१४	४६	
	३२	६३	
आमोयमाण	१४	४४	
आमीस	६	१२८	
आय	२	१५	
	८	१६	
	१३	१०	
	१४	१०	
	१५	२	
आयक	५	११	
	१०	२७	
	१६	सू० ३ से १२	
	१६	७८	
	२१	१८	
	२६	३४	
आयगवेसअ	१५	५	
आयगुत्त	१५	३	
	२१	१६	

आयय *		
-आययई	३२	२६
आयय	३६	२१, ४६, ५८
आययगत्तु-		
पच्चागया	३०	१६
आययट्टिय	२६	सू० ३४
आययण	३२	६
आयर *		
-आयरे	२४	७
	३०	३७
आयरत	१	४२
	३५	१
आयरिय(आचार्य) १		२०, ४०, ४१,
		४३
	८	१३
	१६	सू० ३ से १२
	१७	४, ५, १७
	१८	२२
	२०	२२
	२७	११
	३०	३३
आयरिय		-
(आचरित) १		४२
	६	८
आयव	२	३५
आयहिअ	२१	१२

आया *			आराम	१६	१५
-आयएज्ज	६	७	आराह *		
-आययन्ति	३	७	-आराहए	१२	१२
आयाण	६	७		१७	२१
	१३	१६	-आराहेइ	२६	सू० १५, १७
आयाणनिकखेव	१२	२	आराहथ	२६	सू० १, ४६, ५१,
	२०	४०			५४
आयाम	३६	२५३ से २५५	आराहइत्ता	२६	सू० १
आयामग	१५	१३	आराहणया	२६	सू० १
आयाय	३	११			२५, ४६, ७२
आयार	११	१	आराहणा	२६	सू० १५
	२०	५२	आराहिय	८	२०
	२३	११	आरिअत्त	१०	१६
	२६	सू० १७	आरिय	२	३७
आरंभ	१३	३३		८	८
	१४	४१		१८	२५
	१६	२६	आरियभाण	३२	१५
	२४	२१, २३, २५	आरियत्तण	१०	१७
	२६	सू० ३	आरूह *		
	३४	२१, २४	-आरूहइ	१७	७
आरभ *			आरूढ	२२	१०
-आरमे	८	१०		२३	५५, ७०
आरण	३६	२११, २३२	आलम्बण	२४	४, ५
आरणग	१४	६		२६	सू० ३४
आरभडा	२६	२६	आलय	१६	१, ११
आरसंत	१६	५३, ६८		१६	१४

आलय	३६	२०८
आलव *		
-आलवे	१	१०
आलवत	१	२१
आलसिअ	२७	१०
आलस्स	११	३
आलुय	३६	६६
आलोडत्ता	१६	सू० ६
आलोएमाण	१६	सू० ६
आलोय (आ+लोक्) *		
-आलोएइ	१६	४
-आलोएज्जा	१६	सू० ६
आलोय (आ+लोव्) *		
-आलोएज्ज	२६	४०, ४८
आलोय	३२	२४
आलोयण	१६	४
	२१	८
आलोयणया	२६	सू० १
आलोयणा	२६	सू० ६
	३६	२६२
आलोयणारिह	३०	३१
आवई	७	१७
आवज्ज *		
-आवज्जई	३२	१०३, १०४
आवट्ट	३	५
	२५	३८

आवडिय	२५	४०
आवन्न	४	४
	६	१२
आवर *		
-आवरेइ	३२	१०८
आवरण	३३	६
आवरणिज्ज	३३	२०
आवसह	१३	१३
	३२	१३
आवस्सिया	२६	२, ५
आवाय	२४	१६
आवास	५	२६
	१६	१२
आवि	१	१७
आविद्ध	२२	४४
आविल	३२	२६, ४२, ५५, ६८, ८१, ६४
आवेज्ज	२२	४२
आस	४	८
	६	५
	११	१६
	१८	६, ८
आसअ	२८	६
आसंसा	२६	सू० ३६
आसण	१	२१, २२, ३०, २१
	२	२१

आसण	७	८	आसाढ	२६	१३, १५, १६
	१५	४, ११	आसायणा	३१	२०
	१६	सू० ३	आसिय	१६	१२
	१७	१३	आसीविस	६	५३
	२६	सू० १, ३२		१२	२७
	३०	२८, ३२, ३६	आसुपन्न	४	६
	३२	१२	आसुर	३	३
आसणया	२६	सू० ३२		८	१४
आसन्न	१	३४	आसुरत्त	३६	२५६
	२४	१८	आसुरिया	७	१०
आसम	६	४२		३६	२६६
आसमपय	३०	१७	आसेवण	३०	३३
आसव(आश्रव)	१८	५	आसोअ	२६	१३
	१६	६३	आह		
	२०	४५	-आहिज्जइ	२६	सू० १
	२८	१४, १७	आहअ	१८	७
	२६	सू० १२, १४, ५६	आहअच्च	१	११
	३४	२१		३	६
आसव			आहरित्तु	१६	७६
(आसव)	३४	१४	आहाकम्म	३	३
आससा	१२	१२		५	१३
आसा	१२	७	आहार	१५	१२
	३२	२७, ४०, ५३,		१६	सू० ६
		६६, ७६, ६२		१६	३०
आसाअ *				२४	११, १५
-आसाएइ	२६	सू० ३४		२६	सू० १, ३२, ३६

आहार	३०	१३, १५	-एन्ति	७	१६
	३१	८	इ	२	४०
	३२	४	इइ (ति)	२	७
	३५	२०	इओ	१३	३२
	३६	२५५		२०	३२, ४७
आहार *			इंगाल	३६	१०६
-आहारेइ	१७	१५, १६	इगिय	१	२
-आहारेज्जा	१६	सू० ६		३२	१४
आहारित्ता	१६	सू० ६	इंद	२०	२१
आहारेत्ता	१६	सू० १०	इदक	३६	१३८
आहारेमाण	१६	सू० ६, १०	इंदगोवग	३६	१३६
आहिय	२४	१	इदत्त	६	५५
	२८	८, ३३	इंदनील	३६	७५
	३०	१३, २४, २५,	इदिय	१६	सू० १ से ३, ५
		२७, ३१, ३३		१६	११
	३३	७, १३, १४,		२३	३८
		१६, १७		२४	८, २४
	३६	५, ६, २०,		३२	११, १२, २१
		७७, ६५,			१०४
		१५५, १५६,		३५	५
		१७२, २०६	इंदियगाम	२५	२
			इंदियगेज्ज	१४	१६
			इंदियत्थ	३१	७
				३२	१००, १०६
			इंघण	१४	१०
				३२	११
इ *					
-इइ	७	३			
	२०	४६, ५०			

१२८

परिशिष्ट-२

इक्क	८	१६
	१०	१४
	२८	८
इक्कग	१३	२५
इक्कतीस	३६	२४२
इक्कतीसइ	३६	२४३
इक्कवीस	३६	२३२
इक्कवीसइ	३६	२३३
इक्कवाग	१६	३६
इच्छ *		
-इच्छइ	१२	२२
	१५	५
	१७	१६
-इच्छसि	१४	३८
	२७	४२
-इच्छह	१२	२८
-इच्छामि	२०	५६
	२२	४१
-इच्छामो	१२	४५
-इच्छे	१	१२
	३२	४
-इच्छेज्जा	६	२६
	३२	४
-इच्छं	२६	६
-इच्छिज्ज	३२	१०४
इच्छंत	१	६

इच्छा	६	४८
इच्छाकाम	३५	३
इच्छाकार	२६	३,६
इच्छिअ	२२	२५
	२३	३१
	३०	११
इट्ठ	१६	१३
	२२	२
इड्ढि	२	४४
	७	२७
	१२	३७
	१३	११
	१६	८७
	२२	१३,२१
	२७	६
	३५	१८
	३६	२६४
इड्ढिमंत	५	२७
	२०	१०
इण्हं	१२	३२
इत्तरिय (अ)	१०	३
	३०	६ से ११
इत्तिय	३०	१८
इत्तो	५	१७
	३६	७८
इत्थ	१६	सू० १२

इत्थिया	१४	६, १६
इत्थी	१	२६
	२	सू० ३
	२	१६, १७
	५	१०
	७	६
	८	१६
	१२	४१
	१६	सू० ३ से १२
	१६	३
	३०	२२
	३२	१३ से १५,
		१७
	३५	७
	३६	४६, ५१
इत्थीवेय	२६	सू० ६
इम	१	१५
इय	२४	२
इयर	२०	६०
इर *		
-इरियामि	१८	२६
इरिया	६	२१
	१२	२
	२०	४०
	२४	२, ४, ८
	२६	३२

इरियावहिय	२६	सू० ७२
इव	११	२४
इसि	१२	१६, २१, २४,
		३०, ३१, ४४,
		४७
	२१	२२
इसिज्भय	२०	४३
इस्सरिय	१८	३५
	२०	१४
इस्सा	३४	२३
इह	२	सू० १
इहं	१२	७, ११
	१३	१४
	१७	२०
	१९	४७, ४८, ६२
	३६	५६
इहलोइय	१५	१०
ईसाण	३६	२२३
ईसाणग	३६	२१
ईसि	२६	सू० ७३
ईसीपन्भार	३६	५७
ईह *		
-ईहइ	७	४

उ			उक्कोस	३६	१२३, १२४,
उ	१	८			१३२ से १३४
उइ *					१४१ से १४३,
-उइन्ति	२१	१६			१५१ से १५३,
उइज्ज *					१६० से १६६,
-उइज्जन्ति	२	४१			१६८, १७५ से
उंछ	३५	१६			१७७, १८४ से
उक्कुडुअ	१	२२			१८६, १९२,
उक्कत्त	१९	६२			१९३, २०१,
उक्कल	३६	१३७			२०२, २१९ से
उक्कलिया	३६	११८			२४३, २४६
उक्का	३६	११०	उक्कोसिय	३३	१९
उक्कुद् *				३६	८०, ८८,
-उक्कुद्इ	२७	५			१०२, १२२,
उक्कोस	५	३			१६७, २४५,
	१०	५ से १४			२५१
	३३	२१ से २३	उग्ग	१८	५०
	३४	३४ से ३६,		१९	२८
		४१ से ४३,		२०	५३
		४६ से ५०		२२	४८
		५२ से ५५		३०	२७
	३६	१३, १४, ५०,	उग्गअ	२३	७६, ७८
		५३, ८१, ८२,	उग्गतव	१२	२२, २७
		८६, ९०,	उग्गम	२४	१२
		१०३, १०४,	उग्गाअ		
		११३ से ११५,	-उग्गाएइ	२९	सू० ७, ७२

उत्तरज्मयेण शब्द-सूची

१३१

उच्च	३३	१४
उच्चागोय	३	१८
	२६	सू० ११
उच्चार	२४	२, १५, १८
	२६	३८
	२६	सू० ७३
उच्चारसमिद्ध	१२	२
उच्चावय	२	२२
	१२	१५
उच्चोयय	१३	१३
उच्छु	१६	५३
उज्जम	३२	१०५
उज्जमए	२७	७
उज्जहिता	१८	३४
उज्जाण	१६	१
	२०	३
	२२	२३
	२३	४, ८
	२५	३
उज्जुय	१६	८८
उज्जुकड	१४	४१
	१५	१
उज्जुजड	२३	२६

उज्जुमाव	२१	२०
	२६	सू० ६, ७०
उज्जुसेदि	२६	सू० ७४
उज्जुयभूय	३	१२
उज्जेय (उद्योत)	२३	७५, ७६, ७८
	२८	१२
उज्जोय (उद्योग)	२२	३६
उज्जिता	१४	४६
उज्जिअ	१८	३१
उज्जिता	२	२१
उज्जुवड	११	२५
उज्जुस	३६	१३७
उज्जु	३	१३, १५
	६	१३
	१२	२६
	१६	४६, ५१, ८२
	२६	२४
	२६	सू० ७४
	३६	५०
उज्जुलोअ	३६	५४
उज्जुह	२	६
	१५	४
	१६	३१, ४७, ६०, ६१
	३६	२०
उज्जुहअ	३६	३६

१३२

उत्तम	६	६,५७ से
		५६
	१०	१८, १६
	११	३१, ३२
	१२	४७
	१३	१०
	१४	३७
	१८	४१
	१९	६७
	२०	५०, ५२, ५५
	२३	५१, ६३, ६८
	२५	६, १७, ३३,
		३७
उत्तमद्व	२०	४६
उत्तमंग	१२	२६
	२०	२१
उत्तर	३	१४
	५	२०, २६
	१२	१
	३३	१६
	३६	५३, ५४
उत्तरगुण	२६	११, १७
उत्तरज्जाय	३६	२६८
उत्तरिस्ता	३२	१८
उत्ताणग	३६	६०
उत्तिद्वन्त	११	२४

परिशिष्ट-

उत्तम	२२	१३, २३
उदग (क, अ)	७	२३
	८	८
	११	३०
	१२	३६, ३८, ३९
	२३	६५, ६६
	२८	१२
उदग	११	२०
	१३	३५
	१४	२
उदय	२३	४८
उदहि	११	३०
	३३	१६, २१, २३
	३४	३५ से ३७,
		४१ से ४३,
		५३
उदार	१४	३५
उदाहर *		
-उदाहरिस्तामि	२	१
-उदाहरे	५	१
	११	४
	२२	३६
-उदाहरित्था	१२	८
	१३	१५
उदाहु *		
-उदाहरित्था	१२	८
	१३	१५

उत्तरजभाषण शब्द-सूची

१३३

उदाहु	६	१७
	१४	६
	२०	५४
उदिण	१८	१
उदीर *		
-उदीरेड	१७	१२
उदीरिय	२६	सू० ७२
उद्दायण	१८	४७
उद्देसे	३१	१७
उद्देसिय	२०	४७
उद्देहिया	३६	१३७
उद्धतुं	२५	३३, ३७
उद्धतुकाम	३२	६
उद्धरण	२६	सू० ६
उद्धरिअ	२३	४५
उद्धरित्ता	२३	४६
उद्धरित्तु	२३	४८
उद्धाड्य	१२	१६
उप्पइय	२	३२
	६	६०
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जइ	१७	२
उप्पह	२४	५
	२७	४
उप्पाअ *		
-उप्पाएइ	२६	सू० १८, २२

उप्पायग	३६	२६२
उप्पायण	२४	१२
	३२	२८, ४१, ५४,
		६७, ८०, ६३
उप्फालग	३४	२६
उप्फिड *		
-उप्फिडई	२७	५
उभ	२३	६, १०
उभओ	११	१७
	२८	६
उभय	१	२५
उम्मग	२३	५६, ६१, ६३
उम्मज्ज	७	१८
उम्मत्त	१८	५१
उम्माय	१६	सू० ३ से १२
उम्मुक्क	३६	६३
उयहि	१६	३६
उर	२०	२८
उरग	१४	४७, ३६,
		१८१
उरब्भ	७	४
उरब्भज्ज	७	
उराल	१५	१४
	३६	१०७
उल्ल	२२	३३
	२५	४०

અલ્લઘન	૧૭	૮
	૨૪	૨૪
અલ્લવ	૧૧	૨
અલ્લવિય	૧૬	૪
અલ્લિઅ	૧૬	૬૪
અલ્લોય	૩૫	૪
અવદ્વુ	૧	૪૪
	૨૮	૧૬
અવઅત્ત	૨૪	૭, ૮
	૨૬	સૂં ૧૨
અવઅત્તયા	૨૪	૬
અવઅસળ	૨૮	૧૫
અવઅસરુહ	૨૮	૧૬, ૧૬
અવબોળ	૨૮	૧૦, ૧૧
અવવલ્લહ	૧૨	૧૧
અવગ	૨૬	૨૭
અવગઅ	૨૧	૨૩
	૨૬	સૂં ૧૩, ૧૮, ૩૬
અવગરળ	૧૨	૪
અવઘાઈ	૧	૪૦
અવચિ		
-અવચિળાઈ	૨૬	સૂં ૨૩
અવચિદ્વ		
-અવચિદ્વે	૧	૨૦
-અવચિદ્વેજ્જા	૧	૩૦
અવજોદ્વ	૧૨	૧૮

અવજ્ઞાય	૧૭	૪, ૫
અવદ્વિતા	૮	૧૫
અવદ્વિઅ (ય)	૧૨	૩
	૨૦	૨૨
	૨૫	૫
	૩૨	૧૦૭
	૩૫	૨૦
અવણિગગઅ	૧૮	૧
અવળી *		
-અવણિજ્જઈ	૧૩	૨૬
અવળીઅ (ય)	૪	૧, ૬
	૧૩	૨૧
અવદસિઅ	૨૦	૫૪
	૨૫	૩૫
	૨૬	સૂં ૭૪
અવમુજ *		
-અવમુજઈ	૨૦	૨૬
અવમોળ	૩૨	૩૨, ૪૫, ૫૮, ૭૧, ૮૪, ૯૭
	૩૩	૧૫
અવમા	૪	૬
	૭	૧૫
	૬	૫૩
	૧૪	૪૭
	૧૮	૨૮
	૧૬	૧૧

उत्तराखण्ड राज्य-सूची

१३५

उत्तराखण्ड	२०	३	उत्तराखण्ड	५	१३
	३२	२०	उत्तराखण्ड	१	१३
	३६	६६	उत्तराखण्ड	१	१३
उत्तराखण्ड (य)	६	६	उत्तराखण्ड	१	२
	१५	२	उत्तराखण्ड	२०	३१
उत्तराखण्ड	३६	५७	उत्तराखण्ड	१	१३
उत्तराखण्ड	३६	६२, ०१३,		१०	१३
		०१४, ०१५		१३	१० मे १३
उत्तराखण्ड	३६	७३		२०	५१
उत्तराखण्ड	२०	२१	उत्तराखण्ड	२	१५
उत्तराखण्ड *				६	१
उत्तराखण्ड	१६	१३		१५	१५
उत्तराखण्ड				३१	३०, ३२
उत्तराखण्ड	२५	३६	उत्तराखण्ड	२६	सू० ३१
उत्तराखण्ड	२५	३६	उत्तराखण्ड	२६	४७
उत्तराखण्ड			उत्तराखण्ड	२	२१
उत्तराखण्ड	३	१७		२६	३४
	७	२७ मे २६		३१	५
	३१	५६, ५७	उत्तराखण्ड	३२	२६, ४०, ५५
उत्तराखण्ड	२६	सू० १५			६०, ६१, ६४
उत्तराखण्ड	६	१	उत्तराखण्ड	३०	११
	१३	१	उत्तराखण्ड	१०	३७
	१७	१		१०	३४
	२०	४४	उत्तराखण्ड	२	२३
उत्तराखण्ड	३४	५०, ५६		३५	५

੧੩੬

ਪਰਿਸ਼ਿਟ-੧

ਭਵਹਸ *		
-ਭਵਹਸਨ੍ਤਿ	੧੨	੪
ਭਵਹਾਣ	੨	੪੩
ਭਵਹਾਣਵ	੧੧	੧੪
	੩੪	੨੭,੨੬
ਭਵਹਿ	੧੨	੪
	੧੬	੮੪
	੨੪	੧੧,੧੫
	੨੬	ਸੂ੦ ੧,੩੫
ਭਵਾਗਭ (ਧ)	੧੩	੮
	੧੪	੫੨
	੨੩	੪
	੨੫	੩
ਭਵਾਗਮਮ	੧੪	੬
	੧੬	੬
ਭਵਾਧ	੩੨	੬
ਭਵਾਧਭੋ	੨੩	੪੧
ਭਵਾਸਾ	੩੧	੧੧
ਭਵਿਞ੍ਞ	੧੩	੩੧
ਭਵੇ *		
-ਭਵੇਤਿ	੩	੧੬
	੪	੨,੪
	੭	੨੦
	੩੨	੧੦੧
-ਭਵੇਭ	੪	੮
	੧੫	੬

-ਭਵੇਭ	੨੦	੪੬,੫੨
	੨੧	੨੦
	੩੨	੧੧,੨੪ ਤੇ
		੨੬,੨੬,੩੩,
		੩੭ ਤੇ ੩੬,
		੪੨,੪੬,੫੦
		ਤੇ ੫੨,੫੫,
		੫੬,੬੩, ਤੇ
		੬੫,੬੮,੭੨,
		੭੬ ਤੇ ੭੮,
		੮੧,੮੫,੮੬
		ਤੇ ੮੧,੮੪,
		੮੮,੧੦੧,
		੧੦੬
-ਭਵੇਹ	੧੨	੨੮
-ਭਵੇਮੋ	੧੨	੩੩
ਭਵੇਧ	੬	੬
ਭਵੇਹ *		
-ਭਵੇਹੇ	੨	੧੧
-ਭਵੇਹੇਞ੍ਞਾ	੨	੨੫
ਭਵੇਹਮਾਣ	੨੧	੧੫
ਭਵਿਗ	੧੪	੫੧
ਭਸਿਣ	੨	ਸੂ੦ ੩
	੨	੮
	੨੧	੧੮
ਭਸੁਧਾਰ	੧੪	੧

उसुयारिज्ज	१४	
उम्स	३६	८५
उस्सप्पिणो	३४	३३
उत्तिचणा	३०	५
उत्तिय	१०	३५
उम्सूला (दि०)	६	१८
उम्मेह	३६	६४

ऊ

ऊ	१२	११
ऊण	७	१३
	३०	२१
	३४	४६
ऊणोयगिया	३०	८
ऊरु	१	१८
ऊस	३६	७३
ऊमसिय	२०	५६
ऊसिय	२२	११

ए

ए *		
-एड	२०	५०
-एन्ति	७	१६
-एहि	२२	३८

६१

एडं	४	१०
एक्क	१३	३
	१४	३४, ३६, ४०
	३६	१८१
एक्कअ	३५	६
एक्कसीड	३४	२०
एक्कारस	२८	२३
एग	१	२६, ३३
एगअ	२	२०
एगडअ	२६	सू० २
एगओ	१४	२६
	३१	२
एगंत	६	४, १६
	१६	३८
	२२	३५
	२६	सू० ३२
	३०	२८
	३२	२, ३, १६,
		२६, ३६, ५२,
		६५, ७८, ६१
एगंतदिट्ठोअ	१६	३८
एगंतर	३६	२५३
एगखुर	३६	१८०
एगा	१	१०
एगग	२६	सू० १, २६, ३१,
		सू० ४०, ५४, ५७

एगग	३२	१
	३५	१
एगगचित्त	२६	सू० ३१, ५४
एगगमण	२६	सू० १, २६
	३०	१
	३५	१
एगचर	१५	१६
एगचित्त	२०	३८
एगच्छत्त	१८	४२
एगत्त	२८	१३
	३६	११, ६५
एगपक्ख	१२	११
एगभूय	१६	७७
एगमण	३०	४
	३६	१
एगया	२	६, १३
	३	३, ४
एगराय	२	२३
	५	२३
एगविह	३६	७७
एगवीस	३१	१५
एगामोसा	२६	२७
एगीभाव	२६	सू० ४०
एगूणपण्ण	३६	१४१
एज्जंत	१२	४
एत्तिज	१३	३३

एत्तो	१६	४७, ४८, ७३
	३०	२६
एत्थ	१२	१५, १८
	१८	८
एमेव	१४	१८
	२०	५०
एय (एतद्)	२	१३
एय (एव)	२४	१६
एयारिस	१३	२६
	१७	२०
	२२	१३
	३२	१७
एरिस	१२	११, ३७
	१६	६
	२०	१५
एल्य	७	१, ७
एल्लिक्ख	७	२२
एव	१	१५
एवं	१	४, ५
एवविह	३२	१०२
एवमेव	१४	१५, ४३
	१६	८२
एस *		
-एसिज्जा	३५	१६
-एसेज्जा	१	७
	२	३०

-ऐसेब्जा	६	२	ऑंकार	२५	२६
	८	११	ओगाद्	२४	१८
एसणा	१	३२		३६	२५८, २५६
	२	४	ओगाह	२८	६
	६	१६	ओगाह *		
	८	११	-ओगाहड	२८	२१
	१२	२	ओगाहणा	३६	५०, ५३, ६०,
	२०	४०			६२, ६४
	२४	२, १२	ओघ	२१	२४
	३०	२५	ओभास *		
एसन्त	३०	२१	-ओभासड	२१	२३
एसणिज्ज	१२	७	ओम	३०	१५
	१६	२७	ओमचरअ	३०	२४
	३२	४	ओमचेलअ	१२	६, ७
एसमाण	१४	१४	ओमरत्त	२६	१५
एसित्ता	१	३२	ओमाण	२७	१०
एह *			ओमासण	३२	१२
-एहए	६	३५	ओमोयरिय	३०	१४
एह	१२	४३, ४४	ओयण	७	१
			ओरस	६	३
ओ			ओराल	३६	१२६
ओडण्ण	५	१४	ओरालिय	२६	सू० ७४
	१०	३२	ओल्जममाण	१४	२०
	१६	५५	ओरोह	६	४
	२२	२३		२०	५८
			ओक्कहिय	२४	१३

			क		
ओवहिय	३४	२५	क	२	२३
ओवाय	१	२८	कइय	३५	१४
ओस (दि०)	१०	२	कओ	६	१०
ओसप्पिणी	३४	३३	कंख *		
ओसह	१६	७६	कखण	५	३१
	३२	१२	कंखे	४	१३
ओसहि	११	२६		६	४
	२२	६		७	७
	३२	५०		१४	२७
	३६	६५	कखा	१६	सू० ३ से १२
ओह	१०	३०	कखामोहणिज्ज	२६	सू० २१
	१४	१७	कंचण	३५	१३
	२३	८४	कचि	२०	६
	३२	३३, ३४, ४६,	कचुय	६	२२
		४७, ५६, ६०,		१६	८६
		७२, ७३, ८५,	कटग	१०	३२
		८६, ८८, ८९,		१६	५२
	३४	४०	कठ	१२	६, १८
ओहरिय	२६	सू० १३		२०	४८
ओहारिणी	१	२४	कतार	१६	४६
ओहि	३३	६		२७	२
ओहिजलिय	३६	१४८		२६	सू० २३, ३३, ६०
ओहिनाण	२३	३	कयअ (ग)	११	१६
	२८	४		२३	५८
	३३	४	कद	३६	६७, ६८
ओहोवहि	२४	१३			

कद *			कट्टहार	३६	१३७
कन्दन्ति	६	१०	कड	१	११
कदत	१६	४६		२	४०, ४१
कदप्य	३६	२५६, २६३		४	३
कदली	३६	६७		६	१४
कदिय	१६	सू० ७		१३	६, १०, २८
	१६	५	कडुय (अ)	१६	११
कदु	१६	४६, ५१		३४	१०
कदोय	११	१६		३६	१८, ३०
कंस	६	४६	कड्डोकड्ड	१६	५२
कक्क	१३	१३	कणकुडंग	१	५
कक्कर	७	७	कणिट्टग	२०	२६, २७
कक्कड	३६	१६, ३४	कण्ट	३६	६८
कच्छम	३६	१७२	कण्टह्लेसा	३६	२५६
कज्ज	८	१७	कण्टुई	१	७
	२२	१७		२	४०, ४६
	२३	१३	कण्टुहर	७	५
	२४	३०	कत्तु	१३	२३
	२५	३८		२०	३७
	२६	सू० ५	कत्तिय	२६	१५
कट्टु	१	११	कत्तो	३२	३६, ४१, ५८,
	३	२			७१, ८४, ९७
	२०	४७	कत्थ	३६	५५
	३६	२५३, २५५	कत्थई	२	२७
कट्ट	१२	३०, ३६	कन्ना	२२	६ से ८, २८,
	३५	११			३१, ४०

१४२

कप्प	३	१५
	१६	६२
	२३	२७
	३२	१०४
कप्प *		
-कप्पड	३०	१८
-कप्पए	६	२
कप्पणी	१६	६२
कप्पविमाण	२६	सू० १५
कप्पाईय	३६	२०६, २१२
कप्पासट्टिमिज	३६	१३८
(दे०)		
कप्पिय	१६	६२
कप्पोवग	३६	२०६ से २११
कब्बड	३०	१६
कम*		
-कम्मड	५	२२
कम	३०	५
	३२	१११
	३६	२५०
कमलावई	१४	३
कमसो	१४	११, ५१
	३६	१६७
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्म	१	१७, ४३

परिशिष्ट-२

कम्म	२	४०, ४१
	३	२, ६, ७, १३
	४	२ से ४
	५	११, १२
	६	३, १०, १३,
		१४
	७	६, २०
	८	६, १५
	९	२२
	१०	४, १५
	११	३१
	१२	४०, ४४
	१३	८ से १०,
		१६, २३, २६,
		३२
	१४	२, ५, २०
	१८	१७, ४८
	१६	५३, ५५, ५७
	२०	५२
	२१	६
	२२	४८
	२५	२८, ३१, ३२,
		४३
	२८	३६
	२६	सू० २, ७, ११,
		सू० १६, १७, १६,

कम्म	२६	सू० २१, २३, २४, सू० ३०, ३३, ३८, सू० ४४, ६३ से सू० ७२, ७४	कय (कृत)	१८	१७
				२०	५७
				२२	६, २१
				२४	१७
	३०	१, ६		३२	३२, ४५, ५८, ७१, ८४, ९७, १०८
	३१	३			
	३२	७, ३३, ४६, ५६, ७२, ८५, ९८, १०८	कय (क्रय)	३५	१३, १४, १५
			कयंजलि	२०	५४
	३३	१, १०, ११, १३, १४, १७, १८, २०, २५		२५	३५
			कयत्थ	३२	११०
कम्मस (सत्कर्म) ३		२०	कयमड	२३	१४
	२६	सू० ४२, ५६, ६२, सू० ७२, ७३	कयर	२	सू० २
				१२	६, ७, ४३
कम्मकिव्विस ३		५		१६	सू० २
कम्मपयडि २६		सू० २३	कया	१	२२
कम्मप्यवीअ १३		२४	कयाइ	१	११
कम्मभूय ३६		१६६	कर	१	२, ३, २६
कम्मय ८		१		८	२
कम्मलेसा ३४		१		१३	२७
कम्मसपया १		४७	कर		
कम्हिचि १५		२	-अकासी	१	१०
कय (कृत)	८	१७		१३	१, २६
	१३	१५, ३३		१४	२०
	१४	१६	-करति	१६	१६
				१६	६६

करिस्सइ	२	२३	कुज्जा	४	२
	२३	७५, ७६, ७८		२६	५, ११, १७,
करे	३०	१५			२०, २१, २७,
	३६	२५२, २५४			३६, ३८, ४१,
करेइ	४	४			४६, ४६
	१५	१०		३१	२
	२०	४८		३२	२१
	२६	सू० ३, ४, ६,		३५	८
		सू० २६, २६, ४२,	करकंडू	१८	४५
		सू० ५६, ५६, ६१,	करकय	१६	५१
		सू० ६२, ७३, ७४	करगय	३४	१८
करेज्ज	२६	३३, ५०	करण	२६	५
करेति	६	६२		२६	सू० १७
	१२	३२	करणगुणसेढि	२६	सू० ७
	२२	४६	करणसच्च	२६	सू० १, ५२
	२७	१३	करणसत्ति	२६	सू० ५२
	२६	सू० १	कग्बत्त	१६	५१
	३२	१००	करेउं	१६	३६, ४०
	३६	२६०	करेत	६	५६
करेह	२५	३७	करेणु	११	८
करेहि	१३	३२		३२	८६
कारए	३५	८	करेता	२६	सू० ७३
काहामि	१७	२	करेमाण	२६	सू० ३, ७३
काहिनत्ति	८	२०	कल्लं	१६	५०
काहिसि	२२	४४	कल्लकलंत	१६	६८
कुज्जा	१	१७, १६	कल्लत्त	६	१५
	२	१६, ३३, ३८			

कलह	८	४	कसिण	८	१६
	११	१३		१५	३, ४, ६
	१७	१२		२१	११
	२६	सू० ४०		२६	सू० ७२
कला	६	४४	कह	२३	६०
	२१	६	कह *		
कलि	५	१६	कहसु	२३	२८, ३४, ३६,
कलिग	१८	४५			४४, ४६, ५४,
कल्ल	२०	३४			५६, ६४, ६६,
कल्लाण	१	३८, ३६			७४, ७६
	२	२३, ४२	कहय	२५	१५
	११	१२	कहेज्जा	१६	सू० ४
कवल	१६	३७	कहेति	१३	३
कवाड	३५	४	काहए	२०	५३
कविट्ट	३४	१२, १३	कहं	७	२२
कविल	८	२०	कहा	१६	सू० ४
कस	१	१२		२६	२६
	१२	१६	कहावण	२०	४२
कसाय (अ)	१६	६१	कहि	१६	६
	२३	३८, ५३	कहिचि	८	२
	२६	सू० १, ३७, ४०	कहिता	१६	सू० ४
	३१	६	कहेमाण	१६	सू० ४
	३६	१८ ३१	काइय	३२	१६
कसायज	३३	११	काउ	३४	३, १२, ४१,
कसाय-					५०, ५६
मोहणिज्ज	३३	१०	काउं (कर्तुम्)	२२	२१

उत्तरज्जयण गब्द-सूची

१४७

काय	२	३७	कायगुत्तया	२६	सू० १,५६
	३	३	कायगुत्ति	२४	२
	५	१०,२३	कायचिट्ठा	३०	१२
	६	११	कायठिड	३६	८१,८६,
	८	१०,१४			१०३,११४
१०	२०				१२३,१३३,
१२	७				१४२,१५२,
१५	१२				१६७,१७६,
२१	२२				१८६,१९३,
२४	२५				२०२,२४५
२५	२५		काय	२०	३८
३०	३६			२१	१७
३१	८		कायवोस्सग्ग	२६	४६
३२	६३,७४,७५,		कायव्व	२६	६,१०
	८१,८२,८६		काय-		
३६	६०,१०३		समाधारणया	२६	सू० १,५६
	१०४,११४,		कारअ	६	३०
	११४,१२३,		कारइत्ताण	६	१८,२४
	१२४,१३३,		कारण	६	८,११,१३,
	१४२,१५२,				१७,१६,२३,
	१५३,१६८,				२५,२७,२६,
	१७७,२४६				से ३३,३७,
					३६,४१,४३,
					४४,४७,५०
कायकिलेस	३०	८,२७			
कायगुत्त	१२	३		२०	२४
	२२	४७		२२	१६,४२
	२६	सू० ५६		२३	१३,२४,३०

१४८

परिशिष्ट-२

कारण	२४	४
	२६	३१
	२७	१०
	२८	१
	३१	८
	३६	२६२, २६६
कारव *		
-कारवे	२	३३
कारिस	१२	४३, ४४
कारुण	३२	१०३
काल	१	१०, ३१, ३२
	४	६
	५	३१, ३२
	१०	५ से १२
	१२	६, ६, २७
	१३	२२, ३१
	१४	१३, २६, ५२
	१६	८
	१८	३२
	१९	२६
	२०	८, ४५
	२१	१४
	२३	५
	२४	४, ५, १०,
		१७
	२५	४

काल	२६	२०, २२, ३७, ४४, ४५
	२८	७, ८, १०
	२९	सू० १, १६, २३
	३०	१४, २०, २१, २४
	३२	१, २८, ३१, ४१, ४४, ५४, ५७, ६७, ७०, ८०, ८३, ९३, ९६, १११
	३५	१९
	३६	११, १३, ७८, १११, १२०, १५८, १७३, १८२, १८६, १८९, १९३, २१७
कालओ	२४	६, ७
	३६	३
कालकांखि	६	१४
कालकूड	२०	४४
कालाग	२२	५
कालघम्म	३५	२०
कालिजर	१३	६
कालिय	५	६

काली	२	३
कालोमाण	३०	२०
काविलीय	८	
कावोया	१६	३३
कासग	१२	१२
कासव	२	सू० १ मे ३
	२	१, ६६
	२५	१६
	२६	सू० १
कासी	१३	६
	१८	४८
कि	६	७
किचण	६	१४, ८०
	३२	८
किचि	१	१४
किपाग	१६	१७
	३२	२०
किपुरिस	३६	२०७
किचव	१	१८, ४४, ४५
	१४	१५
	३२	१०८
किचव *		
-किचवइ	४	३
किच्चा	२	१५
	६	२०, २१

किच्चा	१८	५०
	२०	१
किट्टडत्ता	२६	सू० १
किट्टा	१६	६
किणत	३५	१४
किणह	३६	१६, २२, ७२
किणहलेसा	३४	४, २२, ३४
किणहा	३४	३, १०, ४३,
		४८, ४९, ५६
किस्त *		
-किस्तडस्सामि	३२	६
किस्तयअ	२४	६
	३६	४८, १७६,
		१६५, २०४
कित्ति	१	४५
	११	१५
	१४	३
	१८	३६, ४६
किन्नर	१६	६
	२३	२०
	३६	२०७
किन्विसिय	३६	२५६, २६५
किमि	३६	१२७
किरिया	१८	२३, ३३
	२८	१६, २५
	३१	७, १२

किरियाखइ	२८	२५	कुओ	६	१०
किलन्त	१६	५६		१५	५
किलिट्ट	३२	२७,४०,५३, ६६,७६,६२	कुकुण (दे०)	३६	१४६
किलिन्त	२	३६	कुच	१४	३६
किलिस			कुचिअ	२२	२४
-किलिस्सई	२७	३	कुजर	११	१८
किलेस	२१	११	कुडल	६	५
	३२	३२,४५,५८, ७१,८४,९७		६	६०
किलेसडत्ता	२०	४१		२२	२०
किस	२	३	कुथु	३	४
कीड	३	४		१८	३६
	३६	१४६		३६	१३७
कीडा	१	६	कुंद	३४	६
कीयगड	२०	४७		३६	६१
कील			कुभी	१६	४६,५१
-कीलंति	१८	१६	कुक्कुइय	१७	१३
-कीलए	१६	३	कुक्कुड	३६	१४७
	२१	७	कुगहीय	२०	४४
कीलिय	१६	सू० ८	कुच्च	२२	३०
कीव	१६	४०	कुट्टिम	१६	४
कीस			कुट्टिय	१६	६६,६७
-कीसंति	१६	१५	कुडुंवअ	३६	६७
कुइय	१६	सू० ७	कुडुम्ब	१४	३७
	१६	५,१२	कुडु	१६	सू० ७
				२५	४०

कुण *			कुमारसमण	२३	२, ६, १६,
-कुणई	१६	७६			१८
	२६	२७, २६	कुमुय	१०	२८
	३६	२६३ से २६६	कुम्मास	८	१२
कुणंत	२६	२६	कुररी	२०	५०
कुणमाण	१४	२४, २५	कुल	१३	२
कुतित्थि	१०	१८		१४	२, २६
कुदसण	२८	१८		२०	४०, ४२
कुदिट्ठि	२८	३६		२३	१५
कुद्ध	१२	२०		२५	१
	१८	१०	कुल्ल	१४	४६
	२०	२०	कुविय	१	४१
	२७	६		१२	२८
कुप्प *			कुव्व *		
-कुप्पह	११	८, १२	-कुव्वड	१	४४
-कुप्पह	१२	३३		५	४
-कुप्पेज्ज	१	६	कुव्वन्ति	२०	२३
कुप्पवयण	२३	६३	कुव्वेज्ज	६	२६
कुप्पह	२३	६०	कुव्वेज्जा	१	१४
कुमार	१२	१६, २०, २४,		६	१५
		३२		८	२
	१४	३	कुस	७	२३, २४
	१६	६७		६	४४
	२२	८		१०	२
कुमारग	१४	११		१२	३६
				२३	१७

कुसचीर	२५	२६
कुसल	१२	३८, ४०, ४४
	२५	१६
कुसील	१	१३
	१७	२०
	२०	५१
कुसीलरुव	२०	५०
कुसीलर्लिंग	२०	४३
कुसुम	२०	३
	३४	८, १७, १६
कुहग	३६	६८
कुहाड	१६	६६
कुहुण	३६	६५
कुहेडविज्जा	२०	४५
कूड	५	५
	२०	४२
कूडजाल	१६	६३
कूडसामली	२०	३६
कूर (कूर)	५	४, १२
कूर (कूर)	१२	३४
कूवंत	१६	५४
केदकंदली (दि०)	३६	६७
केयण	६	२१
केयव्व	३५	१५
केरिस	२३	११
केलास	६	४८

केवल	३	१६
	१८	३५
	२८	४
	३३	४, ६
	३४	४५
	३५	२१
केवलवरनाण-		
दंसण	२६	सू० ७२
केवल	१६	सू० ३ से १२
	२२	४८
	२६	सू० ४२, ५६, ६२
	३६	२६५
केस (क्लेण)	५	७
	१६	१२
केस (केज)	१०	२१ से २६
	२२	२४, २५, ३०,
		३१
केसर	१८	३, ४
केसलोय	१६	३३
केसव	२२	२, ६, २७
केसि	२३	२, ६, १४
		१६, १८, २१,
		२२, २५, ३१,
		३७, ४२, ४७,
		५२, ५७, ६२,
		६७, ७२, ७७,

केसि	२३	८२, ८६, ८८,	कोविय	१५	१५
		८६	कोस (कोप)	६	४६
केसिगोयमिज्ज	२३		कोस (क्रोग)	३६	६२
कोडलच्छद	३४	६	कोसम्बी	२०	१८
(दि०)			कोसलिय	१२	२०, २२
कोउग (य)	२२	६	कोह	१	१४
	२३	१६		४	१२
कोऊहल	१५	६		६	३६, ५४, ५६
	२०	४५		११	३
कोक्कुय	३६	२६३		१२	१४
कोट्ट	३०	१७		२४	६
कोट्टुग	२३	८		२५	२३
कोट्टुगार	११	२६		२६	सू० १, ६८
कोडि	८	१७		३२	१०२
	१८	१०		३४	२६
	३०	६	कोहण	२७	६
	३४	४६	कोहवेयणिज्ज	२६	सू० ६८
	३६	१७५, १८५,	कोहि	११	७
		१६२, २०१			
कोडिकोडि	३३	१६, २१, २३			
कोडीसहिअ	३६	२५५			
कोत्थल (दि०)	१६	४०	ख		
कोल	१६	५४	खअ *		
कोलाहला	६	५, ७	खज्जड	१२	१०
कोव	१२	३१	खंज	३४	४
कोवय *			खंड	१६	६६
कोवण	१	४०		३४	१५

खंत	२०	३२, ३४
खंति (न्ति)	१	६, २६
	३	८, १३
	५	३०
	६	२०, ५७
	२०	६
	२२	२६
	२६	सू० १, ४७, ६८
खतिक्खम	२१	१३
खध	३६	१०, ११
खग	६	१०
खज्जूर	३४	१५
खड्डुया	१	३८
खण	१४	१३
	१६	१४
	२०	३०
	३२	२५, ३८, ५१, ६४, ७७, ६०, १०८
खण *		
-खणह	१२	२६
खण्डिय	१२	१८, ३०
खत्त	१२	१८
खत्तिय	३	४, ५
	६	१८, २४, २८, ३२, ३८, ४६

खत्तिय	१५	६
	१८	२०
	२५	३१
खम *		
-खमाह	१२	३०, ३१
-खमे	१८	८
खम	१४	२८
	१८	५२
	३२	१३
खमानवया	२६	सू० १, १८
खय	६	१३
	२०	३३
खर	३६	७१, ७२
खरपुढवी	३६	७७
खल (अप+सु)*		
-खलाहि	१२	७
खल (स्वल) *		
-खलेज्ज	१२	१८
खलु	१	१५
खलुंक	२७	३, ८, १५
खलुंकिज्ज	२७	
खव *		
-खवेइ	२६	सू० २, ८, ११, सू० १६, २५, ३०, सू० ३४, ४२, ५६, सू० ६२, ७२, ७३

उत्तरजभाषण शब्द-सूची

१५५

-खवेइ	३०	१	खीण	१३	३१
	३२	१०८		२३	७८
खवण	३३	२५	खीर	१४	१८
खवित्ता	२५	४३		३०	२६
खवित्ताण	२२	४८		३४	६, १५
खवित्तु	११	३१	खु	२	३३
खवेऊण	२१	२४	खुर	१६	५६, ६२
खवेत्ता	२८	३६	खुडु	१	६
खहयर	३६	१७१, १६१, १६३	खुडुअ	३२	२०
खाइत्ता	१६	८१	खुडुगनियठिञ्ज	६	
खाइम	१५	११, १२	खुइ	३४	२१, २४
खाणि	१४	१३	खेड	३०	१६
खाणु	१४	२६	खेत्त	३	१७
खाम *				१२	१२ से १५
-खामेमि	२०	५६		१३	२४
खाय *				१६	१६
-खायह	१२	२६		३०	१४, १८, २४
खाय	१४	१		३३	१६
खाविय	१६	६६	खेत्तओ	२४	६, ७
खिस *				३६	३, ११
-खिसई	१७	४	खेम	७	२४
-खिसएज्जा	१६	८३		६	२८
खिप्पं	१	४४		१०	३५
खिप्पामेव	२६	सू० २३		२१	५
				२३	८०, ८३

१५६

परिशिष्ट-२

खेय	१५	१५
खेल	८	५
	२४	१५
खेल्ल *		
-खेल्लन्ति	८	१८
खेव *		
-खेवेज्ज	२१	१८
खेविय	१६	५२
खोडा	२६	२५
खोभड्डं	३२	१६

वा

गय	१	२२, ४३
	७	१८
	६	३, १०, ३६,
		३७
	११	३१
	१३	१८, २५, ३५
	१४	४२
	१६	सू० ५
	१८	६, ३६
	१९	७
	२०	३३
	२१	२४
	२६	सू० ८
	३२	३३, ४६, ५६,
		७२, ८५, ९८
	३३	१८
	३६	६३

गई	५	१२
	७	१६, १७
	६	५४
	१०	३७
	११	३१
	१३	३५
	१८	२५, ३८, ४०,
		४२, ४३, ४७
	१९	६७
	२०	१
	२३	६५, ६६, ६८
	२८	१, ६
	२९	सू० ७४
	३४	२, ४०
गंगा	१६	३६
	३२	१८
गठिभेय	६	२८
गठियसत्त	३३	१७
गंड	८	१८
	१०	२७
गंडीपय	३६	१८०
गंतव्व	१८	१२
	१९	१६
गंता	२९	सू० ७४
गंतुं	६	२६
गंतुण	३६	५५, ५६

गंध	८	४	गंधिज	२२	२४
गंध	१२	३६	गंधीर	११	३१
	१६	सू० १२		२७	१७
	१६	१०	गगण	२२	१२
	२०	२६	गग्ग	२७	१
	२८	१२	गच्छ *		
	२६	सू० ४६, ६५	गच्छ	१२	७
	३२	४८ से ६०		१६	८५
	३४	२, १६, १७	गच्छर्त	३	३
गवओ	३६	१५, १७, २२		५	५
		से ४६, ८३,		११	६
		६१, १०५,		१८	१७
		११६, १२५,		१६	१६, २१, ८०,
		१३५, १४४,			८१
		१५४, १६६,		२०	४५, ४७
		१७८, १८७,		२३	५६
		१६४, २०३,		२७	६
		२४७		३२	१६
गंधण	२२	४३	गच्छन्ति	५	२८
गंधवास	३४	१७		७	१०
गवव्व	१	४८		८	७
	१६	६६		१४	४४
	२३	२०		१८	२५
	३६	२०७		२३	६१
गंधहत्थि	२२	१०		२८	३
गघार	१८	४५		३४	६०

१५८

परिशिष्टः

गच्छसि	६	१८, २४, २८, ३२, ३८, ४६, ५८	गमिस्सामो	१४	२६
	१०	३२, ३५	गमिस्ससि	२३	७०
गच्छामि	१३	३३	गमण	१६	३७
गच्छे	२	६		२६	५
	५	२४	गमित्तए	१०	३४
गच्छेज्जा	२	२१	गय	१८	३
	८	१		३६	१८०
गच्छत्त	५	१३	गयण	२६	२०
	१६	१८ से २१	गया	११	२१
गण	१०	१	गयाणीय	१८	२
	१५	६	गयास	१६	६१
	३४	५१	गरहणया	२६	सू० १, ८
	३६	२०८	गरहा	१	४२
गणण	२६	२७		२१	१५, २०
गणहर	२७	१	गरहिय	१७	२०
गणिभाव	२७	१	गरुय	३६	१६
गत	१६	१३	गल	१६	६४
	१६	६१	गलि	१	१२, ३७
गद्भालि	१८	१६, २२		२७	१६
गद्दह	२७	१६	गव	६	५
गब्भवक्कतिय	३६	१७०, १६५, १६६	गवल	३४	४
			गवेस *		
गम *			गवेसए	६	१६
गमिस्सामु	१४	३१		१०	३०
				२६	३१

गवेसअ	२	१७
	११	३२
	२५	६
	३४	२३
गवेसणा	२४	११
गह *		
-गहिनति	४	१
गह	२५	१७
	३६	२०८
गहण	२३	३२
	२४	११
	२६	सू० २
	३२	२३, २३, ३५,
		३६, ४८, ४९,
		६१, ६२, ७४,
		७५, ८७, ८८
	३६	२६७
गहाय	४	२
	१३	२२
गहिय	१६	६४, ६५
गहीअ	४	३
	३२	७६
गाढ	१०	४
गाणगाणिअ	१७	१७
गाम	२	१८
	६	१६

गाम	१०	३६
	३०	१६
गामकंटग	२	२५
गामाणुगाम	२	१३
	२३	३, ७
	२५	२
गामि	१४	३३
	२३	७१
गाय	२	६, ३४, ३६
गारत्व	५	२०
गारव	१६	८६, ६१
	२७	६
	३१	४
गारविअ	२७	६
गाह	३२	७६
	३६	१७२
गाहा	१३	१२
गाहासोलसअ	३१	१३
गाहिय	१७	४
गिज्म *		
-गिज्मेज्जा	८	१८
गिज्म	१६	४, ५
	२३	५१
गिज्मा	२६	३५
गिज्मंत	२४	१३

गिद्ध (गृद्ध)	५	४,५,१०	गिहत्थ	२	१६
	७	६		५	२२, २८
	८	११, १४		२३	१६
	१३	१५, २८, ३०,		२५	२७
		३३	गिहवास	५	२४
	१८	७		३५	२
	२०	३६	गिहि	७	२०
	३२	५०, ६३, ८६		१५	१०
	३५	१७		१७	१६
गिद्ध (गृध्र)	१४	४७	गिहिलिंग	३६	४६, ५२
	१६	५८	गीय	१३	१४, १६
गिद्धि	३२	२४, ३७, ५०,		१६	सू० ७
		६३, ७६, ८६		१६	५, १२
	३४	२३	गीवा	३४	६
गिरा	१२	१५	गुंजा	३६	११८
गिरि	११	२६	गुच्छ	३६	६४
	१२	२६	गुण	४	११, १३
	१६	४१		६	६
	२२	३३		१२	१
गिलाण	५	११		१३	१२, १३, १७
गिह	६	७, २४		१४	१०, १७
	१३	१३, २४		१८	४६
	१४	७, ६, २१		१६	५, २४, ३५,
	१५	१६			३६, ४७, ४८
	३५	८, ६		२०	५१, ५२, ६०
गिहकम्म	३५	८			

गुण	२५	३३	गुम्मी	३६	१३८
	२८	५, ६, ३०	गुरु	१	२, ३, १६,
	२९	सू० १, ३६, ४५			२०
	३१	१८		७	६
	३२	५		१७	१०
	३४	१० से १३,		२६	७, ८, २१,
		१५ से १९			२२, ३७, ४०
	३६	५८			से ४२, ४५,
गुणओ	३२	५			४८ से ५१
गुणगाहि	३६	२६२		२६	सू० १, ५
गुणत्तण	२९	सू० ३६		३२	३
गुणवंत	२३	१०	गुरुअ	१६	३५
गुणावह	१९	६८		३६	३६
गुणिय	७	१२	गुरुकुल	११	१४
	१९	७३	गुरुभक्ति	३०	३२
गुत्त	१२	१७	गूढ	२५	१८
	१६	सू० १ से ३	गेण्ह *		
	१९	८८	गेण्हइ	२५	२४
	२०	६०	गेण्हण	१९	२७
	३४	३१	गेद्धि	३४	२३
गुत्ति	१२	१७	गेरुय	३६	७६
	२४	१, १६, २६	गेविज्ज	३६	२१२
	२६	३४	गेविज्जग	३६	२१५
	२८	२५	गेह	६	६१
	३४	३१		१७	१८
गुम्भ	३६	६४		१९	२२

१६२

परिशिष्ट-२

गेहि	६	४
गो	६	४०
	३४	१६, १८
गोच्छ्रा	२६	२३
गोण	३६	१८०
गोत्त	३	२
	१८	२१, २२
	२६	सू० ४४, ७३
	३३	२३
गोपुर	६	१८
गोमुत्ति	३०	१६
गोमेज्जअ	३६	७५
गोय	२६	सू० ४२
	३३	३, १४
गोयम	१०	१ से ३७
	१८	२२
	२२	५
	२३	६, ६, १४
		से १८, २१,
		२२, २५, २८,
		३१, ३४, ३५,
		३७, ३९, ४२,
		४४, ४५, ४७,
		४९, ५०, ५२,
		५४, ५५, ५७,
		५९, ६०, ६२

गोयम	२३	६४, ६७, ६९,
		७०, ७२, ७४,
		७७, ७९, ८२,
		८५, ८६, ८८,
		८९
गोयर	१६	८०
गोयरग्ग	२	२६
	३०	२५
गोयरिया	१६	८३
गोल्लय (अ)	२५	४०, ४१
गोवाल	२२	४५
गोहा	३६	१८१

घ

घण	३०	१०
	३६	११८
घस्तु	१८	७
घत्थ	१६	१४
घय	३	१२
	१४	१८
घर	६	२६
	२१	५
	३०	१८
घरणी	२१	४
घाण	१०	२३
	३२	४८, ४९

उत्तररजभयण शब्द-सूची

१६३

घाणिदिय	२६	सू० १,६५ -	च	
घास	२	३०	च	१ ६
	८	११	चइउ(त्यक्त्वा)	१८ १६
	३०	२१	चइउं (त्यक्त्वा)	३२ -
घिसु	२	८, ३६ -	चइऊण	७ ३०
घुट्ट	१२	३६		६ १, ६१
घेतूण	७	१४		१३ ३३
	१२	१८	चइऊण	१ २१
घोर	४	६	चइस्ता	१४ ४६
	१४	५०		१८ ३६, ३८, ४१
	१८	२५	चइस्ताणं	१ ५
	१६	३३, ७२		६ ५
	२०	२१		६ ४२
	२२	३१		१८ ४४
	२३	५०, ७५		१६ १६
	२५	३८		२७ १६
घोरपरक्रम	१२	२३, २७		३६ ५५, ५६
	१४	५०	चइस्तु	१ ४८
	२३	८६		१३ २०
घोररुव	१२	२५	चइयव्व	१६ १३
घोरव्वय	१२	२३, २७	चउ	३ १, १७
घोरासम	६	४२		१८ २३
घोस	११	१७		२४ ४
	३०	१७		२६ ११, १४, १७
				२८ १
				३० २०

चउ	३४	४०	चउरिदिय	३६	१४५, १४६, १५१, १५२
	३६	५२ से ५४, २४३	चउरिदियकाय १०		१२
चउक्क	१६	४	चउविह	३६	१७६
	२४	१२	चउवीस	३६	२३५, २३६
	३६	२५२	चउव्विह	१६	३०
चउत्थ	२४	२०		२४	२०
	२६	२, १२, १६, १८, २६, ३६, ४३, ४४		२८	१८
	३३	१२		३३	१२
	३६	१६३, २३७		३६	४, १०, ११, ७८, १११, १२०, १५५, १५८, १७३, १८२, १८८, १८६, २०४, २१७
चउहस	११	६, २२			
	३६	२२७, २२८			
चउप्पय	१३	२४	चउव्वीसत्थअ २६		सू० १, १०
	२६	१३	चउहा	३६	१२६
	३६	१७६	चंचल	१८	१३
चउन्माअ (ग)	२६	८, १६ से २२, ३७, ४५	चंड	१	१३
				१७	८
चउभाग	३०	२१		१६	७२
चउर (इंदिय)	३६	१२६	चंडाल	३	४
चउरंग	३	२०	चंडालिय	१	१०, ११
चउरंगिणी	२२	१२	चंद	११	२५
चउरंस	३६	२१, ४५		२३	१८

चंद	२५	१६, १७	चम्म	३६	१८८
	३६	२०८	चय -		
चंदण	१६	६२	-चयड	२६	सू० ४
	३६	७६, १२६		३१	४
चदप्पह	३६	७६	-चयति	१३	३१
चपा	२१	१, ५	-चयसि	६	५१
चक्क	६	६०	चयरित्तकर	२८	३३
	११	२१	चर *		
	१४	४	-चर	४	६, ८, १०
	२२	११		१८	३३
चक्कवट्टि	११	२२		२२	४३
	१३	४	-चरई	१७	८
	१८	३६ से ३८,		१६	७७
		४१	-चरन्ति	१२	१५, ४१
चक्किलदिय	२६	सू० १, ६४		१४	३५
चक्कु	५	५		२३	८३
	१०	२२	-चरिज्ज	२१	१२, १३
	१६	४	-चरिस्ससि	१६	४३
	२४	७, १४	-चरिस्सामि	१४	३२, ४१
	२६	३५		१५	१
	३२	२२, २३		१६	८४, ८५
	३३	६	-चरिस्सामु	१४	७
चक्कुफास	१	३३	-चरिस्सिमो	२३	३८
चच्चर	१६	४	-चरे	१	३२
चत्त	६	१५		२	३, ४, १५,
	१२	४२			१८, १९
	१६	८६			

चरे	४	७	चरम	३४	५६
	६	१६	चरमाण	३०	२०, २३
	६	४६	चराचर	३२	२७, ४७, ५३,
	१०	३६			६६, ७६, ६२
	१२	४०	चरिष्ठं		
	१४	४७	(चरितुम्) १६		३७
	१५	३	चरिष्ठं		
	१६	१५	(चरित्वा) २१		२३
	१८	१५, ३१, ३७,	चरित्त	१६	३८
		४१, ४३, ४७,		२०	५२
		५१		२२	२६
	३५	१६		२३	३३
	३६	२५२, २५३,		२६	३६, ४७
		२५५		२८	२, ३, ११,
चरेज्ज	२	१७			२५, २६, ३५
	१५	२		२६	सू० १, १२, १५,
चरंत	२	६			३२, ५६, ६०,
	४	११			६२, ७२
चरण	१८	२२, २४	चरित्तगुत्त	२६	सू० ३२
	१६	६४	चरित्तगुत्ति	२६	सू० ३२
	२३	२, ६	चरित्तधम्म	२८	२७
	२४	५, २६	चरित्तमोहण	३३	१०
	२८	३०	चरित्तमोहणिज्ज	२६	सू० ३०
	३३	८	चरित्ता	१८	२५
चरणविहि	३१			२६	५२
	३१	१		३१	१

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

चरित्ताण	२६	१	चिइ	१३	२५
चरित्ताणं	१६	८१, ८२	चित *		
	२२	४८	-चितए	२	७, १२, २६, ४४, ४५
चरिम	२३	२७	-चितिज्ज	२६	३६, ४७
	३६	५६, ६४	-चितेइ	२२	१८
चरिय	१६	६७	चितइत्ताण	२०	३३
चरिया	२	सू० ३	चितंत	१६	५६
चवल	६	६०	चिता	१४	२२
चवेड	१६	६७		२३	१०
चवेडा	१	३८	चिच्चा	७	२८
चाइय	३२	१६		६	४
चाउज्जाम	२३	१२, २३		१८	२०
चाउप्पाय	२०	२३	चिच्चाण	१०	२६
चाउरंत	११	२२	चिट्ट *		
	१६	४६	-चिट्टड	१	४७
	२६	सू० २३, ३३, ६०		३	१२
चाउरंगिज्ज	३			१०	२
चामर	२२	११		२१	२१
चारि	१६	८३		२३	४५, ५०
चारित्त	१३	३५	-चिट्ठई	२७	६
	२८	३३	-चिट्ठसि	१०	३४
चारु	१६	४		२३	३५
चारुपेहिणी	२२	७	-चिट्ठंति	३	१५
चारुभासिणी	२२	३७		२३	७५
चावेयज्ज	१६	३८	-चिट्ठे	१	१६, २६
चास	३४	५			

-चिद्वेज्ज	१	३३	चित्तमम्भूज्ज	१३	
-चिद्वेज्जा	१	३२	चित्तह	३५	४
-विद्वन्ती	२५	१७	चित्ता	२२	२३
चिद्वमाण	२	२१	चिय	७	७
चिण *			चिया	१६	५७
-विणाड	३०	३३, ४६, ५६,	चिग	२०	४१, ४३
		७२, ८५, ६८	चिरकाल	१०	४
चिण्ण	२१	२२	चीग	५	२१
चित्त (चित्त)	१	१३	चीवर	२२	३४
	८	१८	चुण्णिय	१६	६७
	१४	४	चुय (अ)	३	१६
	२२	३४		७	१०
	२६	मू० २६		१४	१
	३२	१, १२, १४,		१८	२६
		३३, ४६, ५६,		२०	४७
		७२, ८५, ६८	चुल्गी	१३	१
चित्त (चित्र)	६	१०	चुडामणी	२०	१०
	१३	२, ३, ६,	चे	१६	मू० ३ मे १०
		११ १३, १५,	चेडय	६	६, १०
		२८, ३५,		२०	८
	३०	११	चेल्वा	१३	२४
	३२	२७ ४०, ५३,		१८	५०
		६६, ७६, ६२		१५	१६
				१८	३४ ४३
चित्त (चित्र)	२६	१३	चेट्टा	१०	२६
चित्तपत्तय	३६	१४८	चेय	१८	३०, ५०
चित्तमंत	२५	२४		२०	१७, ५८

चोडय	६	८, ११, १२, १७, १६, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०, ६१	छद	१६	७५
				२१	१६
			छंदणा	२६	३, ६
			छक्क	३१	८
			छज्जीवकाय	१२	४१
			छट्ट	२६	२६, ३२
				३०	१६, ३६
	१७	१६		३४	३
	१८	४४		३६	१६५, २३६
	१६	५६	छट्टय	२६	३
चौज्ज	३५	३		३०	११
चोयण	१	२८	छट्टिया	१३	७
चोर	३२	१०४	छत्त	१८	४२
				२२	११
				३६	५७
छ			छत्तग	३६	६०
छ	२६	१६, २५, ३०, ३१, ३३	छत्तीस	३६	७७, २६८
	३१	८	छत्तीसडविह	३६	७२
	३३	१८	छन्न	२५	१८
	३४	१, २१	छन्माअ	३६	६२
	३६	१५१, २५१	छवि	२२	५
छउम	२	४३	छवित्ताण	२	७
छउमत्थ	२८	१६, ३३	छविपव्व	५	२४
छद	४	८	छवीसड	३६	२३८
	१८	३०	छव्विह	२८	३४
				३०	७, १०

छवीस	३६	२३७
छाया	२८	१२
छिद *		
-छिद	६	४
-छिदड	२०	३६
	२७	७
-छिदई	१६	८६
-छिदे	२	२
छिदाव *		
-छिदावए	२	२
छिदित्तु	१४	३५
	२३	४३
छिदिया	१०	३७
छित्ता	१४	४८
	२३	४१, ४६
छिह	२६	सू० १२
छिन्न	१४	२६, ४१
	१५	१, ७
	१६	५१, ५४, ५५,
		६०, ६२, ६६
	२३	२८, ३४, ३६,
		४४, ४६, ५४,
		५६, ६४, ६६,
		७४, ७६, ८५,
		८६
	२५	३४

छिन्नसोय	२१	२१
छिन्नाल	२७	७
छिन्नावाय	२	५
छुमिता	१८	३
छुरिया	१६	६२
छुहा	१६	१८, २०, ३१
छूढ	२५	४०
छेअ	७	१६
	३०	१३
छेतु	२०	४८
छेतूण	७	३
छेओवट्टावण	२८	३२
छेयण	२६	सू० ४, ६१
ज		
ज	१	२१
जअ	६	३४
जह (यदि)	१	१७
	१२	१७, २८
	१३	३२
	१४	३६
	१८	१७
	२०	३२
	२२	१६, ४१, ४४
	२५	२३, २४

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१७१

जड (यति) २४	१२, १४, २१,	जकख	२३	२०
	२३, २१		३६	२०७
२६	३८	जग	८	१०
जइत्ता (जित्वा) ६	३५		१४	३६, ४३
जइत्ता			१६	२५
(याजयित्वा) ६	३८	जगई	१	४५
जइय २५	३६	जट्ट	२५	२८
जओ १	७, २१	जट्टा	६	३८
१२	२	जडि	५	२१
जत २२	३३	जण *		
जतिय ३२	१२	-जणयइ	२६	सू० २ से ७३
जतु ३	१	जण	४	१
७	६		५	७
१४	४२		६	३०
१६	१५		१०	१८, १६
२३	६०		१२	२५, २८, ३३
२८	७, ८		१३	१४, १८
३२	२५, ३८, ५१,		१६	सू० १२
	६४, ७७, ६०,		१६	१
	११०		२२	१७, २७
जपिय ३२	१४		३२	३, १५
जकख ३	१४, १६	जणअ	२२	८
५	२४, २६	जणइत्ता	२६	सू० ५७
१२	७, २४, ३२,	जणणी	१६	२
	४०, ४५	जणवय	६	४
१६	१६	जणवयकहा	२६	२६

जत्ता	१६	८	जय (यत्)	१	३५
	२३	३२		१२	२
जत्तिअ	३०	२०		२४	१२, १४, २१,
जत्थ	५	१२			२३, २५
	७	२७		२६	३८
	६	२६	जय (यत्) *		
१७	१३		-जए	३३	२५
१८	१३		जय (यज्) *		
१९	१५		-जयई	१२	४२
२३	८१			२५	४
२४	३		-जयामो	१२	४०
जन्न	६	३८	जयंत (जयत्)	४	११
	१२	१७, ४२	जयत (जयंत)	३६	२१५
	२५	४, ५, ७,	जयघोस	२५	१, ३४, ४२,
		११, १४, ३६			४३
जन्नइज्ज	२५		जयणा	२४	४, ६
जन्नट्ठि	२५	१६	जया	१४	४०
जन्नवाई	२५	१८		१८	१२
जन्नवाढ	१२	३		१९	७८, ८०
जमजन्न	२५	१		२६	१९
जम्बू	११	२७	जरा	४	१
जम्म	१४	५१		१३	२६
	१९	१५, ४६		१४	४, १४, २३
	२०	५५		१९	१४, १५, २३,
जम्मण	३६	२६७			४६
जय (जय)	१८	४३		२३	६८, ८१

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

१७३

जल	१६	५६	जवण	८	१२
	२३	५१, ५३		३५	१७
	२५	२६	जवमज्झ	३६	५३
	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ७६, ८६, ९९	जवस	७	१
	३५	११	जवोदग	१५	१३
	३६	५०, ५४, २६७	जवोदण	१५	१३
जलत	११	२३	जस (यजस्)	३	१३, १८
	१६	४६, ५६, ५७, ७०		७	२७
जलकत	३६	७६	जससि	५	२६
जलकारि	३६	१४८		२१	२३
जलण	३६	२६७	जसा	१४	३
जलयर	३६	१७१, १७२, १७५ से १७७	जसोकामी	२२	४२
जलघह	३६	६५	जह	१०	२, ३३
जलागम	३०	५		१६	५६
जलूग	३६	१२६	जह *	२०	४२, ४४
जल्ल (दि०)	२	सू० ३	-जहाइ	१४	३२
	२	३७		१५	६
	१६	३१		१६	८४
जल्लिय (दि०)	२४	१५	-जहासि	१२	४५
जव (यव)	६	४६	-जहिज्ज	१५	१
	१६	३८	जहक्कम	१४	११
जव (जव)	११	१६		२२	१२
				२३	४३
				२६	४०, ४८
				३३	१
				३४	१, ३

१७४

परिशिष्ट-२

जहन्न	३०	१५	जहन्निय	३६	१२२, १३२,
	३४	३४ से ३६,			१४१, १५१,
		४२, ४६, ४६,			१७५, १७६,
		५०, ५२, ५४,			१८४, १८५,
		५५			१९१, १९२,
	३६	५०, ५३,			२००, २०१,
		१६० से १६७,			२२१, २५१
		२१६, २२०,	जहा	१	४
		२२२ से २४३,	जहाजाय	२२	३४
		२४५	जहाठाण	३	१६
जहन्निय (ग) ३६		१४, ८१, ८२,	जहाणुपुक्वी	२६	सू० ७२
		६०, १०२	जहाथाम	३०	३३
		से १०४,	जहानाय	२३	३८, ४३, ४६,
		११४, ११५,			४८
		१२३, १२४,	जहाफुड	१६	७६
		१३३, १३४,	जहाभूय	२०	५४
		१४२, १४३,		२५	३५
		१५२, १५३,	जहामदु	२५	२१
		१६८, १७७,	जहाय	१४	२
		१८६, १९३,		२०	५१
		२०२, २४६	जहावाइ	२६	सू० ५२
जहन्निय	३३	१६, २१ से	जहासुत्त	३५	१६
		२३	जहासुय	१	२३
	३४	४१, ४३, ४८,	जहासुह	१७	१
		५३		१६	८४, ८५
	३६	१३, ८०, ८८,	जहाहिय	२०	२३
		८६, ११३,			

जहिऊण	३५	२०	जाइ	२२	४०
जहिं	१२	१३		३२	७
जहिच्छ	२३	२२	जाइपह	६	२
जहिस्ताण	१८	४०	जाइय	२	२८
जहितु	२१	११	जाईसरण	१६	७,८
जहोड्य	२२	२१	जाण *		
जा * (जन्)			-जाणड	५	६
-जायइ	१६	७८		२८	३५
-जायए	१	४५		३२	१०६
-जायति	३२	१०५	-जाणामि	१३	२७
जा * (या)				१७	२
-जाइ	३	१२		१८	२७
-जंति	७	२१	-जाणासि	२५	११, १२
	६	५३	-जाणाह	१२	१५ ---
	१४	२४, २५	-जाणाहि	१२	१०
	२२	३२		१३	११ ---
जाअ	१३	२, १२	-जाणे	१४	२७ ---
	२०	३५		१८	२६
जाइ	३	२		२०	१६ ---
	१	१, २	-जाणंति	३६	२६१ ---
	१२	५, १३, १४,	जाण (जाणतु)	५	१४
		३७	जाण (यान)	७	८ ---
	१३	१, ७, १८,	जाणमाण	१३	२६ ---
		१६	जाणय	२०	४२
	१४	४, ५ ---	जाणिऊण	३६	१
	१६	८ ---	जाणिता	१	३४ ---

१७६

परिशिष्ट-

जाणिय	२१	१४
जाय *		
-जायइ	२२	६
-जायाहि	२५	६
जाय	७	२
	८	४
	१४	६, १२, १८,
		२२, २६, ३४
	१६	४३
	२१	४
	२२	४८
	२५	२६
	२७	१४
जायखन्ध	११	१६
जायग	२५	६, ६
जायणजीवि	१२	१०
जायणा	२	सू० ३
	१६	३२
जायतेय	१२	२६
जायरूव	२५	२१
	३५	१३
जाया	८	११
जायाइ	२५	१
जारिस	१६	७३
	२७	८, १६
जारिसय	३४	१२ से १४

जाल	१४	३५, ३६
	१६	६५
	३२	६
जालग	३६	१२६
जाला	३६	१०६
जाव	२	३७
	४	१३
	७	३
	२६	सू० ७२
जावइ	३६	६७
जावत	६	१
जावज्जीव	१६	२५, ३५
	२२	४७
जि *		
-जयइ	३१	७ से २१
	३६	१
-जिणेज्ज	६	३४
-जीयन्ति	७	१३
जिडंदि	१२	१, ३, १७,
		२२
	१५	१६
	२२	२५, ३१, ४७
	२६	सू० ४३
	३०	३
	३४	३०, ३२
जिच्च	७	२२
जिच्चामाण	७	२२

उत्तरप्रकरण शब्द-सूची

१५७

जिम्बा	२	सू० १ से ३
जिण *		
-जिण्	२३	३६
-जिणह	२६	सू० ४७
जिण	२	४५
	१०	३१
	१६	१७
	१८	४३
	२०	५०, ५५
	२१	१२
	२२	२८
	२३	१, ५, ६३,
		७८
	२४	३
	२८	१, २, ७,
		१८, १९, २७,
		३३
जिणमगा	२२	३८
जिणवयण	३६	२६०, २६१
जिणवर	३६	६०
जिणसासण	२	६, १८, १९,
		३२, ४६
जिणिव	१४	२
जिणित्ताण	२३	३६
जिणित्तु	२३	३८
जिण्मा	१०	२४
६६		

जिण्मा	३२	६२
	३४	१८
	३५	१७
जिण्मदिम	२६	सू० १, ६६
जिण् (जित)	५	१६
	७	१७ से १९
	९	३६
	२३	३६
जिण (जीव)	२२	१८, १९
जीमूय	३४	४
जीव	२	२७
	३	७
	७	१६
	८	३
	१०	५ से १४
	१२	४४
	२३	७३
	२६	५२
	२८	३, १०, ११,
		१४, १७
	२९	सू० १ से ७२
	३०	२, ३, ३७
	३१	१
	३२	२७, ४०, ५३,
		६६, ७६, ८२
	३३	१, १८, २४

जीव	३४	५६ से ६०
	३५	११
	३६	२,३,४,५,
		६ से ७०, १
		८२, ८४, ८०,
		८२, १०४,
		१०८, ११५,
		११७, १२४,
		१२७, १३४,
		१३६, १४३,
		१४५, १५५,
		२४८, २४९,
		२५७ से २५९

जीव		
-जीवद्व	७	३
	१५	७
-जीवामो	६	१४
जीवत	१८	१४
जीवघण	३६	६६
जीवलोग	१८	११, १२
जीवविभक्ति	३६	४७
जीवो	६	२१
जीवाजीवविभक्ति	३६	
जीवि	२०	४५
जीविय	४	१, ७
	८	१४

जीविय	१०	१, २
	१२	२८, ४२, ११
	१३	२१, २६
	१४	३२
	१५	६
	१८	१३
	१९	६०
	२०	४३
	२२	१५, २६, ४२
	२६	सू० ३६
	३२	२०

जीवियय	१०	३
जीहा	१२	२६
	३२	६१
जुअ	१६	५६
जुइ	७	२७
	१३	११
	२२	१३
जुइम	१८	२८
जुइमत	५	२६
जुंज		
-जुंजे	१	१८
जुंजण	२४	२४
जुग	२७	७
जुगमित	२४	७

उत्तरज्येष्ठ गब्द-सूची

१७६

जुगव	२८	२६
	२६	सू० ७२, ७३
	३६	५३
जुज्म		
जुज्माहि	६	३५
जुज्म	६	३५
जुण	१४	३३
जुत (योक्त्र)	१६	५६
जुत (युक्त)	१	८, २३
	६	२२
	१८	४
	१६	५६, ८८
	३२	१०६
जुम्ह	१२	७
जुयल	२२	६, २०
जुवराय	१६	२
जूव	१२	३६
जूह	११	१६
जे	२२	२१
जेदु	२०	२६, २७
	२३	१५
जेदुग	२२	१०
जेदुमूल	२६	१६
जेम		
जेमेइ	१७	१६
जोव	२७	२

जोव		
जोइ	२७	३
जोइ	१२	३८, ४३, ४४
	३५	१२
जोइय	२७	८
जोइस	३४	५१
	३६	२०४, २०८, २२१
जोइसंगविउ	२५	७, ३६
जोइसिय	३६	२०५
जोग	७	२४
	१२	४४
	२१	१३
	२६	सू० १, ५, ३४
		३८, ६७, ७३
	३१	२०
	३४	२२, २४, २६
		२८, ३०, ३२
	३६	२५०, २६४
जोगव	११	१४
	३४	२७, २६
जोगसज्ज	२६	सू० १, ५, ३
जोगा	३२	४, १५
जोज्ज (दि०)	२७	
जोणि	३	५, ६, ९
	७	१६, २०

१३४

परिशिष्ट-२

जोयण	२६	३५
	३६	५७ से १६,
		६१, ६२
जोव्वण	२१	६
जोह	११	२१

मिज्ज *		
-मिज्जइ	२०	४६
मिया *		
-मियाएज्जा	३५	१६
-मियायइ	१८	४
	२६	१२, १८, ४३
मियायमाण	२६	सू० ७३

३६

भक्त	२६	सू० ४०
भक्तिय	१८	५
भक्तोयर	२२	६
भक्ता *		
-भक्ताएज्ज	१	१०
-भक्ताएज्जी	३०	३५
-भक्तायइ	१८	५
-भक्तायए	३४	३१
भक्ताण	१८	४, ६
	२०	५७
	२६	१२, १८, ४३
	२६	सू० १३
	३०	३०, ३५
	३१	६
	३२	१०६
भक्ताणुत्त	२६	सू० ५५
भक्तिय	१२	२१
भक्ताणि	२६	सू० ७३

७

ठव *		
-ठवेज्ज	१	६
	८	११, १६ -
ठवित्ताण	१८	३७, ४६ -
ठवेत्तु	६	२ -
ठाण	५	२, ४, १२,
		१३, २८
	६	६, ५८
	११	३, ४, ६,
		१०
	१२	४३, ४४, ४७
	१६	सू० १ से ३, १२
	१६	१४
	१८	२३ -
	२०	५२

ठाण	२३	८० से ८२,	ठिच्चा	३	१६
		८४	ठिय	१२	७, ११, २५
	२४	१०, २४		१३	३२
	२६	५, ३३		१६	४
	२८	६		२०	५५
	२९	सू० ५०		२१	८
	३०	२७, ३६		२२	२२, ३३
	३१	१४, २१		३२	१७
	३४	२, ३३			
ठावइत्ताण	६	३२	ढ		
ठिङ्ग	७	१३	डज्झ	६	१२, १४
	३३	१६, २०, २२	डज्झमाण	६	१४
	३४	२, ३४ से		१४	४२, ४३
		४२, ४४, ४५,	डमर	११	१३
		४७ से ५०,	डस ^f		
		५३ से ५५	-डसई	२७	८
३६		१२, १३, ७६,	डह [*]		
		८७, १०१,	-डहन्ति	२३	५०, ५१, ५३
		११०, १२१,	-डहेज्ज	१८	१०
		१३१, १४०,	-डहेज्जा	१२	२८
		१५०, १५६,	डहिय	१३	२५
		१७४, १८३,	डोल	२६	१४७
		१९०, १९६,			
		२१८ से २२०,	ढ		
		२२४ से २४४	ढंक (दि०)	१६	५८
ठिङ्ग	२९	सू० २३	ढिकुण (दि०)	३६	१४६

पा			तओ		
णं	६	१२	३	४	
णाम	१४	१२	५	५, १६, ३१	
णीहु	३६	६८	७	२, ६, १०,	
णु	४	१		१८	
णहविअ	२२	६	८	६, १८	
णहणं	२०	२६	९	२४, २८, ३२,	
हाय	१२	४५ से ४७		३८, ४६	
णहुसा	६	३	१६	सू० ११	
			१८	६, १६	
			१९	४३, ८४	
			२०	१०, ३१, ३४,	
				३५, ५२	
त	१	२			
तअ	३६	५४	२१	१२	
तइअ	२६	२, १२, १८,	२२	१७, २२, ३८	
		३१, ४३	२३	१	
	२८	४	तंजहा	२	सू० ३
	२९	सू० ७२		१६	सू० ३
	३३	४	तंतवंग	३६	१४८
	३६	१६२, १८८,	तंतुजं	२	३५
		२३६	तस	३६	२१, ४४
तइया	६	५	तक्क		
तउय	१६	६८	तक्केइ	२६	सू० ३४
	३६	७३	तक्कर	६	२८
तउसमिजंग	३६	१३८	तच्च (तंथ्य)	२०	१
तओ	१	१०		२८	१

तच्च (तृतीय)	२६	सू० २
तच्छिञ्ज	१६	६६
तज्ज	२	३१
तज्जए	२	३१
तज्जणा	१६	३२
तज्जिञ्ज	२	८, ३५
तण	२	३४, ३५
	६	७
	१२	३६
	२३	१७
	३६	६४
तण्फास	२	सू० ३
	१६	३१
तण्हार	३६	१३७
तणु	१४	४७
तणुय	१४	३४
तणुयर्	३६	५६
तण्हा	१६	१८, २०, ३१, ५६
	२६	सू० ४६
	३२	६, ८, ३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ६५
		१०७
तत्त (तस)	१६	६८
तत्त (तत्त्व)	२३	२५

तत्तो	२१	११
	३०	११, १५
तत्थ (तत्र)	२	२१
तत्थ (तस्त)	१६	७१
तद्गुभय	१	२३
	२६	सू० २१
तप्प		
तप्पड	१४	१६
तप्पओसि	३२	१०१
तप्पच्चइय	२६	सू० २, ६३ से ६७
तप्पच्चय	३२	१०५
तप्पडमया	२६	सू० ७२, ७३
तप्पुरक्का	२४	८
तम	७	१०
	१४	१२
	२३	७५
तमंतम	२०	४६
तमतमा	३६	१५७
तमा	३६	१५७
तम्ब	१६	६८
	३६	७३
तम्मुत्ति	२४	८
तय (तक)	२२	३५, ४०
तय (तत्त)	१४	३६
तय	१२	२२

१८४

परिशिष्ट-३

तथा	१४	४०	तव	२०	४१
	१६	८०		२२	४८
तर *				२३	५३
-तर	२२	३१		२५	१८, ३०, ४३,
-तरन्ति	८	६		२६	३४, ४७, ५०
	२३	७३			५१
-तरिस्सन्ति	१८	५२		२७	१६
-तरिहिन्ति	८	२०		२८	२, ३, ११,
तरिडं	१६	४२			२५, ३४ से
तरिक्ता	२१	२४			३६
तरियन्व	१६	३६		२९	मू० १, २८, ४३,
तरुण	२०	८			६०
	३४	७, १०		३०	१, ६ से ८,
तल	१६	४			१०, ११, २६,
तव	१	१६, ४७			३०, ३७,
	२	४३			१०४
	३	८, २०		३६	२५२ से २५५
	५	२८	तवण	३०	५
	६	२०, ३३, ४६	तवमग्गण्ड	३०	
	१२	४, ३७, ४४	तवस्सि	२	२, २०, ३४,
	१३	३५			४४
	१४	५, ८, १६,		३	११
		३५, ५०		१२	१०
	१८	१५, ३१, ३७,		१५	५, ६
		४१, ५०		२३	१०
	१६	५, ३७, ७७,		३२	४, १४, २१
		६४, ६७			

तवोकम्म	१७	१५	तहेव	६	३६
	१६	८८	ता	१३	३२
तवोधण	१३	१७	ताड	८	४, ६
	१८	४		११	३१
	२०	५३		२१	२२
तस	५	८		२३	१०
	८	१०	ताडिअ	१६	६७
	१६	८६	ताण	४	१, ५
	२०	३५		६	३
	२४	१८		१४	१२, ३६, ४०
	२५	२२	ताय	१४	६, २३
	२६	३०		१६	११, ७३
	३५	६	ताय *		
	३६	६८, १०६,	-तायए	६	१०
		१०७, १२६	-तायन्ति	५	२१
तह	१८	१४		२५	२८
तहवकार	२६	३, ६	तायण	१४	८
तहप्यगार	४	१२	तार *		
तहा	५	२	-तारइस्सामि	१६	२३
तहाकारि	२६	सू० ५२	तारा	३६	२०८
तहाभूय	५	३०	तारिस	२७	८, १६
तहाविह	८	४		३५	५, १४
	२४	१५	तारुण्य	१६	३६
तहि	१२	८	ताल *		
तहिय	२८	१४, १५	-तालयंति	१२	१६, २५
तहिय	१२	३६	तालउड	१६	१३

तालणा	१६	३२	तिगडुय	३४	११
तालिस	५	३१	तिगिच्छ *		
ताव	७	३	-तिगिच्छइ	१६	७८
तावड्य	३२	१०६	तिगिच्छा	२०	२२
	३६	५८	तिगिच्छा	२०	२३
तावस	२५	२६, ३०	तिगिच्छिय	१५	८
ताहे	१६	७८	तिगुत्त	६	२०
ति	५	३२		३०	३
	७	१४		३२	१६
	२०	६०	तिगुत्ति	१६	८८
	३३	६		२०	६०
	३४	१७, १६, २१,	तिण	३६	६५
		४१, ४२, ५६,	तिण्ण	५	१
		५७		१०	३४
	३६	५८, ११३,		२६	१, ५२
		१२२, १६१,		३१	१
		१६२, १८४,	तितिकख =		
		१८५, २००,	-तितिकखएज्जा	२१	१५
		२०१	-तितिकखे	२	५, १४
तिदुय (ग)	१२	८	तितिकखा	२	२६
	२३	४, १५		२६	३४
	३६	१३८	तित्त	३६	१८
तित्ख	११	१६, २०	तित्तव	३६	२६
	१६	६२	तित्त्य	१२	४५, ४६
	२०	२०	तित्त्यवम्म	२६	सू० २०
	३४	११	तित्त्ययर	२६	सू० ४४

तिपया	२६	१३
तिभोग	३६	६४
तिमिर	११	२४
तिय	१६	४
	२०	२१
	२६	१६
	३१	४
तिरिक्ख	३३	१२
	३६	१५५, १७०
तिरिक्खजोगि	१६	१०
	२०	४६
तिरिक्ख-		
जोगिय	२६	सू० ५
तिरिक्खत्तण	७	१६
तिरिच्छ	१५	१४
	२१	१६
तिरिय	३४	४४, ४५, ४७
	३६	५०
तिरियलोय	३६	५४
तिरोड	६	६०
तिल	१४	१८
निलोय	१६	६७
तिविह	१५	१२
	२५	२२
	३३	८
	३४	२०

तिविह	३६	६८, ६९
		१०६, १०७,
		१७१, १६६
तिव्व	१६	७२
	२३	४३
	२६	सू० २३
	३२	२४, २५, ३७,
		३८, ५०, ५१,
		६३, ६४, ७६,
		७७, ८६, ९०,
	३८	२१
तीय	२६	सू० १३
तीग	१०	३८
	१३	६, ३०
तीरडत्ता	२६	सू० १
तीस	३६	२४१
तीसड	३३	१६
	३६	२४२
तीसडविह	३६	१६७
तु	२	७
तुंग	१६	५२
तुंड	३४	७
तुंदिल्ल	७	७
तुंवग	३४	१०
तुच्छ	४	१३
	१३	२५

तुङ्ग	१८	१६	तेउक्काय	१०	७
	२०	५४	तेउलेसा	३४	७, २८, ३७,
	२५	६, ३५			५१
तुट्टि	३२	२६, ४२, ५५,	तेऊ	३४	३, १३,
		६८, ८१, ६४			५२ से ५४
तुमतुम	२६	सू० ४०	तेगिच्छा	२	३३
तुयट्टण	२४	२४		२०	२३
तुरिय (तूर्य)	२२	१२	तेण	१४	३
तुरिय (त्वरित)	२२	२४, २५		७	५
तुला	१६	४१		३४	२६
तुलिया	५	३०	तेत्तीस	३१	२०
	७	१६		३३	२२
तुलियाण	७	३०		३४	३४, ३६, ४३,
तुवर	३४	१२			५५
तुसिणीय	१	२०		३६	१६६, २४३,
	२	२५			२४४
तूर *			तेयाल	३४	२०
-तूरन्ति	१३	३१	तेरिच्छ	२५	२५
तेअ	११	२४		३१	५
	१२	२३	तेरिच्छिअ	२६	सू० ३
	१८	१०	तेल्ल	१४	१८
तेइंदिय	३६	१२६, १३६,		२८	२२
		१४१ से १४३	तेवीस	३१	१६
तेइंदियकाय	१०	११		३६	२३४, २३५
तेउ	२६	३०	तो	६	६०
	३६	१०७, १०८,		२३	६१
		११३ से ११५		२६	२४

उत्तरजम्भण शब्द-सूची

१८६

तोत्त	१६	५६
तोत्तअ	२७	३
तोत्तगवेसअ	१	४०
तोलेड	१६	४१
तोसिय	२३	८६
थ		
थभ	११	३
थणिय	१६	सू० ७
	१६	५
	३६	२, ६
थद्ध	११	२, ६
	१७	५, ११
	२७	१०
थल	८	६
	१२	१२
	१३	३०
थलय	३६	१७१, १७६, १८४, १८६
थलि	३०	१७
थव	२६	सू० १, १५
थामव	२	२, २२
थाव *		
-थावए	२	३२
थावर	५	८
	८	१०
	१६	८६
	२०	३५

थावर	२५	२२
	३५	६
	३६	६८, ६९, १०६
थिर	१	३०
	२६	२४
थिरीकरण	२८	३१
थी	१६	१, ३ से ६, ११
थीकहा	१६	२, ११
थीणगिद्धि	३३	५
थीहु	३६	६८
थुड	२६	४२
	२६	सू० १, १५
थुणित्ताण	२०	५८
थूलवय	१	१३
थेर	१६	सू० १ से ३
	२७	१
थोव	१०	२
	३२	१००
दइय	१६	२
दंड	५	८
	८	१०
	१२	१८, १९
	१५	७
	१६	६१

दृढ	२०	६०	दसण	२८	१ से ३, १०, ११, २५,
	३१	४			२६, ३५
दन (दान्त)	१	१५, १६		२६	सू० १, २, १०, १५, ५८, ६१,
	२	२७			७२
	११	४		३२	१०८
	१२	४१		३३	६, ८, ९
	१६	१५		३६	६६, ६७
	२०	३२, ३४, ५३		३३	२, ६
	३४	२७, २९, ३१	दसणावरण	३३	
	३५	१७			
दन (दान्त)	१२	२६	दसणावरणिज्ज	२६	सू० ७२
	१६	२७	दसि	६	१७
दंस	२	सू० ३	दसिअ	२६	सू० ७४
	२	१०	दक्ख	१	१३
	१५	४	दच्चा	६	३८
	१६	३१	दट्ठु	१४	७
	२१	१८	दट्ठु (दण्डुवा)	१	१२
दंसण	२	सू० ३		४	५
	६	१७		१३	३०
	८	३		२२	३५, ३६
	१६	६४	दट्ठु (दण्डुम्)	३२	१४
	२२	२६	दट्ठूण	१४	४
	२३	३३		२२	३६
	२४	५	दट्ठूणं	१३	२८
	२६	३६, ४७	दड्डु	१६	५०, ५७

दढ	११	१७	दल *		
	१७	२	-दलामि	२२	८
	१८	५१	-दलाह	१२	१२
	२७	१६	-दलेज्ज	८	१६
	२६	सू० ३२	दलित्तु	१४	३६
दढवम्म	३४	२८	दव	१७	८
दढव्वअ	२२	४७	दवगि	१४	४२
दत्त	१	३२		१६	५०
	७	५		३२	११
दप्प	१६	६	दव्व	१८	१६
दम	१८	४३		२२	४५
	१६	४२, ६३		२८	५, ६, ८, ९,
दमिय	३२	१२			२४
दमीसार	१६	२		३०	१५, २४
	२२	४, २५	दव्वओ	२४	६, ७
दमेयव्व	१	१५		३०	१४
दम्मत्त	१	१६		३६	३
दया	५	३०	दव्वजाय	२६	६
	१८	३५	दस	१६	सू० १ से ३
	२०	४८		२३	३६
	२१	१३		३४	३५, ३८, ४१,
	२६	३४			४२, ४८, ५३,
	३५	१०			५४
दरिसण	१६	११		३६	५१, ५२,
	१६	७			१०२, १६०,
					१६३, १६४,

१६२

परिशिष्ट-

दस	३६	२१६, २२०, २२६, २२७	दैड	१६	७६
दसंग	३	१६		२१	३
	२६	४		२६	२६
दसण	१३	६	दैज्जा	७	१
	१८	४४	दाढा	११	२०
दसणभद्	१८	४४	दाण	१२	३६
दसम	१६	सू० १२		३३	१५
	२६	४	दाणव	१६	१६
दसविह	३०	३१, ३३		२३	२०
	३१	१०	दाणि	१३	२०
दसहा	२३	३६	दायण	३०	३२
	३६	४, ६, १८, २०५	दायार	१३	२५
दसा	३१	१७	दार (दार)	१४	३७
दसार	२२	११, २७		१८	१४, १६
दसुय	१०	१६		१६	१६, ८७
दहि	१७	१५	दार (द्वार)	१६	६३
	३०	२५		२०	४५
दा *				२६	सू० १४
-दए	६	४०	दारग (अ)	१४	५३
-दाहामि	२५	६		२१	५
-दाहामु	१२	११, १६	दारुण	२	२५
-दाहिई	२७	१२		६	७
-दाहित्थ	१२	१७		१६	३३
-दिज्जाहि	२०	२४	दास	२०	२१
				१	३६
				३	१७

दास	६	५
	८	१८
	१३	६
दाह	२०	१६
दाहिणभाव	२६	सू० ११
दिर्गिच्छा	२	सू० ३
	२	२
दिच्छ *		
-दिच्छसि	२२	४४
दिज्जमाण	१२	२२
दिट्ठ	५	५
	१२	४७
	१५	१०
	१६	६
	२२	३४
	२८	१८, २३
दिट्ठि	८	७
	१८	३३
	१६	६
दिट्ठिवाअ	२८	२३
दिट्ठिसंपन्न	१८	३३
दिण	२६	११
दित्त (दीप्त)	१२	६
	१६	३६
दित्त (दत्त)	३२	१०
दित्तिकर	३२	१०

दिन्न	६	७
	१२	२१
दिप्पत	३	१४
दिय	१४	१२, ४४
	२५	७, १३, ३३,
		३८
दिया	२६	सू० ३१
दिव	५	२२
दिवस	२४	५
	२६	११
	३०	२०
दिवायर	११	२४
दिब्ब	१२	३६
	१४	६
	१५	१४
	१८	२५, २८
	२१	१६
	२२	६, १२
	२५	२५
	२६	सू० ३
	३१	५
दिव्विय	७	१२
दिस	३६	२०६
दिसा	३	१३
	६	१२
	७	१०

दिसा	१६	८२	दीहकालिय	१६	सू० ३ से १२
	२७	१४	दीहाजय	५	२७
	३३	१८	डु	५	२
दिसाविचारि	३६	२०८		८	२०
द्विती	२७	१४		२२	२
दिस्स	६	६, ७		२६	१४
	१४	४६		३३	२०
	२२	१४		३४	५२, ५३
	२३	१६		३६	२२४, २२५
दीण	३२	१०३	हुअ	१८	६
दीव (दीप)	४	५		२२	१४
दीव (द्वीप)	२३	६५, ६७, ६८	हुंदुहि	१२	३६
	३६	२०६	हुक्कड	१	२८
दीव *			हुक्कर	२	२८
-दीवए	३५	१२		१६	१६
दीस *				१६	२५ से २७,
-दिस्सई	१०	३१			३७, ३९, ४१,
-दीसइ	१०	१७			४२, ५२
	१२	३७		३५	५
	१८	२०	हुक्ख	२	३२
	३५	८		५	२५
-दीसन्ति	१६	७३		६	१, ८, ११
	२३	४०		८	१, ८
दीह	६	१२		१३	३, १४, २३
	१४	७		१४	१३, ३२, ३३,
	२६	सू० २३			५१, ५२
	३२	११०			

दुःख	१६	१०, १२, १५, ३२, ३३, ४०, ४५, ६१, ७३, ७१, ८५, ६०, ६८	दुःख	३२	८६, ६०, ६१, ६५, ६७ से १००, १०५, १११
	२०	२३ से २७, ३०		३५	१, २०
	२३	८०	दुःखम	२०	३१
	२६	१, १०, २१, ३८, ४१, ४३, ४६	दुःखमेज्जा	१६	३१
	२८	३६	दुःखिय	३	६
	२९	सू० २, ४, २६, ३७, ४२, ४५, ५६, ६२, ७४		१८	१५
	३२	१, ७, ८, १६, २५, २६, ३०, ३२ से ३४, ३८, ३९, ४३, ४५ से ४७, ५१, ५२, ५६, ५८ से ६०, ६४, ६५, ६६, ७१ से ७३, ७७, ७८, ८२, ८४, ८५,	दुःखुर	३६	१८०
			दुःखुणिज्ज	१३	१६
			दुःखुण्णा	२०	४०
			दुःखुमाणा	४	१३
			दुःखुच्छा	३२	१०२
			दुःगह	३४	५६
				३६	२५६
			दुःच	२६	सू० ३४
			दुःचय	१४	४६
			दुःचर	१६	२४, ३८
			दुःजय	६	३४, ३६
				१३	२७
				१६	१३, १४
			दुः	२३	५५, ५८
				२७	१५
			दुःवाह	३४	२६
			दुःतर	१६	३६
				३२	१७

१६६

परिशिष्ट-२

दुहंत	२७	७	दुय (दुत)	२२	१४
	३२	२५, ३८, ५१,	दुय (द्विक)	३१	६
		६४, ७७, ९०	दुरंत	१०	६
दुहम	१	१५		३२	३१, ४४, ५७,
दुह	१७	१५			७०, ८३, ९६
दुपंच	२६	७	दुरणुपालअ	२३	२७
दुपय	१३	२४	दुरप्प	२०	४८
दुपया	२६	१३	दुराख्ह	२३	८१, ८४
दुप्पट्टिय	२०	३७	दुरासय		
दुप्पघंसय	६	२०	(दुराशय)	१	१३
दुप्परिचत्रय	८	६	दुरासय		
दुप्पहसय	११	२०, ३१	(दुरासद)	११	३१
दुप्पूरअ	८	१६	दुस्तर	५	१
दुब्बल	२७	८	दुलह	१०	४
दुब्बिम	३६	२८	दुल्लह	३	१, ८ से
दुब्बिमगंध	३६	१७			१०, २०
दुब्बूय	१७	१७		७	१८
दुम	१०	१		१०	१६ से १६
	११	२७		३६	२५७, २५६
	१३	३१	दुल्लहबोहियत्त	२६	सू० ५८
	१६	६६	दुल्लहय	१०	२०
	२०	३	दुव	८	२०
	३२	१०		२२	२
दुमपत्तय	१०			३६	५३, ५४,
दुम्मुह	१८	४५			२५३
दुम्मेह	७	१३	दुवालसंग	२४	३
	२५	४१			

दुविह	७	१८	दुस्सील	५	२१, २२
	२१	२४		२५	२८
	२३	२४, ३०	दुस्सीस	२७	८
	२४	१३	दुह	२	३२
	२८	३४		१८	१७
	३०	७, ६, १२,		१६	७१
		३७		२०	२५, ३७
	३३	७, ८, १०,		२८	१०
		१३, १४		३२	३३, ४६, ५६,
	३६	४, १७, ४८,			७२, ८५, ६८,
		६८, ७०, ७१,			११०
		८४, ६२, ६३,	दुहओ	५	१०, २३
		१०८, ११७,		७	१७
		१२७, १३६,		६	५४
		१४५, १७०,		११	१५
		१७१, १७६,		१३	१८
		१८१, १६५,		१४	२६
		२०५, २०६,		१७	२१
		२१२, २४८		२०	४६
दुव्वह	१६	३५		२४	१४
दुव्विसह	२१	१७	दुहा	३६	७०, ८४, ६२,
दुव्विसोज्झ	२३	२७			१०८, ११७
दुसमयद्विइय	२६	सू० ७२	दुहाकअ	२३	२६
दुसय	२४	११	दुहावह	१३	१६, १७
दुस्ताहड	७	८		१६	११
दुस्सील	१	४, ५	दुहि	७	३

१६८

परिशिष्ट-२

कुहि	१६	१८, १६	देव	१४	१
	२०	४६		१६	१६
	३२	२६, ३१, ४२,		१६	३
		४४, ५५, ५७,		२१	७
		६८, ७०, ८१,		२२	२१, २२
		८३, ८४, ८६		२३	२०
कुहिअ	६	१०		२६	सू० ५
	१६	७१		३३	१२
	३२	३१, ४४, ५७,		३४	४४, ४७
		७०, ८३, ८६		३६	१५५, २०४,
कुहिल	११	६			२०६, २१२,
कुर	२४	१८			२४५, २४६
	३२	३	देवई	२२	२
कुरस	६	४६	देवग	३२	१६
	१२	६	देवत्त	७	१७
	१६	सू० ७	देवय	७	२१
देय	२५	८	देवलोग (य)	३	३
देव	१	४८		६	१, ३
	३	१५		१३	७
	५	२५	देविंद	६	११, १३, १७,
	७	१२, १६, २३,			१६, २३, २७,
		२६, २६			२६, ३१, ३३,
	१०	१४, २३			३७, ३६, ४१,
	११	२७			४३, ४५, ४७,
	१२	२१			५०
	१३	७, ३२		१२	२१

देवी	१४	३, ३७, ५३	देह	७	२, १०, २६
	३२	१६		१२	२५, ४२
देस	२१	३		१६	१६
	३६	२, ५, ६,		२१	१८
		१०, ११, ६७,		२३	५१
		७८, ८६,		२४	१५
		१००, १११,	देह *		
		१२०, १३०,	देहइ	१६	६
		१३६, १४६,	दो	५	२५
		१५८, १७३,		८	१७
		१८२, १८६,		१३	३, ५
		१६८, २१७		१४	३, ५
देसिअ (य)				२२	२, ४८
(दिगित)	५	४		३४	३७
	१६	१७		३६	२२२
	२१	१२	दोगुंछि	२	४
	२३	१२		६	७
	२८	५	दोगुंदग (अ)	१६	३
	३५	१		२१	७
देसिय (दिगित)	१०	३१	दोगइ	७	१८
देसिय				८	१
(द्वैसिक)	२६	३६, ४०		६	५३
देह	१	४८		२६	सू० ५
	२	२	दोच्च	३६	१६१
	५	३१	दोणमुह	३०	१६
	६	१३	दोस (दोप)	१	२४

दोस (दोष)	४	१३	घ		
	८	२,५	घण	४	२
	१०	३७		७	८
	१२	४६		१०	२६, ३०
	१४	४१ से ४३		१२	६, २८
	१७	२१		१३	१३, २४
	२१	१६		१४	११, १४, १६,
	२३	४३			१७, ३८, ३९
	२५	२१		१६	२६, ६८
	२७	२१		२०	१८
	२८	२०	घणिय (दि०)	१३	२१
	२९	सू० १, ६३ से		२६	सू० २३
		६७, ७२	घणु	६	२१
	३०	१, ४	घन्त	११	२६
	३१	३		१३	२४
	३२	२, ७, ६,		१६	२६
		२२, २३, २५,		३५	१०
		२६, ३०, ३६,	घमणि	२	३
		३८, ४२, ४३,	घम्म (घर्म)	१	४२
		४६, ५१, ५५,		२	१३, ३७, ४२
		५६, ६१, ६२,		३	८, ११, १२
		६४, ६८, ६९,		५	१५, ३०
		७५, ७७, ८१,		७	१५, २८, २९
		८२, ८८, ९०,		८	१६, २०
		९४, ९५		९	२, ४४
				१०	१८, २०

धम्म (धर्म)	११	१५	धम्म (धर्म)	३२	१७
	१२	३३, ४६		३६	७, ८
	१३	२, १५, २१,	धम्म (धर्म्या)	१६	८
		२६, ३२		३०	३५
	१४	१७, २०, २५,		३४	३१
		२८, ४०, ५०,	धम्मकहा	२६	सू० १, २४
		५१		३०	३४
	१५	१	धम्मचित्ता	२६	३३
१६	सू० ३ से १२,	१५, १७	धम्मजाण	२७	८
		१	धम्मज्झाण	१८	४
१७	१		धम्मतित्थयोर	२३	१, ५
१८	१८, २५, ३३,		धम्मत्थिकाय	३६	५
	३४		धम्मरुद्ध	२८	१६, २७
१९	१९, २१, ४३,		धम्मलेसा	३४	५७
	७७, ९८		धम्मसद्धा	२९	सू० १, २, ४
२०	१, ४४, ५८		धम्मायरिय	३६	२६५
२१	१२, २३		धम्माराय	२	१५
२२	४६		धम्मिदु	७	२९
२३	११ से १३,		वर	६	१७
	२४ से २६,			११	२१
	२९, ३१, ५८,			१२	१, १५
	६८, ८७			१९	५
२५	७, ११, १४,			२२	५
	१६, ३६, ४२		वर *		
२८	७ से ९		वरिज्जति	३०	२७
२९	सू० ४९, ५१				

२०२

परिशिष्ट-२

घरिस *			वीर	१४	३५
-घरिसेइ	३२	१२		१५	३
घाउ	३४	७		१८	३३, ५१, ५३
घार *			धीरत्त	७	२६
-घाराए	२	३७	घुत्त	५	१६
	१६	६	घुय	३	२०
-घारेज्जा	१	१४	घुरा	१४	१७
घारेह	१६	६८		१६	६८
घार	३५	१२	घुव	७	१६
घारइत्ता	२०	४३		१६	१७
घारा	१६	३७, ५६, ६२		२०	५२
	२३	५३		२३	८१
घारि	१४	१७	घुवगोयर	१६	८३
घारेडं	१६	३३	धूमणेत	१५	८
घारेयव्व	१६	२४, २८	धूमाभा	३६	१५७
घावत	१६	५६	धूयरा	२१	३
घिइ	६	२१	धूया	१२	२०
	२७	८	धूव	३५	४
	३२	३	घेणु	२०	३६
घिइम	१६	१५	घोरेय	१४	३५
	१८	३६			
घिइमंत	२२	३०	न		
	२६	३३	न	१	७
घिरत्थु	२२	२६, ४२	नई(दी)	११	२८
घीर	१	२१		१६	५६
	७	२६			

उत्तररज्जमयण शब्द-सूची

२०३

नई(दी)	२०	३६	नद्या	२	१३, २६, ३१,
	३२	१८			३५, ४१
नडय	७	१३		८	१८
नंदण	१६	३		३२	१६
	२०	३, ३६	नचवाण	८	११
नदावत्त	३६	१४७		१८	१७
नदि	११	१७	नट्ट	१३	१४, १६
नक्खत्त	११	२५	नत्ति	१४	१५
	२५	११, १४, १६	नपुस	३६	५१
	२६	१६, २०	नपुंसग	३६	४६
	३६	२०८	नपुसगवेय	२६	सू० ६
नग	११	२६	नपुसवेय	३०	१०२
	१३	६	नम		
नगर	२	१८	-नमड	१	४५
	६	२०, २८	-नममनि	१६	१६
	१०	३६	-नमेड	६	६१
	१६	४	नमसन्त	२५	१७
	२१	२	नमि	६	२, ३, ५, ८,
	३०	१६			११, १३, १७,
नग(य) रमडल	२३	४, ८			१८, २३, २५,
नगरी	२२	३			२७, २६, ३१,
नगिणिण	५	२१			३३, ३७, ३६,
नग्गड	१८	४५			४१, ४३, ४५,
नग्गल्ल	२०	४६			४७, ५०, ६१,
नच्चा	१	४१, ४५			६०
	२	सू० १ से ३		१८	४५

२०४-

परिशिष्ट-२

नमिमवज्जा	६	-	नर	३४	२१, २४, ४५,
नमो	२०	१			४७
	२३	८५	नरग(य)	३	३
नय	२८	२४		४	२
	३६	२४६		५	१२, २२
नयण	२०	२८		६	७
	३४	४		७	४, ७, १६,
नयर	१३	३			२८
	१८	१		१३	३४
	१६	१		१८	२५
	२२	१, ३		१६	१०, ४८, ७२,
नयरी	२०	१८			७३
नर	१	६		२०	४६
	४	२	नरदेव	१४	४०
	७	११, २०	नरवह	१३	२८
	६	४८	नराहिव(अ)	६	३२
	१३	१०, १२, १८,		१३	१५
		२२, २६		१८	५, १८, ३५,
	१५	६			३६, ४१
	१६	१३		२०	१६, ३३, ५६
	१८	१०, १६, २५	नरिद	१२	२१
	२०	३८		१३	१८
	२१	१७		१४	३०
	२५	४१		१८	४६
	३२	१०, ३२, ४५,		२०	१३
		५८, ७१, ८४,			
		६७	नरीसर	१८	४०

उत्तरजम्भयण गब्द-सूची

नलकूवर	२२	४१
नव (नवन्)	२६	२५
	२८	१४
	२९	सू० ३८
	३३	६
	३४	४६
नव (नव)	२९	सू० ३८
नवणीय	३४	१९
नवम	२६	४
	३६	२४२
नवरं	१९	७५
नवविह	२९	सू० ७२
	३३	११
	३४	२०
नवहा	३६	२१२
नह (नख)	१२	२६
नह (नमस्)	१४	३६
	२६	१९
	२८	९
ना *		
-नाहिई	२०	४८
नाइ	१	३९
	१३	२३
	१९	८७
	२०	११
नाउं	१२	४५

नाग	२	१०
	१३	३०
	१४	४८
	२२	४६
	३२	८९
	३६	२०६
नागराय	२१	१७
नाण	६	१७
	८	३
	१८	३२
	१९	९४
	२०	५१
	२१	२३
	२२	२६
	२३	३३
	२४	५
	२५	३०
	२६	३९, ४७
	२८	१ से ५,
		१०, ११, २५,
		३०
	२९	सू० १, १५, ५७,
		६०, ६१, ७२
	३२	२
	३५	२१
	३६	६६, ६७,
		२६५

नाणधर	२१	२३
नाणस्सावर-		
णिज्ज	३३	२
नाणा	३	२
	५	१६
	११	२६, २६, ३०
	१२	३४
	१८	३०
	२०	३
नाणावरण	३२	१०८
	३३	४
नाणावरणिज्ज	२६	सू० १६, १६, ७२
नाणाविह	३	२
	२३	३२
नाणि	२	१३
	६	१७
	२८	५
नाम	८	१, १०
	११	२७
	१२	१, २०
	१४	१
	१७	२
	१८	१, २१, २२,
		३६, ३६, ४३
	२०	१८
	२१	१

नाम	२२	१, ३ से ५
	२३	१, ४
	२५	४
	२६	२, ३
	२८	२०, २५
	२९	सू० ४२, ४४, ७३
	३३	१३, १६, २१,
		२३
	३४	३
	३६	५७
नामअ	२१	४
नामओ	२५	१
नामकम्म	३३	३
नाय	२०	२६
नायज्झयण	३१	१४
नायपुत्त	६	१७
नायय (नायक)	१३	२५
नायय (अ)		
(ज्ञातक)	१८	२४
	३६	२६८
नायव	३	१८
नायव्व	२६	१५
	२८	१८, १६, २१,
		२२, २४, २६,
		२७
	३०	११

नायव्व	३३	५, ६
	३४	१० से १३, १५, ३४ से ३६, ४६
नाराय	६	२२
नारी	८	१६
	१३	१४
	१५	६
	१६	११
	२२	४४
नावा	२३	७० से ७३
नावि	२३	७३
नास	२	२७
नास *		
-नासइ	१४	१८
-नस्ससि	२३	६०
-नस्सामि	२३	६१
नाह	२०	६ से १२, १६, ३५, ५५, ५६
निअय	१६	१७
निउण	६	२०
	३२	४, ५
निउत्त	२६	१०
निओड्ड	२६	६
निओइय	१२	२१

निदणया	२६	सू० १, ७
निदा	१२	३०
	१६	६०
	२६	६
निव	३४	१०
निकेय	३२	४
निककख	२६	सू० ३५
निककखिय	२८	३१
निककस *		
-निककसिज्जइ	१	४, ७
निकखंत	१८	१६, ४४, ४६
	२५	४२
निकखम		
-निकखमई	२२	२३
-निकखमसु	२५	३८
निकखमे	१	३१
निकखमंत	३२	५०
निकखमण	२२	२१
निकखमिअ	२२	२२
निकिखव *		
-निकिखवेज्जा	२४	१४
निकिखवंत	२४	१३
निकिखवित्ताण	२६	३६
निगम	२	१८
	३०	१६

निमिण्ह *			निच्छथ	२३	३३
-निगिण्होड	२८	३५	निच्छिन्न	३६	६७
-निगिण्होमि	२३	५६, ५८	निज्जंत	२२	१४
निगगन्थ	१६	सू० ३ से १२	निज्जर *		
	२१	२	-निज्जरिज्जड	३०	६
	२६	१, ३३	-निज्जरेइ	२६	सू० ६, ३२, ३७, ५८, ६३ से
निगगन्थी	२६	३३			७१
निगगय	७	१४	निज्जरण्या	२६	सू० ३३
	१२	२६	निज्जरा	२८	१४
	१६	८७		२६	सू० १६, २४
	२७	१२	निज्जरापेहि	२	३७
निगगह	२६	सू० १, ६३ से ६७	निज्जा *		
निगगाहि	२५	२	-निज्जाइ	८	६
निज्ज	१	४४	निज्जाअ	२०	२
	२	२८		२२	१३
	११	१४	निज्जाण	२१	६
	१३	३१	निज्जिअ	६	५६
	१४	१६		२३	३५
	१५	३	निज्जिण	२६	सू० ७२
	१७	१०	निज्जहण	३६	२५२
	१६	३, २६, ७१	निज्जह्णिअण	३५	२०
	२३	८८	निज्जमाडत्ता	१६	सू० ६
	३१	३ से २०	निज्जमा *		
निज्जल	२२	४७	-निज्जमाएज्जा	१६	सू० ६
निज्जसो	१६	४, ७, १०, १४	निज्जमायमाण	१६	सू० ६

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

निष्ठुव *

-निष्ठुवेइ	२६	सू० ५०
निष्ठिय	८	१७
निष्ठव *		
-निष्ठविज्ज	१	११
निद्धमोक्ख	२६	१८, ४३
निद्धे *		
-निद्धेज्जा	१२	२३
निद्धा	१७	३
	३३	५
निद्धानिद्धा	३३	५
निद्धेस	१	२
निद्ध	३४	४, ५
	३६	२०
निद्धअ	३६	४०
निद्धंत	२५	२१
निद्धवस (दे०)	३४	२२
निद्धण *		
-निद्धणे	३	११
निद्धूणिताण	१६	८७
निनाअ	२२	१२
निन्न	१२	१२
निन्नेह	१४	४६
निप्पडिक्कम्मया	१६	७५
निप्परिगह	१४	४६
निप्पिवास	१६	४४

निबंध *

-निबन्धइ	२६	सू० ५, ११, २४, ४४
निब्भअ	२६	सू० १८
निब्भेरिय(दि०)	१२	२६
निभ	३४	४, ६ से ८
निमंतण	२	३८
निमंतयंत	१४	११
निमंतिय	२०	५७
निमज्जिउं	३२	१०५
निमित्त	१७	१८
	२०	४५
	३६	२६६
निमेस	१६	७४
निम्मम	१६	८६
	३५	२१
निम्ममत्त	१६	२६
निम्मल	३६	६०, ६१
निम्मोयणी	१४	३४
नियच्छ *		
-नियच्छइ	१५	६
नियंठवम्म	२०	३८
नियग	१	७
	१२	८
	२२	१३

नियट्ट *		
नियट्टई	२	४३
नियडिल्ल	३४	२५
नियणठ	१२	१६
	१५	११
	१७	१
	२०	५१
नियत्त		
नियत्तेड	२६	सू० ८, ३३
नियत्तेज्ज	२४	२१, २३, २५
नियत्त	१४	४१
	१६	६१
नियत्तण	२४	२६
नियनि	३१	२
नियम	१६	५
	२०	४१
	२२	४०
नियम	१४	१६
नियाग	२०	४७
नियागडि	१	७, २०
नियाण	१३	१, ८, २८
	१५	१
	१८	५२
	२६	सू० ६
	३६	२५७, २५६
निरइयार	२६	सू० १७

निरंगण	२१	२४
निरंतराय	३२	१०६
निरक्किय	६	५६
निरट्ट	१	८, २५
	२०	५०
निरट्टग	२	४२
निरट्टिय	२०	४६
निरत्थिय	१८	२७
निरय	८	७
निरवक्का	३०	६
निरवेक्ख	६	१५
निरस्साय	१६	३७
निरस्साविणी	२३	७१
निरहकार	१६	८६
	३५	२१
निराणंद	२२	२८
निरामिस	१४	४१, ४६, ४६
निरारंभ	२	१५
	२०	३२, ३४
निरालवण	२६	सू० ३४
निरावरण	२६	सू० ७२
निरासव	२०	५२
	३०	६
निरुभ		
निरुम्मड	२६	सू० ५, १४, ४१, ७३

निष्ठाइ	१	३०	निवृत्त *		
निष्ठ	२६	सू० १२	-निवृत्तइ	३२	३२, ४५, ५८,
निरुम्भिता	२६	सू० ७३			७१, ८४, ९७
निखहिय	२६	सू० ३५	-निवृत्तोइ	२६	सू० ४१, ३६
निरोबलेव	२१	२२	निवृत्तयंत	३२	१०६
निरोह	४	८	निवृत्तण	३	१२
	७	२६		११	६
	२६	सू० २६, ५६, ७३		१६	६८
निलय	३२	१३		२१	२०
निव	१८	८		२३	८३
	२०	३८		२८	३०
निवृज्ज *			निवृत्तवार	६	१५
-निवृज्जइ	२७	५	निवृत्तहण	२५	१०, ३८
निवृड *			निवृत्तण	१४	२
-निवृडइ	१०	१		१६	१०, ५०
निवाय	२	३५	निवृत्तिगिच्छ	२८	३१
निवारण	२	७	निवृत्तियार	२६	सू० ५५
निवारेड	३५	५	निवृत्तिसय	१४	४६
निवास	३२	१३	निवृत्तुय	२६	सू० १३
निवृज्ज *			निवृत्तये	१८	१८
-निवृज्जन्ति	३	५		२६	सू० १, ३
निवृज्ज	११	२	निसत	१	८
निवेस *			निसग	२८	१६, १७
-निवेसइ	२७	५	निसगखइ	२८	१८
निवेसइत्ता	३२	१४	निसण	२३	१८
निवेसण	१३	१८, १९	निसन्त	२०	४

२१२

परिशिष्ट-२

निसम्म	१०	३७
	१६	सू० १ से ३
	१६	६७
निसामित्ता	६	७, ११, १३, १७, १९, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३७, ३९, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०
निसामिया	१७	१०
निसिर *		
-निसिरे	३२	२१
निसीअ (य) *		
-निसीएज्ज	१	२१, ३०
-निसीएज्जा	२	२०
-निसीयई	१७	१३
	२२	३५
निसीयण	२४	२४
निसीहिया	२	सू० ३
	२६	२, ५
निसूरण	१८	४२
निसेज्जा	१७	७, १६
	२३	१७
निसेवण	३२	३
निसेव *		
-निसेवए	८	१२
	१६	१

निसेवय	१०	१८, १६
निसेविय	२०	३
निसेवियच्च	३२	१०
निस्संकिथ	२८	३१
निस्संग	१६	८६
निस्संगत्त	२६	सू० ३१
निस्संस	३४	२२
निस्सल्ल	२६	४१, ४६
	३०	३
निस्सिय	८	१०
	३५	११
निस्सेयस	८	५
निस्सेस	८	३
	२२	१६
निहंतूण	२३	४१
निहय	१२	३२
निहिय	११	१५
निहिय (अ)	१६	४१
	२०	३८
	२२	४३
नी *		
-निन्ति	१४	१२
-नेइ	१३	२२
नीइकोविअ	२१	६

नीण *

-नीणेइ	१६	२२
नीय	१	३४
	३३	१४
	३६	१४८
नीयागोय	२६	सू० ११
नीयावत्ती	११	१०
नीयावित्ति	३४	२७
नीरञ	६	५८
	१८	५३
नीरस	१५	१३
नील	३४	४२
	३६	१६, २३, ७२
नीललेसा	३४	५, २४, ३५
नीलवंत	११	२८
नीला	३४	३, ११, ४६, ५०, ५६
नीलासोग	३४	५
नीसक	१६	४१
नीहर *		
-नीहरन्ति	१८	१५
नीहारि	३०	१३
नीहास	२२	२८
नु	४	१
नूणं	२	४०

नेञ *

-नेइ	२६	१६
नेआज्य	३	६
	४	५
	७	२५
	१०	३१
नेत्त	१२	२६
नेरइञ (य)	१०	१४
	२६	सू० ५
	३३	१२
	३४	४४
	३६	१५५ से १५७, १६७, १६८
नेह	१३	१५
	२६	सू० ४६
नेहपास	२३	४३
नो	१	११
नोकसाय	३३	१०
नोकसायज	३३	११

प

पइ (पति)	१४	३६
पइ (प्रति)	३०	१२
पइगिञ्ज	२१	३

२१४,

परिशिष्ट-३

पङ्क	२३	६५, ६८
पङ्कट्टिय	३६	५५, ५६, ६३
पङ्कणग	२८	२३
पङ्कण	३०	११
पङ्कणवाइ	११	६
पङ्कणि	६	६
पङ्कन्न	२०	५३
पङ्कन्ता	२३	३३
पङ्करिक्क	२	२३
	३५	६
पङ्क	२३	२, ६
	३४	७
पङ्कज *		
-पङ्कजन्ति	८	१३
	३६	२६४
-पङ्कजेज्ज	२४	१३
पङ्कजमाण	२०	४५
पङ्कमगुम्म	१३	१
पङ्कर	८	१
	३२	११
पङ्कस्स *		
-पङ्कस्सइ	१५	११
-पङ्कस्से	४	११
पङ्कस	३३	१६
	३६	५, ६, १०

पङ्कसग्ग	२६	सू० २३
	३३	१६, १७, २४
पङ्कोग	२६	सू० ३६
	३२	३१, ४४, ५७,
		७०, ८३, ९६
पङ्कोगयण	२३	३२
	३२	१०५
पङ्कओस	८	२
	३२	२६, ३३, ३६,
		४६, ५२, ५६,
		६५, ७२, ७८,
		८५, ९१, ९८
	३४	२३
पङ्कओस *		
-पङ्कओसए	२	११, २६
पङ्कओसकाल	२६	१६
पङ्क	१	४८
	२	१७, ३६
पङ्कजल	१३	३०
पङ्ककामा	३६	१५७
पङ्क	१४	३०
पङ्क	१	४७
	११	३
	१२	४२
	१७	२०
	१६	१०, ४३, ८८

पंच	२१	१२	पंचिदियकाय	१०	१३
	२२	२४	पंचिन्दियत्त	१०	१८
	२३	३६, ८७	पंचिन्दियया	१०	१७
	२६	सू० ७३	पजर	१४	४१
पंचम	२३	१७		२२	१४, १६
	२६	३	पंजलि	२०	७
	३०	११		२५	१३
	३३	५	पंजलिउड	१	४१
	३६	१६४		२६	६
पंचविह	१६	१०	पंजलीउड	१	२२
	२८	४, ५		२५	१७
	२९	सू० ७२	पंडग	१६	सू० ३
	३३	४, १५	पंडिय	१	६, ३७
	३६	२०५		४	६
पंचसिक्खिय	२३	१२, २३		५	३, १७
पंचहा	२४	८		६	२
	३०	१४, ३४		७	१६, ३०
	३६	१५, १६, २१,		८	६२
		८५, ११७,		१६	६६
		१७२, २०८,		२२	४६
		२१६		२४	२७
पंचाल	१३	१३, २६, ३४		३०	३७
	१८	४५		३१	२१
पंचिदिय	६	३६	पंडियमाणि	६	१०
	३६	१२६, १५५,	पंडु	३६	७२
		१७०	पंडुय	१०	१

२१६

पंडुर	३५	४	पक्कम *		
	३६	६१	-पक्कमई	३	१३
पंडुरय	१०	२१ से २६		१६	८२
पंत	८	१२	-पक्कमंति	२७	१४
	१२	४		२८	३६
	१५	४	पक्ख	५	२३,
पंतकुल	१५	१३		२६	१४, १५
पंथ	२	५		२७	१४
पंसु	१२	६, ७	पक्खओ	१	१८
पक्कप	३१	१८	पक्खन्द *		
पकर *			-पक्खन्द	१२	२७
-पकरेंति	१	१३	पक्खपिड	१	१६
-पकरेइ	२६	सू० २३	पक्खि	४	६
	३२	१०८		६	१५
-पगरेह	१२	३६		१३	३१
पक्किण	१२	१३		१४	३०
पक्कित्तिय	३६	१६, १८, १९,		१६	५८, ७६
		२१, ८५, ६४,		२०	३
		६६, ११७,		३२	१०
		१२६, १२७,		३६	१८८
		१३६, १४५	पक्खिणी	१४	४१
पकुळ्व *			पगड	१३	८, ६
-पकुळ्वइ	११	७	पगळभ *		
	२७	११	-पगळभई	५	७
पक्क	१६	४६, ५७	पगर *		
	३४	१३	-पगरेह	१२	३६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२१७

पगाढ	५	१२
	१६	७२
पगाम	१४	१३, १६, ३१
	३२	१०
पगामभोइ	३२	११
पगामसो	१७	३
पगार	३२	१०६
पगास	२०	४२
पगासण	३२	२
पगिज्झ *		
-पगिज्झेज्जा	८	१६
पगिज्झ	१४	५०
पचवंग	१६	४
पचवक्खाण	२६	२६
	२६	सू० १, १४, ३४
		से ४२
पचवणुहव *		
-पचवणुहोइ	१३	२३
पचवमाण	३२	२०
पचवय	२३	३२
पचववाय	१०	३
पच्युप्पन्न	७	६
पच्छा	२	४१
	४	७, ६
	५	१३
	१०	३३

पच्छा	१४	२६, ३१
	१७	१ -
	१६	११, १३, ४३
	२२	३४, ३८
	२६	सू० २६, ३३, ४२,
		५६, ६२, ७२
	३२	३१, ४४, ५७,
		७०, ८३, ६६
पच्छाणुताव	२०	४८
	२६	सू० ७
	३२	१०४
पच्छाणुतावण	१०	३३
पच्छायइत्ता	१२	८
पच्छिम	२३	२६, ८७
पजह *		
-पजहामि	१२	४६
	१४	३२
-पजहे	१५	६
पजुंज *		
-पजुंजई	६	३०
पज्जअ	३५	१६
पज्जत्ता	३६	७०, ७१, ८४,
		८५, ६२, ६३,
		१०८, १०६,
		११७, ११८,
		१२७, १३६,
		१४५

२१८

परिशिष्ट-२

पञ्जलण	१४	१०
पञ्जलिअ	११	२६
पञ्जव	२८	५, ६, १३
	२६	सू० ८, ५७ से
		५६
	३०	१४
पञ्जवचरअ	३०	२४
पञ्जुवट्टिअ	६	६१
	१८	४६
पट्टण-	३०	१६
पट्टिस	१६	५५
पट्ट	५	१
पट्टिय	२३	६१, ६३
	२७	४
पड '		
-पडइ	२७	५, ६
-पडति	१८	२५
पड	१६	८७
पडत	१४	२१
	१६	६०
पडिकूल	१२	१६
पडिकूल *		
-पडिकूलेड	२७	११
पडिकम्म *		
-पडिकम्मामि	१८	३१
-पडिकम्ममे	१	३१

पडिक्कम	१६	७६
पडिक्कमण	२६	सू० १, १२
पडिक्कमिता	२६	३७
पडिक्कमित्तु	२६	४१, ४५, ४६
पडिगाह *		
-पडिगाहेज्ज	१	३४
पडिग्घाअ	६	५४
पडिचोय *		
-पडिचोएइ	१७	१६
पडिच्छ *		
-पडिच्छई	१२	३५
	२६	२६
पडिच्छन्न	१	३५
पडिठप्प	१४	६
पडिणीय	१	३, ४, १७
पडितप्प *		
-पडितप्पड	१७	५
पडिथद्ध	१२	५
पडिनियत्त *		
-पडिनियत्तड	१४	२४, २५
पडिपुच्छ *		
-पडिपुच्छई	२०	७
पडिपुच्छणया	२६	सू० १, २१
पडिपुच्छणा	२६	२, ५
पडिपुण्ण	८	१६
	६	४६

पडिपुण्ण	११	२५, २६, ३०
	२६	सू० ७२
	३२	१
पडिप्पह	२७	६
पडिदुद्धजीवि	४	६
पडिमंत *		
-पडिमतेड	१८	६
पडिमा	२	४३
	३१	६, ११
पडियर *		
-पडियरसी	१८	२१
पडिय	२६	सू० ६०
पडिरुव	१	३२
	२३	१६
पडिरुवंतु	२३	१५
पडिरुवया	२६	सू० १, ४३
पडिलभ *		
-पडिलभे	१	७
पडिलेह		
-पडिलेहड	१७	१४
-पडिलेहए	२६	२२, २३, ३५,
		३७, ४५
-पडिलेहे	२६	२४
-पडिलेहेड	१७	६, १०
-पडिलेहिज्ज	२६	३८
पडिलेहणया	२६	सू० १, १६

पडिलेहणा	१७	६
	२६	२६, ३०
पडिलेहा	२६	१६, २८
पडिलेहिता	२४	१४
	२६	८, २०, २३
पडिलेहिताण	२६	२१
पडिलेहिया	२६	४४
पडिवज्ज *		
-पडिवज्जइ	२३	८७
	२६	सू० ७
-पडिवज्जई	२३	५६
-पडिवज्जए	३	१०
-पडिवज्जति	३	८
-पडिवज्जामि	२६	५०
-पडिवज्जयामो	१४	२८
पडिवज्ज	२१	२०
पडिवज्जअ	२	४३
पडिवज्जमाण	२६	सू० १७
पडिवज्जियन्व	३२	६
पडिवज्जिया	३	२०
	५	१५
	७	२८
	२१	१२
पडिवत्ति	२३	१६
	२६	सू० ५

२२०

परिशिष्ट-२

पडिवन्न २६ सू० ३,५ से ८,
सू० ३२,३७,४२,
सू० ६२

पडिसंजल *

-पडिसंजले २ २४

पडिसंविक्ख *

पडिसंविक्खे २ ३१

पडिसंघ *

-पडिसंघए २७ १

पडिसंलीण ११ १३

पडिसिद्ध २५ ६

पडिसेव *

-पडिसेवन्ति २ ३८

पडिसेवि ३६ २६६

पडिसेह *

-पडिसेहए २५ ६

पडिसेहिय १५ ११

पडिसोअ १६ ३६

पडिसोत्त १४ ३३

पडिस्सुअ २६ ६

पडिस्सुण *

-पडिस्सुणे १ १८, २१, २७

पडिहय ३६ ५५, ५६

पडुच्च ३६ १२, ७६, ८७,

१०१, ११२,

१२१, १३१,

पडुच्च

३६ १४०, १५०,
१५६, १७४,
१८३, १६०,
१६६, २१८

पडुप्पन्न

२६ सू० १३

पढम ५ ४

२० १६

२४ १२

२६ २, १२, १८,

२८ २८

३४ ५८

३६ १६०, २३४,

२५२

पणग ३६ १०३, १०४

पणगमट्टिया ३६ ७२

पणट्ट ४ ५

पणयाल ३६ ५८

पणवीस ३१ १७

३६ २३६

पणाम *

-पणामए १६ ७६

२२ २०

पणिहाणव १६ ८, १४

पणिहि २३ ११

पणीय १६ सू० ६

पणीय	१६	७, १२
	३०	२६
पणुवीसइ	३६	२३७
पणोल्ल	१	
-पणोल्लयामो	१२	४०
पण	१	२८
पत्त	५	१५
	७	३
	१२	४७
	१८	३८, ४०, ४२,
		४३, ४७
	१६	५६, ६१, ६५
	२०	४८
	२१	१७
	२२	४८
	२५	२, ४३
	२६	सू० ७४
पत्त (पात्र)	६	१५
पत्त (पत्र)	६	६
	३६	५६
पत्तअ (प्राप्तक)	२६	सू० ४५
पत्तअ (पत्रक)	१०	१
पत्तहारग	३६	१३७
पत्तिअ	१	४१
पत्तियाइत्ता	२६	सू० १
पत्तो	१२	२४
	१४	३

पत्तेग	३६	६३, ६५
पत्तेगसररीर	३६	६४
पत्थ *		
-पत्थए	२	६
	३५	४, १३, १८
-पत्थेइ	२६	सू० ३४
-पत्थेसि	६	४२, ५१
पत्थ	१४	४८
पत्थिअ	२१	३
पत्थिब	६	३२, ५१
	१८	११
	२०	१६, १६
पत्थेमाण	६	५३
पट्टु	३२	३३, ४६, ५६,
		७२, ८५, ६८
पट्टोस	१२	३२
पवावत	२३	५६
पन्न	१५	२, १५
पन्नत्त	८	८
	१६	सू० १ से १२
	२८	२, ७
	२६	सू० ११
पन्नरम	११	१०
	३६	१६७
पन्नव	२	३६
	२४	१०

२१२

परिशिष्ट-२

पन्मवय, -	७	१३	पभा	५	२७
पन्तविभ	२६	सू० ७४		२२	७
पन्ना	२	सू० ३		२३	१८
	२	३२		३४	५, ६
	२३	२५, २८, ३४,	पभाय	२०	३४
		३६, ४४, ४६,	पभाव	१६	६७
		५४, ५६, ६४,		२६	सू० २४
		६६, ७४, ७६,		३२	१०४
		८५	पभाव *		
पप्य	३६	६, ७६, ८७,	-पभावेड	२६	सू० २४
		११२, १२१,	पभावग	२६	सू० ७२
		१३१, १४०,	पभावणा	२८	३१
		१५०, १५६,	पभास *		
		१७४, १८३,	-पभासई	१८	२३
		१६०, १६६,	-पभाससे	१२	१६
		२१८	पभीय	५	११
पप्य *			पभु	१६	३४
पप्पेति	१४	१४	पभूय	१२	१०, ३५
पप्फोड				१३	११, १३
-पप्फोडे	२६	२४		१४	१६, ३१
पप्फोडणा	२६	२६		२०	२, १८
पवन्ध	११	७, ११	पमज्ज *		
पवभट्ट	८	१४	-पमज्जेज्ज	२४	१४
पभंकर	२३	७६	-पमज्जेज्जा	२६	२४
पमव	३२	६, ७, १६,	पमत्त	४	१, ५, ६
		१०३, १११		६	१६

पमत्त	१४	१४	पय *		
	१७	८ से १०	-पए	२	२
	२६	३०	-पये	३५	१०
	३४	२३	पय (पयस)	११	१५
पमाण	२६	२७	पयल	१	२७
	२८	२४	पयंग	३	४
पमाय *				१२	२७
-पमायए	४	१		३२	२४
	१०	१ से ३६		३६	१४६
पमाय	१०	१५	पयंगवीहिया	३०	१६
	११	३	पयट्टिय	४	२
	१४	१५	पयडि	३३	६
	२०	३६	पयण	१२	६
	२६	२७		३५	१०
पमाट्टाण	३२		पयणु	३४	२६
पमुहर	१७	११	पयणुय	३४	२६
पमोक्ख	२५	१३	पयणुवाड	३४	३०
	३२	१, १११	पयर	३०	१०
पमोय *			पयलपयला	३३	५
•पमोयति	१४	४२	पयला	३३	५
पम्हलेसा	३४	८, ३०, ३८	पयह *		
पम्हा	३४	३, १४, ५४, ५५, ५७	-पयहति	१४	३४
			-पयहेज्ज	४	१२
पय (पद)	१	२६	पयहित्तु	१८	४६
	४	७	पया	३	२
	२६	२८		४	३
	२८	२२		१३	३२

२२४

परिशिष्ट-२

पया *	पग	२६	३५
-पयाड	१३	२४	१६
पयार	३२	१०४	मू० ३४,६१
पयाव *			२६,४२,५५,
-पयावए	२	२	६८,८१,६४
	३५	१०	४७,५१,५८,
	३५	११	५६
-पायए	३५	१०	३६
पयावण	३५	१०	२६३
पयाहिणा	६	५६	३४
	२०	७,५६	१४
पर	१	१६,२५	६
	२	१०,२०,२४,	३४,४७,६०,
		३०,४४	७३,८६,९६
	४	४,१३	३३,४६,५६,
	५	५,६	७२,८५,९८
११	३२		३४
१२	६,३१		६
१३	२१,२४		२१
१५	११,१२		१७
१८	१७,२७,२६		५१
१९	१६,२१		१८
२०	३५,४६		१३
२१	१०		१५
२४	१७		५
२५	८,१२,१५,		२०
	३३,३७		१७
		परभ	२६
		परंदम	७
		परंपर	३२
		परंपग	३२
		परक्कड	१
		परक्कम	६
		परगेह	१७
		परज्ज	४
		परत्थ	१
		परपासंड	१७
		पग्म	२

परम	३	१, ६, १२	परिकंख *		
	६	३४	-परिकंखए	७	२
	१८	१५	परिकिण्ण	११	१८
	१६	७१	परिकित्तिय	३०	३६
	२०	५, २०, २१,		३६	१४६, २१७
		५८	परिक्वीण	७	१०
	२६	सू० ३६	परिगय	२	२
	३५	७	परिगिज्झ	१	४३
परमंत	१८	३१	परिक्खेवि	११	८, १२
परमट्टपअ	२१	२१	परिगिण्ह *		
परमत्थ	२८	२८	-परिगिण्हइ	२७	१६
परमाणु	३६	१०, ११	परिगह	२	१६
परमाहम्मिअ	३१	१२		७	६
परलोग(य)	५	११		१२	६, १४, ४१
	१६	६२		१३	३३
	२२	१६		१४	४१
	२६	सू० ५१		१६	२६
	३४	६०		३०	२
परसमय	२६	सू० ६०		३२	२८ से ३०,
पराइय	२२	३६			४१ से ४३,
	३२	१२			५४ से ५६,
पराजिअ	६	५६			६७ से ६९,
	१३	१			८० से ८२,
परायण	७	६			८३ से ८५,
	१४	५१			
परिड *			परिगहि	३२	१०१, १०२
-परियंति	२७	१३	परिचज्ज	१७	१८

२२६-

परिशिष्ट-२

परिचवज्ज	१८	१२, ४८	परितप्प *		
	३५	२	-परितप्पई	५	११, १३
परिचवत	१४	३८	परितप्पमाण	१४	१०, १४
	२२	२६	परित्तसंसारि	३६	२६०
परिचवय *			परिताव	२	३६
-परिचवयई	६	३	परिताव *		
परिच्चाअ (य)	१६	२६	-परितावेइ	३२	२७, ५३, ६६, ७६, ६२
	२६	सू० ३	-परियावेइ	३२	४०
परिच्चाइ	१७	१७	परिदाह	२	८
परिजुण्ण	२	१२	परिदेव *		
परिजूर *			-परिदेवए	२	८, १३, ३६
-परिजूरइ	१०	२१ से २६	परिधाव *		
परिणम *			-परिधावई	२३	५५, ५८
-परिणमे	३४	२२, २४, २६, २८, ३०	परिनिव्व *		
			-परिनिव्ववेइ	१२	२०
परिणय (अ)	३४	१३, २१, ५८ से ६०	परिनिव्वा *		
	३६	१६ से २१	-परिनिव्वाएइ	२६	सू० २६, ४२, ५६, सू० ६२, ७४
परिणाम	१६	१७	-परिनिव्वायंति	२६	सू० १
	२२	२१	परिनिव्वुअ	३६	२६८
	३४	२, २०, २२	परिनिव्वुड	५	२८
	३६	१५, १७		१०	३६
परिणिट्ठिय	२	३०		१४	५३
				१८	२४, ३५
परिणिव्वुअ *			परिन्नाय		
-परिणिव्वुए	३५	२१	(परिजांति)	२	१६

परिन्नाय			परियागय	५	२१
(परिज्ञाये)	४	७	परियायधम्म	२१	११
	१२	४१	परियाव	२	८
	१५	८, ६		२०	५०
परिमत्स *			परियावस *		
-परिमत्सई	३	६	-परियावसे	१८	५३
	७	२५	परिरञ्ज	३६	५८
परिभावय	१७	१०	परिरिक्खय	१८	१६
परिभास *			परिरिक्खयंत	१४	२०
-परिभासई	१८	२०	परिवज्ज *		
परिभुंज *			-परिवज्जए	१	१२
-परिभुंजामो	१३	६		१६	३, ७, १०,
परिभोगेसणा	२४	११			१४
परिभोय	२४	१२		१८	३३
परिमंडण	१६	६		३५	३, ६
परिमडल	३६	२१, ४२	-परिवज्जेज्ज	१८	३०
परिमिय	३६	२५४	-परिवज्जेज्जा	१६	६
परिमुञ्ज *			परिवज्जण	३०	२६
-परिमुञ्जए	६	२२	परिवज्जयत	२१	१३
परियट्टणया	२६	सू० १	परिवज्जित्तु	२४	१०
परियट्टणा	२६	सू० २२	परिवत्त *		
	३०	३४	-परिवत्तए	३३	१
परियट्टंत	१२०	३३	परिवाडी	१	३२
परियण	६	४	परिवारयंत	१३	१४
	२०	५८	परिवारिय	११	२५
	२२	३२		१४	२१ से २३

३२८

परिवारिय	१८	२	परिहार *	परिमिट-२
परिविस्त	२२	११	-परिहारे	१
परिवुड	१४	६	परिहारिय	१२
परिवूड	२०	११	परिहायंत	३६
परिव्वअ *	२२	२२, २३	परिहार-	५६
-परिव्वयग	७	२, ६	विमुद्धीय	२८
	२	१६	परिहिय	२२
	६	१२, १४, १५	परी *	६
-परिव्वएज्जा	१५	१, ८, ९, १३	-परियंति	२७
परिव्वयंत	२१	१५	परीसह	२
	२	सू० १ से ३		२
	१४	१४		१, ५, १४,
परिसंकमाग	४	७		१८, ४६
परिसप्प	३६	१७६, १८१		३२
परिसा	२२	२१		११, १७, १६,
	२३	८६		२२
	२५	१३		सू० ४७
परिसिच *			परीसहपविभत्ति २	१५
-परिसिचई	२०	२८	पटवणा	३६
-परिसिचएज्जा	२	६	पटविअ	२६
परिमुक्का	२	५	पळंडु	३६
परिमुज्ज *			पळंव	२६
-परिमुज्जई	२८	३५	पलाय *	२७
परिमुद्ध	२४	४	-पलायए	२७
परिसोसिय	१२	४	पलायण	१४
			पलाल	२३
				१७

पलास	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९६	पल्हायण	२६	सू० १८
पलिउंच *			पवंच	३६	६३
-पलिउंचन्ति	२७	१३	पवक्ख *		
पलिउच्चग	३४	२५	-पवक्खामि	२६	१
पलिओवम	३४	४२, ५२, ५३		३१	१
	३६	१८४, १८५, १९१, २००, २०१, २२० से २२३		३४	१
पलित्त	१६	२२, २३	पवज्ज *		
पलिमंथ *			-पवज्जई	१६	१८, २०
-पलिमंथए	६	२१	पवज्जा	३५	२
पलिय	३०	३५ से ३७, ४३, ४८ से ५०, ५२	पवड्ड *		
	३६	१६२	-पवड्डई	८	१७
पली *			पवत्त	३४	२१
-पलेइ	१४	३४	पवत्तण	२४	२६
-पलेति	१४	३६		३१	२, ३
पलोःभित्ता	८	१८	पवत्तमाण	२४	२१, २३, २५
पल्लघण	२४	२४	पवत्तिय	२०	१७
पल्ली	३०	१६	पवन्न	१४	२, २८
पल्लोय	३६	१२६		२३	१३, २४, ३०
पल्हत्थिया	१	१६	पवयण	२४	३
पल्हाय	१६	२		२८	२६
				२९	सू० २४
			पवयणमाया	२४	
				२४	१, २७
				२६	सू० १२
			पवर	११	१६, २०, २७ से २९
				१७	२०

२३०

पवह	११	२८
पवाइ	४	१३
पवाल	३६	७४
पविट्ठ	२	२६
	१३	३४
	१६	८३
पवितक्किय	२३	१४
पवित्त	१२	६
पविभत्ति	२	१
पवियक्खण	६	६२
	१६	६६
	२२	४६
पवेइय(अ)	२	सू० १ से ३
	२	१, ४६
	५	१७
	१३	१३
	२६	४, ७
	२६	सू० १
	२२	३६
पवेविय		
पवेस *		
-पवेसंति	७	१६
-पवेसे	२०	२०
पवेस	३६	२६७
पव्व	२	३
पव्वइउं	२२	२६
पव्वइत्ताण	२०	३६

पव्वेइय	१०	परिशिष्ट-२
	१३	२६
	१५	२
	१७	१०
	१८	१, ३
	२०	२०, ४७
	२२	८, ३४
पव्वग	३६	३२
पव्वज्जा	६	६५
	१३	६
	१८	१४
	२२	३६
पव्वय	६	२८
पव्वय *		४८
-पव्वइत्तामि	१६	
-पव्वण	१८	१०
	२०	३४, ४६
	२१	३२
-पव्वया	१६	१०
पव्वयंत	६	७५
	२५	५
पव्वाय *		२०
-पव्ववेसी	२२	३२
पसंतचित्त	३४	२६, ३१
पसंसा	१५	५
	१६	६०

पसंसिञ्ज	१४	३८
पसज्ज *		
-पसज्जसि	१८	११, १२
पसत्थ	१२	४४, ४७
	१४	६
	१६	६३
	७६	२८
	२६	सू० ५, ८, १३, सू० ४३
	३२	१३, १६, ११०
	३४	१७, १६, ६१
पसन्न	१	४६
	१२	४६
	१८	२०
पसमिक्ख	१४	११
पसर	३६	२६६
पसर *		
-पसरड	२८	२२
पसव *		
-पसवड	२१	४
पसाय *		
-पसायण-	१	१३, ४१
पसायपेहि	१	२०
पसारिय	१	१६
	१२	२६

पसाह *		
-पसाहि	१३	१३
पसाहिता	१८	४२
पसाहिय	२२	३०
पसिद्धि	२६	२६
पसिण	१८	३१
पसीञ्ज *		
-पसीयति	१	४६
-पसीयंतु	२३	८६
पसु	३	१७
	६	५
	६	४६
	१६	सू० ३
	२५	२८
	३०	२८
पमुत्त	२०	३३
पसूय	१४	२
	२३	५१
पस्त (दण्ड्वा)	६	१२
पस्त (पय्य)	७	२८, २६
पह	१०	३१, ३२
	२०	५१
पहण *		
-पहणे	१८	४८
पहय	१२	३६
पहसिय	२०	१०

२३२

पहा	२८	१२
पहा *		
-पहीयए	३२	१०७
पहाण	१६	६७
पहाणमगा	१४	३१
पहाणि	३	७
पहाणव	२१	२१
पहाय	४	२,१०
	१४	३५,३७,४०
	२१	१६
पहाव *		
-पहावई	२७	६
पहीण	५	२५
	१४	२६,३०
	२१	२१
	२८	३६
पहू	१६	२२
	३५	२०
पा *		
-पाहि	१६	५६
पाज	१८	८
	१६	४६
	२०	७
पाइय	१६	६८,७०
पाडं (पातुम्)	१७	२
	१६	३६

परिशिष्ट-२

पाडं (पीत्वा)	१६	८१
पाउकर *		
-पाउकरिस्सामि	१	१
	११	१
-पाउकरे	१८	३२
	३६	२६८
पाउण *		
-पाउणिज्जा	१६	सू० ३ से १२
पाउरण	१७	२
पागड	२६	सू० ४३
पागार	६	१८,२०
पाडिअ	१६	५४,५६
पाढव	३	१३
पाण (प्राण)	१	३५
	२	११
	६	६
	८	७ से ६
	१२	३६
	१७	६
	२२	१४,१६
	२४	१८
	२५	२२
	२६	२५
	२६	सू० १८,४३
	३५	१२

पाण (पान)	२	३
	६	१४
	१२	११, १६, ३५
	१५	११, १२
	१६	सू० ६, १०
	१६	७, १२
	१६	७६, ८०
	२०	२६
	२५	१०
	२६	३१
	२७	१४
	३०	२६
	३५	१०, ११
पाणय	३६	२११, २३१
पाणवत्तिया	२६	३२
पाणवह	३०	२
पाणाइत्राय	१६	२५
पाणि (पाणि)	२	२६
	२६	२५
पाणि (प्राणिन्)	३	५, ६
	६	६
	७	२०
	१०	४
	२२	१७, १८
	२३	६५, ६८, ७५,
		७६, ७८, ८०
	२६	३४

पाणिय	१०	२८
	१६	८१
पाय (पाद)	१	१६
	६	६०
	१२	२६, ३३
	१७	१४
	१६	४६
पाय (पात्र)	६	७
पाय (प्रायस्)	३२	१०
पायं	१२	३६
पायकंबल	१७	७, ६
पायच्छित्त	२६	सू० १, १३, १७
	३०	३०, ३१
पायत्ताणिय	१८	२
पायव	१६	५२
पार	१०	३४
	२३	७०, ७१
	३६	६७
पारख	२०	४१
पारण	१८	२२
	२३	२, ६
	२५	७, ३६
पारण	२५	५
पारणअ	१२	३५
पारित्ता	२६	५०
पारिय	२६	४०, ४२, ४८,
		५१

पारेवय	३४	६	पावकारि	४	३
पालइत्ता	१३	३५		१८	२५
	२६	सू० १, ७३	पावग (पापक)	१	१२
पालिअ	२१	१, ४		२	२३, ४२
पालिया	१	४७		६	८
पालियाणं	२०	५२		११	८
पालो (दि०)	१८	२८		१३	२४
पाव	४	२		२१	६
	६	१०		२५	२१
	११	८, १२		३०	१
	१२	३६, ४०	पावग (य)	८	६
	१४	२०		१३	२५
	१६	५३, ५५, ५७	पावदिट्ठि	१	३८, ३९
	२०	४७		२	२२
	२१	२४	पावयण	२१	२
	२५	२८	पावसमण	१७	३ से १६
	२८	१४, १७	पावसमणिज्ज	१७	
	२६	सू० १७, ३३, ५६	पावसुयपसंग	३१	१६
	३०	६	पाविय	८	७
	३१	३		१३	१६
	३२	५		१६	५७
पाव *			पास *		
-पावइ	३२	२४, ३७, ५०, ६३, ७६, ८६	-पास	४	२
			-पासई	१८	६
-पावैसु	२२	२५		१६	५
पावअ	३	१२		२०	४
				२१	८

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२३५

-पासए	३२	१०६
-पाते	६	४
पास (पाग)	४	७
	६	२
	१६	५२, ६३
	२३	४० से ४२
पास(पार्श्व)	१४	४७
	२०	३०
	२३	१, १२, २३,
		२६
	२७	५
पास (पक्ष्यत्)	१८	५
पासण्ड	२३	१६
पासण्डि	२३	६३
पासमाण	८	४
पासवण	२४	१५
	२६	३८
पासाअ(य)	६	७, २४
	१६	४
	२१	७, ८
पासिऊण	१२	४
	२१	६
पासित्ता	१८	६
	२०	५
पासित्तु	१२	२५

पासिया	१२	२०, ३०
	२२	३४
पासेत्ता	२२	१५
पाहेअ	१६	२०
पिउ	१२	२२
	१६	२, ८४
पिड	१	३४
	२	३०
	६	१४
	१५	१३
पिडवाय	६	१६
	३५	१६
पिडोगाह	३१	६
पिडोलय (दि०)	५	२२
पिच्छ	३४	५
पिज्ज	४	१३
पिट्ठओ	१	१८
	२	१५
पिट्ठि	१२	२६
पिय (त्रिय)	१	१४
	६	१५
	१४	५
	१६	६६, ७०
	२१	१५
	३४	२८

२३६

परिशिष्ट-२

प्रिय (पितृ)	६	३	पिहे *		
	१३	२२	-पिहेइ	२६	सू० १२
	२०	१८, २४	पीड *		
	२१	७	-पीडई	२०	२१
पुंकर	११	१४	पीडिअ	१६	१८, १६
पियवाइ	११	१४	पीड	१७	७
पियदंसण	२१	६	पीणिअ	७	२
पियधम्म	३४	२८	पीय	२०	४४
पियर	१८	१५	पीयअ	३६	२५
	१६	६, २४, ४४,	पील *		
		७५, ७६, ८६	-पीलेइ	३२	२७, ४०, ५३, ६६, ७६, ६२
	२१	१०	पीला	२२	३७
पियायण	६	६	पोलिग्र	१६	५३
पिव	१६	६७	पोह *		
पिवासा	२	सू० ३	-पोहए	२	३८
	२	४	-पीहेइ	२६	सू० ३४
पिबीलि	३६	१३७	पुंगव	२२	१३
पिबीलिया	३	४	पुगल	२८	७, ८, १२
पिसाय	१२	६, ७		३६	२०
	३६	२०७	पुच्छ	२७	४
पिसुण	५	६	पुच्छ *		
पिस्समाण	३४	१७	-पुच्छ	२३	२२
पिहिय	१६	६३	-पुच्छई	१६	७६
	२६	सू० १२		२५	१३
पिहुंड	२१	२, ३	-पुच्छसी	१८	३२

पुच्छामि	२३	२१	पुण	१	१२, ४१
पुच्छेज्जा	१	२२		३	६
	२६	६		५	६
पुच्छणा	३०	३४		१०	१६, १६, २६,
पुच्छमाण	१	२३			३४
पुच्छिअ	२५	१५		१३	२
पुच्छिऊग	२०	५७		१४	२८
पुज्ज	१	४६		१५	६
	५	२६		१८	३१
पुज्जसत्थ	१	४७		१६	७५
पुट्ट (पुट्ट)	१	१४, २५		२०	३१
	२	४०		२६	१२, २४, ३२
पुट्ट (स्पुट्ट)	२	सू० १ से ३		२६	सू० १२
	२	४, १०, ३२,		३६	११७, २५७,
		४६			२५६
	५	११	पुणो	६	५६
	२६	सू० ७२		२६	सू० २, ५६
पुट्ट (पुट्ट)	७	२		३२	३३, ४६, ५६,
पुढविककाय	१०	५			७२, ८५, ६८
पुढवी	६	४६		३६	७०, ८४, ६२,
	२६	३०			१०८
	३५	११	पुण्ण (पूर्ण)	११	३१
	३६	५७, ६०, ६६,		१२	१३
		७०, ७३, ७७,		२०	२८
		८० से ८२	पुण्ण (पुण्य)	१२	१२
पुढो	३	२		१३	१०, ११, २०,
					२१

२३८

परिशिष्ट-२

पुण्य (पुण्य)	१८	७
	२१	२४
	२८	१४, १७
पुण्यपय	१८	३४
पुण्यमासी	११	२५
पुत्त	१	३६
	६	३
	६	२, १५
	१३	२५
	१४	५, ६, १२, २६, ३०, ३६
	१८	१५, ३७, ४६
	१६	२, १६, २४, ३४, ३५, ३८, ७५, ८४, ८५, ८७, ८७
	२०	२५
	२२	२, ४
पुत्तय	१४	५
पुष्क	६	६
	१२	३६
	३४	६
पुम्त	१४	३
पुमित्यवेय	३२	१०२
पुर	६	४
	१४	१
	२०	१४, १८

पुरओ	१	१८
पुरंदर	११	२३
	२२	४१
पुरत्यओ	३२	३१, ४४, ५७, ७०, ८३, ८६
पुरा	१३	६
	१४	२०
	१६	६, १३
पुराकअ(य)	१४	२
	१६	८
पुराकां	७	२४
पुराण	८	१२
	१४	१
	२०	१८
पुरिम	२३	२६, २७, ८७
	२६	२५
पुरिमताल	१३	२
पुरिस	६	१
	८	६, १८
	१३	३१
	१४	१४, ३८
	३०	२२
	३६	५१
पुरिससिद्ध	३६	४६
पुरिसोत्तम	२२	४६
पुरी	२२	२७
	२५	२, ४

पुरे	१४	१	पुञ्चय	१	४८
पुरेकड	१०	३	पुञ्चसयव	६	४
	१३	१६	पुञ्चि	१२	३२
	२१	१८		१४	४२
पुरोहित्य(अ)	१४	३,५,११,	पुञ्चिल्ल	२६	८,२१
		३७,५३	पुहत्त	२८	१३
पुल्य	३६	७६		३६	११,१७६,
पुलाग	८	१२			१८५,१६२,
पुव्व	१	४६			२०१
	२	४०	पुहुत्त	३६	६५
	३	१५,१६	पूड	७	२६
	४	८,६	पूडअ	१	४८
	६	१३		१२	४०,४५
	८	२		१७	२१
	१३	१५		२३	१
	१६	सू० ८	पूडकणी	१	४
	१८	६,४८ मे	पूयण	३५	१८
		५१,६०	पूया	१५	५,६
	२५	४३		२१	१५,२०
	२६	२४		२६	७
	२८	१८,३६	पून्	३५	६
	२८	सू० ६,३३,३८,	पेज्ज	४	३
		६३ मे ७१		६	५८
	३८	४६		१८	१६
	३९	१७५,१७६,	पेज्जा	१७	३
		१८५,१८७,	पेज्ज	२६	सू० १,७२
		२०१			

२४०

परिशिष्ट-२

पेडा	३०	१६
पेस	१६	२६
पेसल	८	१६
पेसिय	२७	१३
पेह *		
-पेहे	२४	७
-पेहेज्ज	२	२७
पेहा	६	४
पेहाए	१	२७
पेहिय	१६	४
	३२	१४
पोक्खरिणि	३२	३४, ४७, ६०, ७३, ८६, ९९
पोत्तिया	३६	१४६
पोत्था	२०	१६
पोम	२५	२६
पोय	१४	३०
	२१	२
पोराणिया	६	१
	१६	८
पोरिसी	२६	१२, १३, १८, २२, ३१, ३६, ३७, ४३ से ४५
	३०	२१
पोरुस	३	१७
	६	५

पोरुसी	३०	२०
पोल्ल (दे०)	२०	४२
पोस *		
-पोसेज्ज	७	१
पोम	२६	१३, १५
पोसह	५	२३
	६	४२
पोसिय	२७	१४

फ

फंद *		
-फन्दन्ति	१४	४५
फग्गुण	२६	१५
फग्ग	२२	३०
फरसु	१६	६६
फरिस	२६	सू० ४६
फरुस	१	२७, २६
	२	२५
फल	२	४०, ४१
	६	६
	१२	१८
	१३	३, ८, १०, ११, २०, २६, ३१
	१५	१०
	१६	११, १७

उत्तरजभयण शब्द-सूची

२४१

फल	२३	४८	फासओ	३६	६१, १०५,
	२६	सू० ११, १७			११६, १२५,
	३२	१०, २०			१३५, १४४,
फल *					१४५, १६६,
-फलेइ	२३	४५			१७८, १८७,
फलग	१७	७			१६४, २०३,
फलिह	३६	७५			२४७
फालिअ	१६	५४, ६२, ६४,	फासिदिय	२६	सू० १, ६७
		६६	फासय	१०	२०
फास	४	११, १२	फासुय	१	३४
	१०	२५		२३	४, ८, १७
	१६	सू० १२		२५	३
	१६	१०		३५	७
	२१	१८	फिट्ट *		
	२८	१२	-फिट्टई	२०	३०
	२६	सू० ६७	फुड	१६	४४
	३२	७४ से ८६	फुस *		
	३४	२, १८, १६	-फुसई	२	६
	३६	२०	-फुसति	४	११
फास *				१०	२७
-फासए	५	२३		२१	१८
-फासयई	२०	३६	फुस	२२	१२
-फाये	६२	४७	फुसंत	१२	३६
-फायेज्ज	२१	२२	फेण	१६	१३
फासइत्ता	२६	सू० १	फोक्कनास		
फासओ	३६	१५, १६, २२	(दि०)	१२	६
		से ४६, ८३,			

उत्तरज्जमरण शब्द-सूची

२४३

वम्भचेर-

समाहिद्वाण १६

वम्भण २५ १६, २६ से
३१

वम्भदत्त १३ १, ४, ३४

वम्भयारि १२ ६, २२
१६ सू० १ से १३

१६ १६

२१ १३

३२ ११, १३

वम्भलोग(अ) १८ २६
३६ २१०, २२६

वम्भवय(अ) १६ ३३
३२ १५

वल ३ १८
६ ४
१० २१ से २६

११ २१

१८ १

२१ १४

वलभद् १६ १

वलव ११ १८

२५ २८

वलसिरी १६ २

वला १६ ५८

वलागा ३२ ६

वहि

वहिया

वहु

१४

६

१२

२५

३

४

६

७

८

९

१०

१२

१४

१७

२०

२१

२२

२८

२५

२६

२६

३१

३३

४, १७

१३

३८

३

६, ६, १०,

१५

१२

२

८

१५

६, १६

३, १६

१६

७, १०, १३

११

३८

१७

१७ से १६,

२७, ३२

१६, ४०, ६०,

७५

२४

५२

सू० १, ५, २३

१

७, १३

बहु	३५	१२	वायर	३६	१००, १०८,
	३६	२५०, २६१			१०९, १११,
बहुमअ	१०	३१			११७, ११८,
बहुमाण	१३	४			१२०
	२६	सू० ५	वायरकाय	३६	७४
बहुय	१	१०	वारगा	२२	२२, २७
	१६	६५	वारस	३६	५७, १३२,
बहुल	१०	१५			२५१
	१६	सू० १ से ३	वारसंगविज	२३	७
	२६	१५	वारसहा	३६	२१०
	२६	सू० ४०	बाल	१	३७
बहुविह	१६	८६		२	२४
बहुसो	६	१		५	३, ४, ७, ९,
	१६	६३			१२, १५ से
	३४	५६, ५७			१७
	३६	२६१		६	१०
बहुस्सुअ(य)	५	२६		७	४, ५, १०,
	११	१५ से ३०			१७, १९, २८
	२२	३२		८	५, ७
				९	४४
बहुस्सुअपुज	११			१२	५, ३१
बहुहा	१४	१०		१३	१७
बाढ	१२	३५		१७	४
बायर	३५	६		३२	३, १७, २६,
	३६	७०, ७१, ७२,			२७, ३९, ४०,
		८४ से ८६,			५२, ५३, ६५,
		९२, ९३,			६६, ७२, ७९,
					९१, ९२

उत्तरजर्मण शब्द-सूची

बालगवी	२७	५
बालगपोइया	६	२४
बालत्त	७	२८
बालभाव	७	३०
बालमरण	३६	२६१
बाला	२०	२६
बावत्तरि	२१	६
बावोस	२	सू० १ से ३
	३१	१५
	३६	८०, १६५,
		१६६, २३३,
		२३४
बाह *		
-बाहइ	३२	११०
बाहल्ल	३६	५६
बाहा	१६	३६
	२२	३५
बाहिर	२८	२१, ३४
	३०	७
बाहिरअ	१६	८८
बाहिरग	३०	२६
बाहिरिय	१२	३८
बाहु	१२	२६
बिइज्जिय	३०	६
बिइय	१०	३०
	२६	२, २४

विइय	२६	सू० ७२
	३६	२३५
विन्दु	१०	२
	२८	२२
विराल	३२	१३
विल	२४	१८
	३२	५०
वीअ	२४	१२
	२६	१२, १६, १८,
		४३
	२८	३२
वीय	१	३५
	१२	१२
	१७	६
	२४	१८
	३२	७
वीयरुइ	२८	१६, २२
वुज्ज *		
-वुज्जइ	२६	सू० २६, ४२, ५६,
		सू० ६२, ७४
-वुज्जन्ति	२६	सू० १
-वुज्जामो	१४	४३
वुज्जिया	३	१६
वुद्ध	१	८, १७, २७,
		२६, ४०, ४२
	६	३

बुद्ध	१०	३६, ३७	अव्ववी	६	३७, ३६, ४१, ४३, ४५, ४७, ५०
	११	१३		१२	५
	१४	५१		१३	४
	१८	२१, २४, ३२		१६	६
	२३	३, ७		२०	३१
	२५	३२		२१	६
	३५	१		२२	१५
बुद्धपुत्त	३६	२६८		२३	२१, २२, २५, ३१, ३७, ४२, ४७, ५२, ५७, ६२, ६७, ७२, ७७, ८२
बुद्धि	१	७		२५	१०
	८	५		१६	सू० ३ से १२
	१३	३३		२२	८
	३२	४		२	४५
बुव्वुय	१६	१३	-आह	२०	३१
बुव्वन्त	२३	२१, २२, २५, ३१, ३६, ४२, ४७, ५१, ५७, ६२, ६७, ७२, ७७, ८२	-आहंसु	१२	२५
बुवाण	२३	३१		२१	१४
बुह	३०	३५	-आहु	१६	२४, ४४, ७५
	३३	२५		२५	१६ से २७, ३२
बू #			-वित	२५	१४
-अव्ववी	६	६, ८, ११, १३, २७, १६, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३,	-बूम	३४	१६
			-बूहि		
			बूर		

वेदन्दि	३६	१२६, १२७,
-		१३०, १३२ से
		१३४
वेदन्दिक्काय	१०	१०
बोन्दि (दि०)	३५	२०
	३६	५५, ५६
बोद्धव	३६	१०, ७१, ७६,
		६५, ६६,
		१०६, ११०,
		१३८, १७१,
		१८८, २०६
बोहि	३	१६
	८	१५
	३६	२५७ से २५६
बोहिलाभ	१७	१
	२६	सू० १५
२८		
भइय	३६	२२ से ४६
भइणी	२०	२७
भइत्ता	१५	४
भइयव्व	२८	२६
	३६	११
भंज *		
-भंजई	२७	४
-भंजए	२७	७

भड	१६	२२
	३६	२६७
भंडग(य)	२४	१३
	२६	८, २१, ५३
भंडवाल	२२	४५
भंत	६	५८
	१२	३०
	१७	२
	२०	१५
	२३	२२
	२६	६
	२६	सू० १ से ७२
भंस *		
-भसेज्जा	१६	सू० ३ से १२
भक्ख	१	३२
	६	१४
भक्खण	२३	४६
	३६	२६७
भक्खर	२३	७८
भक्खियव्व	२२	१५
भक्खी	२३	४५
भगव	२	सू० १ से ३
	६	१७
	१६	सू० १
	१८	८ से १०,
		१६

भगव	२१	१,१०
	२२	४,२२
	२३	५,६
	२६	सू० १,७४
भगवंत	१६	सू० १ से ३
भग्ग	५	१४,१५
	१६	६१
	२२	३४,३६
भज्ज *		
-भज्जई	२७	३
-भज्जंति	२७	८
भज्जा	६	३
	१३	२५
	२१	७
	२२	२,४,६
भट्ठ	२०	४१
भण *		
-भण	२५	१२
-भणइ	२२	१७,२५,३१
भणंत	६	६
भणिय	३०	२६
	३६	६०
भत्त	१	३३
	१२	२७,३५
	१६	७,१२
	१६	७६,८०,८५

भत्त	२६	३१
	२७	१४
	२६	सू० १,४१
	३५	१०,११
भत्ति	२०	५८
	२६	सू० ५
भद्द	१	३७
	६	१६
	२२	१७,३७
भद्दत्ता	२६	सू० २४
भद्दवअ	२६	१५
भद्दा	१२	२०,२४,२५
भम *		
-भमइ	२५	३६
-भमिहिसि	२५	३८
भमर	२२	३०
	३६	१४६
भय	१	२६
	५	१६
	६	६
	६	५४
	१४	२,४,५१
	१५	१४
	१८	६
	१६	४५,४६,६१
	२१	१६

उत्तरज्भयण शब्द-सूची

२४६

भय	२२	१४
	२४	६
	२५	२१, २३, ३८
	३२	१०२

भय *

-भएज्ज	२१	२२
-भयइ	११	११
-भयाहि	२२	३७
भयंकर	२३	४३
भयंत	२०	११
भयट्टाण	३१	६
भयव	६	२, ४, १२

	२३	८६
भयाईय	२५	२१
भयावह	१६	६८
	२१	११

भरह	१८	३४, ४०
भरहवास	१८	३५
भरेडं	१६	४०

भल्ली	१६	५५
भव (भवत्)	२	१
	१२	१०, ४५

भव *

-भवड	२०	१५ से १७
	२६	सू० २, ३, ५,
		सू० १७, १८, २०,

-भवइ	२६	सू० ३७, ३६, ४३,
		सू० ४५, ४८, ४९,
		सू० ५४, ५५, ६०,
		सू० ७२

	३०	२
	३५	१४

-भवति	१३	२२
	१४	१२
	१५	१४
	२६	सू० ३४
	३२	१११

-भवामो	१४	२८
-भवाहि	६	४२
	१८	११

	२२	२६
-भविस्सई	२	४५
	२२	१६, ३७

-भविस्ससि	६	५
	२०	१२
	२२	४४, ४५

-भविस्सामु	१४	१७
------------	----	----

-भविस्सामो	१४	४५
------------	----	----

-भवे	५	३
	७	१६, २६

	६	४८
	१४	३६
	२२	४२

भवे	२८	३२	भव (भव)	२१	२४
	३०	५, ६, १२,		२३	८४
		१५, १८, २०,		२६	सू० ४१, ६१
		२१, २४, ३४		३०	६
	३३	८		३२	३४, ४७, ६०,
	३५	१			७३, ८६, ९९
	३६	३, ४, ६,		३४	५८, ५९
		२२, २३, २७,		३६	६३, ६४
		२८, ४३, ४५,	भवगगहण	१०	१३, १४
		५७, ६२, ६४,		२६	सू० २
		८०, ८८,	भवण	२२	१३
		१०२, १२२,	भवणवद्	३४	५१
		१५६, १६७,	भवणवासि	३६	२०५, २०६
		१७१, १७६,	भवतण्हा	२३	४८
		१८१, १८६,	भवसिद्धिय	३६	२६८
		१९१, १९३,	भवित्ता	२०	४१, ४७
		२०२, २१६,		२६	सू० २६
		२२०, २२४ से	भवित्ताण	१४	१
		२४३, २४५,	भाग(अ)	२६	११, १७
		२५१, २५८		३४	५२
भव (भव)	६	२२		३६	१९१
	१०	४, १५	भागि	२६	सू० ४५
	१३	२४	भागु	२३	७६, ७७
	१४	१	भाय	१	३६
	१८	१७, २६		६	३
	१९	१६, २१, ७४		१३	२२

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२५१

भायण	१६	१२	भाव	३२	२१, ८७ से
	२६	२२, ३६			६६, १०२
	२८	६		३३	१६
भायर	१३	४, ५		३६	२६०
	२०	२६	भावळो	२१	१६
भार	१०	३३		२३	८७
	१२	१५		२४	६, ७
	१३	१६		३६	३
	२६	सू० १३	भावणा	१४	५२
भारवह	२६	सू० १३		१६	६३
भारह	१८	३४, ३६, ३८,		३१	१७
		४१		३६	२६३ से २६६
भारिया	१०	२६	भावसुत्सूसा	३०	३२
	२०	२८	भावि	१४	५२
भारुण्ड	४	६	भावुज्जुयया	२६	सू० ४६
भाव	१४	१०, १६	भावेत्तु	१६	६४
	२०	१	भावेमाण	२६	सू० ४०, ६१
	२२	४४	भावोमाण	३०	२३
	२६	३६	भास *		
	२८	१५, १८, १६,	-भासइ	११	८
		२४, २५, ३५	-भासई	८	३
	२६	सू० १, १८, २३,		११	१२
		सू० ३२, ३७, ४६,	-भासेज्ज	२४	१०
		सू० ५१, ६०, ६२	-भासेज्जा	१	११
	३०	१४, २३, २४	भास	२५	१८
			भासअ	३२	१

२५२

परिशिष्ट-२

भासा	१	२४
	२	२५
	६	१०
	१२	२
	१८	२६
	२०	४०
	२४	२, १०
भासि	१२	१६
भासिय	१०	३७
	१८	५२
	१६	६७
	२८	१
भासियव्व	१६	२६
भासुज्जुयया	२६	सू० ४६
मिउडि	२७	१३
मिगारी (दि०)	३६	१४७
मिक्ख	२५	३७, ३८
मिक्खमाण	१४	२६
मिक्खवत्ति	३५	१५
मिक्खा	८	११
	१२	३, ६
	१४	१७
	२५	४, ६
	२७	१०
मिक्खाअ	५	२२, २८

मिक्खायरिया	२	सू० १ से ३
	१४	२६, ३३, ३५
	१६	३२
	२६	१२
	३०	८, २५
मिक्खियव्व	३५	१५
मिक्खु	१	१, २४, ३१,
		३२
	२	सू० १ से ३
	२	२, ७, १२,
		१६, २२, २४,
		२६, २८, २९,
		४४ से ४६
	४	११
	५	१६, २०, २५
	७	२२
	८	२, ४, ११,
		१६
	९	१५, १६
	११	१, १५
	१२	१, २६, ४०,
		४३
	१३	१२, १४, १७,
		३०
	१५	१ से १६
	१६	सू० १ से ३

उत्तरजम्भण शब्द-सूची

मिक्कु	१६	२,३,७,९, १५	भीय	२	२१
				१८	३
	१९	२४, ८२		१९	७१
	२१	१३, १६, १७, १९		२२	३५, ३६
			भीरु	२७	१०
	२५	६, ८, ३७		३२	१७
	२६	११, १७		३४	२८
	३०	१, ४, २४, ३१, ३६	भुव(ग)	३६	१८१
			भुज *		
	३१	३ से २१	-भुंजइ	१	५
	३५	१, ५, ७, ११, १३ से १५	-भुज्जई	७	३
				१२	१०
			-भुंजए	९	४४
मिक्कुय	१२	२७	-भुंजसू	१२	३५
मिक्कुवम्म	२	२६	-भुंजामि	२०	१४
	३१	१०	-भुंजामु	१४	३१
मिच्च	१४	३०	-भुंजाहि	१२	३४
मित्ति	१६	सू० ७		१३	१४
मिन्न	१२	२५		१४	३३
	१९	५५, ६७		२०	११
	२३	५३	-भुंजिज्जा	१६	सू० १०
मिसं	५	४		३५	१५
मीम	१५	१४	-भुंजिमो	२२	३८
	१९	४५, ७२	-भुंजे	१	३५
	२१	१६	-भुंजेज्ज	६	७
	२३	४८, ५५, ५८	-भुंजेज्जा	१६	८

भुंजंत	२	११	भूय	१	४५
भुंजमाण	५	६		२	१७
	७	६		६	२
भुंजितु	६	३		८	१०
भुंजिय	१३	३४		६	५
जभुंयिा	७	८		१२	६, ७, २६,
भुज्जमाण	३२	२०			३०
भुज्जो	५	२७		१३	१२
	७	१२, २५, २७		१४	१३
	१२	२५, ३६		१६	२५, ८६
	१४	२०		२०	३५, ५६
	२६	१८		२१	१३
	२६	सू० २३		२३	२०
भुत्त	१४	१२, ३२		२७	१७
	१६	१२		२६	सू० १८, ४३
	१६	११, १७		३५	८, १०
भुत्तभोगि	१६	४३		३६	२०८
	२२	३८	भूयगाम	३१	१२
भुयंग	१४	३४	भूयगाम	५	८
भुयमोयग	३६	७५	भूयत्थ	२८	१७
भुया	१६	४२	भूसण	१६	१३
भूअ	२६	सू० ४०	भे	१२	२३
भूइकम्म	३६	२६४		२०	५५
भूइपन्न	१२	३३	भेत्तूणं	६	२२
भूमि	१३	६	भेय	२	१३
	२६	३८		४	६, १३

उत्तररज्जयण शब्द-सूची

२५५

भेय	५	३१	भोग(य)	१४	६,३२ से
	१६	सू० ३ से १२			३४,३७,४४
	३३	७,११,१३		१८	४१
	३४	८		१६	११,१७,४३,
	३६	६६,७७,			६६
		१०७,१२७,		२०	६,८,११,
		१३६,१४५,			१४,५०,५७
		१७१,१६५,		२२	३८,४६
		१६७,१६८		२५	३६
भेयण	२६	सू० ४		३२	६३,१०१
भेयणी	२०	१८		३३	१५
भेरव	१५	१४	भोगि	२५	३६
	२१	१६	भोच्चा	३	१६
भो	२	२८		७	११
	६	७,१०		६	३८
	१२	१५		१४	४४
	२५	८		१७	३
भोइ	७	७	भोच्चाण	१४	६
भोइत्ता	६	३८	भोत्तुं	१७	२
भोइय	१५	६	भोम	१५	७
भोई	१४	३२,३४	भोमिज्ज	३६	२०४
भोग(य)	३	१६	भोमेज्ज	३६	२१६
	८	५,१४	भोयण	२	३०
	६	३,५१,६२		६	७
	१३	१४,२०,२७,		१२	११
		३२,३३		१५	११

२५६

परिशिष्ट-२

भोयण	१६	सू० ६,१०
	१६	१२
	३०	२६
भोयराय	२२	४३
भोयावेउं	२२	१७

च

मअ	१२	५
	१६	७
मउय(अ)	२२	२४
	३६	१६,३५
मंगल	२२	६
	२६	४२
	२६	सू० १,१५
मंत	१५	८
	२०	२२
	३६	२६४
मंथु	८	१२
मंस	२	११
	५	६
	७	६
	१६	६६
	२२	१५
मगर	३६	१७२

मगरजाल	१६	६४
मगहाहिव	२०	२,१०,१२
मगग	३	६
	५	१४
	७	२५
	६	२६
	१०	३१ से ३३
	१३	३०
	१४	२
	२०	४०,५०,५१,
		५५
	२१	२०
	२३	५६,६१ से
		६३,८७
	२४	४,५
	२८	१ से ३
	२६	सू० ३,६,१७
	३२	३,८६,
		१११
	३५	१
मगग *		
मगगहा	१२	३८
मगगामि	२५	२
मघव	१८	३६
मरुचु	५	१५
	१३	२१,२२

मच्चु	१४	४, १४, २३,	मज्झिमणी	२३	२७
		२७, ५१	मज्झिमय	३६	२५१
	२०	४८	मट्टिया	५	१०
	२३	८१	मट्टियामय	२५	४०
	३२	२४, ३७	मड	१	३६
मच्छ	१४	३५		३४	१६
	१६	६४	मडग	३४	१६
	३२	६३	मडम्ब	३०	१६
	३६	१७२	मण	१	४३, ४७
मच्छरि	३४	२६		२	११, २५, २६
मच्छिय	३६	५६		४	११, १२
मच्छिया	८	५		६	११
	३६	१४६		८	१०
मज्ज				१२	२१, ३२
-मज्जई	११	७, ११		१५	१२
मज्झ	१२	१२		१६	२
	१३	१२		१८	२०
	१७	२१		२२	२१
	२३	६६		२३	५८
	३२	१३, ३४, ४७,		२४	२१
		६०, ७३, ८६,		२५	२५
		६६		३०	११
	३६	५६		३२	२१, ८७, ८८,
मज्झिम	२३	२६			१००
	३६	५०, २१३,		३५	४, १३, १८
		२१४			

२५८

मणगुत्त

१२ ३

२२ ४७

२६ सू० ५४

मणगुत्तया

२६ सू० १,५४

मणगुत्ति

२४ २,२०

मणजोग

२६ सू० ७३

मणनाण

२८ ४

३३ ४

मणसमाधार-

णया

२६ सू० १,५७

मणसीकर +

-मणसीकरे

२ २५

मणहारि

२५ १७

मणा

१८ ७

मणि

६ ५

६ ४६

१६ ४

३६ ७४

मणुअ

१० १,२

३२ ३४,४७,६०,

७३,८६,९६,

१००

३६ १५५,१६५,

२००,२०२

मणुन्त

२६ सू० ४६,६३

से ६७

मणुन्न

३२

मणुन्नया

३२

मणुयाहिव

६

मणुस्स

१

२

७

६

२०

२१

२२

२६

३३

३४

३

१८

४

६

१४

१६

२५

३२

मणुस्सया

मणुस्सिद

मणूस

मणोरम

परिशिष्ट-२

२१ से २३.

३५,३६,४८,

४९,६१,६२,

७४,७५,८७,

८८

१०६

४२

४८

१६

२७

३०

१४,५५

१६

२२

सू० ५

१२

४४

७

३७,४२

२

६,१०

४०

सू० ६

११

३

२०

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

मणोरह	२२	२५	मन्त्र *		
मणोसिला	३६	७४	-मन्त्रई	१	३८, ३९
मणोहर	१६	सू० ६		५	९
	३२	१७	-मन्त्रए	१	२८
	३५	४	-मन्त्रति	६	८
मण्डल	३१	३ से २०	-मन्त्रसी	२३	६५, ८०
मण्डलिया	३६	११८	-मन्त्रे	१९	६
मण्डव	१८	५		२७	१२
मण्डकुच्छि	२०	२	मन्त्रंत	३	१४
मण्णमाण	४	७		२७	१३
मत्त	५	१०	मन्त्रमाण	१७	६
	२२	१०	ममत्त	१९	८६, ९८
मत्ता	३	२०	मम्म	११	४
मद्द	९	५७	मम्मय	१	२५
	२७	१७	मय (मद)	१२	५
	२९	सू० १, ५०, ६९		१६	७
मद्दया	२९	सू० ५०		२९	सू० ५०
मन्द	४	१२		३१	१०
	८	७	मय (मृत)	१८	१४, १५
	१२	३९		२७	६
	१८	७	मय (मयट्)	३६	६०
	२९	सू० २३	मयंगा	१३	६
मन्दर	११	२९	मर *		
	१९	४१	-मरई	५	१६, ३२
मन्दिय	८	५	-मरति	३६	२५७, २५९
मन्दिर	९	१२	-मरिस्सामि	१४	२७

परिशिष्ट-२

२६०

मरिहिति	३६	२६१
मरिहिसि	१४	४०
मरगय	३६	७५
मरण	५	३, १८
	१६	१४, १५, २३,
		४६, ६०
	२२	४२
	३०	१२
	३२	७
	३६	२५६, २६७
मरणंत	५	१६, २६
	७	६
मरणकाल	३०	६
मरिस *		
मरिसेहि	२०	५७
मरु	१६	५०
मल	१	४८
	४	७
	५	१०
	२५	११
मल्ल	२०	२६
	३५	४
मस	२१	१८
मसय(ग)	२	सू० ३
	२	१०
	१५	४

मसय(ग)	१६	३१
	३६	१४६
मसारगल्ल	३६	७५
मह	१३	१२
	१४	१८
	१८	२, १८
	१६	५०, ६७, ६८
	२०	५१, ५३
	२१	११, २४
	२३	६५, ६६
महज्जुइ	१	४७
महड्डिय	५	२५
महणव	१६	१०
	३२	१०५
महत्य	२३	८८
महन्त	१६	१८, २०
	२१	११
महप्प	१२	२२, ३५
	१६	३२
	२१	१
	२७	१७
महप्पसाय	१२	३१
महब्भय	१६	७२
महव्वय	१६	१०, २८
	२०	३६
	२१	१२
	२३	८७

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

महाजंत	१६	५३
महाजय	१२	४२
महाजस	१२	२३
	१८	३६, ४६
	१६	६७
	२३	२६
महाणुभाग	१२	२३, ३७
	१३	११, २०
महातलाय	३०	५
महादीव	२३	६६
महादोस	३५	१५
महानाग	१६	८६
महानिज्जर	२६	सू० २०
महानियट्टिज्ज	२०	
	२०	५३
महापउम	१८	४१
महापज्जवसाण	२६	सू० २०
महापन्न	३	१८
	५	१
	२२	१५, १८
महापह	१	२६
	५	१४
महापाण	१८	२८
महापाली	१८	२८
महावल	१८	५०
महाभर	१६	३५

महाभाग	१२	३४
	२०	५६
	२३	२१
	३६	६३
महामुणी	२	१०
	१२	८
	१८	२३
	२०	५२
	२३	१२, २३, ४८
	२५	२, ६, १३,
		३४
	३५	१७
महामेह	२३	५१
महायस	१३	४
	१८	३६
	२०	५३
	२१	२२
	२२	४, २०
	२३	२, ६, ६,
		१८, ८६
	२५	१
महारभ	७	६
महारण्ण	१६	७८
महाराय	१४	४८
	२०	६, १७, १६,
		२५ से २८,
		३०

महारिनि	१०	४७	मही	१८	४२,५१
महालय	१०	३०		२७	१७
	१३	२६	महु	१३	१३
	२३	६६		१६	७०
महावण	१८	४८		३४	१४
	१६	६०			
महाविमाण	३६	२४४	महुर	६	५५
महावीर	०	सू० १ मे ३		३६	१८
	५	४	महुरल	३६	३३
	२१	१	महेमि	४	१०
	२६	सू० १,७४		१२	२७
महामाग	३०	१८		१३	३५
महामिणाण	१२	४७		२०	५५
महामुक्क				२१	२०,२३
(महायुक्क) ३		१४		२३	७३,८३
महामुक्क				२८	३६
(महायुक्क) ३६		२११,२२८	महोदर	७	२
महामुय	२०	५३	महोयहि	२३	८५
महिअ	०५	१६	महोग	३६	२०७
महिडिय	१	४८	महोह	५	१
	११	०२		२३	७०
	१३	४,७,११,			
		२०,०८	मा	१	१०
	१८	३६ मे ३८	माइ	७	५
	१६	=		१७	११
	०२	१,३,८		२७	६
महिया	३६	८५		३६	२६५
महिम	१६	५७			
	३२	७६	माइल्ल	५	६

उत्तरजमयण शब्द-सूची

२६३

माइवाहय	३६	१२८
माण	४	१२
	६	३६, ५४, ५६
	१२	१४, ४१
	१८	४२
	१९	६०
	२४	६
	२९	सू० १, २, ६६
	३२	१०२
	३४	२९
माणव	२१	१६
	३२	१७
	३५	२
माणवेयणिज्ज	२९	सू० ६९
माणस	१९	३, ४५
	२३	८०
	२९	सू० ४, ४५
माणसिय	३२	१९
माणुस	३	१६
	७	१६, २०
	९	१
	१०	४
	१९	७३
	२०	१४
	२५	२५
	२९	सू० ३

माणुस	३१	५
	३५	२०
माणुसत्त	३	१, ११
	७	१६, १७
	१०	१६
	१९	१४
माणुस्स	३	८
	१८	२९
	२०	११
	२२	३८
माणुस्सअ(ग)	३	१९
	७	१२, २३
	१४	६
	१५	१४
	१९	४३
मायल्ल	२	३
माया (माया)	१	२४
	४	१२
	९	३६, ५४, ५६
	१२	४१
	१८	२६
	२४	९
	२९	सू० १, २, ६, ७०
	३२	१०२
	३४	२९

माया (मातृ) ६	३	माहण(न)	१४	५, ३८, ५३
१३	२२		१५	६
२०	२५		१८	२१
२४	३	माहणत्त	२५	३५
माया (मात्रा) ६	१४, १५	माहणी	१४	५३
मायामुसा ३२	३०, ४३, ५६,	माहिद	३६	२१०, २२५
	६६, ८२, ९५	मिअ (मृग)	१	५
मायावेयणिज्ज २६	सू० ७०		८	७
मारणंतिय ५	२		११	२०
मारिय १६	६४, ६५		१३	६, २२
मालुग (दि०) ३६	१३७		१८	३, ५, ६
मास(माष) ८	१७		१६	६३, ७६ से
मास(मास) ६	४०, ४४			७८, ८३
१२	३५		२३	१६
२६	१३, १४		३२	३७
३६	१५१, २५१,	मिउ	१	१३
	२५५		२७	१७
मासक्खमण २५	५		२६	सू० ५०
मासिय १६	६५	मिगचारिया	१६	८१, ८२, ८४
३६	२५५	मिगव्वा	१८	१
माहअ (दि०) ३६	१४८	मिच्छकार	२६	३
माहण (ब्राह्मण) ६	६, ३८, ५५	मिच्छत्त	१०	१६
२५	१, ४, १८ से		२६	सू० २, ५७, ६१
	२७, ३२, ३४	मिच्छदिट्ठि	३४	२५
माहण (माहन) १२	११, १३, १४,	मिच्छाकार	२६	६
	३०, ३८	मिच्छादंड	६	३०

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

मिच्छादसण	२६	सू० १,७२
	३६	२५७, २५६
मिच्छादसणः		
सल्ल	२६	सू० ६
मिच्छादिट्ठि	१८	२७
मिण *		
-मिणे	७	२३
मित्त(मित्र)	१०	३०
	११	८, १२
	१३	२३
	१८	१४
	१६	२५, ८७
	२०	११, ३७
मित्त(मात्र)	१६	७४
	३६	७
मित्तव	३	१८
मिति	२६	सू० १८
मिय	१	३२
	१६	८
	२४	१०
	३२	४
मियचारिया	१६	८५
मिया	१६	१, ६७
मियापुत्त	१६	२, ६, ८, ६६
मियापुत्तिज्ज	१६	
मिलेक्खु	१०	१६

मिहिला	६	४, ५, ७, ६
		१४
मिहोकहा	२६	२६
मुड्डय	१८	४४
	१६	३
मुंच *		
-मुंचई	२०	४७
-मुच्चइ	२६	सू० २६, ४२, ५६,
		सू० ६२, ७४
-मुच्चई	५	२२, २४
	६	३०
-मुच्चए	८	२
-मुच्चेज्ज	८	८
-मुच्चेज्जा	२०	३२
-मुच्चंति	२६	सू० १
मुक्क	२३	४०, ४१, ४६
	३२	११०
मुग्गर	१६	६१
मुच्छियं	१०	२०
	१३	२६
	१४	४३
	१५	२
	१८	३
मुज्झ *		
-मुज्झसी	१८	१३
मुट्ठि	१६	६७

२६६

मुट्टि	२०	४२
	२२	२४
मुणि	१	३६
	२	६, १५, ३८
	४	८
	५	३२
	७	३०
	८	३
	९	१६, २२
	१२	१, १५, ३१
	१४	८, ९
	१५	३
	१७	२०, २१
	१८	४४, ४७
	१९	८३
	२०	५३
	२३	३८, ४०, ४१, ६१, ६५, ८०, ८४
	२४	१३, २७
	२५	२९, ३०
	२६	२०, ३५
	२७	१
	३०	३७
	३२	१६, २६, ३९, ५२, ६५, ७८, ९१

परिशिष्ट-२

मुणि	३५	२, १६
	३६	२४९, २५०, २५५
मुणिवर	९	६०
मुणैयव्व	३०	२०, २३
मुण्डच्छ	२०	४१
मुण्डि	५	२१
मुण्डिय	२५	२९
मुत्त	१४	३४
मुत्ता	९	४६
मुत्ति	९	५७
	२०	६
	२२	२६
	२९	सू० १, ४८
मुद्दिय	३४	१५
मुद्ध (मूर्धन)	२७	६
मुद्ध (मुग्घ)	३२	३७
मुम्मुर	३६	१०९
मुसल	१९	६१
मुसा	१	२४
	२	४५
	१८	२६
	२०	१५
	२५	२३
मुसावाइ	५	९
	७	५

उत्तरजमयण शब्द-सूची

मुसावाय	१६	२६	मूल	२०	२२
	३०	२		२६	सू० ५
मुसंडी	१६	६१		३२	७, ६, १३
मुसुण्डी	३६	६६	मूलअ(ग)	३२	१
मुह	२	५		३६	६६
	५	१५	मूलओ	२०	३६
	१२	२६	मूलपयडि	३३	१६
	१३	२१	मूलिय(मूलिक)	७	१७
	२०	४८	मूलिय(मौलिक)	७	१६, २१
	२५	११, १४, १६	मूसग	३२	१३
	२७	१३	मेअ	७	२
मुहपोत्तिया	२६	२३	मेत्त	६	६
मुहरी	१	४		७	२४
मुहाजीवि	२५	२७		१४	१३
मुहुं	४	११	मेत्ति	६	२
मुहुत्त	४	६	मेत्तिज्जमाण	११	७, ११
	३३	२३	मेयन्त	१८	२३
	३४	३४ से ३६,	मेरअ(ग)	१६	७०
		४६, ५४, ५५		३४	१४
मूढ	१	२६	मेरु	२१	१६
	६	१	मेहावि	१	४५
	८	५		२	६, १७, ३६
	१२	३१		५	३०
	१४	४३		२०	५१
मूल	७	१४ से १६		२३	२४, ३०
	१५	८			

२६८

मेहुण

२ ४२

२५ २५

३० २

मोक्त

४ ६५

६ ८

१३ १०

१४ ६५

१५ ३३

२३ ३३

२५ १,१४,३०

२८ सु० ६३२

३२ २,१७,१०२

मोक्तमगगह

२८

मोण

१४ ७,३२,४१

१५ १

१८ ८

२० ४६

मोसली

२६ २६

मोसा

१२ १४,४१

२४ २०,२२

३२ ३१,४४,५७

७०,८३,८६

मोह

४ ५,११

५ ३

१३ ३३

१४ १०,२०,५२

मोह

१५

१८

२०

२१

२५

३२

३३

३४

३६

३१

८

२८

३३

२४

मोहटाण

मोहणिल्ल

मोहरिय

अ

य

र

रख(य)

परिसिद्ध-२

६

७

६०

११,१८

२०

२,६३,८२

१०१,१०५

२

२५६

१८

१

सु० ७,७२

५,६,८१

८

१

६

१

८

११

१३

१६

सु० ८

४२

५

१७

८

रज(य)	१६	२ से ६, १५	रज्जंत	१६	६
	२६	सू० ३२	रज्जमाण	२६	सू० ४
	३२	१५	रच्छा	३०	१८
रह	५	५	रद्ध	१८	२०
	१४	७, २१	रण	१४	३०
	१६	६	रण	१४	४२
	१६	१३	रणवास	२५	२६
	२१	२१	रत्त (रत्तं)	१७	१२
	३२	१०२		३२	२६, ३६, ५२,
रह्य	२२	१२			६५, ७८, ६१
रक्क *				३६	२५७ से २५६
-रक्खेज्ज	४	१२	रत्त (रात्र)	२६	१४
रक्खण	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३	रत्ति	२६	१७, १६
रक्खमाण	२२	४०	रम *		
रक्खस	१६	१६	-रमई	१	५
	२३	२०	-रमए	१	३७
	३६	२०७	-रमाम	१६	१४
रक्खसी	८	१७	-रमे	१४	४१
रक्खा	१६	१	-रमेज्जा	३६	२४६
रक्खिय	१५	२	रम्म	१३	१३
रज्ज	७	११		१४	१
	६	२		१६	१
	१४	४६		२१	७
	१८	१२, १६, ३७, ४४, ४६, ४७, ४६			

रय	२	३६
	३	११
	७	८
	१०	३
	१२	४५
	२१	१८
रयण	११	२२, ३०
	१६	४
	२०	२
	२२	२२
रयणा	३५	१८
रयणाभा	३६	१५६
रयणागर	१६	४२
रयणी	१४	२३ से २५
रयय	३४	६
रस	२	३६
	८	११, १४
	१४	३१, ३२
	१६	सू० १२
	१६	१०
	१८	३, ७
	२०	३६, ५०
	२७	६
	२८	१२
	२९	सू० ४६, ६६
	३०	२६

रस	३२	१०, २०, ६१
		से ७३
	३४	२, १० से
		१५, २३
	३५	१७
	३६	८३, ६१,
		१०५, ११६,
		१२५, १३५,
		१४४, १५४,
		१६६, १७८,
		१८७, १९४,
		२०३, २४७,
		२६४
रसओ	३६	१५, १८, २२
		से ४६
रसंत	१६	५१
रसन्नु	१६	२८
रसपरिच्छाव	३०	८
रस्सि	२३	५६
रह	११	८, १२
रहनेमि	२२	३४, ३७, ३९
रहनेमिज्ज	२२	
रहस्स(रहस्य)	१	१७
रहस्स(ह्रस्व)	२६	सू० ७३
रहाणीय	१८	२
रहिय	१६	१
	२४	१८

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२७१

राअ	१४	१४	राग	३२	४८ से ५०,
	२६	सू० ३१			६१ से ६३,
राइ (रात्रि)	१०	१			७४ से ७६,
	१३	३१			८७ से ८९,
	१४	२४, २५			
	२०	३३		३५	५
	२६	१७	रागि	३२	१००, १०५,
राइ (राजन्)	२०	५	राढामणि	२०	४२
राइय	२६	४७, ४८	राम	२२	२, २७
राईभोयण	१६	३०	राय	७	११
	३०	२		६	२, ३
राईमई	२२	६, २६, ३६		१२	२० से २२
राओ	१५	२		१३	८, ११, १७,
राग	१०	३७			२०, २१, २६,
	१४	२८, ४२, ४३			३२ से ३४
	१६	२		१४	३, ३७, ३८,
	२१	१६			४०, ५३
	२३	४३		१८	१, ६, ७, ९,
	२५	२१			१३, १५, १६,
	२८	२०			३७, ३९, ४३,
	२९	सू० ६३ से ६७			४५, ४७ से
	३०	१, ४			४९
	३१	३		१९	१
	३२	२, ७, ९, १२,		२०	२, १०, ५४
		२२ से २४,		२२	१, ३, ७,
		३५ से ३७,			२८, ४०

२७२

परिशिष्ट-२

सयपुत्त	१५	६	रुहर	३२	२६, ३६, ५२,
	२२	३६			६५, ७८, ६१
रायरिसि	६	५, ६, ८, ११,	रुख	१२	८
		१३, १७, १९,		१४	२६
		२३, २५, २७,		३६	६४
		२९, ३१, ३३,	रुखमूल	२	२०
		३७, ३९, ४१,		१६	७८
		४३, ४५, ४७,		२०	४
		५०, ५२, ५६,		३५	६
		६२		२५	६
	१८	५०	रुह	३०	३५
रायवेद्वि	२७	१३		३४	३१
रायसीह	२०	५८	रुह	१९	६३
रायहाणी	२	१८	रुप्य	६	४८
	३०	१६		३६	७३
रिसि	१९	६६	रुम्भ *		
री *			रुम्भई	३१	३
रिए	२४	४, ८	रुयग	३६	७५
रीएज्जा	२४	७	रुहिर	१२	२५, २९
रीयंत	२	१४		१९	७०
	२३	३, ७		३६	७२
	२५	२			
रुइ	१	४७	रुव	३	१५
	१८	३०		४	११
	२८	२५		६	११
रुइय	१६	सू० ७		६	६, ५५
	१६	५, १२		१२	६

रुक्म	१३	१२
	१६	सू० १२
	१६	१०
	१८	१३, २०
	१९	६
	२०	५, ६
	२२	४१
	२६	सू० ४३, ४६, ६४
	३१	१६
	३२	१४, २२ से
		३४, ४०, ५३,
		६६, ७९, ९२,
		१०३
रुक्मवर	१७	२०
रुक्मवर्ह	२१	७
रुक्मि	३६	४, १०, १३,
		१४, २४
रुक्मिणी	२१	७
रेणुअ	१९	८७
रेवयय	२२	२२, २३
रोअ *		
-रोएइ	२८	१७
रोग	२	सू० ३
	११	३
	१६	सू० ३ से १२
	१९	१४, १५, १९

[illegible]

लक्खण	२८	१, ६, ९ से	-लभेज्ज	४	६
		१३	-लभेज्जा	१६	सू० ३ से १२
	३४	२		३२	५
लक्खणञ	१९	४३	लयण	२१	२२
लग्ग	१९	६५, ८७		२२	३३
लग्ग *			लया	२०	३
-लग्गई	२५	४०		२३	४५ से ४८
-लग्गन्ति	२५	४१		३६	६४, ६५
लज्जा	२	४	ललिय	६	६०
लज्जु	६	१६		२२	४१
लद्ध	२	३०	लव	१	२५
	१६	८	लवंत	१	२१
लद्धं (लब्बा)	२	२३	लविय	१६	४
	३	८ से ११	लसण	३६	६७
	११	११	लह *		
	१५	१२	-लहड	७	१४
लद्धं (लब्धुम्)	११	१४	-लहए	१४	२६
लद्धूण	६	१४	-लहामो	१४	७
	१०	१६, १७, १९	-लहित्थ	१२	१७
	११	७	-लहे	१०	१८
लप्पमाण	२०	४३	लहिउं	१७	१
लभ *			लहियाण	२०	३८
-लब्भइ	११	३	लहु	१	१३
-लब्भामि	२	३१		१५	१६
लभऊ	१२	१०		२२	३१
लभे	४	५	लहुब्भूय	२३	४०, ४१
	१४	२१			

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

लहुभूय(अ)	१४	४४
	२६	सू० ४३
लहुय(अ)	३६	१६, ३७
लाघविया	२६	सू० ४३
लाढ	२	१८
	१५	२, ३
लाभ	१	२७
	२	३१
	७	१६
	१४	३२
	१६	६०
	२०	५५
	२६	सू० ३४
	३२	२८, ४१, ५४,
		६७, ८०, ६३
	३३	१५
	३५	१६
लाभतर	४	७
लाभय *		
-लामइस्सन्ति	१	४६
लालप्पमाण	१४	१५
लालसा	२५	४१
लावण	३२	१४
लाह	७	१४
	८	१७
	१२	१७

लिंग	२३	३०, ३२ -
	२६	सू० ४३
लिप *		
-लिप्पई	८	४
	३२	२६, ३६, ५२,
		६०, ६५, ७३,
		७८, ८६, ६१,
		६६
-लिप्पए	३२	३४, ४७
लिच्छु	३२	१०४ -
लित्त	८	१५
लुव *		
-लुवई	२२	२४, ३०
लुप *		
-लुप्पन्ति	६	१
लुक्ख	३६	२०
लुक्खय	३६	४१
लुत्त	२२	२५, ३१
लुद्ध	६	४८
	११	२, ६
	१७	११
लुपत्त	६	३
लूह	२	६, ३४
लेट्ठु	३५	१३
लेप्प	१६	६५
लेव	६	१५
	८	१५

२७६

लेसज्भयण

३४

३४

१

लेसा

१२

४६

३१

८

३४

२,१६ से

२०,३३,४०,

४४,४५,४७,

५८ से ६१

लीज (ग,य)

१

१५,४५

२

१६,४४

४

३,५,१०

५

५,६

८

१६,२०

९

१,५८

१०

३५

१२

१३,२८

१३

१९,२१

१४

८,१६,२१

से २३

१५

१४,१५

१७

२०,२१

१८

२७,३८

१९

२३,४४,७३,

९२

२०

४९

२३

१,२,५,६

लीज(ग,य)

२३

३२,४०,६०,

७५,७६,७८,

२५

१९

२८

७

२९

सू० ७२

३४

३३

३६

२,७,११,

६१,६७,६९,

७८,८६,

१००,१११,

१२०,१३०,

१३९,१४९,

१५८,१७३,

१८२,१८९,

१९८,२१७

लीगगा

२३

८१,८३,८४

२९

सू० ३९

लीगनाह

२२

४

लीण

३६

७३

लीम

९

५४,५६

२४

९

२९

सू० २,७१

३२

२९,३०,४२,

४३,५५,५६,

६८,६९,८१,

८२,९४,९५

लोभ	३४	२६	लोहिय(अं)	७	७
	३५	३		३६	१६, २४
लोभवेद्यगिज्ज	२६	सू० ७१	लोहियक्ख	३६	७५
लोभपक्खि	३६	१८८			
लोभहरिस्स	५	३१			
लोभहार	६	२८	व		
लोयग	३६	५६, ६३	व(वा)	१	१६, ३४
लोल	२६	सू० ४८		२	२०, ३६
	३२	२४		५	२२
लोलया	७	१७		१०	३६
लोला	२६	२७		१२	७, ४३, ४५
लोलुप्पमाण	१४	१०		१३	२२
लोलुअ	३४	२३		१४	२७, ३०
लोह (लोह)	१६	६८		१६	१३
लोह (लोभ)	४	१२		२०	१६
	८	१७		२८	१६
	६	३६	व(इव)	१	१२, ३७, ३६
	२५	२३		३	५, १४
	२६	सू० १, ७१		४	५, ६
	३२	८, १०२		५	१५, १६
लोहगिज्ज	४	१२		७	७
लोहतुंड	१६	५८		८	५, ६, ६, १८
लोहमार	१६	३५		१०	२८
लोहमय	१६	३८		१२	२७
लोहरह	१६	५६		१३	३१
लोहि (दि०)	३६	६८		१४	३३, ३५, ४७

२७८

परिशिष्ट-२

व(इव)	१५	१०
	१७	२१
	१६	८७
	२१	१४, २३, २४
	३४	१४

वय *

-वए	२७	५
वइ	१८	५२
वइगुत्त	२६	सू० ५५
वइगुत्ति	२४	२३
वइजोग	२६	सू० ७३
वइदेहि	६	६१
वइर	१६	५०
	३६	७३
वइसाहि	२६	१५
वइस्स (वैद्य)	२५	३१
वइस्स (द्वेष्ट)	३२	१०३
वक्क	३४	२५
वक्कजड	२३	२६
वचिअ	२	४४
वजण	१२	३४
	२६	सू० २२
वजणलद्धि	२६	सू० २२
वक्क	१	४३
	६	११
	१३	२७

वक्क	१४	११
	२२	३६
	२५	२५
वग्ग	१३	२३
	१६	२६
	३०	१०
वग्गवग्ग	३०	११
वग्गू	६	५५
वच्च *		
-वच्चवइ	१४	२४, २५
-वच्चउ	२७	१२
वच्छ	८	१८
	६	६
वच्छल्ल	२८	३१
वज्ज		
-वज्जई	३१	६
-वज्जए	१	८, ९, २४,
		३६
	१७	२१
-वज्जेज्जा	१६	१४
वज्ज	३४	२८
वज्जअ	११	१३
वज्जकंद	३६	६८
वज्जण	१६	३०
	२८	२८
वज्जपाणि	११	२३

उत्तरज्जयण शब्द-सूची

२७६

वज्जरिसह	२२	६
वज्जिता	३०	३५
	३४	३१, ४५, ६१
वज्जिय	१०	२८
	२४	५, १८
वज्जेयव्व	१६	३०
	२६	२६
वज्झ	२१	८
वज्झग	२१	८
वज्झमंडण	२१	८
वट्ट *		
-वट्टइ	१७	२
-वट्टए	२६	सू० २०
वट्ट	३६	२१, ४३
वट्टन्त	२३	६०
	३५	१४
वट्टमाण	११	६
	२६	सू० २०, ५१, ५२
वड्डइ	१६	६६
वड्ड *		
-वड्डइ	३२	३०, ४३
वड्डण	१४	४७
वड्डमाण	२२	२६
वड्डावइत्ताणं	६	४६
वण	२०	३६
	२३	१५
	३२	११

वणचारि	३६	२०५
वणप्फइ	३६	१०२
वणस्सइ	२६	३०
	३६	६६, ६२
वणस्सइकाय	१०	६
वणिय	७	१४
	८	६
	१४	३०
वण्ण	६	११
	७	२७
	१३	२६
	१६	५५, ६६
	२०	६
	२८	१२
	२६	सू० ५
	३०	२३
	३२	२०
	३४	२
वण्णओ	३४	४ से ६
	३६	१५, १६, २२
		से ४६, ८३,
		६१, १०५,
		११६, १२५,
		१३५, १४४,
		१५४, १६६,
		१७८, १८७,
		१६४, २०३,
		२४७

वणव	३	१८
वणिग	३४	४०, ४४, ४७
वण्हि	२२	१३
वत्तणा	२८	१०
वत्थ	२	१२
	२६	२३, २४
	३०	२२
वत्थु	३	१७
	१६	१६
वत्थुविज्जा	१५	७
वद्धण	२६	सू० ६
वद्धमाण	६	२४
	२३	५, १२, २३,
		२६
वन्त	१०	२६
	१२	२१
	२२	४२
वन्तर	३६	२२०
वन्तासि	१४	३८
वन्द *		
-वन्दइ	६	५५, ५६
	२६	५०
-वन्दए	१८	८
वन्दण	३५	१८
वन्देणम(अ)	१५	५
	२६	सू० १, ११

वन्दमाण	२५	१७
वन्दिळण	६	६०
	२६	४५
वन्दित्ता	२०	७
	२२	२७
	२६	८
वन्दिताण	२६	२२, ३७, ४०
		सै ४२, ४८,
		४६, ५१
वन्दित्त	२६	२१
वम *		
-वमइ	११	७
वमंत	१२	२५, २६
वमण	१५	८
वमित्ता	१४	४४
वम्मधारि	४	८
वय (वह) *		
-वयेंइ	१५	६
	२५	२३
-वए	१	१४, २४
	२०	१५
	२२	४०
	३०	३५
-वएज्ज	१	४१
-वयंति	१२	३८, ४०
	३२	६, ७

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

२८१

-वयासी	१४	८, १६
वय (व्रत)	१	४७
	२०	४१
	२१	११
	२२	४०
	२६	सू० १२
	३१	७
वय (वचस्)	५	१०
	८	१०
	१४	८
	१५	१२
	२४	२३
	२६	सू० ५८
वय (व्रज्) *		
-वयह्	६	५४
-वए	१४	४८
	२०	५१
	२७	५
वय (वयस्)	१४	३२
	२०	१६
वय (व्यय)	३२	२८, ४१, ५४, ६७, ८०, ६३
वय †		
-वुच्छ	३६	११, ७८, १११, १२०, १५८, १७३,

-वुच्छं	३६	१८२, १८६, २१७
-वुच्छामि	३६	४७, १०६
वयगुत्त	१२	३
	२२	४७
वयगुत्तया	२६	सू० १, ५५
वयगुत्ति	२४	२
वयन्तो	२१	१४
वयण	१	१२
	६	६
	१२	५, ८, १६, २४
	१३	४, १२, १५, २६, ३४
	१६	६
	२०	१३
	२२	१८, ४६
	२५	१०
	२७	११
वयत्थ	३०	२२
वयमाण	८	७
वयसमाधारणया	२६	सू० १, ५८
वर (वर)	१	१६
	८	३
	६	३
	१४	५०
	२२	७, ४०
	३४	१४

वर (पर)	१४	२२
वरगइ	३६	६३, ६७
वरदंसि	२८	२७
वराडग	३६	१२६
वराय	३६	२६१
वरिस	१८	२८
	३४	४६
वलय	३६	६५
वल्लर	१६	८०, ८१
वल्ली	३६	६४
वव *		
-ववन्ति	१२	१२
ववहर *		
-ववहरई	१७	१८
ववहरंत	२१	२, ३
ववहार	१	४२
	७	१५
ववस्स *		
-ववस्से	३२	१४
ववस्सिअ	२२	३०
वस *		
-वसामि	१८	२६
-वसामो	६	१४
-वसे	११	१४
-वुच्छामु	१३	१६,
वस	६	३२
	१४	४२

वसभ	१८	३६, ४६, ४७
वसह	११	१६
वसहि	१४	४८
	३२	१३
वसा	१६	७०
वसाणुग	१३	५
वसीकअ	६	५६
वसुदेव	२२	१
वसुहा	२०	६०
वसुहारा	१२	३६
वस्स	३२	१०४
वह	१	१६, ३८
	७	१७
	८	७, ८
	१२	१४
	१५	३, १४
	१६	३२
	३५	८
वह * (वह.)		
-वहेइ	१८	३
-वहेई	१८	५
-वहेह	१२	२७
	२६	सू० ३२
वह * (व्यथ्)		
-वहिज्ज	२१	१७
वहण	२७	२

उत्तरज्जमयण शब्द-सूची

२८३

बहुपाण	२७	२	वाउ	३६	१०७, ११७,
बहिय	१६	७१			१२२ से
वा(वा)	१	१४, १७, १६,			१२४
		२१, २५, २७,	वाउक्काय	१०	८
		३४, ४८	वागर *		
	२	८, १८, २०,	-वागरे	१	१४
		३०, ३६, ४४	-वागरेज्ज	१	२३
	५	१६, २२, २५,	वाघाय	१४	८
		२८	वाड	२२	१४, १६
	८	१२		३०	१८
	१२	१८, २८	वाणमंतर	३४	५१
	१४	१७, २२, ३६,		३६	२०४, २०७
		४०	वाणारसी	२५	२, ३
	१५	६	वाणिअ	७	१५
	१६	सू० ३ से १२		२१	१, ३, ५
	१६	२५, ५६, ७७,		३५	१४
		७९	वाद	१५	१५
	२०	६, १६, २६	वाय (वाच)	१	१७, ४३
वा(इव)	२	१०		६	६
	१४	४१	वाय (वात)	१६	४०
	१६	५३, ६३, ६४		२१	१६
वाअ	६	१०		२२	४४
वाइय(वादित्र)	१३	१४		३६	२०६
वाइय(वाचित)	२७	१४	वाय *		
वाउ	६	१२	-वाण्ड	२६	२६
	२६	३०	वायणया	२६	सू० १

२८४

वायणा	२६	सू० २०
	३०	३४
वार *		
-वारेज्ज	२	११
वारि	२३	५१, ६६
	२५	२६
वारुणी	३४	१४
वालम्गपोइया	६	२४
वालुया	१६	३७, ५०
	३६	७३
वालुयाभा	३६	१५६
वावड *		
-वावडे	१७	१८
वावन्न	२८	२८
वावर *		
-वावरे	३०	३६
वास(वर्ष)	३	१५
	४	८
	७	१३
	१२	३६
	१८	३४, ३६, ३८,
		४०, ४१
	१६	६५
	२२	३३
	३४	४१, ४८, ५३
	३६	८०, ८८,

परिशिष्ट-२

वास(वष)	३६	१०२, १२२,
		१३२, १६०,
		२१६ से २२१,
		२५० से २५२
वास(वास)	१४	२६
	१६	८३
	२३	४, ८
	२५	३
	३५	६, ७
वासंत	२२	३३
वासि	१२	८
	१४	१
वासिट्टी	१४	२६
वासिय	३५	४
वासी	१६	६२
वासीमुह (दि०)	३६	१२८
वासुदेव	११	२१
	२२	८, १०, २५,
		३१
वाह *		
-वाहेइ	१७	१६
वाहअ(य)	१	३७
	१०	३३
वाहण	६	४६
	१८	१

बाहर *			विजोग	३२	२८,४१,५४,
-बाहराहि	१८	१०			६७,८०,९३
बाहि	१६	१४,१६	विंक्षिय	३६	१४७
	२३	८१	विकत्तु	२०	३७
	३२	१२	विकप्पण	३२	१०७
बाहिय	१६	६३	विकोविय	२१	२
बाहित्त	१	२०	विककअ	३५	१३ से १५
विइत्तु	१५	३	विकिणंत	३५	१४
विइय	१२	१३	विक्खाय	१८	३६
	१८	२७	विकिखत्ता	२६	२६
	२३	६१	विगइ	१७	१५
विउ	२१	१२		३२	१०१
	२५	३६		३६	२५२
विउकम्म	५	१५	विगप्प	३३	६
विउल	१	४६	विगप्पण	२३	३२
	७	२,२१	विगय	१	२६
	६	३८		८	३
	१०	३०		६	२२
	११	३१		१४	५२
	१४	३७,३६		२०	६०
	२०	१६,३२,५२		२६	सू० ३०
	२६	सू० ४३	विगराल	१२	६
विउज्जि	३	१५	विगलियिया	१०	१७
	१३	३२	विगहा	२४	६
विउज्जिऊण	६	५५		३१	६
विउत्सग्ग	३०	३०,३६		३६	२६३

२८६

परिशिष्ट-२

विगिच *

-विगिच	३	१३
विगिट्ट	३६	२५४
विग्गह	३	८
विग्घ	२०	५७
	२९	सू० ६

विचित *

-विचित्तए	२	२६
	२६	५०
-विचित्तेइ	२२	२९
	२७	१५

विचित्तिय

विचित्त ३६ १४८, २५२

विजढ ३६ ८२, ९०,
१०४, ११५,
१२४, १५३,
१६८, १७७,
२४६

विजय १५ ७

१८ ४९

२९ सू० १, ६८ से ७२

३६ २१५, २४३

विजयघोस २५ ४, ५, ३४,

३५, ४२, ४३

विजहिनु ८ २

विज्ज *

-विज्जई	२	७
	१४	४०
	२०	९, १०
	२३	६६

-विज्जए ९ १५

विज्जमाण १८ २७

विज्जा (विद्या) ६ १०

१२ १३, १४

१५ ७

१८ २२, २४, ३०,

३१

२० २२

२३ २, ६

२५ १८

विज्जा

(विदित्वा) ९ ४९

विज्जु १८ १३

२२ ७

३६ ११०, २०६

विज्जम *

-विज्जमविज्ज १ ४१

विज्जमाय *

-विज्जमायइ २९ सू० ६१

विज्जमाविय २३ ५०

विट्ठा १ ५

विडविय	१३	१६
विणइत्ता	२६	सू० ५
विणइत्तु	१४	२८
विणय(अ)	१	१, ६, ७,
		२३
	१७	१, ४
	१८	८, २३
	२८	२५
	२६	सू० ५, ६०
	३०	३०, ३२
	३४	२७
विणयसुय	१	
विणस्स *		
-विणस्सइ	२६	सू० ६०
-विणस्सउ	१२	१६
विणा	१३	७
	२८	३०
विणास	३२	२४, ३७, ५०,
		६३, ७६, ८६
विणासण	२२	१८
	३५	१२
विणिघाय	२०	४३
विणिच्छय(अ)	२३	२५, ८८
विणियट्ट *		
-विणियट्टन्ति	६	६२
	१६	६६
	२२	४६

विणियट्टणया	२६	सू० १, ३३
विणिवाड *		
-विणिवाड्यन्ति	१२	२४
विणिहण *		
-विणिहन्नेज्जा	२	१७
-विणिहम्मन्ति	३	६
विणी *		
-विणएज्ज	४	१२
	५	३१
विणीय	१	२
	१८	२१
	३४	२७
विणोयण	३२	१०५
वित्तिगिच्छा	१६	३ से १२
वित्तिमिर	२६	सू० ७२
वित्त(वित्त)	१	४४
	४	५
	५	१०
	७	८
	१६	८७
वित्त(वित्त)	१२	१६
वित्तास *		
-वित्तासए	२	२०
वित्ति	१६	३३
वित्थर	२०	५३
वित्थारखइ	२८	१६, २४

वित्थिण्ण	२४	१८
	३६	५८
विदिताण	६	८
विदेह	१८	४५
विद्ध	३२	३
विद्धंस *		
-विद्धंसइ	१०	२७
विद्धंस *		
-विद्धंसे	११	२४
विनिम्मुक्क	१८	५३
	२५	३२
विन्ध *		
-विन्धइ	२७	४
विज्ञाण	२३	३१
	३६	२६२
विन्नाय	२३	१४
विन्नेअ	३६	१५
विपक्ख	१४	१३
विपरिधाव *		
-विपरिधावइ	२३	७०
विप्प	१४	६
	२५	१,७
विप्पओग	१३	८
विप्पच्चअ	२३	२४, ३०
विप्पजहणा	२६	सू० ७४
विप्पजहा *		
-विप्पजहे	८	४, १६

विप्पजहिता	२६	सू० ७४
विप्पमुंच *		
-विप्पमुच्चइ	२४	२७
	२५	३६
	३०	३७
	३१	२१
विप्पमुक्क	१	१
	६	१६
	११	१
	१५	१६
	२०	६०
	२१	२४
	३२	११०
विप्परियास	२०	४६
विप्पलाव	१३	३३
विप्पसन्न	५	१८
विप्पसीअ *		
-विप्पसीएज्ज	५	३०
विप्फुरंत	१६	५४
विभन्ति	३६	४७
विभय *		
-विभयन्ति	१३	२३
विभाग	२८	१३
	३६	११, ७८,
		१११, १२०,
		१५८, १७३,
		१८२, १८६,
		२१७

विभावण	२६	३६
विभिन्न	१६	५५
	३२	६३
विभूसा	१६	६
विभूसाणुवाइ	१६	सू० ११
विभूसावत्ति	१६	सू० ११
विभूसिअ	१६	सू० ११
	२२	६
	३२	१६
विमग्ग *		
-विमग्गहा	१२	३८
विमण	१२	३०
विमल	१२	४६, ४७
	२०	५८
	२३	७६
विमाण	१४	१
विमुच्च *		
-विमुच्चई	३२	३०, ४३, ५६, ६६, ८२, ८५
	३५	२०
विमोक्खण	८	३
	१४	४
	१६	८५
	२५	१०
	२६	१, १०, २१, ३८, ४१, ४६, ४९

विमोय *		
-विमोयन्ति	२०	२३ से २७, ३०
विमोयणया	२६	सू० ७१
विमोह	५	२६
विम्हअ	२०	५, १३
विम्हावेत	३६	२६३
वियक्खण	२१	१६
	२६	११, १७
वियड	२	४
विययपक्खि	३६	१८८
वियर *		
-वियरिज्जइ	१२	१०
वियाण *		
-वियाणह	७	१५
	१४	२३
-वियाणाइ	२७	१२
-वियाणासि	२५	१२
-वियाणाहि	४	१
-वियाणिज्जा	३५	२
वियाणमाण	१२	३३
वियाणित्ता	१४	५०
वियाणिया	७	२२
	१६	६८
	३३	२५
	३४	६१

२६०

परिशिष्ट-२

वियाणेत्ता	२५	२२	वियाहिय	३६	१७६, १८२,
वियार	३२	१०४			१८४, १८६,
वियाहिय	६	१७			१६६ से
	२४	३, १६			१६८, २०१,
	२६	५२			२०६, २१२,
	२८	१५			२२२, २२३,
	३०	१२, १४, २६,			२४४, २४५,
		३२			२४८
	३२	१११	विरल	३	१५
	३३	१०, १५, २०,		३०	२
		२५		३५	१३
	३६	२, ८, ६,	विरह	१६	२५, २८
		१३, १४, १७,		२६	सू० ६
		४७, ५६, ६१,		३१	२
		६८, ७२, ७७,			
		८६, ९३,	विरज्ज *		
		१००, १०६,	-विरज्जइ	२६	सू० ३, ४, ४६
		१०६, ११०,	विरज्जमाण	२६	सू० ३, ७
		११३, ११६,		३२	१०६
		१३०, १३२,	विरत्त	१३	१७, ३५
		१३४, १३६,		१४	४
		१४१, १४३,		२५	४१
		१५१, १५३,		३२	३४, ४७, ६०,
		१५५ १५८,			७३, ८६, ९६
		१६० १६७	विरम *		
		१७३, १७५,	-विरमेज्जा	२६	१६

विरय	२	६, ४२	विव	२०	४७, ५०
	१२	६		३२	५०
	१५	२	विवच्चास	२०	३
	२०	६०	विवज्ज *		
	२१	२०, २१	-विवज्जए	१६	२, ४, ५
विरली(दे०)	३६	१४७	विवज्जण	१६	२६, २७, २८
विराग	३२	२६, ३६, ५२, ६५, ७८, ६१		३०	२६
				३२	२, ३
विराय			विवज्जयंत	३२	५
-विरायड	११	१५, १६	विवज्जास	२०	४६
विराहभ	२६	३०	विवज्जिअ	१६	२०
विराहणा	२	३४		३०	२८
विराहिय	३६	२५६	विवज्जित्ता	१	३१
विराहेत्तु	२०	४६, ५०		२४	८
विरिय	६	६	विवड		
विह्द *			-विवडड	१०	२७
-विह्दन्ति	१२	१३	विवट्टण	१६	२, ७
विरेयण	१५	८		३५	५
विल्यंत	१६	५८	विवट्ठण	१६	६८
विश्विय	१३	१६	विवन्न	१४	३०
	१६	सू० ७	विवर	२०	२०
विश्रान	३२	१४	विवाह्य	१६	५६, ६३
विस्त	१६	५८	विवाग	१०	४
विश्वग	२०	२६		१३	३, ८
विश्वेय	७	५		१८	११
विश्व	१६	५७, ६५, ६६		३०	२०, ३३, ४६

२६२

पारशिष्ट-२

विवाग	३२	५६, ७२, ८५, ६८	विस	२०	४४
				२३	४५, ४६
				३६	२६७
विवागय	२	४१	विसअ(य)	७	६
विवाद	१७	१२		१६	६
विवाह	२२	१७		२०	४४
विविञ्च	६	१४		२६	सू० ३
विवित्त	१६	सू० ३		३२	२१
	१६	१			
	२१	२२	विसज्जइत्ताणं	१८	८
	२६	सू० १, ३२	विसन्न(ण)	६	१०
	३०	२८		८	५
	३२	१२		१२	३०
विवित्तवास	३२	१६	विसप्प	३५	१२
विविह	१०	२७	विसम	५	१४, १६
	१५	४, ८, ६, ११, १२, १४, १५		१०	३३
	२१	१८	विसारंत	२२	३४
	३२	१०२	विसारय(अ)	२०	२२
	३४	१४		२७	१
विवेग	४	१०	विसाल	१३	२
	३२	४		१४	३
विस	६	५३	विसाल्लिस	३	१४
	१६	१३	विसीय *		६
	१७	२०	-विसीयई	४	५
	१६	११	विसील	११	१६
			विसुद्ध	३	४६, ४७
				१२	

विमुद्ध	२६	सू० २,१३,४३, सू० ७२	विहग	२०	६०
विमुद्धपन्न	८	२०	विहन्न *		
विमुद्धा	१०	२७	-विहन्नइ	२	२२
विसेसं	५	३०	-विहन्नसि	६	५१
	१२	३७	-विहन्नेज्जा	२	सू० १ से ३
	१८	५१		२	२२,४६
	२३	१३,२४,३०	विहम्माण	२७	३
	३०	२३	विहर *		
	३२	१०३	-विहरइ	२०	६०
विसोग	३२	३४,४७,६०, ७३,८६,९९		२७	१७
विसोह *				२९	सू० १२,१३,३१, सू० ३४,६१
-विसोहए	२४	११,१२	-विहरए	२६	३५
-विसोहेइ	२६	सू० ५,१३,१७, सू० २१,५३,५७ से ५६	-विहरसी	२३	४०
			-विहरामि	२३	३८,४१,४३
			-विहरिंसु	२३	६
			-विहरिस्सामि	१४	४६
विसोहण	२६	२५	-विहरेज्ज	१७	१
विसोहि	१२	३८		२१	१४
	२६	सू० २,१०,१७, सू० १८,५१		३२	५
			-विहरेज्जा	१६	सू० १ से ३, ५,७
विसोहिया	१०	३२		३५	१६
विसोहेत्ता	२६	सू० ५८,५९	विहरय	२	४३
विस्समिय	३	२	विहरित्ता	१६	सू० ५
विस्सुअ	१६	२,९७	विहाण	३६	७४,८३,९१, १०५,११६, ५
	२३	५			

विहाण	३६	१२५, १३५, १४४, १५४, १६६, १७८, १८७, १९४, २०३, २४७
-------	----	--

विहार	१४	४, ७, १७, ३३
-------	----	-----------------

	२६	३५
--	----	----

	३०	१७
--	----	----

विहारजत्ता	२०	२
------------	----	---

विहारि	१४	४४
--------	----	----

विहि	२४	१३
------	----	----

	२८	२४
--	----	----

विहिंस	४	१
--------	---	---

विहिंस *		
----------	--	--

-विहिंसइ	५	८
----------	---	---

विहिंसग	७	१०
---------	---	----

विहूण		
-------	--	--

-विहूणाहि	१०	३
-----------	----	---

विहूण	१२	१४
-------	----	----

	१४	३०
--	----	----

	२०	४८
--	----	----

	२८	२६
--	----	----

विहेड्यंत	१२	३६
-----------	----	----

वीळ *		
-------	--	--

-वीएज्जा	२	६
----------	---	---

वीडवय *

-वीडवयइ	२६	सू० २३, ३३
---------	----	------------

वीदसय	१६	६५
-------	----	----

वीयराराग	२६	सू० ३७
----------	----	--------

	३२	१६, २२, ३५,
--	----	-------------

		४८, ६१, ७४,
--	--	-------------

		८७, १००,
--	--	----------

		१०८
--	--	-----

	३४	३२
--	----	----

	३५	२१
--	----	----

वीयरारागया	२६	सू० १, ४६
------------	----	-----------

वीरजाय	२०	४०
--------	----	----

वीरासण	३०	२७
--------	----	----

वीरिय	३	१, ६, ११
-------	---	----------

	२८	११
--	----	----

	३३	१५
--	----	----

वीस	३६	५१, ५४,
-----	----	---------

		२३१
--	--	-----

वीसइ	३३	२३
------	----	----

	३६	२३२
--	----	-----

वीसस *

-वीससे	४	६
--------	---	---

वीससणिज्ज	२६	सू० ४३
-----------	----	--------

वुड्य	१८	२६
-------	----	----

वुककस	८	१२
-------	---	----

वुग्गह	१७	१२
--------	----	----

वृत्त *			वृहत्ता	४	७
वृत्त	१	२, ३		२०	४३
वृत्त	८	६	वेअ	२	३७
११	४ से ६, ६,			२७	३
	१०, १३		वेइय	१६	४७, ४८, ७१,
१७	३ से १६				७२, ७४
२३	७३			२६	सू० ७२
वृत्त	८	१३	वेइया	२६	२६
वृत्त	१८	२१	वेग	२३	६५, ६६, ६८
वृत्त	२३	६५, ६८		२७	६
वृत्त	१२	३६	वेजयंत	३६	२१५
वृत्त	१४	२२, २३	वेजचित्ता	१५	८
	२०	१३	वेमाणिय	३४	५१
	२३	३७, ४७, ४८,		३६	२०४, २०५,
		५२, ५३, ६२,			२०६, २१६
		६७, ७२, ७३,	वेमाया	७	२०
		७७, ८२	वेय	१२	१५
२४	५, ६, २६			१४	६, १२
२५	१६			२५	११, १४, १६,
२८	३४				२८
२९	सू० ८		वेयकाल	४	४
३३	८		वेयणा	२	३२, ३५
३६	४, २०४			३	६
वृत्त	५	१८, २९		५	१२
वृत्त *				१६	३१, ४५, ४७,
वृत्त	१०	३६			४८, ७१, ७३,
					७४

वेयणा	२०	१६ से २१, वेस	१	परिमितः
		३१ ने ३३	वेसमण	२२ २८.२६
	२३	८१	वेसालिज	४१
	२६	३२	वेस्त	१७
वेयणिज्ज	२६	सू० ४२, ७३	वोक्कस	१८
	३३	२, २०	वोच्चत्त	४
वेयणीय	३३	७	वोच्छिद	५
वेयरणी	१६	५६	-वोच्छंद	१०
	२०	३६	-वोच्छिदड	२८
वेयविअ	१४	८		सू० ३, २१, ३६,
	१५	२		सू० ४६
वेयविउ	२५	७, ३६	वोच्छिदिता	२६
वेयवी	२५	४	वोच्छ	सू० ३६
वेयस	२५	१६	-वुच्छामि	३०
वेयाल	२०	४४	-वोच्छामि	२४
वेयावच्च	२६	६, १०, ३२		३३
	२६	सू० १, ४४		३४
	३०	३०, ३३	वोच्छेय	२६
वेयावडिय	१२	२४, ३२	वोच्छेयण	२६
वेर	४	२	वोदाण	२६
	६	६	वोसट्टकाय	१२
वेरत्तिय	२६	२०		३५
रुल्लिय	२०	४२	वोसिर	१६
	३४	५	-वोसिरे	२४
	३६	७६	व्व	३
माण	२२	३५		१२
				५
				१०

व्व	७	६	स(स्व)	१६	५३, ६६
	१४	४८		२१	३
	१८	५१		३२	१०७
	१९	३५, ३६, ८६	स (सत्)	५	२६
	२१	१६		१२	२६
	२२	४४		२१	२३
	२६	सू० १३		२२	१२
स(स)	६	४	सञ्ज	७	१
	१४	३७, ४६		१७	१८
	१९	२०, ८८		२६	सू० ३४
	२०	१६, ५५, ५८		३२	२५, ३८, ५१,
	२२	१८, २१			६४, ७७, ६०
	२५	१३		३६	८२, ६०,
	२६	२०			१०४, ११५,
	२६	सू० ६०			१२४, १५३,
	३२	१, ६, १६,			१६८, १७७,
		२३, ३६, ४६,			२४६
		६२, ७५, ८८	सङ्ग	५	३
	३५	४		७	१८
	३६	१८५, १६२,		२०	३२
		२१६, २२१,	सउण	१६	६५
		२२३, २२५,	संकट्टाण	१६	१४
		२५७, २५९	सकप्प	६	५१
स(स्व)	४	३		३२	१०७
	६	३, ४	संकप्प *		
	१४	२, ५	संकप्पाए	३५	७

२६८

संकल्प	३२	१०७
संकमाण	१४	४७
संकर	१२	६
संकहा	१६	३
संका	२	२१
	१६	सू० ३ से १२
	१६	१४
संकास	२	३
	५	२७
	१६	५०
	३४	४ से ६
	३६	६१
संक्रिय	२६	२७
संकिलिस्स *		
-संकिलिस्सद्व	२६	सू० २५, ३५, ३६
संकुल	६	७
संख	११	१५, २१
	३४	६
	३६	६१, १२८
संखभ	३२	२
संखणग	३६	१२८
संखय	४	१३
संखवियाण	२०	५२
संखा	२८	१३
	३६	१६७
संखाईय	१०	५ से ८
	३४	३३

संखिज्ज	१०	१० से १२
संखिज्जकाल	३६	१३३, १४२,
		१५२
सखेव	२८	१६
संखेवई	२८	२६
सग	२	१६
	३	६
	१३	२७
	१८	५३
	२१	११
	३२	१८
	३५	२
संगह	२५	२२
	३३	१८
संगहिय	२७	१४
संगाम	२	१०
	६	२२, ३४
	२१	१७
संगोफ	२२	३५
संघ	१३	१२
	२३	३, ७, १०,
		१५
	३६	२६५
संघयण	२२	६
संघाडि	५	२१
संघायणिज्ज	२६	सू० ६०

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

२६६

संचय	१०	३०	संजय(य)(संयत) १७	६
	१६	३०		३०
	२०	१८		५
	२१	२३		१,४,५,८,
				११,४३,५६
सचिक्ख *				१३,१५,२०
सचिक्खे	२	३३	२१	३५,४६
संचिक्खमाण	१४	३२	२२	१०
सचिण *			२३	४,१०
सचिणह	५	१०	२४	६
सचिणु	३	१३	३०	३,७,६
सचिणिया	७	८	३५	१८
सचिन्तण	३२	३	सजहज्ज	१
सचिय	३०	६	सजम	१६
सच्छन्न	२०	३		१,२०
सजय(सजय)	१८	१,१०,१६,		२०,२८
		२२		४०
संजय(य)(सयत) १		१६,३४,३५	१२	४४
	२	४,२७,३०,	१३	३५
		३४	१४	५
	५	१८,२६	१६	सू० १ से ३
	६	१५	१६	५,६,३७,
	१०	३६		७७
	११	६	२०	५२
	१२	२,६,२०,	२२	४३
		२२,४०,४५	२५	४३
	१५	५	२६	३२

मंजम	२८	३६	संठाणओ	३६	१५,२२ से
	२६	सू० १,२७,४०			४१,४३ मं
		सू० ५४			४५,६१,
	३१	२			१०५,११६,
	३६	१,२४६			१२५,१३५,
संजममाण	१८	२६			१४४,१५४,
मंजल *					१६६,१७८,
-मंजले	२	२४,२६			१८७,१९४,
मंजण	२६	सू० ५			२०३,२४७
संजा *			सटिय	३६	५७,६०
-मजायई	३२	१०७	संडासतुण्ड	१६	५८
संजुल	१८	१७	संत(सत्)	१	२२
	२६	७		१६	७
	२८	१		२०	१२
संजुय	१२	३४		२२	३२
	१४	२६		२३	५३
	२२	१,३,५		२५	६
सजोएमाण	२६	सू० ६१		३२	३४,४७,६०,
संजाग	१	१			७३,८६,९६
	८	२	संत(श्रान्त)	१८	३
	११	१	संतअ	२	३
	२८	१३	संतइ	३६	६,१२,७६,
	२६	सू० ४			८७,१०१,
संठाण	१६	४			११२,१२१,
	२८	२३			१३१,१४०,
	३६	२१,४२,४६,			१५०,१५६,
		८३			

उत्तरजम्भ्यण शब्द-सूची

सतइ	३६	१७४, १८३, १६०, १६६, २१८	संधार	१७	७
				२३	४, ८
				२५	३
संतत्त	१४	१०	संधारव	१७	१४
संतस्तर	२३	१३, २६	संथुय	१	४६
सतस *				१५	१०
-सतसन्ति	५	२६		२३	८६
-सतसे	२	११	सदिट्ट	२५	१६
-सतसेज्जा	२१	१४	सघाव *		
-सतस्सइ	५	१६	-सघावड	२०	४६
सताण	१४	४१	सधि	१	२६
सति	५	२८	सधिमुह	४	३
	१२	४३ से ४६	सनिनाय	२२	१२
	१८	३८	सनिभ	१६	१३
सतिकर	१८	३८		२२	३०
सतिमग्ग	१०	३६		३४	४, ६, ८
सतुट्ट	३५	१६	सनिरुद्ध	७	२४
सतुस्स *			संनिवेसणया	२६	सू० १, २६
-सतुस्सइ	२६	सू० ३४	संपइ	१०	३१
-सतुस्से	८	१६	संपगर *		
संतोसीभाव	२६	सू० ७१	-संगरेइ	२१	१६
सथव	१५	१, १०	संपगाढ	२०	४५
	१६	३, ११	संपज्जलिय	२३	५०
	२१	२१	संपडिल्लेह *		
	२६	५१	-संपडिल्लेहए	२६	४२
	२८	२८			

३०२

संपडिवज्ज *

-संपडिवज्जइ ५ ७

२३ १६

संपडिवज्जेत्ता २६ ५१

संपडिवाइय २२ ४६

संपणाम *

-संपणामए २३ १७

संपत्त ५ ३२

१६ ६०

२२ १५, २३

२३ ८४

२६ १६

३५ २१

३६ ६६

संपन्न १ २

२१ ६

२७ १७

२६ सू० १५

संपन्नया २६ सू० १, ४५, ४६,

सू० ६० से ६२

संपया २० १५

२५ १८

संपराज २० ४१

२८ ३२

संपाउण *

-संपाउणइ २६ सू० ६०

परिशिष्ट-२

-संपाउणेज्जसि ११

३२

संपाय १८

१३

सर्पिडिय १४

३१

संपीला ३२

२६, ३६, ५२,

६५, ७८, ९१

संपुन्न २२

७

संवद्ध १६

७१

सवाह ३०

१६

संवुद्ध १

४६

६ ६२

१६ ६६

२१ १०

२२ ४६

संवुद्धप्प २३

१

संभंत १८

७

संभर *

-संभरे १४

३३

संभव ६

१, ११

१६ १२

संभूय(अ)

१२ १

१३ ३, ११

२३ ४५

२५ १

संभोग

२६ सू० १, ३४

३२ २८, ४१, ५४,

६७, ८०, ९३

समञ	३६	२६८
समद्वयाण	१७	६
समुच्छ *		
-समुच्छइ	१४	८
समुच्छिम	३६	१६५, १६८
सरम्भ	२४	२१, २३, २५
सलव *		
-सलवे	१	२६
सलिह *		
-सलिहे	३६	२५०
सलीणया	३०	८
सलेहा	३६	२५१
सलोव	२४	१६, १७
संवञ्छर	३६	२५१, २५३ से २५५
सवट्ट	३०	१७
संवट्टगवात	३६	११६
संवट्ट *		
-संवट्टइ	२१	५
सवय *		
-समुवाय	१४	३७
संवर	६	२०
	१२	४२
	१६	सू० १ से ३
	२२	३६
	२८	१४, १७

संवर	२६	सू० ४०, ५६
	३३	२५
संवस *		
-संवसे	१०	५ से १४
संवसित्ताणं	१४	२६
सविग्ग	२१	६
संविद *		
-संविदे	७	२२, २४
संवुड	१	३५, ४७
	३	११
	५	२५
	१७	२०
सवेग	१८	१८
	२१	१०
	२६	सू० १, २
संसंगी	१	६
संसत्त	१६	सू० ३
संसय	१	४७
	६	२६
	२३	२८, ३४, ३६, ४४, ४६, ५४, ५६, ६४, ६६, ७४, ७६, ८५, ८६
	२५	१५, ३४

संसार *

-ससरइ

संसार

संसारत्थ

१०	१५
३	२,५
४	४
६	१,१२
८	१,१५
१०	१५
१४	२,४,१३,
	१६,४७
१६	१५
२०	३१
२२	३१
२३	७३,७८
२४	२७
२५	३८,३९
२६	१,५२
२७	२
२९	सू० ३,६,२३,
	सू० ३३,६०
३०	३७
३१	१,२१
३२	१७
३३	१
३६	६७
३६	४८,६८,
	२४८

सकाम	५	३
सकाममरण	५	२,१७,३२
सक्क	६	६,५६,६१
	११	२३
	१८	४४
सक्क *		
-सक्केइ	४	१०
सक्कर	३४	१५
सक्करा	३६	७३
सक्कराभा	३६	१५६
सक्कार	३५	१८
सक्कार-पुक्कार	२	सू० ३
सक्किय	१५	५
सक्ख	१४	२७
सक्खं	२	४२
	६	६१
	१२	३७
	१८	४४
	२२	४१
सग	२०	२६,२७
सगर	१८	३५
सगास	१२	१६,४५
सचेल	२	१३
सचेलअ	२	१२
सच्च	६	२
	७	२०

उत्तररज्जमयण-सूची

सत्र	६	२१	सङ्घा	१४	६
	११	५	सङ्घि	५	२३, ३१
	१३	६	सढ	५	६
	१८	२४, ५२		७	५, १७
	१६	२६		२७	५
	२१	१२		३४	२३
	२८	२५	सण	३४	८
	२६	सू० १, ५१	सणकुमार	१८	३७
सत्रपरक्कम	१८	२४, ४८		३६	२१०, २२४
सच्चा	२४	२०, २२	सणप्यय	३६	१८०
सच्चामोसा	२४	२०, २२	सणाह	२०	१६, ५५
सजोगि	२६	सू० ७२	सणह	३६	७१
सज्ज *			सत्त(शक्त)	६	११
-सज्जइ	२५	२०	सत्त (ससन्)	१०	१३
-सज्जंति	३५	२		२६	सू० २३
सज्जाम	२६	६, १०		३०	२५
	२६	सू० १, १६		३१	६
	३०	३०, ३४		३६	८८, १५६,
सज्जाम	१८	४			२२४ से २२६
	२४	८	सत्त(सत्त्व)	१४	१८, ४३
	२५	१८		२६	सू० १८, ४३
	२६	१२, १८, १६,		३२	१११
		२१, ३६, ४३,	सत्त(सक्त)	१४	४५
		४४		३२	२६, ४२, ५५,
	३२	३			६८, ८१, ९४,
सङ्घिहायण	११	१८			१०३

३०६

सत्तम	२६	३	सह	२१	परिशिष्ट
	३६	१६६, २४०		२८	१४
सत्तरत्त	२६	१४		२९	१२
सत्तरस	३६	१६४, १६५,		३२	सू० ४०, ४६, ६
		२२८, २२९			३५ से ४७
सत्तरि	३३	२१	सद्वह		१०६
सत्तविह	३३	११	सद्वहाह	२८	१८, १९, २७
	३६	७१, १५६	सद्वहे	३	११
सत्तवीस	३६	२३८		२८	३५
सत्तवीसइ	३६	२३९	सद्वहंत	२८	१५
सत्तहा	३६	१५७	सद्वहंतया	१०	२०
सत्तावीसइ	३४	२०	सद्वहणा	१०	१९
सत्तु	१९	२५		२८	२८
	२३	३६ से ३८	सद्वहिऊण	३६	२४९
	३२	१२	सद्वहिता	२९	सू० १
सत्थ(शास्त्र)	२०	२०, ४४	सद्धम	३	१९
	३५	१२	सद्धा	३	१, ९, १०
	३६	२६७		९	२०, ५९
सत्थ(शास्त्र)	२८	२०, ४४		१२	१२
सत्थ(सार्थ)	३०	१७		१४	२८
सत्थकुसल	२०	२२	सद्धि	१	२६
सदावरी	३६	१३८		५	७
सद्	९	७		१६	सू० ५
	१५	१४	सन्ना	३१	६
	१६	सू० ५, १२	सन्नाइपिंड	१७	१९
	१६	१०	सन्निअ(य)	१०	१० से १२
				३६	६६, ६७

मन्निओग	३२	२८,४१,५४,	मन्नाव	२८	१५
		६७,८०,६३		२६	मू० १.४२
मन्निनाअ	२२	१२	सन्निभन्तर	१६	८८
सन्निगद्द	७	२४	सन्निभूय	२३	३३
	२२	१४,१६	मन्नाग्याअ	१२	३०
	३०	५	मन्निक्कुय	१५	
मन्निवेस	३०	१७	मम	२	१०
सन्निमेज्जा	१६	सू० ५		५	१४
मन्निहि	६	१५		७	२३
	१६	३०		६	४८
मपज्जवसिअ	३६	६,१२,७६.		११	३१
		८७,१०१,		१६	३
		११२,१२१,		१६	८८,८०
		१३१,१४०,		२०	२१
		१५०,१५६,		२३	१८
		१७४,१८३,		२४	१७
		१६०,१६६,		२६	मू० ३७
		२१८		३२	५,२२,३५.
मपग्गिरम	३०	१३			४८,६१,७६
मपुण्ण	५	१८			८७
मपेहाण	७	१६		३४	५,६
मम	३२	५०		३५	१०,१३
मग्गि	३०	२६		२६	मू० ७२,८६
ममन्त	१३	१०	ममअ	३६	७,६ ५१.
	१४	२५			५,४
ममन्त	१६	५४			
	३१	१५	ममन्तकामन्त	१६	३६

समइक्कमिता	३२	१८	समय(समक)	१	३५
समत्तओ	२७	१३	समय(समय)	१०	१ से ३६
समग्ग	८	३		३४	३३, ४६, ५०,
समचउरंस	२२	६			५४, ५५, ५८,
समज्जिय	३०	१, ४			५६
समण	२	सू० १ से ३		३६	१३, १४
	२	२७	समयखेत्तिय	३६	७
	४	११	समया	४	१०
	८	७, १३		१६	२५
	९	३८		२५	३०
	१२	६		३२	१०१, १०७
	१३	१२	समर	१	२६
	१४	१७	समाइण्ण	५	२६
	१६	५	समाउत्त	२५	३३
	२५	२६, ३०		३४	२२, २४, २६,
	२६	सू० १, ७४			२८, ३०, ३२
	३२	४, १४, २१	समाउल्ल	२२	३, ७, १५
	३६	१	समागव	२७	१५
समणत्तण	१६	३६ से ४१	समागम	२३	१४, २०, ८८
समत्त	२६	सू० ४३	समागम्म	२३	३१
समत्थ	२५	८, १२, १५,	समागय	१२	१६, २८, ३३
		३३, ३७		१३	३
समन्नागय	२६	सू० ४३		२३	१६
समप्पिय	२०	१५	समाण(समान)	३२	१८
समभिद्दव *			समाणं(सह)	१४	३३
समभिद्दवन्ति	३२	१०	समादाय	६	१५

मन्त्रिका *			मन्त्रिका	६	२३
मन्त्रिका	२३	२५		११	३१
मन्त्रिका	१	१०		२१	१, २, ४
	१५	१, १५		३६	१, २, ५, ६
मन्त्रिका	५	२७	मन्त्रिका	२१	१, २, २४
	१४	१	मन्त्रिका	२१	
	१८	४६	मन्त्रिका	२७	३, ३६
	२०	६०	मन्त्रिका	७	१
मन्त्रिका	६	१६	मन्त्रिका	२५	८, १२, १५
	८	६	मन्त्रिका *		
	१६	८८	मन्त्रिका	६	१३
मन्त्रिका	६	४	मन्त्रिका		
मन्त्रिका	१६	५६	मन्त्रिका	१६	३, ३, १
	२७	४	मन्त्रिका	१६	७, ८, १५
				२३	१०
मन्त्रिका	७	४	मन्त्रिका *		
मन्त्रिका	२३	८८	मन्त्रिका	२६	३, ७, २
मन्त्रिका	३६	१८८	मन्त्रिका	३५	१६
मन्त्रिका			मन्त्रिका	२३	८६
मन्त्रिका	२६	३, ७, २	मन्त्रिका	२५	६
मन्त्रिका	१	१०	मन्त्रिका	३०	१११
मन्त्रिका	१६	८०	मन्त्रिका *		
	२६	८, ३१	मन्त्रिका	३२	२, २४, २४
मन्त्रिका	२२	२८	मन्त्रिका	५	३२
मन्त्रिका	२५	३४	मन्त्रिका	२३	४६
मन्त्रिका	३६	६०	मन्त्रिका	२२	२१

सम्बुक्कावट्ट	३०	१६	सम्मुत्त	२८	१७
सम्म *			सम्मच्छिन्न	३६	१७०
सम्मज्ज	१	३७	सम्मूढ	३	६
सम्म	१४	५०	सय (दान)	३	१५
	१७	५		७	१३
	१८	२७, ३२		१८	२८
	१९	६४		२९	सू० ८१
	२०	३६		३६	५१, ५३, ५४,
	२३	१६, ५८			५८
	२४	२७	सय (स्वक)	७	१
	२६	सू० १, १७		३६	८२, ८०,
	३०	३१, ३७			१०४, ११५,
	३६	१			१२४, १५३,
सम्मग	२३	६३, ८६			१६८, १७७,
सम्म	१४	२६			२४६
	२८	१५, २१, २२,	सय	१६	२२
		२८, २९		१३	२३
	२९	सू० ५७		२२	२५, ३०
	३३	६		२६	५, २६
सम्मत्तपरवक्कम	२६			२८	१८
	२९	सू० १, ७४		३५	८
सम्महत्तण	३६	२५८	सयंभू-ग्मण	११	३०
सम्महमाण	१७	६	सगच्छी	६	१८
सम्महा	२६	२६	सयण (दायन)	१	१८
सम्माण	३५	१८		७	८
सम्मामिच्छत्त	३३	६		१५	५, ११

मन्त्रा(मन्त्र) १६

मू० ३

मन्त्र(मन्त्र)

मन्त्र(मन्त्र)

२६

मू० १,३२

१६

५०,५१

३०

२८,३६

१

४४

मन्त्रा(मन्त्र)

११

१६,१०

१२

२८,३३

२३

३२

१४

३

मन्त्राण

२

३४

१८

८

मन्त्र

२१

१६

२०

४४

२३

५१

मन्त्र

२३

६५,६८

३२

११०

मन्त्रितु

३४

३२

मन्त्रा

१

८,२०,२४

६

२

६

४२,४४

मन्त्रि

१४

५

११

६,२१

मन्त्रि

३३

१६,२१,२३

१५

४

मन्त्रि

२

२४

१६

६

६

३

१६

मू० १ मे ३

२

३७

१७

२१

४

१३

२०

४६

४

६,६,१३

२४

१४

६

११

२५

१६

१२

८,४४

३१

२१

१४

१८

३२

१५

१६

मू० ११

१०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

६६

६७

६८

६९

७०

७१

७२

७३

७४

७५

७६

७७

७८

७९

८०

८१

८२

८३

८४

८५

८६

८७

८८

८९

९०

९१

९२

९३

९४

९५

९६

९७

९८

९९

१००

१०१

१०२

१०३

१०४

१०५

१०६

१०७

१०८

१०९

११०

१११

११२

११३

११४

११५

११६

११७

११८

११९

१२०

१२१

१२२

१२३

१२४

१२५

१२६

१२७

१२८

१२९

१३०

१३१

१३२

१३३

१३४

१३५

१३६

१३७

१३८

१३९

१४०

१४१

१४२

१४३

१४४

१४५

१४६

१४७

१४८

१४९

१५०

१५१

१५२

१५३

१५४

१५५

१५६

१५७

१५८

१५९

१६०

१६१

१६२

१६३

१६४

१६५

१६६

१६७

१६८

१६९

१७०

१७१

१७२

१७३

१७४

१७५

१७६

१७७

१७८

१७९

१८०

१८१

१८२

१८३

१८४

१८५

१८६

१८७

१८८

१८९

१९०

१९१

१९२

१९३

१९४

१९५

१९६

१९७

१९८

१९९

२००

२०१

२०२

२०३

२०४

२०५

२०६

२०७

२०८

२०९

२१०

२११

२१२

२१३

२१४

२१५

सरीर्य(ग)	१०	२१ से २७	सव्वत्थ(सर्वार्थ)	१८	३०
	१३	२५	सव्वत्थ(सर्वत्र)	२१	१५
	२३	४०		३६	१३०, १३६,
सल्लिग	३६	४६, ५२			१७३, १८२
सल्लिल	११	२८	सव्वदंसि	१५	२, १५
सल्लोगया	५	२४	सव्वन्तू	२३	१, ७८
सल्ल	६	५३	सव्वभक्खि	२०	४७
	१६	६१	सव्वसो	१	४
	२६	सू० ६		६	११
	३१	४		२३	४१, ४६, -
सवण	३	६		२४	२६
सवियार	३०	१२	ससत्ता	२१	३
सवीसेस	७	२१	ससमय	२६	सू० ६०
सव्व	२	२८	ससरक्ख	१७	१४
सव्वओ	६	६	सह(सह)	१	६
	६	१६		६	४६
	१४	२१		१२	१८
	१५	१६		१४	६, १६, ५३
	१८	२		१६	३
	१९	६३		२१	२१
	२१	२४	सह *		
	२२	११	-सहई	३१	५
	३५	१२	-सहेज्जा	२१	१६
सव्वकांमिय	२५	८	सह(स्व)	२८	१७
सव्वट्ठ	३६	५७, २४४	सहसंबुद्ध	६	२
सव्वट्ठसिद्धा	३६	२१६	सहसा	१६	६

३१४

परिशिष्ट-

सहस्र	७	११,१२	साईय	३६	१०१,११२,
	६	३४,४०			१२१,१३१,
	१८	४३			१४०,१५०,
	१६	२४			१५६,१७४,
	२२	५			१८३,१९०,
	२३	३५			१९६,२१८
	३४	४१,४८,५३	साउ	३२	१०
	३६	५८,८०,८८,	सागडिय	५	१४
		१०२,१२२	सागपत्त	३४	१८
सहस्रसकल	११	२३	सागर	१६	३६,४२
सहस्रसो	३६	८३,६१,		२२	३१
		१०५,११६,		२५	३८
		१२५,१३५,		२६	१,५२
		१४४,१५४,		३१	१
		१६६,१७८,		३४	३४,३८,३९,
		१८७,१९४,			४३,५२
		२०३,२४७		३६	१६१,१६२,
सहस्रार	३६	२११,२२६			१६४ से १६६,
सहस्रिय	३६	१६०,२१६,			२१६,२२२ से
		२२०			२४३
सहाय	२६	सू० १,४०	सागरंगम	११	२८
	३२	४,५,१०४	सागरंत	१८	३५,४०
सहाव	३६	६०,२६३	सागरोवम	३३	२२
सहिय	१५	१,५,१५		३६	१६० से १६६,
साइम	१५	११,१२			२२४,२२६ से
साईय	३६	६,१२,६५,			२३०,२३२,
		७६,८७,			

सागरोवम	३६	२३४ से २३६, २४२, २४४
सागरोवउत्त	२६	सू० ७४
साण	१	६
साम	१६	५४
सामण्ण	२	१६, ३३
	६	६१
	१८	४६
	१६	८, २४, ३४, ७५, ६५
	२०	८
	२२	४५, ४७
	३६	२५०
सामाइय		
(सामाजिक)	११	२६
सामाइय(अ)		
(सामायिक)	२८	३२
	२६	सू० १, ६
सामाइयंग	५	२३
सामायारी	२६	
	२६	१, ४, ७, ५२
सामि	२	३८
सामुदाणिय	१७	१६
साय	२	८, ३६
	१६	७४

साय	२७	६
	२६	सू० ४
	३३	७
	३४	२३
	३६	२६४
सायं	१२	३६
सार	१४	३०, ३७
	१६	२२
	२०	२४
सारइय	१०	२८
सारण	२६	६
सारहि	१६	१५
	२२	१५, १७, २०
	२७	१५
सारीर	१६	४५
	२३	८०
	२६	सू० ४, ४५
सालि	६	४६
सालिम	१२	३४
सावव	२१	१, २, ५
सावकखा	३०	६
सावज्ज	१	२५, ३६
	२१	१३
सावज्जजोग	२६	सू० ६
सावण	२६	१६
सावत्थि	२३	३, ७

सास		
(शिष्यमाण) १		३७
सास		
(शास्यमाण) १		३६
सासंत	१	३७
सासग	३६	७४
सासण	१४	५२
	१६	६३
सासय	१	४८
	३	२०
	६	२६
	१६	१७
	२३	८४
	३५	२१
सासयवाइय	४	६
साह *		
-साहसि	१३	२७
-साहेद	२६	सू० ५
साहण	२३	३१, ३३
साहम्मिय	२६	सू० १, ५
साहसिअ	२३	५५, ५८
	३४	२१
साहस्सिअ	३४	२४
साहस्सी	२२	२३
	२३	१६
साहा	१४	२६

साहारण	४	४
	२६	सू० ५८
साहारणसरीर	३६	६३, ६६
साहासिय	२३	५५, ५८
साहीण	१४	१६
साहु	१	३६
	५	२०
	८	६
	६	५७
	१२	३७
	१३	२७, ३४
	१६	७
	२०	४, १३
	२३	२८, ३४, ३६,
		४४, ४६, ५४,
		५६, ६४, ६६,
		७४, ७६, ८५
	२५	१५
	२६	४
	२७	१२
	३६	२६५
साहुवम्म	८	८
सिंग	११	१६
सिंगवेर	३६	६६
सिंगार	१६	६
सिंगिरीडी (दि०)	३६	१४७

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

सिंघाण	२४	१५
सिंच *		
-सिंचामि	२३	५१
सिंचलि	१६	५२
सिक्ख *		
-सिक्खए	२१	६
-सिक्खा	५	२४
	७	२०, २१
	११	३, १४
	२३	५८
-सिक्खेज्जा	१	८
सिक्खासील	११	४, ५
सिक्खत्ता	५	२८
सिक्खिय	४	८
सिज्जा	२३	४, ८
सिज्झ *		
-सिज्झइ	२६	सू० २, २६, ४२, सू० ५६, ६२, ७४, ५१, ५२, ५४ से ५६
-सिज्झई	३६	
-सिज्झन्ति	१६	१७
	२६	सू० १
-सिज्झते	३६	५३
-सिज्झस्सन्ति	१६	१७
सिट्ठ	१२	४२
सिद्धिल	४	६
	२६	सू० २३

सिणाण	२	६
	१२	४७
	१५	८
सिणायय	२५	३२
सिणेह	६	४
	८	२
	१०	२८
सित्त	३	१२
	२३	५१
सित्थ	३०	१५
सिद्ध	१	४८
	३	२०
	१२	११
	१६	१७
	१८	५३
	२०	१
	२६	५१
	२६	सू० ३६
	३३	१७, २४
	३६	४८, ४९, ५५, ५६, ६२ से ६४, २४८
सिद्धाङ्गुण	३१	२०
सिद्धि	६	५८
	१०	३५, ३७
	११	३२

३१८

परिशिष्ट-२

सिद्धि	१३	३५
	१६	६५
	२२	४८
	२३	८३
	२५	४३
	२६	सू० ३,५
	३६	६३, ६७
सिप्पि	१५	६
सिप्पीय	३६	१२८
सिया	६	४८
सिर	१८	५०
	१६	४६
	२०	५६
	२२	१०
	२३	८६
सिरिली (दे०)	३६	६७
सिरी	१८	५०
सिरीज	३४	१६
सिला	३६	७३
सिलोग	१५	६
	१६	सू० १२
सिव	१०	३५
	२३	८०, ८३
सिवा	२२	४
सिसुणाग	५	१०
सिस्त्रिली (दे०)	३६	६७

सिहा	१६	३६
सोओदग	२	४
सीय *		
-सीयन्ति	२०	३८
	२१	१७
सीय (अ)	१	२७
	२	६
	१५	४, १३
	१६	३१, ४८
	२१	१८
	३२	७६
	३६	२०
सीयअ	३६	३८
सीयच्छाय	६	६
सीयपिंड	८	१२
सीया(सीता)	११	२८
	३६	६१
सीया		
(शिबिका)	२२	२२, २३
सील	१	५, ७
	३	१४
	५	१६
	१३	१२, १७
	१४	५, ३५
	१७	३
	१६	५

सील	२१	११	सुअ	२८	२१
	२२	४०	सुइ(श्रुति)	३	१, ८, १०
	२३	५३, ८८		१०	१८, १६
	२७	१७	सुइ(शुचि)	१२	४२
	२६	सू० ५	सुइर	७	१८
	३६	२६३	सुए	२	३१
सीलवन्त	५	२६		१४	२७
	७	२१	सुंदर	१३	२४
	२२	३२		१६	१७
सीस(शिष्य)	१	१३, २३	सुंसमार	३६	१७२
	२१	१	सुकड	१	३६
	२३	२, ३, ६, ७,		२	१६
		१०, १४, १५	सुकम	१	४४
	२७	१५, १६	सुकहिय	१०	३७
सीस(शीर्ष)	२	१०	सुकुमाल	१६	३४
	७	३		२०	४
	१२	२८	सुकक(शुष्क)	२५	४०, ४१
	२१	१७	सुकक(शुक्ल)	३०	३५
सीसग	३६	७३		३४	३१
सीसय	१६	६८	सुककज्झाण	२६	सू० ७३
सीह	११	२०		३५	१६
	१३	२२	सुककलेसा	३४	३, ६, ३२,
	२१	१४			३६, ४६
	३६	१८०		३६	२५८
सीहकणी	३६	६६	सुक्का	३४	१५, ५५, ५७
सीह	१६	७०	सुक्किल	३६	१६, २६, ७२

सुगंधगंधिय	२२	२४
सुग्गइ	३४	५७
सुग्गीव	१६	१
सुचिण	१३	१०
	१४	५
सुचिर	२७	६
सुचोइय	१	४४
सुच्चा	२१	१४
सुच्छिन्न	१	३६
सुजट्ट	१२	४०
सुजह	८	६
सुट्टिय	२२	४०
सुट्टु	२०	५४
	२५	३५
सुण *		
सुण	२४	६
	३०	१,४
	३३	१६
	३६	४८, १७६
सुणाहि	१३	२६
सुणेमि	२०	८
सुणेह	१	१
	२	१
	५	१७
	११	१
	२०	१, १७

सुणेह	२८	१
	३४	१, २
	३५	१
	३६	१, ६६,
		१०७, १२७,
		१३६, १४५,
		१७१, १८५,
		२०४
सुणेहि	२०	३८
सुव्वन्ति	६	७
सुणग	१६	५४
	३४	१६
सुणिट्टिय	१	३६
सुणित्ता	१७	१
सुणिया	१	६
सुणी	१	४
सुणेत्ता(श्रुत्वा)	१२	१६
सुणेत्ता(श्रोतृ)	१६	सू० ५
सुणेमाण	१६	सू० ७
सुत्त(सूत्र)	१	२३
	२३	८५
	२८	१६
	२६	सू० २१, ६०
	३२	३
सुत्त(सुप्त)	४	६
सुत्तग	२२	२०

उत्तरज्ज्मयण शब्द-सूची

३२१

सुत्तशब्द	२८	२१	सुपावय	१२	१४
सुदसण	११	२७	सुपिवासिय	२	५
सुदिट्ठ	१२	३८	सुपुण्ण	५	१८
	२८	२८	सुपेसल	१२	१३, १५
सुदुक्कर	१६	२८ से ३०, ३८, ३९	सुप्पणिहिय	२६	सू० १२
सुदुक्खिअ	२२	१४	सुप्पसारअ	२	२६
सुदुक्खर	१८	३३	सुप्पिय	११	८
सुदुल्लह	८	१५	सुब्भि(दे०)	२६	२७
	१७	१	सुब्भिगंध	३६	१७
	२०	११	सुभासिय	२०	५१
	२२	३८		२२	४६
सुद्ध	२५	३१	सुभेरव	१६	५३, ६८
सुद्ध	३	१२	सुमज्जिय	१६	३४
	८	११	सुमह	११	२६
	१८	३२	सुमिण	१५	७
	१६	६४	सुय(सुत)	१३	२३
	३२	१०६		१४	११, ३७
सुद्धवाय	३६	११८	सुय(श्रुत)	१	४६
सुद्धोदअ	३६	८५		२	सू० १
सुन्नगार	२	२०		५	१२
	३५	६		७	२६
सुपक्क	१	३६		११	७, ११, १५, ३१, ३२
सुपट्ठिअ	२०	३७		१४	४८
सुपरिच्चाइ	१८	४३		१६	सू० १
सुपालय	२३	२७		१७	२, ४

सुय(श्रुत)	१६	१०	सुलद्ध	२०	५५
	२३	३,५३,५६,	सुलह	३६	२५८
		८८	सुलहवोहियत्त	२६	सू० ५८
	२६	सू० १,२०,२५	सुव		
	३३	४	-सुवई	१७	३,१४
सुय(श्रुत)	३४	७	सुवण्ण(सुवर्ण)	६	४६,४८
सुयक्खाय	६	४४		३६	७३
सुयणु	२२	३७	सुवण्ण(सुपर्ण)	१४	४७
सुयघम्म	२८	२७		३६	२०६
सुयनाण	२८	४,२३	सुवण्णग	३६	६०
सुया(सुता)	१८	१४	सुविण	८	१३
सुया(आ)	१२	४३,४४		२०	४५
(श्रवा)			सुविणीय	१	४७
सुर	१२	३६		११	१०,१३
	३१	१६	सुविम्हिय	२०	१३
	३४	५१	सुविसोज्झ	२३	२७
	३६	२११,२१५,	सुव्वअ	५	२२,२४
		२१६		७	२०
सुरक्खिय	११	२६		८	६
सुरलोग	१४	१		१५	५
सुरहि	३४	१७		१७	२१
सुरा	५	६	सुसंभंत	२०	१३
	७	६	सुसंभिय	१४	३१
	१६	७०	सुसवुड	२	४२
सुरूव	२१	६		१२	४२
	२२	३७		१५	१२
सुलद्ध	१	३३			

सुसमाहिदिय २१	१३	सुह (शुभ)	१०	१५
सुसमाहिय(अ) १२	२, १७		३३	१३
२०	४		३६	६१
२३	६	सुहड	१	३६
२७	१७	सुहफरिस	२६	सू० ७२
३०	३५	सुहसाय	२६	सू० १, ३०
सुसाण २	२०	सुहसेज्जा	२६	सू० ३४
३५	६	सुहावह	१६	६८
सुसीइभूय १२	४६		२३	८७
सुसील २२	७		३०	२७
सुत्सुयाइत्ता २७	७		३१	१
सुत्सुसणया २६	सू० १, ५		३५	१५
सुह (मुल) ७	२७	सुहासिय	१२	२४
६	१४, ३५	सुहि (खलिन)	१	१५
१३	३, १७		१६	२०, २१, ८०
१४	३२		२६	सू० ३६
१७	३		३२	११०, १११,
१८	१७	सुहि (मुहद)	२०	६
१९	७६, ६०	सुहुत्तर	३२	१८
२०	३७	सुहुम	२८	३२
२८	१०		३५	६
२६	सू० ४, १३, ३७		३६	७०, ७७, ७८,
३२	२८, ३२, ४१,			८४, ८६, ८२,
	४५, ५४, ५८,			१००, १०८,
	६७, ७१, ८०,			११०, १११,
	८४, ८३, ८७			११७, ११६,
३६	६६			१२०

३२४

परिशिष्ट-२

सुहृमकरिय	२६	सू० ७३
सुहेसिण	२२	१६
	३२	१०५
सुहोइय	१६	३४
	२०	४
	२१	५
सुई	२६	सू० ६०
सूयगड	३१	१६
सूयर	१	५, ६
सूर(सूर)	२	१०
	११	१७
	१८	५१
सूर(सूर)	१७	१६
	२३	१८
	३६	२०८
सूरकत	३६	७६
सूरणय	३६	६८
सूरिअ	२१	२३
सूल	१६	६१
से	२	४०
	७	४
	८	६
सेज्जा	१	२२
	२	सू० ३
	२	२२
	१७	२, १४

सेज्जा	२४	११
	२५	३
	२६	३७
	३२	१२
सेट्टि	१३	२
सेढि	३०	१०
सेणा	१२	२७
सेणाखन्धार	३०	१७
सेणिअ	२०	२, १०, १२,
		५४
सेना	२२	१२
सेय(अ)	२	२६
	५	६
	६	४०
	१८	४८
	२२	२६, ४२
सेयाल(दि०)	२६	सू० ७२
सेलेसी	२६	सू० १, ६२
सेल्लि(दि०)	२७	७
सेव *		
-सेवइ	२५	२५
-सेवए	७	३०
	१७	१७
-सेवन्ति	२	३५
-सेवामि	२	७
-सेविज्ज	१	६

उत्तरजम्भयण शब्द-सूची

सेविज्जा	२	४
	१६	सू० ३
सेवे	४	११
सेवेज्जा	१८	१२
सेवण	२८	२८
	३५	३
सेवणया	२६	सू० १
	३०	२८
सेवमाण	१६	सू० ३
सेवा	३२	३
	३६	२६७
सेवित्ता	१६	सू० ३
सेस	१२	१०
	१४	२
	२६	२८
	२८	२६
	३२	१८
सेसञ्ज	३४	६०
सोईदिय	२६	सू० १, ६३
सोई	३६	२६२
सोऊण	१३	२
	१८	१८
	२२	१८, २८
सोक्ख	१४	१३
	२६	सू० ४
	३२	२

सोग	१६	६१
	२०	२५
	२२	२८
	२६	सू० ३०
	३२	१०२
सोगघिय	३६	७६
सोग्गइ	२८	३
	२६	सू० ५
सोच्च	३	११
सोच्चा	२	सू० १ से ३
	३	८, ६
	५	२६
	७	२५
	१२	२४
	१४	३७
	१५	१४
	१६	सू० १ से ३
	१८	३४
	२२	४६
	२५	४२
	३६	२४६
सोच्चाण	२०	५१
सोच्चाण	२	६, २५
सोढ	१६	४५, ४६
सोणिय	२	११
सोभाग	२१	८

सोमंगल (दि०)	३६	१२८
सोमया	२०	६
सोय *		
-सोयड	५	१४, १५
	७	६
	१३	२१
	२५	२०
-सोयंति	२३	८४
सोय(श्रोत्र)	१०	२१
	१६	५
	३२	३५, ३६
सोय(गौत्र)	१३	६
सोय(गोक)	१४	१०
	२०	५०
सोय(श्रोतस्)	१६	३६
सोयरिय	१४	३३
सोयामणी	२२	७
सोरियपुर	२२	१, ३
सोलस	६	४४
सोलसविह	३३	११
सोल्लाग	१६	६६
सोवाग	१३	६, १८, १९
सोवागकुल	१२	१
सोवागपुत्त	१२	३७
सोवीर	१५	१३
	१८	४७

सोसण	३०	५
सोह * (गुम्)		
-सोहण	२२	१०
-सोहन्ति	२३	१८
सोह * (शोधय्)		
-सोहेज्ज	२४	१२
सोहइत्ता	२६	सू० १
सोहग	२६	सू० ११
सोहण		
(गोभन)	१६	७
सोहण		
(शोधन)	१६	२७
सोहम्म	३६	२१०, २२२
सोहि	१	२६
	३	७, १२
	१२	३८
	२६	सू० १
सोहिल	१६	१
	२२	११
हय(य)	- २	२६
	१८	६
	३२	८
हं	१६	५८
हंता	१२	१८
हंस	१३	६
	१४	३३, ३६
	२७	१४

हसगव्भ	३६	७६	हरंति •	१४	१५
हृद्ध	१८	१६	हरब्	१२	४५, ४६
हृढ	२२	४४	हरतणु	३६	८५
हण *			हरिएस	१२	२७
हणह	१२	२६	हरिएसवल	१२	१
हणाड	२०	४४	हरिएसिज्ज	१२	
हणे	२	११	हरिण	३२	३७
	६	६	हरिय	१७	६
हणेज्जा	२	२७	हरियाकाय	३६	६५
हत्य	५	६	हरियाल	३४	८
	१४	४५		३६	७४
हतिय	२०	१४	हरिसेण	१८	४२
हतियणपुर	१३	१, २८	हलिद्दा	३४	८
हतियपिप्पली	३४	११		३६	६६
हम्म *			हव *		
हम्मिहिति	२२	१६	हवइ	१	४४, ४५, ४८
हम्मति	३५	११		२	३५
हम्ममाण	१२	२०		३	२०
हय	१	३७		११	७, १६ से
	१८	३			३०
	३६	१८०		१८	५३
हयाणीअ	१८	२		२५	३१
हर	७	५		२६	१३
	१४	१५		२६	सू० ५१
हर *			हवति	१०	२१
हरइ	१३	२६		१२	३१

-हवन्ति	१३	२७
	१४	१२
	३३	२४
-हविज्जा	१५	१०
-हवेज्जा	१६	सू० ३ से १२
हव्व (दि०)	२६	सू० २, ३
हसिअ (य)	१६	सू० ७
	१६	५, १२
हस्स	२६	सू० २३
हा *		
-हायइ	१०	२१ से २६
-हायए	३६	१४
हार *		
-हारए	७	११
हार	३४	६
हारित्ता	७	१५
हालिद्दा	३६	१६, ७२
हाव *		
-हावए	५	२३
हास	१	६
	१६	६
	१६	६१
	२४	६
	२५	२३
	३२	१४, १०२
	३६	२६३

हिएसअ	३४	२८
हिएसि	१३	५
हिगुलुय	३४	७
	३६	७४
हिंस	५	६
	७	५
हिंस *		
-हिंसइ	२५	२२
	३२	२७, ४०, ५३,
		६६, ७६, ६२
हिंसग	१२	५
	३६	२५७
हिंसा	१८	११
	३५	३
हिज्व	१४	३४
हिज्वा	३	१३
	५	१४
	७	८
	१८	३५
हिम	३६	८५
हिय	१	६, २८, २६
	२	१३
	८	३, ५
	१३	१५
	१६	२६
	३२	१, ११, १५,
		१६

हियय (अ)	२३	४५
	२६	सू० १३
हिरण्य	३	१७
	६	४६, ४९
	१६	१६
	३५	१३
हिरिम	११	१३
	३२	१०३
हिरिली (दे०)	१३६	६७
हीण	३६	६४
हीर *		
हीरसि	२३	५५
हीरमाण	६	१०
हील *		
हीलए	१५	१३
	१६	८३
हीलह	१२	२३
हीला	१२	३०
हीलिय	१२	३१
हु	१	१३
हु *		
हुति	२८	३०
	३४	३३
हुज्ज	३६	२४६
हुज्जा	२	३४
हुमि	१४	२२

हुण *		
हुणामि	१२	४४
हुणासि	१२	४३
हुयासण	१६	४६, ५७
हेउ	३	१३
	६	१४
	७	११, २४
	८	८, ११, १३,
		१७, १८, २३,
		२५, २७, २८,
		३१, ३३, ३७,
		३९, ४१, ४३,
		४५, ४७, ५०
	१३	२०
	१४	१६
	२५	१०
	२६	३४
	२७	१०
	३२	२२, २३, ३५,
		३६, ४८, ४९,
		६१, ६२, ७४,
		७५, ८७, ८८,
		१००
	३६	२६४
हेट्टिम	१७	२०
	३६	२१३, २१४

हो ■

-अहोत्था

-हुँति

-होड

-होइ

३३

३४

३५

३६

-होक्खामि

२

५

-होज्ज

८

३२

-होति

३४

३६

-होमि

२०

-होमो

२२

-होह

१४

-होहिइ

२७

-होहिंसि

६

१३

होउं

२५

होम

१२

२०

२८

१

२

३

७

८

११

१४

१७

१६

२०

२५

२६

२८

३०

३२

१६

३०

१५, २८, २९

१३, २४, २८

४, १८

१८

१५

२

८, १६

२१

१८, २१, ३५,
३६, ४०, ८०

४१, ४२

३० से ३२,

३६

३०, ३३

२०, २३, २६,
३३

३, ८, १०,

११

८, ३३, ४६,

५६, ७२, ८५,

६८, १०६,

११०

५, १४, १६,

२०, ३४ से

४१, ४३, ४४,

४८, ५२, ५३

१४

६४, १६८,

२६६

५

७

१

३२, ४५, ५८,

७१, ८४, ९७

३८

२५६, २७०

११

४३

६

१२

५८

३२

१३

४३, ४४

परिशिष्ट-३

नामानुक्रम

व्यक्तियों के नाम			गोयम	२२	५
अर	१८	२४०		२३	६, ६, १४ से
अरिदुनेमि	२२	४, ५, २७			१८, २१, २२,
उद्दयण	१८	४७			२५, २८, ३१,
उसुयार	१४	३ ४८			३४, ३५, ३७,
कमलावई	१४	३			३६, ४२, ४४,
करकंडु	१८	४५			४५, ४७, ४६,
कविल	८	२०			५०, ५२, ५४,
कासीराय	१८	४८			५५, ५७, ५६,
कृथु	१८	३६			६०, ६२, ६४,
केसव	२२	२, ६, २७			६७, ६६, ७०,
केसि	२३	२, ६, १४, १६,			७२, ७४, ७७,
		१८, २१, २२,			७६, ८२, ८५,
		२५, ३१, ३७,	चित्त	१३	८६, ८८, ८६
		४२, ४७, ५२,			२, ३, ६,
		५७, ६२, ६७,			११, १५, २८,
		७२, ७७, ८२,			३५
		८६, ८८, ८६	चुलणी	१३	१
गग	२७	१	जय	१८	४३
गद्भालि	१८	१६, २२	जयघोस	२५	१, ३४, ४२,
गोयम	१०	१ से ३७			४३

१-इस कोष्ठक की संख्याएँ अध्ययन की सूचक है ।

२-इस कोष्ठक की संख्याएँ श्लोक अथवा सूत्र (सू०) की सूचक है ।

जसा	१४	३	महापञ्चम	१८	४१
दसण्णभट्ठ	१८	४४	महाबल	१८	५०
दसार	११	२७	महावीर	२	सू० १ से ३
	२२	११		५	४
टुम्मुह	१८	४५		२१	१
देवई	२२	२		२६	सू० १, ७३
नगइ	१८	४५	मिया	१६	१, ६७
नमि	६	२, ३, ५, ८,	मियापुत्त	१६	२, ६, ८, ६६
		११, १३, १७,	रहनेमि	२२	३४, ३७, ३६
		१६, २३, २५,	राईमई	२२	६, २६, ३६
		२७, २६, ३१,	राम	२२	२, २७
		३३, ३७, ३६,	रोहिणी	२२	२
		४१-४३, ४५,		३४	१०
		४७, ५०, ६१,	वद्धमाण	६	२४
		६२		२३	५, १२, २३,
	१८	४५			२६
नायपुत्त ^१	६	१७	वासुदेव	२२	१
पालिय	२१	१, ४	वासुदेव	११	२१
पास	२३	१, १२, २३,		२२	८, १०, २५,
		२६			३१
बंमदत्त	१३	१, ४, ३४	विजय	१८	४६
वलभट्ठ	१६	१	विजयघोस	२५	४, ५, ३४,
वलसिरि	१६	२			३५, ४२, ४३
भरह	१८	३४, ४०	सजय	१८	१, १०, १६,
भोयराय	२२	४३			२२
मघव	१८	३६	संति	१८	३८

सभूय	१३	३, ११
सगर	१८	३५
सणकुमार	१८	३७
समुद्रपाल	२१	४, ६, २४
समुद्रविजय	२२	३, ३६
सिवा	२२	४
सेणिय	२०	२, १०, १२, ५४
हरिएसवल	१२	१
हरिसेण	१८	४२

देशों व नगरों के नाम

उसुयार	१४	१
कम्पिल्ल	१३	२, ३
	१८	१, ३
कम्बोय	११	१६
कलिग	१८	४५
कासी	१३	६
	१८	४८
कोसवी	२०	१८
गघार	१८	४५
चम्पा	२१	१, ५
दसण	१३	६
	१८	४४
पचाल	१३	१३, २६, ३४
	१८	४५

पिहुण्ड	२१	२, ३
पुरिमताल	१३	२
बारगा	१२	२२, २७
भरह	१८	४०
भारह	१८	४१
मगघ	२०	२, १०, १२
मिहिला	६	४, ५, ७, ६, १४
वाणारसी	२५	२, ३
बिदेह	१८	४५
सावत्यी	२३	३, ७
सुगीव	१६	१
सोरियपुर	२२	१, ३
सोवीर	१८	४७
हत्तियणपुर	१३	१, २८

पर्वतों के नाम

कालिंजर	१३	६
केलास	६	४८
नीलवंत	११	२८
मंदर	११	२६
	१६	४१
रेवयय	२२	२२, ३३

समुद्रों के नाम

रयणागर	१६	४२
सयभूरमण	११	३०

नदियों के नाम

गंगा	१६	३६
	३२	१८
मयंगा	१३	६
वेयरणी	१६	५६
	२०	३६
सीया	११	२८

उद्यानों के नाम

केसर	१८	३४
कोट्टग	२३	८
तिदुय	२३	४, १५
मंडिकुच्छि	२०	२

सिद्धों के नाम

कहावण	२०	४२
कागिणी	७	११

आवास

उच्चोयअ	१३	१३
कक्क	१३	१३
गेह	१६	२२
गोपुरट्टालग	६	१८
पागार	६	१८
पासायालोयण	१६	४
बंभ	१३	१३
बालगपोइया	६	२४
महु	१३	१३

लयण	२२	३३
वद्धमाणगिह	६	२४
सुन्नागार	२	२०

शास्त्र

अंकुस	२२	४६
असि	१६	३७
इदासणि	२०	२१
कप्पणी	१६	६२
करकय	१६	५१
करवत्त	१६	५१
कस	१२	१६
कुहाड	१६	६६
खुर	१६	५६
गदा	११	२१
चक्क	११	२१
छुरिया	१६	६२
दड	१२	१६
घणु	६	२१
पट्टिस	१६	५५
फरसु	१६	६६
भल्ली	१६	५५
मुगर	१६	६१
मुसढी	१६	६१
मुसल	१६	६१
वज्ज	११	२३

इत्तरलभयण-नामानुक्रम

वित्त	१२	१६
सडास	१६	५८
सयग्वी	६	१८
सूल	१६	५१

धातु और रत्न

अंक	३४	६
अजण	३६	७४
अन्मपडल	३६	७४
अन्मवाल्या	३६	७४
अय	३६	७३
इन्दनील	३६	७५
उवल	३६	७३
उत्स	३६	७३
कस	६	४६
गेल्य	३६	७६
गोमेज्जअ	३६	७५
चन्दण	३६	७६
चन्दप्यह	३६	७६
तज्य	३६	७३
तम्ब	३६	७३
पवाल	३६	७४
पुढवि	३६	७३
पुलअ	३६	७६
फल्लिह	३६	७५
भुयमोयग	३६	७५

मणोसिला	३६	७४
मरगय	३६	७५
मसारगल्ल	३६	७५
मुत्ता	६	४६
रुप्य	३६	७३
रुयग	३६	७५
लोण	३६	७३
लोह	१६	६८
लोहियक्ख	३६	७५
वद्धर	३६	७३
वालुया	३६	७३
वेरुलिअ	३६	७६
सक्करा	३६	७३
सासग	३६	७४
सिला	३६	७३
सीसग	३६	७३
सुवण्ण	३६	७३
सूरकत	३६	७६
सोगघिअ	३६	७६
हसगन्म	३६	७६
हरियाल	३६	७४
हिगुलअ	३६	७४
हिरण्ण	६	४६

वनस्पति

अवग	१६	५५
अयसि	७	११

असण	३४	८
अस्सकण्णी	३६	६६
आलुअ	३६	६६
उच्छु	१६	५३
कद	३६	६८
कदली	३६	६७
कण्ह	३६	६८
कविट्ठ	३४	१२
कालीपब्बंग	२	३
किम्पाग	१६	१७
कुद	३४	६
कुडुबअ	३६	६७
कुहग	३६	६८
कूडसामली	२०	३६
केदकंदली	३६	६७
खज्जर	३४	१५
जव	६	४६
जावइ	३६	६७
णिहु	३६	६८
तिंदुय	१२	८
तिगडु	३४	११
थीहु	३६	६८
निम्ब	३४	१०
नीलासोग	३४	५
पलंदु	३६	६७
पोम	२५	२६

मुद्दिया	३४	१५
मुसुण्ढी	३६	६६
मूलअ	३६	६६
रोहिणी	३४	१०
लसण	३६	६७
लोहि	३६	६८
वज्जकद	३६	६८
सण	३४	८
सालि	६	४६
सिगबेर	३६	६६
सिम्बलि	१६	५२
सिरिली	३६	६७
सिरीस	३४	१६
सिस्सिरिली	३६	६७
सीहकण्णी	३६	६६
सूरणअ	३६	६८
हढ	२२	४४
हत्थिपिप्पली	३४	११
हलिद्दा	३६	६६
हिरिली	३६	६७

प्राणि

अच्छिरोडअ	३६	१४८
अच्छिल	३६	१४८
अच्छिवेहअ	३६	१४७
अणुल्लअ	३६	१२६

उत्तरजम्भयण-नामानुक्रम

अन्विय	३६	१४६	कुलल	१४	४६
अरिद्वग	३४	४	कोइल	३४	६
अलस	३६	१२८	कोल	१६	५४
अस्स	२०	१४	खलुक	२७	३
अहि	३६	१८१	गंधहत्थि	२२	१०
आइण	११	१६	गवल	३४	४
इदकाइय	३६	१३८	गाहा	३६	१७२
इदगोवग	३६	१३६	गिद्ध	१६	५८
उक्कल	३६	१३७	गुम्मी	३६	१३८
उड्डस	३६	१३७	गो	३४	१६
उहेहिय	३६	१३७	गोण	३६	१८०
उरग	१४	४७	गोह	३६	१८१
ओहिजलिय	३६	१४८	चन्दण	३६	१२६
कथग	११	१६	चम्म	३६	१८८
कच्छभ	३६	१७२	चास	३४	५
कट्टहार	३६	१३७	चित्तपत्तअ	३६	१४८
कप्पासट्टि मिज	३६	१३८	जलकारी	३६	१४८
कामदुहा घेणु	२०	३६	जलूग	३६	१२६
कावोय	१६	३३	जाला	३६	१२६
किमि	३६	१२८	डोल	३६	१४७
कीड	३६	१४६	ढंक	१६	५८
कुकुण	३६	१४६	ढिगुण	३६	१४६
कुंच	१४	३६	तउसमिज	३६	१३८
कुक्कुड	३६	१४७	तंतवग	३६	१४८
कुन्थु	३६	१३७	तणहार	३६	१३७
कुररी	२०	५०	तिदुग	३६	१३८

दंस	१६	३१
नंदावत	३६	१४७
नाग	१४	४८
नीय	३६	१४८
पत्तहारण	३६	१३७
पयंग	३२	२४
पल्लोय	३६	१२६
पारेवय	३४	६
पिवील	३६	१३७
पोत्तिय	३६	१४६
बलागा	३२	६
बिराल	३२	१३
ममर	३६	४६
भारुंड	४	६
मिगारी	३६	१४७
भुजंग	१४	३४
मगर	३६	१७२
मच्छ	३६	१७२
मर्च्छय	३६	१४६
मसग	३६	१४६
महिस	३२	७६
माइवाहय	३६	१२८
मालुग	३६	१३७
माहअ	३६	१४८
मिग	३२	१३७

मूसग	३२	१३
रोहियमच्छ	१४	३५
रोज्म	१६	५६
लोमपक्ख	३६	१८८
वराडा	३६	१२६
वसह	११	१६
वासीमुह	३६	१२८
विचित्त	३६	१४८
विच्छिअ	३६	१४७
विययपक्ख	३६	१८८
विग्ली	३६	१४७
वीदसअ	१६	६५
सख	३६	१२८
सखणग	३६	१२८
सदावरी	३६	१३८
समुगपक्ख	३६	१८८
सिगिरिडी	३६	१४७
सिप्पी	३६	१२८
सीह	३६	१८०
सुंमुमार	३६	१७२
सुणग	३४	१६
सुय	३४	७
सुवण्ण	१४	४७
सोमगल	३६	१२८
हस	१४	३३

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	५।३	कर्म	कर्म
१५	११।२	पावगं ?	पावगं
२१	३१	(एवं ...३४॥)	(एवं)
२४	६३	(एवं ...६३॥)	(एवं)
२७	८६।४	पडिक्कमे	पडिक्कमे
३३	४७।४	ईमं	इमं
३८	३८।२	कंदल	कंदलं
४६	२८।३	नाभो	नाभी
४७	४३।३	अवक्किय °	अविवक्किय °
५०	१।१	अयार °	आयार °
५०	४।१	मिति	मिस्ति
५०	८।२	व	वा
५७	१।१	सिक्ख	सिक्खे
६१	४।३	° मेज्जंति	° मेज्जंति
७५	२०।३	निक्खम्मं	निक्खम्म
८२	७।२	गया	गओ
८३	१२।३	कि	किं

उत्तराध्ययन

८८	६।३	मंसणि	संसणि
१०२	१६।४	बोहिं	बोहि
१२२	३।१	से	सो
१२३	१७।३	रायरिसि	रायरिसि
१२६	४८।१	° रूपस्स	° रूपस्स
१२७	५८।१	उत्तमो	उत्तमो
१३४	३०।१	अवउज्झियं	अवउज्झिय

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५।१	भावधरा	भारधरा
१४२	१६।४	दहामु	दाहामु
१५२	२३।४	० भेव	० भेवं
१५८	१८।२	तैल्लामहा तिलेमु	तेल्ल महातिलेमु
१७०	पं ८	कुडुत्तरंसि	कुडुत्तरंसि
१७३	१३।१	गत ०	गत' ०
१७५	१।२	सुणिता	सुणित्ता
१७६	१०।१	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०।२	भरह	भरहं
१८३	४७।१	सवीर ०	सोवीर ०
१८६	४१।३	निह्वय	निह्वयं
१९०	५०।२	० बालुए	० बालुए
१९३	७७।२	मिगे	मिगो
२०६	४।१	घरणी	घरणी
२३२	१३।४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४।३	लयं	तयं
२३८	१०।३	निउत्तेण	निउत्तेणं
२३९	२४।२	वा	ता
२४३	४७।३	य	×
२४४	७।४	उज्जाहित्ता	उज्जहित्ता
२४७	४।३	सु	×
२४९	२०।३	रीर्यतो	रोयन्तो
२५५	पं ६	अणगारेए	अणगारे
२५६	सू०२४	पमावेणं	पमावे णं
२५९	सू०२५	खवेड	अन्नाणं खवेइ
२६६	सू०६०	विणुस्सइ	विणस्सइ
२६९	सू०७४	कम्माइ	कम्माइं
२७५	३७।१	एवं	एयं
२७७	१७।१	० णावणाहि	० भावणाहि
३०५	४।३	खंजणं ०	खंजणंजण ०

शुद्धि और आपूरक पत्र

३४३

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
३०६	१०।१	कहुय	कहुय
३१७	१	'मे एगममणा'	मेगममणा
३३०	६५।१	लयावलया	लयावलय
३४६	२६६।३	कारणेहि	कारणेहि

शुद्धि और आपूर्क पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कइहं	कइहं
३	पा० ६	संपन्ना (अ,ज)	संपन्ना (अ,ज), संदुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख, ...)	(क,ग, ...)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ६	एसो ^१ तलु	एसो तलु ^२
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा' ^१ नगरे वा	'गामे वा नगरे वा
		एणो ^२ वा	रणो ^१ वा ^२
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरण्ये (अचू)
१०	पा० २	अरण्ये (अचू)	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा ^३	सलागाए वा सलागहत्येण वा ^३
१२	पा० ३	उज्जावेज्जा	उज्जालावेज्जा
१४	पा० १	इडगंसि वा	डडगंसि वा
१८	पा० ६	कट्ट	कट्ठ
२१	पा० ४	६—हारताल ०	६—हरिताल ०
		७—हिगोलए ०	७—हिगोल्य ०
		१४—सोरट्टिय ०	१४—सोरट्टिय ०
२३	पा० २	(अ,ज)	(अ)
२७	८४।३	वा वि	'वा वि' ^१
२७	८४।४	वा वि ^१	वा वि
३१	पा० २	(आ,जा,ह)	(आ,जा,हा)
३६	पा० २	(आ,ज)	(अ,ज)

बुद्धि और आपूर्क पत्र-२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
३७	१८१	लोभस्सेसो अणुफासो	'लोभस्सेसो अणुफासो' ^२
३७	१८३	सन्निहीकामे	सन्निहीकामे ^३
३७	२२३	य ^२	य ^४
३७	पा० २	२—व (अ)	२—लोभस्सेसणुफासे (क, घ) ; लोभस्से सणुफासे (ख) ; लोभस्सेसणफासो (ग) ३—सन्निहि कामे (हाटी०) ४—व (अ)
३८	पा० ३	ना	नो
४०	पा० ३	जिनदास' व्याख्यात नहीं है	×
४४	पा० २ गा० ८, ९	तहेवऽ०	तहेवाऽ०
		व धारिय...अइयंमि	वधारियं...अइयंमि
४८	५४३	भयसा'	'भयसा व' ^२
४९	पा० १	सुव्वक्क० (ख, ग)	सुव्वक्क (ख, ग)
५१	१९४	ण ^५	'ण य' ^५
५२	पा० ३	(क, ख, घ)	(क, ग, घ)
५५	पा० २	पणीयं रसें	पणीयं
५६	६३३	कम्मघणम्मि ^४	'कम्मघणम्मि अवगाए' ^४
५६	पा०	२—	१—
		३—	२—
		१—	३—
		२—	४—
५६	पा० २	पुव्व०	४—पुव्व०
५७	५१२	० नामाओ ^३	० नामाओ ^३
६२	पा० ८	समणंति	समाणंति
	४१४	'नो त्रि पा' ^६	'नो त्रि पा' ^६
७६	सू० १ प० २०	'खलु भो'	'खलु भो'
३६	पा० ४	(अ, ज)	(अ, ज)
८४	पा० ८	'अ, ज' (अ, ज)	'अ, ज' (अ, ज), 'पह' (ज)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अगुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहिताणं (वृ०, चू०)	जहिताणं (वृ०, चू०); चइताणं (वृ०पा०)
८८	पा०७	(वृ०, चू०) ।	(वृ०, चू०) ; अप्पाचेव दमेयव्वो (वृ०पा०) ।
८९	पा०१	(अ, उ, म,)	(अ, उ, ऋ)
९२	पा०१, २	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ, उ, ऋ), किती ति(ऋ) ।	(अ, उ); किती य(वृ०) ।
१०३	पा०२	(वृ०पा०, चू०पा०) ।	(ऋ, वृ०पा०, चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहासि	पीहसि
१०९	पा०२	आघा °	आघा °
११०	पा०२	(चू०, वृ०पा०)	(चू०पा०, वृ०)
१११	पा०१	(' सु)	(' ...स(
११९	पा०१ पं०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	...सेवए...णिसेवए	...सेवए...णिसेवए
१३२	पा०३	(उ, म, वृ०);	(उ, ऋ, वृ०),
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्जं
१३७	१५।२	'निहियं दुहओ'²	'निहियं दुहओ वि'²
१४७	पा०२	सुसंबुडा	सुसंबुडा
१४७	पा०४	वोसट्ठ °	वोसट्ठ °
१५०	पा०५	वित्तघण °	चित्तघण °
१८२	पा०८		× (आ, इ, उ)
१८३	४७।२	वेच्चा³	'वेच्चा रज्ज'³
१८५	पा०३		× (आ, इ, उ, चू०)
१८८	३४।४	° पालिउं	° पालिउं³
१८८	३७।१	वालुयाकवले³	वालुयाकवले⁴
१८८	३७।२	उ⁴	उ⁵
			३—पालिया (अ, आ, इ, उ, सु)
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा० ४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)	अणुरत्तमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)
२०७	पा० ४	जहिज्ज संगंथ (वृ०), जहित्तुसंगंथ (चू०); जहित्तु संगंथ ° (सु)	जहित्तु संगंथ (वृ०), जहित्तुसंगंथ (चू०); जहित्तु संगंथ (सु)
२१४	पा० ८	से ओ	सेओ
२१६	पा० १, ३		× (अ, इ, ऋ, स, सु)
२४२	पा० ५	से से...गुरु	सेसे गुरु
२४८	पा० २	° तवेइ या	तवे इ या
२५५	सू० ६ पं० ४	उज्जुभावपडिवन्ने ^१	'उज्जुभाव पडिवन्ने य णं' ^१
२५६	सू० ७ पं० ३	'पडिवन्ने य' ^२	'पडिवन्ने य णं' ^२
२६१	सू० ३४ पं० ५	अणासायमाणे ^३	अणासायमाणे
२६१	सू० ३५ पं० ३	निक्कंखे ^४	निक्कंखे ^३
२६१	सू० ३६ पं० २	जीवियासंसप्पयोग ^५	जीवियासंसप्पयोग ^४
२६१	सू० ३६ पं० २	बोच्छिन्दइ ^६	बोच्छिन्दइ
२६१	सू० ३६ पं० ३	बोच्छिन्दित्ता	बोच्छिन्दित्ता ^५
२६१	पा०	२—'नो आभाएइ'... (वृ०)	२—× (उ, ऋ, वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा० ६	बन्धाणि	बन्धणाणि
२६५	सू० ५१ पं० ५	परलोगघम्मस्स ^२	'परलोगघम्मस्स आराहए' ^३
२६५	सू० ५५ पं० २	'निव्वियारेणं जीवे' ^४	'निव्वियारे... ^५ ज्जाणगुत्ते' ^५
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा० ६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	१४१३	'दक्खओ खेत्तकालेणं' ^८	खेत्तकालेणं ^८
२७२	पा० १	° कालाय	° काला य
२७२	पा० ४	चउत्थोउ	चउत्थो उ

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२८४	२५।२	'उ उवेइ दुक्खं' ^२	'उवेइ दुक्खं' ^२
३०२	१०।३	'कसायमोहणिज्जं' ^३	'कसायमोहणिज्जं तु' ^३
३०३	२४।४	जीवेसु ऽइच्छियं ^३	जीवेसु ऽइच्छियं ^३
३०३	पा०	३-स इच्छियं (उ,सु); ३-जीवे स इच्छियं (अ,सु); अहिच्छिय (स)	जीवे अहिच्छियं (स)
३०५	६।२	कोइलच्छदसन्निभा	कोइलच्छदसन्निभा ^२
३०५	७।२	तरुणाइच्चसन्निभा ^२	तरुणाइच्चसन्निभा
३०५	पा०२	० च्छावि ०	० च्छावि ०
३०६	१।४	उ ^२	उ
३०६	१०।४	उ ^३	उ ^२
३०६	१२।२	तुवरकविट्ठस्स ^४	तुवरकविट्ठस्स ^४
३०६	पा०२		×
३०६	पा०	२, ३—	२—
३०६	पा०	४—	३—
३०६	पा०	५—	४—
३०६	२६।१	उप्फालगदुट्ठवाई ^४	'उप्फालगदुट्ठवाई य' ^४
३१२	पा०३	पलियमसंख	पलियअसंख
३१५	पा०४		न ह्रु कस्सवि उववत्ति (वृ०) । न वि०... (वृ० पा०) , न ह्रु ० ... (उ, ऋ, सु) ।
३४५	पा०५ पं०४	वियाहियं	वियाहिया
३४६	पा०२	२४८, २४९	२४८ से २६८
३४८	२६१।२	बह्णि ^१	'य बह्णि' ^१

शुद्धि और आपूरक पत्र-३

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
६३		अइमत्त	अइमन्त
६४	अंत	२८।४१, ५८, ६१, ७३, २६।सू०१	२६।सू०१, २८, ४१, ५८, ६१, ७३
६५		अंतरमासिल्ल	अंतरमासिल्ल
६६	अकिंचण	१४।१५	X
६६			अकिञ्च १४।१५
६७	अगारि	२७।२२	७।२२
६७		अग्य *	अग्य *
६८		अजाणमाण	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतिति	अतिति
१०६	अत्य (अर्थ)	२६।सू०२, ४८	२६।सू०२१, ४८
१०७	अदत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२, ४४
१०९	अण्प(आत्मन्)	१४।४६	१४।४८
१११		अवमंचरि	अवमंचारि
१११		अवभाइय	अवभाह्य
१११		-अवभट्टेइ	-अवभट्टेइ
१११		अवभुट्टिच्चा	अवभुट्टित्ता
११२		अभिगमक्कइ	अभिगमरुइ
११२	अभिभूय (अभिभूय)	१५।३	१५।२
११४		अलित	अलित
११७	असण (अशन)	२।३०	२।३
११८	असायावेयणिज्ज	२०।४२	X
११८			असार १६।१४, २२, २०।४२
११८		अस्सविली	- अस्साविणी
११९		अहिसया	अहिसया

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणवन्न	अहुणोवन्न
१२०	आइ	(दि०)	(दि)
		२६।सू०३	२६।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्टिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२, १४१
१२१		आगन्तु	आगन्तु
१२३		-आमन्तयामो	-आमन्तयामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहणया	२६।सू०४६	२६।सू०५१
१२४		आरुह *	आरुह *
१२४		-आरुहइ	-आरुहइ
१२७		-आहारेज्जा	-आहारेज्जा
१२८		इक्कत्तीसइ	इक्कत्तीसइ
१२९	ईसाणम	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४६ से ५०	३४।४६, ४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।६, १८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३, ४
१३१			उज्जुपल २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२६।सू०६,	२६।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जेय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।६
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धत्तुकाम	उद्धत्तुकाम
१३३	उरग	१४।४७, ३६, १८१	१४।४७; ३६।१८१
१३४		उल्लंघन	उल्लंघन
१३४	उवट्ठिअ(य)	२०।२२	२०।८, २२
१३५	-उवल्लिप्पई	२५।३६	२५।२६, ३६

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	एक	१३।३	१३।३, २३
१३७	एग	१।२६, ३३	१।२६, ३३; २।१८; ५।१, ५, २०, ६।८; ७।१४, १५, ८।७, ६।३४, ४६, १४।१, १६।८३
१३७	एगत	१६।३८	X
१३७	एगमा	२६। सू० ३१,	२६।सू० ३६,
१४३	कम्म	३३।१,	३३।१, ३,
१४३			कम्मगणि २६।सू० ३२, ७२
१४३	कम्मपयडि	२६।सू० २३	२६।सू० ३३ ३३
१४३	कर	१३।२७	१३।२७, १४।८
१४७	काय	३२।८१, ८२, ८६ ३६।६०, १०३	३६।८१, ८२, ८६, ६०, १०३
१४७	कारण	६।२६, से ३३, ४४,	६।२६, ३१, ३३ ४५,
१४८	काल	२६।३७,	२६।३७, ४२, ३३।१६
१४६	कासी	१८।४८	X
१४६			कासीराय १८।४८
१४६	किन्नर	१६।६	१६।१६
१५१	कुदंसण	२८।१८	२८।२८
१५१	कुदिद्धि	२८।३६	२८।३६
१५१	कुल	२०।४०, ४२	२०।४०, ४३
१५६	गल	६।३, १०, ३६, ३७	६।३, १०।३६, ३७
१६८		चिट्टमाण	चिट्टमाण
१६६	छत्त	१८।४२	X
१७५	जाणित्ता	१।३४	१।४३
१७८		जीवाजीवविभक्ति	जीवाजीवविभक्ति
१६८	देविद	६।२३, २७,	६।२३, २५, २७,
२०२		घारेह	-घारेह
२०७		-नासइ	-नासेइ
२०७		निक्खमे	-निक्खमे
२०८	-निज्जरेइ	२६।सू० ३७,	२६।सू० ३८,

३५२

दसवेआलियं-उत्तरज्जमयणं

पृष्ठ	स्थल	असुद्धि	शुद्ध
२०६		निद्देह *	निद्देह *
२१६	-फगरेह	१२।३६	X
२२०		पडिसविकल *	पडिसविकल
२२२		पन्मवय	पन्मवय
२४१		-फ से	-फासे
२४६		-अब्बवी	-अब्बवि
२५३		भुज	भुज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१७
२५४		जभुयिा	भुजिया
२६०	मल	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२०	२०।६०
२७३	रेवयय	२२।२२, २३	२२।३३
२८६	विमोयणया	२६।सू०७१	२६।सू०७२
२९१		विवज्ज त	विवज्जयंत
२९२		विस	विसम
२९४		वुककस	वुककस
२९६		सज्ज (संजय)-	संजय (संजय)
३०१		-सतसन्ति	-संतसन्ति
३०५	सत्त (सत्व)	१४।१८, ४३	१४।१८, ४२
३१७	-सिज्जन्ति	२६।सू०१	X
३२७	हरिएस	१-।२७	१२।३७

